# त्राभाव्छन्ठ जिन्न

# হুগ্রন্থ বোণিপ্রবরেশ— আনন্দ্রন পরমহংস মহেদ্রেরন।

প্রণীতা---

যথৈব বটবীজন্ম: প্রকৃত্তত মহাক্রম:। তথৈব রামবীজন্ম: জগদেতচ্চরাচর:।

এীযুক্ত শুরুনাথ বিদ্যানিধি ভট্টাচার্য্যেণ

সংশোধিতাভূদিতঃ চ।

( > নং গরাণখাটাট্রীট দাক্ষারণী পুত্তকালয় হইতে )

শ্রীগণেশ<u>চন্দ্র ছো</u>য কর্তৃক

প্রথম স-ক্ষরণ।

কলিকাতা।

১ নং নিমুগোবামীব লেন দংশায়নী বজা শ্রীমাধনলাল বোব বারা মুক্তিত। সন্ত ২৯৬সাল। . এই পুত্তক ১৮৪৭ সালের ২০ আইনান্নসারে রেজিফীরি করা ছইল। শ্রীগণেশচন্দ্র ঘোষ।

# বিজ্ঞাপন।

ভাষারীকুলচ্ডামণি মুকুলাবন পরমহৎস মহাশারের व्यथान निवा প্রাতঃসারণীয় অলোকিক প্রভাবশালী বোণি-প্রবর আনন্দর্যন প্রমহণ্স মহোদয় সংহিতা প্রভতি-भाखायूमारत वह " त्रांगाक निवस्तिका " अञ्चलानि धनमन করিয়াছেন, স্মার্ত্রশিরোমণি ধর্মব্যবস্থাপক রঘুনশব্ ভট্টাচার্য মহাশয় এই এস্থের উল্লেখ করিয়া স্বকীয় স্থাতিন সংগ্রহ পরিপুষ্ট কনিয়া গিয়াছেন এবং সিদ্ধ পুরুষ প্রধান কুফানন্দ ভট্টাচার্যা প্রণীত তন্ত্রসারে ও ছানে ছানে রামার্চ্চ নচ ক্রিকা সংগৃহীত হইয়াছে অতএব এই এছ-কতকাল যাবৎ যে, ভারতভবনের অমূল্যরত্ব হইয়াছে তা হার নিশ্চর করা যারনা। ইহাতে যে সকল বিষয় প্রণীত হইয়াছে ভাহার অনেক বিষয়ই শাক্ত বৈষ্ণব সাধারণের व्यावनाकीय, त्रारमाभागक महानव निरंभत मन्द्रक स्ट्राटक অদ্বিভীয় সাধন সোপান এবং অদ্বিভীয় বান্ধ্য বলিলেও 🚉 অভ্যক্তি হয়না। এছকার অভ্রান্ত মহাপুরুষ **হিলেন**া অতএব লিপিকরের প্রমাদবশতই বলিতে হইবে ইহার टबान टकान घरण निजास घनरना इहेग्री পड़ियारह, मूजनकार्यात कना २ थानि शुष्ठ कत गाहाया निताहिकाम व्यत्नकृष्टलहे भूळकृष्ट्रात्र व्यत्नका त्रिया याहा हाक्रजन ् विरवहना इहेशारक जाहारे निरविभित्र हरेशारक।

বহুকাল যাবৎ এত দেশে নানা পচারেই মুদ্রণ যন্ত্র পরিসেবিত হইতেছে কিন্তু মাক্ষেপের বিষয় যে, এই অমৃতময় উপচার দেবকর্ন্দের নয়নপথে পতিত হয় নাই, যাহা হউক পদে পদেই জগতের ক্লচির প্রভেদ দেখা যাইতেছে। আমি মদীয় আজীয় প্রশ্ব শীমুক্ত রাখালদাস কবিরত্ন মহাশয়ের নিকট উল্লিখিত প্রকর্ম ও পরমোণপরার প্রাপ্ত ইরা সাতিশয় আনন্দের সহিত ইহা মুদ্রিত ক্রিলাম, এইকণ উৎসাহবর্দ্ধক গ্রাহকর্ন্দের বিভব পদে প্রতিষ্ঠিত হইলেই স্থানন্দের ভাজন হইব ইতি।

বিশেষ।—কামি এই পুস্তকের স্বন্ধ অভাশী। ভালন এয়ক বাবুগণেশ্চক্র ঘোষ মহাশয়ের কর পল্লবে সমর্পণ করিলাম, ইহাতে আমার কোন স্বন্ধ হৈছি।

শ্রীপ্তরুনাথ শর্মা 1

# সূচীপত্ত।

Pres.		পূৰ্ব
में भूगा हर नर	• • • •	
ব্দৰ প্ৰহাৰক্তঃ	•••	
.च्य छक्र गक्तः •	***	• 47
चर्च निष्ठा जक्षनर	***	ă
अर्थ दीका अक्रतनः	***	
च्च निकामि छक्ति कथेनर	•••	,
व्यथं जिद्यापि ठकः ( व्यक्षंश्रहकः )	•••	
चर्च क्रीकावासुदः	***	
चर्ष निकामीनाःखन त्यांव क्षनः	•••	; سو
चव वक्नाड कूनरकतः		
चर्च बानापि (छपः	•••	5.4
चन कूनाकून हकः	414	**
অৰ্থ রাশি নকত্ত ফেলনং		) <b>ર</b>
चार्थ वास्य ठळार	•••	3.9
<b>৯.খ নক্ষত্ৰ</b> চক্ৰং	***	24
অৰ মন্ত্ৰাণাং স্থা প্ৰবোধ কালঃ	•••	3.€
अब सन धन छिक कर्गनः		<b>.</b>
অথ ঋণি ধনি চক্তং	***	در
অথ বাশি শুদ্ধি:	***	ર
অথ মন্থাণাৎ দশসংস্থাবাঃ	•••	₹\$
व्यव श्रीदामक महाकाद क्रक्रा	***	२१
चर कर्मकत महानतः	•••	<b>(</b>
कार्थ का क्षेत्र मञ्जालयः	•••	3.9
ज्ञाच चक्रिय का कत्र मनाः	•1•	<b>S</b>
অব বিবিশ চতুরক্ষর মন্তঃ	•••	٠.
भाष श्रक्षांकत्र मञ्जः	***	, Z
ज्य वर्षे विश्व वक्षक व्यव । नवः	•••	58
अस अकारताक्कार्य श्रीक मन्नामाः	নক্ষর্যঃ-	(a)
चर बाहासामिश्रदाह	#* B	₹€
चन कामरीकारि भूपीक महा:	•••	२७
अब अहेक्का महाह 🔭 🔭	e1 e	4
अब नामाविधनलंकित महार	£ 1.0	•
क्षेत्रं धनश्डाकत व्यक्ति "	***	4

# ( 10/0 ).

<b>दियव</b>		न्हा
व्यय मन्।कट प्रजः	•••	. 29
অথ পুনদ্ৰাক্ষর মন্ত্র:	•••	২৮
काथ विविध पापनाय्यत महावतः	•••	Ø
অথ ত্রোদশাকর মন্তঃ	***	<b>(de</b>
જાલ જાહે! જર્માજી ત્ર મહ:	***	色
कार्थ वाक्तिः नामकात्र मञ्जः		<b>২</b> ৯
অধ সপ্তচ্ছারিংশ্যালা মন্তঃ	•••	٥.
অপ বঢ়করমন্ত্র মাহাত্মাং	***	৬১
অথ সীতারা: বড়কর মন্ত্রাদয়:		(d)
অপ লক্ষ্য মন্ত্ৰাদয়ঃ	•••	૭ર
ঋণ ভরত শক্রম্বরোরপায়ং বিণিঃ	•••	Ę,
আৰ লক্ষণ মন্ত জপদাবিশাক্ষং	•••	<b></b>
অথ লক্ষণ মুস্দা মাহাত্মাং	•••	<u>ق</u>
অধ লক্ষণ মন্ত্ৰ জপেন কোগপ্ৰতিকাৰণ	দি বত্ৰিণ ফলকথনং	⊍8
অথ হতুমতো ময়ঃ		৩৬
অৰ্থ অন্য মালামন্তঃ	•••	৩৭
অৰ্থ অসা পুরশ্চরণ নিয়ম:	406	৩৮
অথ অসাফ গ কথনং	••	లస
অব্ধের্কিং শভাক্ষর মন্ত্রাদ্যঃ	***	8•
ष्यवादनमें शीहाभित्वांग माखि व्यत्यांग	कथनः	<b>D</b>
अथाक नामाचित्र द्यारागन नाम।विध		ঠ
অপ হসমতোষধং	•••	£ <b>2</b>
অপ হতুমতো২টাকর সূগনরঃ	***	ঐ
অংথ অস্যালমিয়ে:	***	8.5
অব্রাম পুলারং গণেশাদি পূলারা	অ(বশাকত্বং	Ø.
ष्मल গ্রেশ মন্ত্রগান। দর:	***	84
जर्थ पूर्वा भद्यशानामग्रः	•••	ж७
क्षत्र निवतः भन्नगानासः	•••	ន។
ष्यव छ्वरनभनी मजधानामगः	***	8
অথ শ্ৰীরামমন্ত্র মাহাত্মাং	***	83
অৰ্থস্য বড়কর মন্ত্রমাহাত্মাং	***	ক্র
જાગ જાગા હાજિ ક્ષમાં ૧૧	***	6.
व्यथं व्यादाय वोकार्थः	***	ঠ
ष्मथ कष्मनार्थ कथनः	***	æs
অৰ স্বস্থাৰ্থ:	•••	e >
व्यथं व्यक्तिकाबि निवदः	•••	€2

विषय '		
चाथ छ।त्रवय कथनः	***	' 4
व्यव बीकाविधि निध्यव मानाः	•••	•
অপ্ বার্মির্মঃ	•••	ď
चार नक्य मित्रमः	•••	Į,
অৰ ভিশি গুদ্ধি:	,	, •
অপ কাল ওকিঃ	***	, <b>€</b> ′
অধ স্থা গ্ৰহণাদি বিশেষ কালঃ	***	نيا
অথ কর্ত্তব্যক্তাক্রমঃ	, >+>	41
चर्य कू छन्दर	41.4	٠,
अथ (वही नकनः	•••	. 47
অৰ আক্ৰেক্তৰ লক্ষ্	***	9.6
অব অঘিস্থাপন বিধিঃ	•••	6
व्यथ हक जनगर हामविधिक	•••	৬৭
भाग मीक्ष। अकारः	•••	46
অগ্সংক্ৰেদীকা প্ৰকাশঃ	***	93
অথ দিবি-ধাণাসনা	***	92
अथ खिलार्ग क्शनः		9 6
ত্ম খণ্ম নিষ্ঠা -	•••	14
অথ এক্ষা মৃত্তি কৃত্যং	***	ঠ
ভাগ স্মাবণং	***	ঐ
क्रण (मोहिविधिः	••	11
ष्यभ व्याहमन विभिः	••	96
व्यथ मस्त धारमः	•••	<b>.</b>
অথ ভাৰনা	•••	12
জণ প্রার্থনা	••	ঐ
<b>अ</b> ध यः छालवी ५ संदिनः	***	<b>b</b> •
व्यथ (क्म क्षेत्रस्तर	• •	<b>D</b>
অব শিধাবন্ধ ং	***	ঐ
व्यथं भानविधिः	••	<u>ট</u> া
অৰ শালগ্ৰামোদকেন স্থানং	***	P.7
অগ শালগ্ৰাম সম্পৃত্ত ভাগ্ন মাহায়াং	•••	ঐ
चर्ष विश्वभाषाम् क माहाभाः	***	<b>५</b> २
অথ আগন নিৰ্মঃ		থী
व्यथं देवस्थवाष्ट्रमनः	•••	۶٥
অপ তিলক ধারণং	***	<b>▶</b> ß
<b>जब वज्र मिलीज़्त विधि निर्दर्श</b>	111	6

# (10)

निरम		पुर्व :
<b>অ</b> ধ সন্ধা	•••	ÞE
चव बामगाम्बी ,	***	) to
ष्मध छर्नन्ः	•••	à
व्यथ व्यवगागावी	•••	·
चन क्रम गामगानिष्ठेश क्रकार	***	5 b
व्यथं (प्रवणात्राः निर्वाणा वागरन (पारः		ঠ
व्यथं विक्रीत गायकुकाः (वहास्त्रकाननः	•	3
व्यथं महनाष्ट्रेत्र		<b>F</b> a
অৰ তৃতীয় যাম কুতাং		ف
चर्थ बीदिका निषयः	4++	3
चार्थ हरूर्थ याम क्रुडार	•••	ঠ
व्यथ माधाकिक जान विधिः		اق
অৰ অগন্ত্য সংহিতোক্ত জীৱাম পুৰা	•••	۵-
चर्ष पांत्र शृक्ष	***	<b>د</b> و
ज्यथं जागरन विधिनित्यार्थः		<b>&gt;</b> <
व्यव मांना वात्रगः	***	ಎ೨
व्यथं ७कि हर्के ३१	• • •	ক্র
অথ আগন গুদ্ধি:		28
<b>অথ ভৃ</b> তাপনারণং	•••	>4
ব্দথ গুরুনতি:	•••	ÚŽ.
ব্দথ যাতৃকোপসংচার: ( জীবস্থাপন: )	•••	<b>४</b> द
অর্থ ভূতোপসংহার:	411	29
অথ ভূতভানি প্রকরণং	***	46
অধ প্ৰাণ প্ৰতিষ্ঠা	•••	ă î.
অৰ প্ৰাণ শক্তিখ্যানং	•••	7.0
व्यथं क्षण्याकृतरा (म.य क्षेतः	•••	2.7
অথ ন্যাস নিৰ্যঃ	•••	205
অথ মাতৃ কাবলৈ প্রাণায়াম:	•••	رق
অৰ্থ মাতৃকায়া খ্ৰাদি ন্যাস:	•••	<b>a</b>
ज्ञथं क्यांचांचि नागः	•••	3.0
অথ মাতৃকা খ্যানং	•••	d)
অৰ্থ অৰ্থ ভিতৰা ন্যাসঃ	•••	ंकु >∙в
অৰ্থ বাহ্মাভূকা ন্যাসঃ	***	, धा >•¢
जब जागा शानः		ر رو
चर् नक्षां स्थान	•••	<b>a</b> 30
चर्य चन्त्रा सावः	4-4	4

,		481
,विशा		۵۰۵
वय चडेविश्मेर वर्गा नागः	***	3-1
चव दक्षप कीर्तापि जानः	•••	
व्यव क्षेत्रकीषि वागः	141	203
, क्रथ जब शानिः	***	27.
ঁঅৰ ৰাত্ৰা ভাগত ফল কৰনং	•••	224
অথ ভড়ডান:	•••	<b>(4)</b>
অধ সূর্ত্তিপঞ্চর স্থাসঃ	•••	77.
जब देखित्र छानः	***	778
অৰ কিয়ীট ভাস:	***	25€
चर्य स्वामि छात्रः	•••	<b>(A)</b>
অথ করাক স্তাহ্ত	***	230
अथ व्यक्त छ।मः	•••	<b>ب</b> ي
অপ শীঠ স্তাসঃ	•••	<b>d</b>
অধ ব্যাপক স্থাদঃ	• • •	224
ष्यरं स्नाम कनः	***	221
ष्यथं शानर	•••	<b>A</b>
व्यवसान कनः	•••	279
অথ প্রকারাস্তর গানিং		<b>de</b>
অপ প্রণবায়ক ঈশ্বর নিরূপণং	•••	2,0
অপ প্ৰণ্ড হৈ:	•••	ক
অথ অৰ্ঘা স্থাপনং	***	ર્ગેક્ક
অধ বহুনাদি কলা ভাসঃ	***	ঠ
व्यथ जीवाश्व मुखानमेनः	***	248
অথ অৰ্থানি পাতাণি	•••	ऽ२∉
অথ অশক্তাবেক পাত্ৰং	•••	بق
व्यथं अर्घाति स्वापि	***	<b>3</b>
অৰ্ অন্তৰ্যাগঃ	•••	758.
व्यथं श्वा रवः	***	521
অৰ গুৰাদি পীঠ দেবতা পুৰা	. 197	) <b>9</b> }
व्यवं शाहकाणि मूजापर्यनः	• • •	730
<b>चर्च पूज्रां नक्तर</b>	***	<b>a</b>
चर्य मान्याम यदः	•••	১ <b>৩</b> ৬ ৯
অথ প্রধান পূর্বাক্তমঃ	•••	<b>à</b>
অধ নীতা লক্ষণাদি পুৰা	444	201
जन जनारावितन श्वा	•••	) OF
चर अनदारदर भ्या	•••	169

বিশ্ব		751
व्यथ प्रमीपनीशंबनानि	•	783 .fai
चाव देनरवद्या भावाः	• • •	788
व्यव देनर्वरागार नर्ग व्यवादः	111	à
ष्यथं नीतासनमञ्जः	•••	. 38¢
ष्य ५ ८ हो यः	•••	٠ آق
অথ এক্ষাৰ্পণ পূৰ্ণাছতী	***	28₽
ष्यं १क कि कि के श्रेष्ट	*	78%
व्यथं डेव्डिडे ममर्पनः	•••	4
অথ প্ৰসাদ আলাকাৰ:	•••	2 « •
অপ বন্দনা	•1.7	
ज्यं कहे। त्र व्यनामः		ري ر
चार्य व्यक्तिनः	•	, ५ <b>८</b> ३ ५ <b>१</b> २
ৰাধ ক্ৰাই।জ্ৰাঞ্জ :	•••	
चर्य व्यूपेर करता क खतः	•••	ં <b>લ</b> ક
অপ বামবল্লভ। স্তোত্ৰং	***	349
व्यथ मन्नोठः	•••	347
অথ কপি মৃদ্রা	***	ري ري
অথ প্ৰাৰ্থনা	•••	S)
ष्यर्थ भीरमामक आश्रव	**	26%
অপ ভার্থ ধারণং		3 20
অৰ তুলসাৰ্চা	***	<u>.</u>
ष्मथ चाजिः नमभवाधाः	•••	2 2 3
অপ ক্ষমা প্রার্থনং	***	<u>.</u> 54
ৰাণ কথাৰ্পণং		ر ا
অপ আৰু সম্পূৰ্ণ	•••	ر ا
जाय जानीकाम अर्गः	•••	ু ১ ৮৩
<b>जर्थ रिमर्क</b> नः	•••	<b>3</b>
व्यथं निवनमा वर्षकांश क्वांश		351
অথ প্ৰাণাদি পাঠ:	***	آفي
অথ শরন বিধি:	••	ب ئ <b>ند</b> ى
ष्यथ (डाबन विधिः	***	<b>&amp;</b>
व्यथं जाश्च नवन विधिः	***	39.
व्यथं जीमःमर्ग विधिः	111	<u>م</u>
व्यथ भूवण्डवन विशिः	-	\$13
অথ হান নির্মঃ		<b>A</b>
व्यथं रुवियातः	•••	215
		•

# ( id. )

विवय		शृक्षा
অথ বৰ্জনানি	***	, <b>3</b>
अथ ज्ञान नित्रभः	•••	3 40
অথ কুর্ম্ম চক্ষং *	•••	598
' चथ जामन निषमः	•••	39 <b>6</b>
ष्यव मानानिक्षणगर	•••	590
জাগ লাপক্রমঃ •	***	2 42
चर्ष भकारण है डिकर्स्ट वार्ड	•••	>₽4<
चर्य चर्म इन्छ श्रुवन्त दग्नियमः	144	ንሥፅ
व्ययं द्वारा ग्रांसनः	***	2₽€
অথ বট্কৰাত এখন দি আনেং	***	<b>3</b>
অংথ ষট্ৰম্ম নিয়ম:	•••	ঠ
অধ কুণ্ডানি	***	2F <b>@</b>
অথ বাহুনিয়মঃ	•••	de la companya de la
অপ লপ নিয়ম		<b>S</b>
অপ ঋড়নিরম:	4	367
অব্ধ দিছ নিয়ম:	•••	٨
অপ ভিপি নিৰ্ঃ:	***	: 64
অথ নানাবিধ অয়োগেণ নানাবিধ ফগ ল	গ্ৰে ক্থনং	ক্র
তাৰ হাৰ্য যন্ত্ৰ	•••	\$61
অথ দিভীয় যন্ত্	•••	₹0•
অংথ তুণীরং সন্ত্রং	•••	Ŕ
<b>অপ চ</b> ুৰ্ণং বয় <b>ং</b>		20)
অথ পঞ্মং সন্থ	•	२०७
অগ্ৰহ্ণ :	••	> g
<b>अद्भाशका</b> त्र		<b>2</b> 03
স্থ স্টুমণ সন্ধং		ঐ
ভাষে যথ ধারণ নিয়েমঃ	•••	الم و د
অথ চৈত্রমাশ রু ছাং	***	८०६
जन (म्राजारम्यः	•••	<b>Æ</b>
व्यथं ज्योशयनवयो याहाबाह	•••	٥١a
শীরামনবমারতক্ত নিত্যতাদি বিচারঃ	***	ক্র
অপ গাম নৰ্মী ব্ৰস্ত ব্যবস্থ।	•••	454
जब देवस्व <del>ग्ज</del> नर	•••	⇒2e
<b>જા</b> ય <b>જા</b> હિનિધિઃ	***	<b>426</b>
क्षथं कहेगी इन्छ। १		€2₽
चर डेनदान निर्देशन मञ्जः	***	772

विषय		기름단
তাপ সহার:	***	۾
ত্মথ সৃষ্টিনির্সাণং	•••	خي
व्यथ मेच श्रीरुक्त।	••	>>0
অথ সর্দ্ধতোভন্তঃ	•••	२२১
વ્યા બીઠેબુલા	14.6	<b>ે ર દ</b>
<b>অথ স্থানং</b>	•••	<b>d</b>
જાય બૃક્ષા વિધિ:	***	<u>*</u>
অপ স্কিংগন ব্ৰহং	•••	२ - १
অথ অকিঞ্ন এতে:দ্ব:পনং	•••	406
অথ সমর্থ ব্রচোদ্যাপনং		<u>ئ</u> ي
ष्यथं महरनाः स्व		<b>(2)</b>
অথ বৈশাখ জোষ্ঠকুতাং	•••	÷ 55
অপ আ',চি কুতাং	•••	२७७
অথ হবিশয়ন কুত্যং	•	÷ 09
অণ চাভুগ হিল বুড:	***	ঠ
অথ শর্নে ভ্যাঞ্চ দ্রবাণি	•••	ى ق
অথ চবিষা ভোজ্যানি	***	﴿غُ
অথ শাৰণ কুডাং	•••	س و د
অব্প'ৰত্ত রোপণেংসনঃ		(ગું
অথ পৰিত গ্ৰুগ	••	~ A •
অ্থ প্ৰিৱ :বাণ্ণবিধঃ	***	·~>
कार्य छ। उसके जार	***	ન વ ₫
ভাগ লাখিনকুত্য	***	235
অথ কাৰ্ত্তিক কুচাং		<b>२</b> शक
অ্থ বংগাৎস্বঃ	***	. <b>ĝ</b>
অথ ত্রৈপুবেংসবঃ	•	0.72
অথ অগ্রহায়ণ কুতাং		(g)
অণ পৌৰ মাথ ফুড্যং	***	463
অপ ফ'ব্ৰুণ কুতাং	•••	ঐ
অংথ অধিমাস কুতাং	•••	२० व
অথ একাদশী বসক্ষাং	•••	224
অপ এীরাম কবচং	***	~ @ ?
অথ গ্ৰন্থ কৰু বাবেদন	• • • •	ፈን s
হুখ স্মাপ্তিঃ।	* > *	÷ % e

# बागक्निका।

्राध्यः भडेनः। स्राध्यः

## गक्रलाइत्र भा

**'उँ वामह**स्ताय नमः।

তর্ত্থ সংস্তিবাবিধিং ত্রিজগতাং নৌনাম যক্তপ্রভো র্যেনেদং সকলং বিভাতি সততং জাতং শ্বিতং সংহৃত্ত । যশ্মিমো নিগমা ভবস্তি নমতাং মানং ববাধীখনে তং বন্দে সহজপ্রকাশমমলং শ্রীরামচন্ত্রং পবং ॥ ১ ॥ বিশ্বব্যাপিতনোঃ শুভা রবুপতেম্ ত্রিব মৃত্তিপ্ত দো-বাক্যার্থপ্রতিবোধনকচভুবঃ শান্ত্যাদিশীলঃ শুচিঃ।

> नक्षविभिद्यन्यानः व्योत्रावरण विवासिणः । वाद्यन्या समार्थश्यम् ठाकवृष्टिः व्ययम् ॥ ) : गण्यप्रिवश्यम्बन्निः विकायमः सम्बद्धश्यक्षम् । विश्वाक्षम् विक्षण्यस्य । विश्वाक्षम् विक्षण्यस्य ।

श्रक्ति निर्मिष्य गठन गिमालिन छए स्थान्त स्थान है तिन हाइ सम्बादक्रण महान्ति वितिह्स्त । यात्रात नामि जिल्लास्क्र मण्यान नाग्रेड छिडाइ छिडि. दिनि छन्टिइ एक्स भागत निन्दान निहान, निन्दाम क सभ्या, आभि तिने श्रम् क्षानि बंग्यार है हैश्रम स्वरण श्राम्भान मस्तिशान निर्माग्रेक श्रीनाम्हण्यान क्षामा क्षान । ।

বিনে সাক্ষাৎ অগব্যাণী কলেবৰ বপুৰাবৰ প্ৰতিমূৰ্ণ্ড, পাক্যাৰ্থেৰ দুৰ্ভীক্ষান বিৰয়ে নিকান্তনিপুন, পাকপ্ৰস্থাতি স্বাচাৰ্থিত, সোহজুপ তিমির

### त्रांनाकेन्ड<sup>(</sup>क्रफ) र

অজ্ঞানাত্ম-নিবারবৈক্তরণির্বিক্সানচিত্তাথণি- ১ নিত্যানন্দপনৈক্তৃবিক্ষয়তে শ্রীমান্তুক্তা মুনিঃ ৪ ২ ৪

त्याक्ष वाक्षार्थ इति विश्वास्त्र छ।
विश्वास वाक्ष्मार्थ स्था स्था । विश्वास वाक्ष्मार्थ स्था । विश्वास व्याप्त स्था । विश्वस व्याप्त स्था । विश्वस्था । वि

পূর্বকান্তরভাপনীরমধিলং করং বরং মারুজ জন্মাগন্তাবশিষ্ঠনামসহিতাঃ করাংত্তথা সংহিতাঃ। শার্রংমন্ত্রমবং মথা কুবলবং তালোভ্য গীভাদিকং-জীরামার্কনচল্রিকা কলিমলপ্রধ্বংসিকা প্রোচ্যতে।। ভঙ্গপ্রস্থাত্বনানাবক্যেরের ভ্সংস্কৃতিঃ। সৌকা-বার্থিং জেমঃ সম্যক্সংক্ষেপে প্রভন্ততে।

লংখারের বিহিন সমল,বিজ্ঞানবিবরে চিস্তামণি, এবং নিজ্য আনক্ষের মিকে-জন, দেই ভগবান্ সুজুল সুনি নর্কোৎকুটয়ণে বিরাজ করেন। ২।

বাধাতে বেলাফাদি দর্শন শাল্পের বাক্যার্থ বোধদ্ধণ কেশরী কেলি করে বিধার কার, জোধ, লোভ, মোধ, নদ ও মাংসর্বারূপ গ্রহণ প্রত্যা-প্রত্ম করিছে পারেলা, বাহাকে আগ্রহ করিরা পঞ্চিত্রণ প্রত্ন আনদ্দ পদ আগ্রেক্ত্য, আমি সেই প্রত্ন গ্রহক্ষবনকে আগ্রহ করি। ৩।

প্রভাগনার, উভরতাগনীর, মারত সংহিতা, ত্রন্ধ সংহিতা, অন্ধলা সংহিতা, বলিঠ সংহিতা, গীতা এত্তি ধর্মণাল্প এবং নিধিল মন্ত্রাঞ্জ ইতান্তিত কুম্বান্তের ভার আলোড়িত করিয়া আমি এই কলিকসুম্বিনাশিনী রাম জনপ্রান্ত্রনা প্রাণমন করিতেছি। আমি এই প্রত্যে কর্মণাল করিত কিছুই লিখিতেছি মা উলিখিত ধ্যাণাগ্রেক বিভন্ন থাকা করিই নোলা-বাার্থ ক্রমান্ত্রসংগ্রহ করিয়া এই পুক্তর ক্রমান করিছেছি।

# प्राथाक्त्रक्ष्मिकः ।

# क्राटक वर्षम् कक्ष गणनः कम्मानग्रहारः । . **44 67844: |---**

भारका शाकः स्मीनक विमीतः ७६८१मधान्। ७६१pis: एथानिक: अविभिन्न: एतुविमान्। बाक्षमी शान-निर्कण मञ्ज्यविभावतः। निर्धशस्यदर् नदका अस्तिका-क्षियारक । देखि श्रेष्ट्रनंबन्धः।

### चाथ निवासकार ।----

नारका विनीजः स्थापा व्यक्तारान् वात्रवक्रमः। नमर्बन्ह कुनीनण्ड शास्त्रः मक्तिर्छ। धनी । धरमानिश्वरेनव्याः শিব্যো ভবতি নাকথা। শুকুতা শিষাতা চালি ভয়োৰ্ক্ত-नवनानजः। ज्योराजोकः नावनः धरः।—नम्धः काष्ट्राः শিঘাং বর্ষমেকং পরীক্ষয়ের। রাজ্যি চামাত্যলো দোবঃ

সাধ্যমেক কাৰ্য্য সম্পাদিত হয় না ভাগতে সাল কভিলাহী, সাত देखियानि तथनतीन बहेया चय वर्णावृत्तीत्व (क्रम मिक्क, कृतीय-- मदरमश्राक (क) नाठाववण. विमवी. निर्मानर्थभावी व्यर्थार चनीव व्याठाव विक्रक পাर था १ महाराष्ट्र कृषिक महन्त्र, महाहाइत्रक, विशाधनामा, शृक्षक्रिक, कर्षात्रे, नवुष्टिमानी, अवाध्यमशात्री, वेडेश्वर अ क्रियाटक आनक, महत्त्वरहा भारतमी, निश्रहासूधार नंक -चि । किरदार प्रशासन अवायन वाकिहे अक्रभटनद अधिशामा इव ।

भनखन निर्दात गक्ष कथिक दरे<u>एकर्ष,</u>--नांख नगांविक्वन्यूक, विमन्त्रीन, नवाडात्रक, माञ्चार्य वृत्रविचात्री, स्वथावी, क्षत्रवादि कार्या नवर्व, त्रवान-शाय, अखित, निर्माण हित्रा, धनवान, धनेत्रश वाकित्वरे विवा कतिक स्त्र, हेडाब अञ्चल क्षेत्रारव मिन्छ लाक्टन निया कविरव मा । यहि क्षेत्रकः काम হংগের ভাষাতে এক কি শিষ্য করিতে হয় তবে এক ও শিষ্য উক্সই এক মধ্যই পৰ্যন্ত এক ছালে, বসভি করিয়া প্রশারের আচায় ব্যবহার পরীকা করিছা এক लिया वीकान स्वित्य । नावनश्वादर निविष्ठ स्वाद्ध (व.-नम् क्ष्म विकि स्वेदनन

পদ্দীপাপং বভর্তরি। তথা নিয়ার্ভিতং পাপং তমঃ প্রাপ্রোতি নিশ্চিতং। শৈবাসমে শিববাক্যং।—ভরোঃ-শ্যাসনং যানং পাদৃপান্থকপীঠকং। স্থানোদকং তথা ছায়াৎ লজ্জয়ের কদাচন। তত্তিব চ।—ভরোরত্রেপৃথক্ প্রামৌত্তাক বিবর্জয়ের। দীক্ষাব্যাখ্যাং প্রভূষক ভরো-রত্রে বিবর্জয়েরং। ইতি শিষ্যলক্ষণং।

### चय मीकाशकत्रवर।---

দীক্ষাৎ বিনোপদেশস্ত ছুক্টছাং! প্রথমস্ত সা। পাপ-ক্ষণং দিব্য ভাবং সাধক্য্য করোত্যতঃ। তত্তাপি সিদ্ধ্যা-ধ্যাদিভেদেঃ সংশোধ্যেমানু ।

তিনি অকবংশর পর্যান্ত নিজেব নিকটে শিবাকে বাধিয়া তাহার আচাবাদিব পরীলা কবিবেন। যে হেডুক, অমাত্যক্ত পাপ রাজাকে, ভার্যাকৃত্ত
পাপ ভার্তিকে, এবং শিষ্যোপান্দিত পাপ শুব কে ভোগ ববিতে হয়। শৈবাগমে
শিব বলিয়াছেন — শুব ই শ্যাং, জংসন, বাহন, পাতৃকা, চর্ম্ম পাছকা, পীঠ
কাতৃতি, স্নানেব জল ও ছায়া এই সকল কোন কালেও কজন করিবে না।
শুক্রর নি কটে গাকিয়া পৃথক পূজাও উদ্ধৃত্য করিবেনা এবং দীক্ষাব্যাথাও ও
নিজেব প্রাস্তুত্তা বর্জন করিবে। দীক্ষা সাধকের পাশক্ষর ও দিব্যজ্ঞান
দানক্ষে, দীক্ষা সকল সিদ্দিন প্রধান কারণ, দীক্ষা, ব্যতিবেকে কোন উপ
দেশই কল্পান্ত হয় না অভ্যান করিষা শোধিত মন্ত্রায়া দীক্ষিত হইছে
দুইবে।

मः श्री कि अकार्य मिक्षाि श्रीम क्रिए इब एकः कथिए हरेरछ।
इथा, अथम इः एक्षाण व्यक्ती रक्षि। निर्माण किर्दिन, भरत में द्वांबीनिरक कृतावारण छानि कांग किरिकार किति रक्षांबी हरेर व्यवश्य के छाति रक्षांबीय श्रीकार रक्षांबार के भूकावण छाति रक्षांबार विकक्त किरण रम्बांबाय विकक्त व्यक्ती रक्षा हरेरम । वह रक्षाव्यत अथम यात क्षा, कृतीय यात क्षा, वक्षाण यात है, नमम यात की, विकीय यात के, हक्ष्म यात की, वांगण शाव

### atuisusis . T

### **খণ** সিদ্ধানিভঙ্কিকথনং।----

छत्रस्य नित्य किंदि हण्टा क्रिमिय स्था । श्नाण्ड्य स्थानि नित्य मिन् क्रिमिन् क्रिमिय क्रिमिय

स्थान पार स्थान वर्ष के के प्रकार के विद्या करा कि स्थान के निवास के निवास

भक्षरम्याक्तं म्हाः। स्वायन वस्तः निषः स्वार्थन्यस्थिन स्वयः। भूकाणि त्यायकार्थीस् म्याह्ना नामात्रम्-क्षयः। भिषः भिष्मा यत्यात्स्यन विक्षणार भिष्मायासः। भिष्मप्रीत्यार्थक्षभार भिष्मातिर्वस्ति वाक्ष्यान्। माथभित्या-विक्षण्यः माथाःमात्या नित्रवैकः। छर्ष्णम्य जिल्लेश्वणार माथातिर्वेखः त्याक्षमन्। प्रमिष्मात्यार्थक्षभार छर् मात्या विक्षणायिकारः। छर्ष्णमित्यार्थक्षभारः

# व्यथ निषामिठकः ।

चरनर	উভগ	षायम ७५५
७ ७ र	* * *	वे च भ । के का म । कि
में यम	4 7 5	हेश थ सहय
শত শ	जे हे स	खार न व ं व्य छ त्र

এই রূপে বোদ্দা কোঠার পরিপূর্ণ একটি কোঠার উক্ত বর্ণ সকল লিবিরা বেই কোঠাতে মগ্রমনীভার নামের প্রথম বর্ণ দেখিবে দেই কোঠা হুইতে ময়ের প্রথম বর্ণ বেই কোঠাতে দেখিবে দেইকোঠা পর্বান্ত দক্ষি-পাবর্ত্তে দিল্ল, সাধ্য, স্থাসিদ্ধ ও আরি এই প্রকাষ প্রণম করিয়া প্রকার প্রথম কোঠাকে নিল্ল কোঠা করিয়া মন্ত্রান্তমন পর্বান্ত নিল্ল, সাধ্য, স্থাসিদ্ধ ও অরিপ্রনা করিয়া নিল্লসিদ্ধ, নিল্ল সাধ্য, নিল্ল স্থাসিদ্ধ, নিল্লারি ইত্যাদি বিভাব করিবের। ববি এক কোঠাতে নামের আহি অক্ষর ও ময়ের আদি ٠ و١

খগোত্র। খরিনিদঃ হতান হস্তানরিনাধ্য কর্মাঃ। তৎক্ষিত্র পদীয়ত্ত্বিহুছি সাধকং।

विक्रित जग देवर्गान् चन्नवर्ग स्वाम वकामा विक्र देनस्था।

विक्रित जग देवर्गान् चन्नवर्ग स्वमण्डः । छरेषव मज्जविकानि

जजः माध्यम । वर्ष जां जां वर्ण विक्र व

অক্ষৰ থাকে ভবে শেই কোটাজিজ কাতোৰ ৰৰ্ণে<mark>তে পুৰ্বোক্ত নিয়ন্</mark>ৰ পুণনা কবিৰে।

স্মারভ্য সমং ধাবং প্রযোজ্যে । আদ্যন্তরো: সিশ্বরণো
মন্ত্রে যাস্মন্ বরাননে । আচিরেণৈর কালেন সভবেৎ সর্বানিছিল: । সাধ্যান্তাদিযুলো যন্ত সোহতি ক্ছেব্ দিধ্যতি ।
আদাবন্তে স্থান্তরা স্প্রকামবিভূতিদঃ । আদাবন্তে
রিপুর্বদ্য ভবেত্যাজ্যঃ স মন্ত্রক: । স্থানত্রয়গভারির্ব্যো
মন্ত্রো মৃত্যুদ্মোমতঃ । শক্রুর্বতি বদাদো মধ্যে দিছা
নাল্যে মৃত্যুদ্মোমতঃ । কন্টেন কার্য্যানিছিন্ত্রদ্য ফলং স্থল্পমের
ভবেৎ । অন্তে যদি ভবতি রিপুঃ প্রথমে মধ্যে চ ভবতি
সাধ্যান্ত্রাং । কার্যাং বিলম্বিতং সাথে প্রশান্তির স্থান্ত্রিক পরীক্ষয়েদ্যস্থাৎ ।
বহ্রায়াদপ্রভূলিতং মন্ত্রং বর্জ্রেম্যতিমান্ । নৃসিংহার্ক বি-

অনম্বৰ প্ৰকাৰাম্বৰে শোধন প্ৰণালী বুলিতে:ছুনু নাধকের মাতা পিতা ७ छाडि अइंडि कईक कठनाराउ वर्ग मक्य धरः भाषा वर्ग मक्ताक चववासन (छान् भूगक् भूगक् करिया गहेरत। थ, था. >, >> € अस्थाव विमर्भ विस्ता भूलीय डेलधानीय व्यक्ति छान क्रिया वाक्ष्म्य महिल वाक्षम, चार्यस महिन्ठ चत्र, आमावर्णन मधिक आमा वर्ग, विकीय वर्णन महिन्छ विकीय वर्ग **बहेक्राल बन्छि बन्छि नामवर्गक मध्यप्ति महिल मार्गाधिक स्वित्व ।** माल किया जामरकत नारम विषय वर्ष इटेबा डिट्रे खटव बजाकत महेगा त्य भवास मम कहेरत जावर भवाय विकास कवित्व। ज्यानात्य मिछ वर्ग कहेता महमाडे यह गर्स्स मिक श्रीन करेट्य । माधानियन बहुमाधान मिक, जालाहरू क्षतिक्षवर्वभन्न मकन भरनाक्ष्ठीष्ठेश्चन वृद्द । आनात्य विश्व वृद्देश काश्चाक স্থান এরণত অরি হইবে মৃত্য ভুলা ঝানিবে। আদিতে শক্র, মধ্যে সিদ্ধ जात्म मांचा बहेरन कालिकांडे कार्यामिकि कन व कालाज बन । कारत विश् अर्था प्रवास माना रहेत्व विमाय कार्या निकि रहा अरेकार निकाति श्रुतिकाति व्यक्ति वर्कन कतिरतः नृतिः इ, स्पा, श्रातात बीक, (ही) व्याप्त प्र कृते मह बार करता अर्थ करिता मिक्कानि (नांधान वादालन नारे। जनः प्रश्न तकः द्वीत्रक अपन्य जनः विष्यष्टि काषायव अविक काष्ट्रक प्रकार पहिन

### सम्बद्धिनहिंद्धाः ।

বরাছাণাং প্রদাদপ্রণবদ্য চ। দপিগুক্ষরমন্ত্রাণাং দিদ্ধাদী-নৈব শোধয়েৎ। স্বপ্রলকে দ্বিয়া দতে মালামত্রে ত্রিবীক্ষকে। বৈদিকের চ স্কেব্র দিদ্ধাদীলৈব শোধয়েৎ। ইতি দিদ্ধা-দিশুদ্ধিঃ।

यक्नानाक्त (उनर वकार्या मिल्नामिक । उथा हिन्द्या ।—नागृशिक् कनाकामाः अकाम्मिन्यः क्रमार । अक क्रमार । अक क्रमार । अक क्रमार । अक क्रमार । अक्रमार ।

प्रश्, खाण्यी भवत देव मित्र भव अहे सकत अहत विशिष्ट व्हेटल विश्वामि विश्वादिक च्यावक करा भागे। शिक्ष विश्वामि वृद्धि ।

 কানীয়াং স্কুলং হি তং। ভৌমদ্য বারুণং মিত্রং
আগ্রেয়ন্যাপি মারুতং। মারুতং পার্থিবানাক আগ্রেয়কান্ত্রনাং রিপুঃ। নাভদং স্ক্রিত্রং দ্যাদ বিরুদ্ধং নৈব
শীলয়েং। চকারাং আগ্রেয় পার্থিবানাং রিপুঃ। ইতি .
স্কুলাম্যকুলভেদঃ।

বালাদিভেদোহপাপরো মন্ত্রাণাইভিধায়তে।
আরহৈন্তকাক্ষর মন্ত্রং বালা আবোড়শাক্ষরাথ। ততআবিংশতেঃ প্রোচান্ততোহন্তে স্থবিরা মতাঃ। স্বাহান্তাঃ
ব্রীপ্রপাঃ স্থানি। হন্তাশ্চ নপুংসকাঃ। হৃংফড়ন্তাশ্চ বে
মন্ত্রাঃ পুনাংসতে প্রকীতিতাঃ। শন্তাত্তে ত্রিবিধামন্ত্রা বশ্যশান্ত্যভিচারকে। ইতি বালাদিভেদঃ।

काश्रीविश्व शक्ष दे पा के इस ए वन बहेन क्वाक्त वानन वदः नक्ष कार्यक क्रिक चर १ प्रमास सह खड़े वर्ष छ निरक चाकास वर्ष छ। निर्वा मांपरका नाम्या आहा वर्ष कारमा आधिवर्ष यदि एवक छ दो खक देवतक ( अव- कार्राष्ट्रिक) हर १८व (मेर्डे सहाक चल्ला फालिटव) अधानि वर्ग अवः मामापि वर्ग अक्षर ना प्रदेश पृथि छैड्डिय भवन्त्रव विख्न हा व शास्त्र छात्रा करेतान अहे नव रिडकांक्त व्हेर्य न्यार्थ विविध मुस्के लेडन कवित्व हडाए पालया ध्यकार अवदल कनांछ ए शहन कनीदन ना। कहेकर एक कारांत मिक, কে কাষার বিশ্ব ভাষ্ট কুৰিত ছ্টুটুড়েলে.-- ভৌমবর্ণের বারণ বর্ণ এবং আগ্নেয় বৰ্ণের মাব্যত্রনা মির ১ইবো: জোকাশ বল স্কল্বরেণ্য মিজা গোথিব बर्शन मारूक वर्ग जबर नाकन नर्शन चारधन नर्ग कारधन रूप भाषिन रहीन শক জানিবে। ক্রমান্তে শিখিত সাহে তেওঁ পাথিবে বাক্ষা মিত্রং হৈত্ত্বং শল্পনীবেতঃ অস্ত্রেবাশপরে: শত্ত্মাকতঃ পরিকী উতঃ" এই সকল দশ্বে এই নংগ্ৰেছ "মাকতং পাথিক নাক আপ্রেমকান্তনাং বিপ্রে धार्षकार्वा करात वारा विलाह स्ट्रेंट (य. आत्म वर्ग भार्थि दर्भंद्र माम इट्रेंग। এবং বাযুৰণ আকাশ ও জলবর্ণো শুফু জানিবে। পাঠকনহা-मद्याप्तराव त्याक्षार्थ अक्षेत्र का का का का विद्या त्या है हाव व्यां छ एडि क्षिराहे महम, बुक्ति भाषित्व ;

# অথ কুলাকুল চক্রং।

वाग् ।	কাধি		<b>'\$</b>	;	<del>የ</del> ለ	*F141*
क्षा का ता	3 3		ر دور دور	;	<b>ات</b>	1 8
{	.4		¥	į	n	72.
4	ચ	ļ	4 <b>9</b> 51	,	بارة. برقب	A.
5	E		ø	•	4	i
	٨	·	٠,	•	ĕ	1
34,	۶,	•	ţ-		٠ .	i 
м [	Ţ		1		٠,	
;	5		4		4	•1
8	باد	,	٠,		*	9

खरेष्मण विज्ञा करिया (भण्डन, --- त्नाम वास्तिन राम गण्डमण स्वष्ट स्वाहित्याताम अदे मध्याक्षण करिए व व्यक्तित किंग, यो ता दि दि (जना ) भण् नाटम । स्वाहित्य १४४ आधिवरा, नेट्ट्र व्यक्ति । यो नाट्यावर, विभाजनाद वो छे-द्यन श्वत्यात मक्ष्या स्वत्या है के नाम न्वाहित नाम्य स्वत्रे भ्रष्ट शक्षण करिए अदिद्य ना प्राण्डनाया । त्विक प्रवाण व्यक्ति

अन्तर मृत्या बालाक (एवं क्यिक इंडेन्स्ट्र वाकाक करण द्यांक्स्था अस्ति वाकाक करण द्यांक्स्था अस्ति अस्

### া বাশিষেলনমাখ্যাদ্যে নক্ষত্রন্থিতিমপ্যথ।

ण त्रा हे के (यमः। छ छ स स त्रुषः। २ २० मिथूनः।

ज के कक हिः। ७ छ निः हः। चर चः म म म ह न काः

केणा। कर्वाश्वना। हर्वाश्विकः। हेवर्ता स्पूरः। "

छर्वाशिकाः। भ नर्वः क्षः। यान्द्रा मीनः। माधीया
कर्वाणाखः गन्द्रार माध्याण्याः। जक्षक्रन्वतास्वनाः

च्युका द्वी ह यर्छन्नमान्ह (मनकाः। वङ्किक्कम्नवस्थः

द्वायका चान्नाकेह्नुत्रस्थ चाक्नाः। हेकि तानि (यननः।

च चा चिनी (प्रवर्गः। ই ভরণীমানুষঃ। উ छ कृष्टिका त्राक्तमः। आ अ ১ ৯৯ রোহিণী মানুষঃ। এ মৃগশিরো (प्रवः अ चाला मानूषः। ও উ পুনর্বহুঃ (प्रवः। क পুর্বাদেবঃ। अ গ আলো সাক্ষঃ। ও উ পুনর্বহুঃ (प्रवः। क পুর্বাদেবঃ। अ গ আলোরা রাক্ষ্যঃ। ঘ ও মঘা রাক্ষ্যঃ। ত পূর্বাফ্রণী মানুষঃ। ত জ উত্তরফল্পী মানুষঃ। ব এঞ হন্তা (দ্বঃ। ট ঠ চিক্রা রাক্ষ্যঃ। ভ স্বাতা (দ্বঃ। ত গ বিশাধা রাক্ষ্যঃ। ত ও দ অনুরাধা (দ্বঃ। ধ জ্যেন্ঠা রাক্ষ্যঃ। ন প ফ মূলং রাক্ষ্যঃ। ব পূর্বাঘাঢ়া মানুষঃ। ভ উত্তরাঘাঢ়া মানুষঃ। ম এবগা (দ্বঃ। য র ধনিষ্ঠা রাক্ষ্যঃ। ল শতভিষা

# 

সাধকের ( মুদ্র প্রহী ছার ) জনবালি ছইতে মন্ত্রালি অর্থাৎ বেই বালির কোটাতে মন্ত্রে আদি অকব দৃশ্য ছইবে সেই বালিপ্যান্ত গণিবে। জন্ম রাশি হইতে মন্ত্রালি যদি এক, প্রথম ও নবম হর তবে সেই মন্ত্রাদ্ধর সদৃশ হর এবং বিতীর, ষঠ, ও দশম হইলে দেবক সদৃশ বশভাপন হয়। আব ভৃতীয়,একাদশ ও সপ্তম ছইলে পৃষ্টিকাবক হয় এবং হাদশ, অষ্টম ও চতুর্থ মন্ত্রাশি ছইলে বিনাশকারক হয়। অতএব রালিচক্ষে বিচার করিয়া হাদশ অন্তম চতুর্থ প্রিভাগে করিয়া মন্ত্রহণকরিবে।

সংপ্রতি নক্ষতভূতির প্রধানী ব্লিভেছেন। অবিধরেও একটি চক্র অহিত করিতে হইবে, কিন্তু এই সংগ্রহক্রা চক্রটি কি প্রকাব করিতে হইবে এইসম্বন্ধে বিশেষ কিছু সংগ্রহ করেন নাই, আমি পাঠক মহাশম দিগের সজোষার্য অভাগ্রহ হইতে এইসম্বন্ধের কভিপর প্রমাণ উদ্ধৃত করিয়া দিগাম। गार्थमः। व भ पूर्वविष्ठाण्यभा गर्छाः। य म इ छेखत्रणाण्यभा गर्छाः। य यः म क दावजी त्मवः। ध्वषाः यथार्याश्यः नामायुमादत्व स्थान्यम् नीयः। धाष्ट्रित्वान श्रम् भाषकाकत्वः स्थीः। खन्म मण्णिद्यप्तस्यः धाष्ट्रात्रः माधकाकत्वः स्थीः। खन्म मण्णिद्यप्तस्यः धाष्ट्रात्रः माधकाकत्वः स्थीः। स्वर अत्रमाखक खन्मानीन भूनः भूनः। विभव्दः धाष्ट्रातिः भतिष्ठारं स्वरोधिनः। दिश्वतः।

" ইন্দ্রেক্ষণাথান্ত, বেখাং কুণ্যাচ্চতুরীং।
দশ বেগাং গশ্চিমাং স্যাং কর্জধা। বীরবন্দিতে।
ক্ষিত্তাদি ক্ষেত্ৰৰ বিলিখেজারকাং প্না:।
ক্ষীকুনেএচল্লান্ড অপ্নেয়ন্ত গগ্যে প্রিন্ধে।
দিক্নেএচলান্ড অপ্নেয়ন্ত গগ্যে প্রিন্ধেনা।
মধাদিকোহলিক্ষেটান্ত বিলীয়াং নবভারকং।
বিভিন্ন ক্ষিত্তান্ত ব্যোক্ত নেএবিক্ষকান্।
বেদেন ভেদিতান্ বর্ণান্বেবভাবাং গভাঃ ক্ষমাং।

উত্তব হইতে দক্ষিণাত্র চাবিটী বেখা আহিও কবিয়া তন্মবো পশ্চিমান্ত্র দশটী রেখা আহিত কবিতে হইতে ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞান সঞ্চল নাম্প্র করিছে ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞান সঞ্চল নাম্প্র করিছে ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞান সঞ্চল বিংশতি নক্ষর সকল প্রথমবেলান্ত্র ক্রমে তিন শ্রেণিতে বিজ্ঞান প্রথম বেংগালে বিশ্বিমে, যথা, — প্রথম কেন্ত্রোতে—ই জন্মী, মান্ত্রঃ । অর্থান অধিনী হইতে আগেষাপর্যান্ত ক্রমে নয়টি নক্ষর মৃক্ত যে প্রথমপংক্রির স্টি বর্ন ভাষার প্রথম আধিনী নক্ষর স্কান ক্রেটিতে ভ্রটী বর্ণ (আআ) জন্ম নিক্রমে ক্রিটিতে ভ্রটী বর্ণ (আআ) জন্মী নক্ষরিত ভিন্তী বর্ণ (জাজী জন্ম করিছিতে ভ্রটী বর্ণ (জাজী জন্ম করিছিতে ভ্রটী বর্ণ (জাজী জন্ম করিছিতে ভ্রটী বর্ণ (জাজী জন্ম করিছিতে ভ্রটীটি, একটি বর্ণ (জাজী করিছেতে ভ্রটীটি, একটি বর্ণ (জাজী করিছেতে আইটি, একটি

### वादाक्तिक विका

एश्वादां का विष्ठियाः क्रितां विष्ठियाः । कर्माणां विश्वादां विष्ठियाः क्रितां विष्ठियाः । कर्माणां विश्वादां विष्ठियाः । कर्माणां विश्वादां विष्ठियाः । कर्मायाः निष्ठियाः । कर्मायाः निष्ठि विश्वाद्ये व्यादाः । कर्मायाः निष्ठि विष्ठि । विष्ठि विष

অথর্থন শুদ্ধিস্ত কথাতে সিদ্ধিদায়িনী।

ষট্কালকালবিয়দগ্রিসমূদ্রবেদথাকাশশ্রুদহনাঃ থলু

নাধ্যবর্ণাঃ। যুগ্রন্থিপঞ্বিয়দ্ধর্যুক্শশাস্ক্রেয়ানিবেদ-

শ্বনাতিতে প্ৰম গ্ৰীতি, ভিল্ল দাছিতে মধ্যম জীতি, নাচৰও রাক্ষে মৃত্যু, তেৰতা ও রাক্ষ্যে শতংহত হল জানিবে। মৃত্যুতি গুৰুনাই এম ক্ষিত

त व्हेंकि तर्ग निश्चित । अन्य यन्। कहेंन्ड (आहे। भगा स नव कांत्रकांकि ह विशेष निश्चित स्व ति कांकित कराम य हकेंद्र आतं से कित्री केंग्नि, जकेंग्नि, कहेंग्नि, क्वित्रा वर्ग विश्वय करित्र । अन्य विश्वय । अन्य विश्वय करित्र । अन्य विश्वय विश्वय करित्र । अन्य विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय विश्वय । अन्य विश्वय विश्यय विश्वय वि

<sup>&</sup>quot; चकारके। भवना औडिम बामः । तन्यमञ्जः । वरकामाञ्चलक्षांत्राच्या देवस्य मानवरमवरवाः ।

Pail with		CHA: SIRN:	षश्वाया (बाड)	307 	(नवः वाक्यः	<b>देव</b> (अपछी	1000	A M W W W
श्रेन व्य	-¢9		विणासा	ور د د	K K K	श्रद्धाम	ji .	बाक्स सम
<b>本</b> [左]	Æ	क अ अ म	স্থাত	μv	(4)	ँडिवा	15	वाक्रभः
स्अभिका	<b>y</b>	# P P P P P P P P P P P P P P P P P P P	fsai	.10 10	A A	A	lo lo	नाक्त्र:
. आहिती	<b>派</b>	A BY	18. S	==: श्र स्ट	*** 	विवर्ध	W	(मृतः
	લ્ય	A STATE OF THE STA	30 cm 30	jin Ma	ic Re	डेक्बाव्ह	(1)	म्
E 20	AGY	के के जिल्ला	नुक्छा हमी है वर्ष हो	מ'	न् विद	श्रुक्षामाञ	lo-	100 mg
षाविभी	ख	G4:	is it	la. m	अस्य भ	E	ii) Z	A 15.

ब्रेडिट्यू यथा—सन्, मन्नम्, विशव, क्या, खाछावि, नाधक, वंष, मिळा, खा नवस विका धारेकारण नाषरका स्वाग्याचा हरेट्य मरस्य खालम वर्ष द्या नाम्याका स्वाप्य कार्य कार्य व्याप्य वर्ष द्या नाम्याका स्वाप्य कार्य क

हैंम्डियन किन वाकित साम राकाल, करा मलाब स्रवर्ग, कहे वाकि हित्र अहे मह स्रवन करिएक गाहिरा कि ता " प्रतमा करिया रहना राजा ज्ञान स्वकार राजा करिया करिया करिया राजा ज्ञान स्वकार राजा करिया करिया

अवस्तर माइक. व्हेट्य अविच ताइकृत पात मानाइक काजित । दर मकल २० थाएम कालाव कृत्राम समित, ता मनस २५ (मामा कावा कालाव काला

> ्राकारका गामका जात । वर्षामा कृतिका स्वः । साम्प्रदात्मक गामका स्वः । चः । दः । छेत् । वः । स्थल्या अवश्यकारका कृत्रमी क्राम्य हु। प्रदेश कृत्र किरणकृति विकास वर्षाम्य । एन्ट्रमानोक कृत्या दर्गमा कृत्यक्ष विरुध ९ स्वर्गित ।

তাবিটী কোষ্ঠা খারা পাবিস্থারিত অধ্যাদশ কোষে। বাবিষয় আবিটি চ্চাফ নিশাসে করিবে ভাষার প্রথম সং. নগামাং, নগামে কেন্দ্র ই উ. চতুবে নাখায় অবং প্রথমে নান্ধী স্বাধারে স্থাম কচান প্রধানে গ্রাম শশিনঃ থলু সাধকার্ণা:। নামাজ্বলাদক ঠবালাজ ভুক্ত শেষং
ভ্রান্থে বিকশেষমূর্বং ধনং স্যাধ্য জ্যার্থা:।—

যট কালাদ্য হৈছে সাধ্যার্ণান্ স্বরব্যপ্তনার্করেপণ পূথক্কতান্ কর্যা
ভথা সাধকনামাকরাণ্যপি যুগ্যাদিভির কৈর্গণ্যেই। নামাজ রাণ
লাদিতি স্বরব্যপ্তনসমূদায়াই। অকঠবাদিতি বর্গ চতুই মুপ্রতিভ্রাই। অকারাদিঃ আই ইতান্তঃ আই উন্ধান্ত এই ও ও
আই আই। অকারাদিঃ আই ইতান্তঃ অবর্গঃ। ঠাদিফান্তঃ
ঠবর্গঃ। বাদিহান্তো বর্গঃ। এতে একাদশৈকাদশৈকা
দশাক্ষরাশ্চন্থারো বর্গাঃ। অস্মাই অকঠবাই অইভিইতে
উভ্যোঃ সাধ্যসাধকয়োঃ শেষস্যাধিকরূপস্য ঋণং ধনঞ্চ
ভ্রান্থা মন্ত্রং দদ্যাই। ইতি ঋণধনশুদ্ধিঃ।

৯৯ পথ্যস্ত দশটি স্থারবর্ণ লিখিয়া অবশিষ্ট এ অবধি স্থারবর্ণ ও ককাবাদি হ পর্যান্ত বাগ্পন বর্ণ সমস্তকে এক এক কোষ্টার একটি একটি করিয়া বিক্রস্ত कतिरव। এই क्वाउँर छक्षमाश अकामम काक्षेत्र छेनविकाश ५, ५, ७. ०, ७, ८, १, ०, ०, ०, ० वरः ७ धने धनामन प्रम व्यक्तित केशांक 🛢 माधाक तमा कय । ज्ञानब निम्नानाम धकामण दकाक्षीय निम्नानारण २, २, ०, •. •, २, ১, •, 8, 8, 5, धारे धाराम्याँके अक्ष निश्चित धहेमदन अक्षरक मांबकाक वला इस । अहेकन विठात धानानी प्रभूत । -- अश्लीम मरदत चत छ বাজন সকলকে পৃথক পৃথক কবিয়া রাখিবে এবং সাধকের ( সন্ত প্রহীতার) नाम्ब चन्न ख वाक्षन नवनाक शृथक कवित्रा नहेत्व । अहेकन कवित्रा एएक्रव (यर (कार्षाटक माध्यय भूषक भूषक कुछ चन्न व वासन मृश्य वहेरव (सह रसहे কোষ্ঠার উপরিভাগে অভিত ক্ষত্রলকে গোপ করিয়া যুক্তাককে ৮ দিয়া হরণ করিলে অবশিষ্ট বাঙা থাকিবে, তাহা একস্থানে অন্ধিত কবিয়া বাবিতে हरे(व। जनत नाधरकत नामित भूषक भूषक कुछ चत वाश्रम छ दि दि কোর্চাতে দেবিতে পাইবে,ভাগাব প্রত্যেকের অধন্তন অন্ধনক পুর্বরূপ বোগ कतिका ৮ विशा दब्र कतित अवनिष्ठ य अक श्रीकित जाशांक धकशान बाबिश विद्वाद क्विटिंड क्ट्रेंटर, त्य शत्क्व चार्निक व्यक्त मिन्ति क्ट्रेंटर कांटाटक

### बाबार्फन्डिकिका।

# অধ ঋণী-ধনীচক্ৰং

Ŋ	1	H	۲	t	ď	1	٠		ŀ
71		a	,	1		3	•	- 1	١

S	ь	ક		9	8		, 1	,	•	9
<b>181</b>	3	15 A	4	ر در	এ	ğ	9	à	वः	च:
4	બ	গ	च	1 5	Б	•	₩ ₩	ঝ	(h)	73
\$	 . E	 	. et	5	્	स	<b>1</b> 8	न	ล	ফ
4	75	Ą	য	1	થ	4	4	ষ	ગ	₹
٦ -		2 '	,		- '	3		;	3	٠

न्धकाकाः ।

खनी, या भरकार प्राणिकाक न्।न ककेरव काकारक मनी कानित्य। यसि अरक्षय वर्षधाना मृश्युक्ति व्यक्त नामाक्ष करेटक व्यक्ति क्या करन्के मम मानी कहेल एक मम खरून करित्य भरित्य। एका मम यो करनी क्या व्यक्ति महाक्ष प्राणिक करित्य भावित्य। एका ममान्य व्यक्ति कर्मामान्य व्यक्ति कर्मामान्य विकास कर्मामान्य कर्यामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्यामान्य कर्मामान्य कर्यामान्य कर्मामान्य कर्यामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्यामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्मामान्य कर्यामान्य कर्मामान्य कर्मा

नामश्रद्धकानमाङ् मन् क्रावीह्य।

"निष्ठमाञ्चलक नाम जाक्षा समापितावकान ।

बीनर्वक खटका शैक्षा हाळावु (बाकायर क्याः''।

সন্তকুমারীয়ে কিপ্রকাব নামগ্রহণ করিছে ১ইবে ভাগ বলিয়াছেন--পিছা মাতা যে নাম বাধিবাছেন সেই নামেব দেবশ্যা প্রাচ্ডি গে জাতিব

#### অথ রাশিশুদ্ধি: i

রাশীনাং শুদ্ধতা জ্বেষা তাকেচছক্রং মৃতং ব্যয়ং । অরাশে-মন্ত্রাশান্তং গণনীয়ং বিচক্ষণৈঃ। লগ্নো ধনং আতৃবন্ধুপুত্র শাক্রকলত্রকাঃ। সরণং ধর্মকর্মারব্যায় দানশরাশয়ঃ। ইতি রাশিশুদ্ধিঃ।

८य डेशाबि ठाठ। ७ दी शरिजाश कतिया ५% नामित्राज शहर विजिए इडेर्द । बर्क्स डिलाव्यन (व्यून, - मक् अश्रेवार नाम "वान्नित्र" बर्देवार्कि "'त्राम" अञ्चमञ्ज खड्ण कृतिर ७ भावित्य कि ना १ निरुष कृतिश स्नामारण नारमत खाइका कारण कर्मा कर खाँ मुक्त नार्ति कारणस भारताच भा= थ, का = ०. बुक्क , व - र. बा. क. क्षा - र. ह. र. व -र. हा - र. हा - र. हा - र. हा - र. थाहे जाश्रमकत (वाश कर :: >> वा अमा (शक ७ मावा हदन कहिटन व्यवनिष्ठे ज्ञाप ७ शक्ति। वहे क्षकात "ताम" वहे मत्युव वव ५ वाक्रम भूवक् भूगेवा क - मा - म- म - करेंगा भावाभि च - क मा - हे, म = 1, म = 5 हेशफिशदक त्याप करियण २३ वर्षण प्रवास १३१ कविद्रा प्रवास है सामाहरू क थाकिन । बहेकन स्थालिन माधकाक अभागाति र, माधकाक रूप्त माधाः ह नान करेल जिला: 'बार'' अध्यक्ष धर्म' इन्हेन स्वत्याः शालन हक्ष मामक वास्ति "রাম"এইমধ্ এছণ করিছে পারেন: । কিন্তু "গ্রিকায়ে" এইমর গ্রহণ করিছে शाद्य कादम प्रवेशन देशव वर्ग विनाम कविद्य व -- च-- च-- च-- च ध्य ध्वदेशिय वर्षेत्, नामाहर व ब, ३ - ५,४० १, आ व्यक्त, ग्रन्थ, ध्वन्य व, ध्वन्य 8, (मांश कांनरण १२ इन्त ४ द्वारा ६५० कांतरण खदनिते ५ धाकिन, गांगकां व प्रभारत्व केंग्रहार्थ कुला कानित्त :

শনপ্তব বাশিশুদ্ধি কথিও ইই:১৫৮ ইচাটেও প্রেন্থিও শেই রাশিওকই অভিত্ত করিতে হই:৫। ১২৪৪ এক প্রকার ভাষারই আকার। মেব, বুর, মিপুন, কন্ত ট, সিংহ, কলা, ভূলা, বুশ্চিক, বহু, মক্ত্র, মান এইছাদশ বাশি রাশিতক্রাপ্রাবে স্থ স্থানে ক্ষিত, ক্রিয়া স্থ্যতাহার জন্মাশি হইডে আবস্ত ক্রিয়া ময়বাশি

#### व्यथ मञ्जानाः प्रभागस्याताः । ...

व्यक्ति मखरनाया त्य त्ळवा अञ्चलकाच्येतः। निचारस মন্ত্রসংস্কারা: শারদাতিলকাদ্দ । জননং জীবনঞ্চি ভাত্দনং (वाधनः मछर। ज्यां जिस्ति विमनी कत्रां भारत भूनः। তপ্ৰং দীপনং গুণ্ডিৰ্দিশৈতা মন্ত্ৰসংক্ষ্মিঃ। মন্ত্ৰাণাৎ মাতৃ-কামধ্যাছদ্ধারো জননং স্মৃতং। প্রণবাস্তরিতান্ কৃষা মন্ত্র বর্ণান জপেৎ হুধীঃ । এতব্দীবনমিত। তুর্ম ক্রন্তম্বিশারদাঃ। মস্ত্রবর্ণান্ সমালিখ্য তাড়য়েচচন্দনাস্তস।। প্রত্যেকং বাহনা মন্ত্রী তাড়নং তহুণাহত:। বিলিখ্য মন্ত্রং তমন্ত্রী প্রসূমে: कत्रवीतरेकः। उभाजाकत्रमःशारिकर्यग्राम्यारस्य त्राधन्य। खङ्खाङ्कविषात्नन नहीं भङ्गार्गगः थाया। अवश्वभद्यदेवज्ञ-মভিদিঞ্চেদ্বিগুরুয়ে। দংচিন্ত্য মনদা মন্ত্রং জ্যোতিমন্ত্রিণ নির্দ্দেশ্যে মন্ত্রে মন্ত্রাং মন্ত্রী বিমলীকরণস্থিদং। তারং ব্যোদাগ্রিমপুযুগ্দতী জ্যোতিম মুম তিঃ। কুণোদকেন জপ্তেন প্রতার্ণ: প্রোক্ষণং মনোঃ। তেনমন্ত্রেণ বিধিবদেতদাপ্যা-श्रनः युज्र। माजुन वातिना मजुङ्गीनः जर्भनः युज्र। তারমায়ারমাঘোগো মনোদীপন্মজতে। জপানান্য मञ्जमा एशायनः इञ्चकाभनः। देखि मञ्जमः कांत्रह ।

পর্বান্ধ পাল, ধন, ভাতৃ, বন্ধু, প্র, পক্ত, কলনা, মৃত্যু, ধন্ম, কন্ম, জায় ও বার ইহারারা গণন। কবিবে। জন্মরাণি হটতে মন্ত বাণি যদি শক্ত, মৃত্যু অথবা বার হানে বিচাবিত হয় তবে সেই মন্ত গুৰুণ করিবে না। শক্ত, মৃত্যুও বার এই ভিন মানা প্ৰিত্যাক্ষা আর সমস্তই একি।

অন্ত বে সকল বিচার্যা মন্ত্রনোষ তাথা অক্টোন্থ এই ২ইতে কানিবে। সংশ্রতি সারদা তিলক হইতে উদ্ধৃত করিয়া মুরের দুশ্বিধ সংখার কণিত ছইতেছে। জন্ম, জীব্ন, ভাড়ন, বোধন,অভিযেক, বিষধীক্ষণ, সাংগানন,

### অথ মজোদারপ্রকরণং।

মন্ত্রোদ্ধারমথাথ্যাস্যে মন্ত্রাণাং রাঘ্বস্য চ। অক্সক্সাদির্
প্রোক্তং সাধকানাং স্থলিদিং। বচ্ছিছং শমনং বিফোরর্জচক্রবিভূষিতং। একাক্ষরমন্থ প্রোক্তো মন্তরাজ্ঞঃ স্থরক্তমঃ।
একা মূনিঃ স্যাদ্গায়ত্রী চহুন্দো রামোহস্য দেবতা। শীর্ঘাক্রিন্দ্যুজাঙ্গানি ক্র্যাদ্বহ্যাত্মনা মনোঃ। সর্যূতীরমন্দার
বেদিকাপক্ষলাসনে। শ্যামং বীরাসনাসীনং জ্ঞানমুদ্রোপ
শোভিতং।বামোরুগুত্তদ্বস্থং সীতালক্ষ্মণসংযুত্তং। অবেক্ষ্মাণ

छर्नन, मीलनख छाँ छ पहे मनविश मद मःश्वाद । धहेकन कि शकार्य कान भःश्वात कविष्ण दहेरव छात्रा कशिष्ठ दहेरण्ड ।---- माजका यज किया তাহা হইতে মঞ্জের যে উদ্ধার কবা ভাষার নাম জনন সংস্কার। মজের বর্ণ मक्नरक व्यापव ( व्ये ) वाता शूकि क किरलाहे मास्त्र कीवन भावांव कना बहेता। মান্তের বর্ণদক্ষা বিশিষ্ট বাসুবীজ (যং) উচ্চারণ করিয়া চন্দ্র মিশ্রিত লবছারা প্রভাকে যে তাড়ন করা তাহাকে তাড়ন সংস্থার বলে। মন্ত্র অন্ধিত করিয়া মধাক্ষরের সংখ্যামুসারে কর্নীর পুষ্পগ্রহণ করিয়া ভাহাব ৰারা যায়ে (রং) এই পড়িয়া অধিত মন্ত্রাক্ষরে যে আঘাত করা তাহার নাম বোৰন। মন্ত্ৰাক্ষের সংখ্যাত্সারে অবথ পত্ত লইয়া তদ্বারা বতছোক্ত বিধারুশারে অন্ধিত মদ্ধে অভিযেক করার নাম অভিযেক শংস্কার। মনে মনে মন্ত্রাক্তর চিন্তা করিয়া ক্যোতিম্ত্র (ওঁ হে) ধারা আগস্তুক সহজ নারিক धारे मणखा कि ति पार करा छात्रात साम विमनी करना (miles a উচ্চারণ করতঃ কুশোদক দারা উক্তমন্ত্রের প্রত্যেক অক্তর্যক বে প্রোক্ষিত कता देशंत नाम काणात्रन । এवः क्यांकिम (अ क्यांता स्वत्र मध्यर्ग (स र्ख्यन करा छाहात नाम र्खन। छात (क्ँ) मात्रा (हाँ) प्रमा (खैँ) हेर्। बाझ (र मरताकीशन कर। इंशांटक कीशन राज । ध्वर क्शामरता भार्यकान क्यात्र मात्र महश्रक्षि कामित्र । यह मनेविध वाानात्रकहे बाह्यत्र मनेविध मार्थि करका

মান্ত্রানার প্রমিত তেজনং। শুক্র কটিক দক্ষাণং কেবলং মান্ত্রানার কাজনা। চিন্তরন্পর মান্ত্রানং ভাত্রকং জণের কুং। বহিনারারপেনাত্যো জাঠরঃ কেবলোহপি চ। যাক্ষরো মন্ত্ররাজ্যের কুর প্রেলিইফল প্রবং। একাক্ষরো জ্যুব্যাদি স্যাদাদ্যেন যড়কুরং । তারমায়ারমানক বাক্ষবীজৈন্ত ষড় বিধঃ। একাক্ষরোমন্তরাজঃ সর্বাভীইফল প্রবংগ হাক্র শুভ ভাত্যো দিবিধশুভ বুরক্ষরঃ। থায়াদি পূর্ববিজ ভ্রেরমেতে যান্ত বিচক্ষণৈঃ। মপ্রতিতৌ রমৌ বায়ুর্জ ৎপঞ্চার্ণো মন্তঃ স্মৃতঃ। বিশ্বামিত্রো সুনিঃ
প্রাক্তঃ পঙ্জিশ্ছ লোহস্য দেবতা। রামভন্তো বীজশক্তী
প্রথমার্ণনতী ক্রমাৎ। ভ্রমধ্যে হুদি নাভ্যন্ত্রপাদ্যোবিধন্যদের কুরং বুর্ববিদ্যাক্ষর বা পঞ্চার্ণির কুনান্ত্রকং মধ্যেবনং
ক্রতরোর্মলৈ পুশ্লিত সিনে। লক্ষরণেন প্রগুণিত মক্ষঃ

কোনে শায়কং। অবেকমাণং জানক্যা কুতব্যজনমীখনং।
ভটাভানলস্কীর্নং শ্যামং মুনিগণারতং। ল্ক্মণেন প্রতচ্ত্ত্রমথবা পুস্পাকোপরি। দশাসামথনং প্রায়ৎ সম্ভূতীববিভীষণং।
বিজয়ার্থী বিশেষেণ বর্ণলক্ষং জপেমানুং। স্বকামশক্তিবাপ্
লক্ষ্যীতারাদ্যঃ পঞ্চবর্ণকঃ। ষড়ক্ষরঃ ষ্ডুবিধঃ স্যাচ্চভূর্ব্বর্গ
ফলপ্রনঃ। পঞ্চাশ্যাত্তাবর্ণমন্ত্রঃ প্রত্যেকপূর্বকঃ।

সম্ভ্রাপ্তর কথিত হইতেছে। রাম এই ব্যক্ষণমন্ত্র মর্রাক্স এবং স্বর্ধান্তীইকণপাদ। ইহার ক্ষান্তি ও অঞ্চলাস প্রভৃতি একাক্ষণমন্ত্র ভূলা। এই ব্যক্ষণ
কলেব প্রথম ড.র (ওঁ) মারা (জানী) রমা (লানী) অনম্প (ফ্রানী) বাক্
(ঐনী) স্বরীত (বাং) এই কয়টী বীজ পৃথক পৃথক যক্ত কবিলে ছ্য় প্রকার আক্ষর মন্ত্রইবে। ঘৃথা— ওঁ রাম, ভূমিরাম, ক্লীবাম ঐনীয়াম এবং রাম এই ভ্যপ্রকাব আক্ষর মন্ত্র স্বাম, ভ্রমিয়াম এবং গামতের অভীইফল প্রদান কবে। ইহাব চমুক্ষর মন্ত্র বিবিধ—বামচক্র এবং রাম্ভুদ্দ এই মন্ত্রমন্ত্রর গ্রাদি স্থাস প্রভৃতিও প্রক্ষণত ই জানিবে।

বামায় নগং এই প্লাক্ষর মহ, ইহার বিশ্বামির ঋদি, পংক্তিছন্দ, রাম্চত্র দেবতা, বাং বীজ, নগং শক্তি। আক্রাসাদি পূক্ষরং। গানি সপ্। — মপেবলং কল্লতবাম্বা পূপ্দ ভাসনে। লক্ষ্যেন প্রথিতমক্ষঃ কোবেন শায়কং। অবেক্ষাবা জানিকা কুত্রাজনমীখাং। কটাভারলনজীয়াং গ্রামং মুনিলগান্ত্তং। লগানেন প্রভত্তমধার প্রপানেগাবি। দশাশ্রমধনং প্রাক্তং সমুগ্রীর বিভীষ্ণং। এই মন্ত্র এই গানি ক্রিয়া পূজা করিবে। বিজন্নবী এই মন্ত্র লক্ষ্য করিবে ফল প্রাপ্ত হয়। ইহার ধড়ক্ষর মন্ত্র ব্রুবিধ নগা—(১) ও রামায় নমঃ, (২) বাং বামায় নমঃ (৩) ক্রীং বামান নমঃ, (৪) ত্রীং বামায় নমঃ, (৪) ত্রীং বামায় নমঃ, (৪) ত্রীং বামায় নমঃ, (৪) ত্রীং বামায় নমঃ । এই ছয়টি মধ্যের ঝাব ও ভিন্ন জানিবে। প্রথম মন্ত্রের ঝাব ক্ষান্ত্রি, প্রক্রম সাম্যুর ঋষি অগ্লা এবং বৃদ্ধ মন্ত্রের ঝাব ক্ষান্ত্র প্রামায় নমঃ, আং বামাব নমঃ, ইং বামায় নমঃ এই প্রক্রার অন্তর্গান ক্ষান্ত্রী বাবের বাবি

सम्बीवाद्यायथानिक छात्रांनिक मांगरनकथा। श्रीयात्राययोथरेककवीक्षाण्डणं छ। मणु । ह्यूर्वर्गः म जव मांगर वर्ष् वर्णावाक्ष्णियावः। श्राहारणा इरुक्षणं म मणु छा वा करवमत्रः। जन्ना मरणादनक मिककिकिनामृश्चिरवव ह। श्राण्डाः
विभावः द्यार्थणा मुनर्याश्च क्रमानित्य। श्र्य वा काम
वीक्षारमर्विश्वाविद्या स्निर्मानाः। इरमा नाप्तजीमञ्ज्ञक वामछा । विश्व व्यवस्तु क्रावायं (था स्वाणाक्ष्रम् प्राराः।
वीरिक वर्ष् नीव्युरेकर्वा महारेर्व्य प्रमाणक्ष्रम् प्राराः।
वीरिक वर्ष् नीव्युरेकर्वा महारेर्व्य प्रमाणक्ष्रम् प्राराः।
वीरिक वर्ष् नीव्युरेकर्वा महारेर्व्य प्रमाणक्ष्रम् । थार्यवः
महारुव्याम् एन स्वर्गमञ्ज्ञकरः। थार्यवः
निर्दामनभित्रम् । भर्षा वस्त्रमण्डा । यार्याक्ष्यकरः।
वीत्रामनम्बाक्षक्षाचाम् द्याभरणिक्षरः। वार्याक्षक्ष्यकरः।
वीत्रामनम्बाक्षक्षाचाम् द्याभरणिक्षरः। वार्याक्षक्षरः।
वीत्रामनम्बाक्षक्षाचाम् द्याभरणिक्षरः। मर्याक्ष्यनमण्डादः वर्णाक्षरः
कर्षामाञ्चः।

धक धकि वर्ग विम्युक कविना " वामाय नभः " हेहात भूत्यं मात्राण कितिता भक्षाण द्यक्ति यक्षण त्रामभाभ हत्र। च्यात त्राम धहे पाण व मात्र मात्र व्यापित व्याप व्यापित व्याप व्य

যথা সারাদিনজাণাৎ জবাভং বা হরিৎ সারেৎ।
রানণ্চ চক্রভন্তান্তা ভেহজে নতিবুতো দিখা। তারাদিসহিতঃ
সোহপি নস্ত্রন্থাক্ষর শৃতঃ। তারাদ্যন্তগতঃ সোহপি নবার্ণঃ
স্যাদনেকথা। তারৎ রানশ্চতুর্থাক্তঃ ক্রোথাক্রং বহ্নিভর্নগা।
জকীপেহিয়ৎ পরো মন্ত্র অ্যাদিঃ স্যাৎ ষড়র্পবং। গুণবীজ্ঞং
বদেমায়াৎ হুদ্রামায় পুনশ্চ তাং। শিবোমারাসমন্ত্রোহয়ং
বন্ধণিঃ হুবহুপ্রদঃ। অধিঃ স্দাশিবঃ প্রোক্তো গায়ত্রী ছ্লেল্
উচ্যকে। শিবোমারাসচল্রোহত্র দেবতা পরিকীর্ত্তিগ।
দীর্ঘ্যা মায়য়াশানি তারপঞ্চার্যুক্তয়া। রামং ত্রিনেত্রং
সোমার্থারিণং শুলিনং পরং। ছুন্মোজুলিতস্ব্রাসং
কপর্দিনমুপাশ্বহে। রম্যাভিরামাং সোন্ধ্যসিমাং সোমান্বতংসিনীং। পাশাকুশধন্মব্রাণধরাং ধ্যায়েৎ ত্রিলোচনাং।

शांत्रदार वर्गकरः कार्शिक्ष मध्याः रेखः । विवर्गदेखः करेनः 
भूरेलिखिरेनकी शकरेकक् ति । वस्ताः शिक्षः शिक्षः ।

प्रात्तिकाः । कानकी वस्त्र । वस्ताः शिक्षः शिक्षः ।

प्रात्तिकाः । कानकी वस्त्र । वस्ताः विक्रिक्षाः । क्ष्मेखः प्राविकाः । काम्याः विक्रिः । काम्याः नाजां । काम्याः नाजां । विक्रिः । व्यापः । विक्रिः । विक्रिः । विक्रिः । विक्रिः ।

साम्याः माजां। विक्रित्र । विक्रिः । व्यापः । वस्ताः ।

साम्याः मान्याः । विक्रित्र । व्यापः । वस्ताः ।

सिर्णः । सिर्णः । सम्याः । विक्रित्र । वस्ताः । वस्ताः ।

विक्रित्र । सिर्णः । सम्याः । वस्ताः । वस्ताः । वस्ताः ।

विक्रित्र । सिर्णः । स्तिः । सिर्णः । स

অথবা পদ্মপূলা, বিষক্ষ ও জিল ইহাছারা কোম ক্বিতে হয়। ইহার যথোক্ত প্রশারণ হটলে শাখ পদাদি নিধি সকল করং আসিয়া ধনাগারে উপস্থিত হয় এবং মনোবাঞ্চাসিদ্ধি হয়।

আনস্তর দশাক্ষর মন্ত্র বলিতেছেন ।—ছং জানকী বল্লার খাহা এই
দশাক্ষর মন্ত্রেব বশিষ্ট ঋষি, বিবাটছলং রামচক্র দেবতা, তং বীজ এবং
খাহা শক্তি । ক্লীং অকুপ্রভাগে নমঃ ইত্যাদি ধাবা অক্সাস করকাস
করিতে হয়। এবং মন্তকে তং নমঃ, লগাটে জাং নমঃ, হাবর লং নমঃ,
নাজিতে ভাাং নমঃ উক্তে রং নমঃ, জাহুতে খাং নমঃ, এবং পাদব্রে
ছাং নমঃ এই প্রকার মন্ত্রাস করিয়া অ্যোধ্যানগরে রর চিত্রসৌবর্গমগুণে
ইত্যাদি মুলোক্ষ ধান করিবে। ধ্যানার্থ— অ্যোধ্যাপ্রীমধ্যে বিবিধ
রম্বাজি বিরাজিক স্বর্গনিত্তপ, ভারতে ইত্তত দোক্রামান পারিজাত
পুল স্থাভিত চল্রাভপ, ভনাধ্যে পুলকোপরি বিংকাসনে উপবিষ্ট রামকে
দিব্যমানারত্ব বাক্ষর, বানব ও দেবগণ তার কবিতেছেন, মুন্রুল চতুলার্থে
উপবিষ্টা আন্ত্র্ন, লক্ষণ সর্কাল স্বীপ্রণ দুখাস্মান রচিয়াছেন এবং ভামবর্ণ
উপবিষ্টা আন্ত্র্ন, লক্ষণ সর্কাল স্বীপ্রণ দুখাস্মান রচিয়াছেন এবং ভামবর্ণ

(माडिकर । क्षांभर श्रमस्वमनः मर्काखन्रगष्ट्रशिकर । धारव-(धनः खर्णमास्तर वर्गनकममन्त्रभी । त्रांमः (७ सः शक्त्रभान-য়েছন্তে দ্যাদ্বাক্ত্সদরী। দশাক্ষরোহরং মন্ত্রঃ দ্যান্ত্রিকা विद्राष्ट्रे श्रुक्तः इम्बद्ध त्मच्छा त्थाका द्रारमा द्राक्रममर्भनः। व्यारमा वीजः विशेष्ठ मेक्टिस्डरैनवाकानि शृक्ववरः । वर्गग्रामः ख्या शांनः (भोत्र-हत्रनकः विधिः। ममाक्रदांखन्य कृष्णां**८** চাপবাণধরং সারে । ও হান্তগবতে রামচন্দ্রভারে চ एख्यूरको । अर्कार्ता विविधारशामा अधिशानानि शूर्वत् । **অপূর্বাং জরমধ্যস্থ ওদ্ধিধা রামনাম চ। ত্রোদশার্ণ** थागाणि भूक्वर मक्किगमण्ड । अन्छित्रिविधात्रिक्वजनगामः দশার্ণবিং। সভারং জন্তুগবতে রামং জেইন্তং মহা ততঃ। পুরুষায় পদৎ পশ্চাৎ জনস্তোহফীদশাক্ষরঃ। বিশামিত্রো-मूनिम्हाला शांबदः (पर्वका मानाः। प्रभागापर्भागाना शांम-ভদ্রঃ সমীরিতঃ। তারবীজং নতিঃ শক্তিঃ ষড়ঙ্গং কর্মাং खा । मूलमञ्जः (कीनलिक्तः महामन्नममञ्जरः । जीवनास्त्रक नामानः गर्त्वत्नाकहित्रः छथा। श्वद्धश्रमम्बन्दः ह्यूर्शा नमगा वरम् । निम्नशामरमाभवरन खत्रषात्र कु कोकूरक। मर्ताहतमूर्यक्मन मर्साछत्रान विज्ञहित, धरेक्राम बीतामहस्राहक शान क्षिया भूषा क्षिर्व वहे मरस्र भूत्रकार हादिनक सन क्षिर हम।

वरः त्रामात्र भूभागात्व पाश वह अवकृष्टि जास्मत मणाक्षत्र मणा, देहार जन्ना विदि, दिताष्ट्रक्त, वाम स्ववंधा, हर तीव व्यवश्यात्व गिक छ भूतवर व्यवज्ञात्वात्ति किहिट इत्र । वर्ष्णात्र श्वान व्यवश्यात्व विदिश्व भूतवर व्यवज्ञात्वात्ति किहिट इत्र । वर्षणात्र श्वान व्यवश्यात्व विष्ठ व्यवश्यात्व व्यवश्यात्व व्यवश्यात्व विष्ठ विष्ठ

রবাৈঃ হণজিপুলাদৈঃ র্কষতিশ্চ মতিতে। নিষানভেরী
পঠহশঅভ্রাদিনিষনে। প্রতন্ত্য পরিতাে জয়মলল
ভাবিতে। পটার্থুসংশেশিরকর্প্রাপ্তভূপদ্ধিতে। নানাকুষ্ম
সেরভাবাহিগদ্ধহাঞিতে। দেবগদ্ধনারীভিগান্নভীভির
লক্তং। সিংহাদন-সমারতং পুলাকোপরি রাঘবং।
সেমিত্রি-দীভা-দহিতং জটামুক্টশোভিতং। চাপবাণধরং
শ্যামং সহত্রীববিভীষণং। হছা রাবণমান্তাহং কৃতত্রি-লোক্যরক্ষণং। রামভত্রং হুলি ধ্যান্ন দশলকং জপেশ্বমুং।
রামভত্রমহেপুর্বং স্বাদাবিদ্ন ততঃ পরং। বীরং নরোভ্য-পদং দশাস্যান্তক মান্ততঃ। ততাে রক্ষ ততাে দেহি পশ্চাদাপর
মে জ্রিয়ং। ছাজিংশদক্ষরাে মস্ত্রো বিশামিত্রো মুনিম নােঃ।
ছন্দোহমুক্ত্রক্ দেবতা চ রামচন্ত্রঃ প্রকীর্তিতঃ। চতুঃকরণ-বেদান্ধিবস্ববৈরিক্ষক্রন।। মৃদ্ধিভালে দৃশোঃ জ্রোত্রে গতমুথ্যে চ নাশিকে। আগ্যে দেহিসন্ধিষ্ গলে স্তনজ্যাভিমণ্ডলে।

जन्दत वाजिः मनमत मन उँकृष्ठ व्वेटाइष्ट् । त्रामकल मरव्यामा विश्ववीतः मरत्राखम मनामाखक मार त्रक त्ववि मानत त्म शिवः, धरे वाजिः नक्षत्र मराजत विश्वविक स्वि, अक्षेत्रे, क्ष्म ध्वः त्रामकल त्ववका । त्रामकल, मरव्यामा

রাম এই পদত্তরকৈ ছইবার আবৃত্তি করতঃ অক্সাসাদি করিবে, ধান দশাক্র মত্তের স্থার। ওঁ নমো ভগবতে রামার মহাপ্রুষার নমঃ এই অটাদশাক্ষর মত্ত্র, এই মত্তের বিশামিত্র ঝার, গারতীহৃদ্দ এবং রামভত্ত দেবতা, বীজ ওঁ, শক্তি নমঃ। বড় ক্ষেপ্রার বলা হইতেছে। মূলমন্ত্র, কোশলেক্সায় নমঃ, সভাসন্ধার নমঃ, রাবণান্তকার নমঃ, সর্বলোকহিভায় নমঃ এবং গুরুশার্রকার নমঃ এই বলিরা অক্সাসাদি করিতে হইবে। এবং নন্দিপ্রারভ্যোপনে ভরভার ভূ কৌতৃকে ইভাাদি মূলোক্ত ধান করিবে। ধ্যানার্থ অভি সরল বলিরা পরিত্যক্ত হইল। দশলক্ষ ধাণে এইনত্রের প্রশার্ব হর।

किंगार तिर्णु श्री श्री ति प्रकार किंदि शान स्वार्थ शान स्वार्थ विकार निष्ठ किंदि स्वार्थ स्वार्थ विकार निष्ठ किंदि स्वार्थ स्वार्थ वा स्वरूष किंदि में स्वरूष स्वरूप स्व

বিষ ইঙ্যাদি ৪, ৬.৪, ৪, ৬ এবং অন্ত্য বর্ণবারা বড়ক্সাদিন্তাস করিবে এবং মন্তক, ললাট ও চক্ষ্বর প্রভৃতি ম্লোক্ত হান সকলে মন্ত্রনাস করিতে হব, এই মন্ত্রে থান প্রেক্তি, ভিনলক জলে পূধ্নতবণ করিবে। ধনাবী পীত্রর্গ চিন্তাকরিরা মন্ত্রণ করিবে। মালামন্ত্র উক্ত হইতেছে ও আহা জগবতে মন্ত্রনকার রক্ষেম্ন বিষদার মধ্বপ্রসর্বদনার অমিতভেজনে বলায় রামার বিষ্ণবে নমঃ এই সপ্তচ্বারিংশৎ অক্ষরাত্মক মালামন্ত্রের পিতামছ মবি, অমুষ্ঠুপ ছন্দঃ, রাঞ্যাতিবিক্ত রামদেবতা। বীক্ষ ও শক্তি পূর্বান্ধণ এবং মন্তক, মূব প্রভৃতি ম্লোক্ত স্থান সকলে মন্ত্রাক্তরের প্রত্যেক্তর ক্সাস করিছে হয়। অক্সাস ক্রিত হইতেছে— এ নমো ভগবতে অস্ঠাত্যাং নমঃ, রত্নকানার তর্জনীভাং আহা, রক্ষােম্ব বিষদায় মধ্যমান্ত্রাং ববট, মধুর প্রসাবদ্দান্ধ অনামিকাভাং হং, অমিতভেজনে কনিন্তাভ্যাং বেবিট এবং বলাব রামাব বিষ্ণবে নমঃ অল্লাছ ফট্ এইক্স ক্রেডাস করিয়া এই

নধুরত্তবস্ত্তেন পার্সেনাথ বা ফুলৈঃ। হোমং দর্শাংশতঃ
কুর্রাৎ ভথাসপ্তা ভপণং। সর্প্রের রামমন্ত্রের নজরাজঃ
বড়করঃ। একধা চ বিধা তেথা চঙুর্যা পঞ্চধা তথা। বট্সপ্রধাহকথা চৈব বহুধাহয়ং ব্যবস্থিতঃ। রামচন্দ্রন্য ভেদান্
শ্রিশিবো জানাতি তৃষ্তঃ। রমাসীতা চঙুর্যস্তঃ স্বাহাস্থোহয়ে বড়করঃ। সীতামস্ত্রশ্চ কথিতঃ স্বতন্তোহকপরোহপি চ।
জনকোহস্য থবিশ্ছদ্দো গায়ত্রী দেবভা মনোঃ। সীতাভগবভী প্রোক্তা শ্রিকির প্রতির স্থানেঃ
বড়কানি প্রকর্মের । প্রমেদ্বৈক্তবৈ পীঠে ধ্যায়েভাঘ্বসংবুতাং। স্বর্ণভাষ্ককরাং রামালোকনতৎপরাং। বাম-

রীভান্নারে অক্সাস ও করিতে কটবে। এই মন্ত্রারা প্রশাতে দশাকর মন্ত্রাক্ত ধ্যান, প্রশ্তরণে একলক লগ এবং বিষফল, পূজা, নিমধুব ( ঘত মধু চিনি) যুক্ত পত্র অথবা বিমধুর যুক্ত গায়স অথবা পদ্ম পূজারাবা দশাংশ হোম এবং ভক্ষশাংশে তর্পণাদি করিবে। যড়কর মল সকল মন্ত্রের অধ্যান, রামচজ্র মন্ত্রের ষত্বিধতেদ তাহাব স্বিশেষ এক শিব্যাতেই অবস্ত আছেন।

সংপ্রতি দীতামত্র কবিত হইতেছে— দ্রী দীতারৈ খাচা, দীতার এই বড়কর মত্রেব জনক থবি গায়ত্রীছক্ষা এবং ভগবতী দীতা দেবতা। অর্থাৎ জনকার থবরে নমঃ, গায়প্রীচক্ষানে নমঃ তগবতা দীতাদেবতারৈ নমঃ এই প্রকার থবাদিক্রাদ করিতে হর, পূর্বাং খণেও এইবলই চতুর্বাপ্ত পদবারা জানাদি জানিবে। ইহার প্রীবীপ ও খাহা শক্তি। প্রা, প্রা, শে, প্রে, প্রে, প্রে, শে, প্রে, প্রা, প্রা, শে, প্রে, শে, প্রে, প্রা, প্রা, শে, প্রে, শাত্রিক অঞ্জান ও করন্তান এবং বৈক্ষব পীঠে পূজা করিতে ছইবে। দীতাব ধ্যানে প্রব্যাভাত্রকরার রাম। শোক্তবংশার। বানজাগদমাদীনাং ধ্যাত্রেৎ দীতাং প্রাভ্যান্ত ওই ধ্যানে পূজা করিতে হয় । ধ্যানার্থ। দীতা রামচজ্রের বামভাগে—উপবিষ্টা হইয়া একাপ্রতিত্তে প্রীরাম্বাক্ত অবশোক্তন করিতেছেন, ছই হতে প্রব্যান্ত্রণ প্রবন্ধ বাবণ করিয়াছেন এবং অভিশ্বিক্ত চিন্নির্থা। এইময় পূর্ণ্ডরণে ৪ ক্ষ্ম ক্রিলে মতীটার্থ দিন্ধি হয়।

ভাগে সমাসীনাং ধ্যায়েৎ সীতাং পরাদ্ধিকাং। বর্ণকশং 
কপেনান্ত্রমিন্টার্থং সাধ্য়েভভঃ। মন্ত্রাক্ষমগন্ত্যোক্তং লক্ষ্মগদ্য প্রভন্যতে। রেফপূর্বাং সমৃদ্ধৃত্য সেন্দুংলক্ষ্মণ সংমুভং।
ভেন্তোহয়ং লক্ষ্মণমূর্নমদা চ সমন্বিভঃ। অগস্ত্য ঋষিরস্যাথ
গায়ত্রী ক্ষন্দ উচাতে। লক্ষ্মণো দেবতা প্রোক্তা লং বীকং
শক্তিরদা হি। নমন্ত্র বিনিয়োগো হি পুরুষার্থ চতুন্টয়ে।
দীর্ঘভাজা শ্ববীকেন বড়কানি প্রকল্লেছে। বিভূত্তং স্থারিলির
তক্ষং পদ্মনিভেক্ষণং। ধুমুর্বাণকরং রামদেবাদং
সক্তন্মানসং। পূজাহিপি বৈক্ষবে পীঠে অক্সাবরণবর্জিতে।
সপ্তলক্ষ্মন প্রশ্বর্ধা ততঃ সিদ্ধিন্ত সাধ্যেং। ভরতস্যৈবমেবং স্যাৎ শক্তিস্বদ্যাপ্যয়ং বিধিঃ। অক্সত্রনাদিতা হোতে
প্রাধান্তেনাপি সন্তমাঃ। আদৌ চাপ্যন্ততো বাহপি পূজায়াং
রাঘ্বদ্য চ। এতেবাসপি কর্ত্ব্যা ভুক্তিম্বিক্ষলেপ্স্তিঃ।

क्षत्र विश्व विश्

थावात्स्रन वृथक्रवन सम्राव तामगीक्रत्य। लक्ष्यनेख मना वृक्षाः প্রাধান্তেনৈব নিত্যশঃ। যবা রামস্য পূজা স্থাওথা ত্যালি ্নিভাশঃ। সাক্ষ্যাৎ রামপূজারাৎ যদীক্ষেলিয়ভত্তভঃ। তেন যাছেন কর্তব্যা লক্ষাণস্যাপি বিস্তরাত। জীরানচপ্ত **८७१।ख वहवर मिछ- देव मूट्य ।** मदमार्थदेकर मना कार्या। সৌমিত্রেরপি নিত্যশঃ। অফৌতর্নহত্রং বা শতং বা ত্দমাহিতৈঃ। লক্ষাৰ্দ্য মসুর্জ্জপ্যে মুমুক্ষুভরত স্থিতিঃ। অঞ্জু। লক্ষণমতুৎ রামমন্ত্রান্ জপত্তি যে। তজ্জপদ্য क्तर देनव क्षत्रास्ति कूमना व्यापा। व्यातीमजाविदयदकांश्री নৈব কাৰ্য্য। ভবেদিছ। যে। জপেলক্ষণসমুৎ নিত্যমেকাস্ত মান্তিঃ। মূচ্যতে সর্বপাপেভাঃ স কামান্যা তেহ্থিলান্। व्यद्भागरियव मत्त्रारशमुश्रीपरको हि मानिनो । अव्युनिश्च श्रुता त्रमागरनरेनः धनश्रवः। पिर्णा विकिता नकला म কুরনেকএব হি। প্রাভিন্তিপদ্ধরালং পৈছকে র'লাউভ্যে। क्य अथानगर्वा रेवर वांका अंटिअक माधनर । त्यां कर्णाव য়তো মন্ত্রং লক্ষমেকং সমাহিতঃ। সোহচিরাম্টরাজ্যং স্বং **बार्त्यारकाव न मध्मग्रह । अजिधिकमर्याक्षाग्राधः वार्यक्राम** मननाषीः । शकाय् जमपुः कथा नके दाकामवाश्वार । क्षण खडेरिक्मश्य वर्षना खडेरिक माउनात कनिएड इत । यादाना वर्षातन मझ बार मा करिया जाममझ बार कविरन, लाहावी नाधक एक बहान ब (महे सालत क्वनां किंदिक वादित ना।

বে ব্যক্তি একাপ্রচাবে অতিদিন ক্ষ্মণ মন্ত্র জনকরিবে সে দ্বাণাগ ছইতে মুক্তি ও বাজা দিছি লাভ করিবে। ইংরে দরে পরিমিজানি ববেচনা ক্রার আরোধন নাই। প্রকালে অর্জুন জীক্ষ্যের নিকটে এক মন্ত্রে উপাদ্ভি হুইয়া ধন্মব ছুইয়াছিলেন। এবং একাকী কুককুল পরাভূতি বরিবা বৈশ্ভক বাজ্যে ধন্মবাদ্ধক অভিষ্কিত বরিবাছিলেন। এই দ্বান্ধক্ষণ কবিলে

নাগপাশবিনিমুক্তিং ধায়িমেকান্তমান্তিঃ। অনুত जभागा कः मामिगगरिनखरनव हि। आक्षरनम्मानीज খোষধীভিগতিব্যথং। ধাায়নিবৃতত্তেন সাপমৃত্যুৎ कारामकः। हेळाकिर्थानर्श्वातः शाप्तामकः मर्गाह्णः। इन्ह्यंशिशरियरान बर्धमित्रूनः वद्याः मृर्थनेशास्त्र नामाधाः C इन्दर्नान् युक्तमानमः । शायन् महञ्जलाभान श्रूकर् जानिकः জয়েৎ। রামপাদাজনেবার্থ কৃতত্বরমথো জপন্নিযুত্নেকান্তে মহারোগান্ বহুনপি। ক্য়াপস্থার কুষ্ঠাদীলাশয়ত্যের তৎক্ষণাৎ। ব্রিমাসংনিয়তাহারো জপন্ मखमहत्यकः । पिरन पिरन विधारन शृक्षश्चन विकित्छः ব্রেয়ঃ। অটোত্তরশতৈঃ পুল্পেনিছিলেঃ শতপত্তকৈঃ। পায়সং শর্করোপেতং নৈবেদ্যং বিধিবন্মুনে। ঘনসার সমাযুক্তচন্দ্রেনাতুলিপ্যতে। দেবেদিদেশেন সংপ্রৈর বং বিজোতমান্। কুষ্ঠরোগাৎ প্রমূচ্যেত তুল্চি-কিৎস্যাদনেকশঃ। ভগেদায়জা বছবিধা মঙলাদিপ্ৰভেদতঃ।

নই রাজ্যধন করন্থ হয়। নাগণাশ হউতে মুক্তিপাপ্ত লত্মকে একান্তমনে ধ্যান করিয়া অনুভ জপ করিলে মুক্তিহয়। এবং প্রনতন্যক্ষ্ আনীত দেবদে প্রস্থ কইরাছিলেন এই চিম্বাক্রিয়া নিযুত জপকরিলে অংমৃত্যু নিবাবদ হয়। ইক্সজিতের আগে হরণ করিয়াছেন এই চিম্বাক্রিয়া রূপ করিগে গুর্জর অরিকুল ও পরাভ্ত হয়। আর শূর্পগধার নানিকাচেদনে উদ্ধানী হউরাছিলেন এই আকার ধ্যান করিয়া সহস্ত্র জপকরিলে ইক্স ও পরাভব লাভ ক্ষেন। এবং প্রীবান্তক্রের পাদপদ্ম সেবায় স্ক্রিয়া একার চিন্ত, এই ধ্যান করিয়া ছিরচিতে নিযুত অপ করিলে মহারোগ ক্ষয়, অপন্যার মুক্ত প্রাতৃতি রোগদকল বিনইছয়। আর তিনমাস পর্যায় হবিষ্যানী ও জিভেজির হইয়া সপ্তসহত্র জপ এবং প্রভিদিন ব্যাবিধি অটোন্তর্গত নিন্তির গম্পুত্র, গাছস ও প্রবিদ্ধি স্থানিক্স স্থাপুত্র, গাছস ও প্রত্রার উদ্দেশে রাক্ষণ

তে সর্বে নাশমায়ান্তি তুশ্চিকিৎসা। অপি কণাৎ। একাতো নিয়তাছারঃ ব্যাসান বিভিতেজিয়ঃ। জগদেবৎ বিধা-८नन क्यरतार्गारं श्रमुहारक। मञ्जूलाबरेनरवरेताक सम् , মন্ত্রং সমাহিতঃ। বাভৱোগাৎ প্রমূচ্যেত হত্তেলাদাস ক্ষণাং। অভিমন্ত্ৰ্য জলং নিভাং মন্ত্ৰেণ তিঃ সমাহিতঃ। म्भरनजानिमः ভূঙান कर्यस्माशान छनात्रगान । भावािक-মস্তা চ জলৎ কুক্রোগান্বহুন্জয়েৎ। দেবসা প্রতিমা-मानः कृषा ज्वा दिशान्छ। मत्निर्जाश्नाश्नार्गः ভ্যোম্চাতে নাত্র সংশয়ঃ। কন্যাথা চোশিলাপাণি গ্ৰহণাশক্তমানদং। ইপ্দিতাং প্ৰাথ্মাৎ কন্যাৎ শীতামেৰ তপোধন। দীক্ষিতং জ্ঞ্বাজাণাং মজেরু নিয়ত্ত্তং। সংশারন বিধি।মিত্য: মাসত্রয়মননাধীঃ। পূজাপুরঃসরং সপ্তাসহত্রং বিভিতেন্দিয়ঃ। জপন্লিখননিদ্যানাণ ভত্তভা ভবতি ধ্রবং। বিশাসিতাঞ্জুবরে কুভাদুতপরাক্রমং। ধ্যায়রযুক্তজ্পোন ভয়েভ্যো মুচ্যতেহচিরাং। দন্ধাঞ্গেপাদ্য বিধিবন্মূল্মন্ত্রেণ মন্ত্রবিং। ত্রিকালং নিয়তো ভূষা ক্তনি काविधिः यग्नः । मीकायुका गर्थानाग्नः अर्थकुकाश्वरः । मूठार उनके शाला वाजिः विस्था भवर भनर । ঐ हिका-ভোজন করাচলে ছশ্চিকিৎত বুর বোগ হউতেও প্রাথীকুত হয় এবং চ্যাধি বোবেলাত মণ্ডলাদি ছুলিকিংজ্ঞারাগ সকল অভিবাৎ বিনাপ ক্রাপ্ত হয়। আৰু চৰমান প্ৰান্ত চৰিব্যাণী ও জিতেক্সির চর্চা বিধানামুদারে ক্রপ করিলে कब्रद्राण एकेट मुक्कर्य । नगाविक्रमान स्वयाष्ट्र शिक्षेत्र व निर्वेशापि बाडा शृंका व्यरः शृंदर्शक करण भूतकत्व किता ममस क्षेत्रां वास्तां वा ৰইতে আহোগ্য লাভহর। জাব এই মধ্যে অভিম্পিত ভল প্রতিদিন ওঞ্জি भूतामय किनकात किशा भागकिताल पूर्ण, महनामिएल व कृषि थाइकि द्रास नमुद्र इव द्वारा नम्छ निम्हे इस । विश्वास्त्रभारत प्रशीप बांदा राम्यत्व

নপেকৈ।ব নিকামো যোহজনে বিজ্বং। দীক্ষাং প্রাপ্য বিহানেন গুরোবিগি চকল্যবাং। স্থানানির তাদ্ধান্তাৰ গৃহস্থানিজিতেভিনাং । তদক্ষজাকুদারে পর শুরার বিরহিতং শাশতং
প্রাপাপে বিদ্যান দারা। নির্মালমানদঃ । পুনরার বিরহিতং শাশতং
পদমাপ্রাং । দকামো বা হিতান্ লক্ষ্য পুক্তা ভোগান্ মনোহরান্ । জাতিশ্রর শিচরং ভূতা যাতি বিফোঃ পরং পদং ।
যথা জীরামমন্ত্রাণাং প্রযোক্তঃ পাপসন্তবঃ । তথা দ
লক্ষ্যণমনোঃ কিন্তু দাতি পরাং গতিং। কেচিন্মুক্তার্থমেব স্থাঃ
কেচিদহিক দাধনাঃ । ভুকি মুক্তিপ্রদশ্চায়মেকো বিজ্ঞায়তে
পরঃ ।

আঞ্জনেয়মকুং বক্ষ্যে ভুক্তিমুক্ত্যেকসাধনং। প্রকাশিতং

অভিমা প্রত্ত করিয়া ভক্তিপুরং সর দান কবিবে সমস্ত রোগ হইতে মুক্ত হয়। আবে কলা সন্ততিতে অভিনায়ী বাজি শক্ষণ উর্মিলার পাণিপ্রহণ কবিতে কাজ হইয়াছলেন, এইরূপ ধ্যান কবিরা উক্ত মন্তের লক্ষণণ পুরুষ্টবেশ ও দশংশে পালহোম প্রভৃতি করিলে নিশ্চরই ইফ্লাম্বরণ কলাসপ্রতি লাভ করেছে পাবে। এবং ভিনমাস প্রায় অনল চিক্ত হইয়া লক্ষণ জ্ঞানত্ত্ব ও মধ্যে দিক্ষিত ছিলেন এই চিন্তা করিয়া ব্যাবিধি পূজা ও স্থাসহ্ত্র অপে পুরুষ্টবেশ করিয়া ব্যাবিধি পূজা ও স্থাসহত্র অপে পুরুষ্টবেশ করিয়া ব্যাবিধি পূজা ও স্থাসহত্র অপে পুরুষ্টবেশ করিয়াছেন। এইরূপ লক্ষণতে চিন্তা কবিয়া অযুত্ত জলে পুরুষ্টবেশ করিলে ভয় হইতেমুক্ত হয়। ইত্যাধি লক্ষণ মন্তের অপেষ্ঠ হাণায় সংগ্রুত বচনে প্রতি লাখিত আছে চৃষ্টি করিবেন।

অনন্তর হন্মানের মন্ত্রিক কথিত হইডেছে। মুক্তির এইমানে সাধন এই হন্মান্ত লোকের হিত্তি মহাধের কর্ক অকাশিত হইরাছে। তুত্ত,প্রেত্ত, মুক্ত, রাজুস, ডাকিনী, বোগিনী, ও শিশাচ অভৃতি এই মন্তের সাধককে দর্শন করিয়া প্রায়েন করে। এইমন্ত্র অক্তুত হইলেও অধান ও মন্ত্রাক কানিবে। মন্ত্রাকুপ্রতে আন্তর্নার মহাব্যার স্থান্ত এই অভীদশক্ষের মন্ত্র স্কুক্ত বিদ্ধি এখান করে। শহরেণ লোকানাং হিতমিছতা। তৃত্ত প্রেতিশিশাচাদি 
ডাকাকিনীব্রহ্মরাক্ষার। দৃক্বা চ প্রশাসক্তান
ডৎপরং। প্রধানোহপাসভৃতোপি মন্ত্ররাক্ষার
প্রধান নমঃ পদকোজ্যা ততো ভগবতে পদং। আলনের
পদং ডেইন্ডং মহাবলপদং তথা। বহ্নিলায়ান্ত এব স্যাম্মন্ত্রো
হন্মতঃ পরঃ। সর্বাসিদ্ধিকরঃ প্রোজ্যে মন্ত্রশাস্থান

নালাখ্যাহপরমন্ত্রোহপি মাক্রতেঃ সর্বাসদ্ধিদঃ। প্রণবং
পূর্ববৃদ্ধার্য্য নমো হনুমতে পদং। ডেইন্ডং প্রকটনংমুক্তং
পরাক্রমপদন্তথা। তথাক্রান্তপদং সর্ব্ব দিওমওলমুদীরয়েহ।
যশোবিতানধবলীকৃতজগক্তিতয়ায় চ। বক্রদেহেতি চোক্ত্রা চ
ক্রমাবতার পদং তথা। সমুদ্ধান্তং পদং লক্ষাপুরীদহনমীরয়েহ। উদ্ধিলজ্জনক্ষাপি দশ্জীবক্তান্তকঃ। সীজাখসনেতি পদং অঞ্জনাগর্ভসন্তব। প্রীরাঘলক্ষ্যণানক্ষর ক্পিবৈক্ত প্রাকার। স্থ্যাবসাধারণ পদং পর্বতোহপাটনং তথা।

অনন্তব মালামন্ত কথিত হইতেছে। যথা—ওঁ লমো হন্দতে প্রকট পরাক্রমান্ন ক্রান্তসর্কাদিয়ণ্ডলান্ন বলাধিতানগবলীকৃতঞ্গক্ষিতরাম বজনের ক্রান্তার লক্ষপুরীদহন উদ্ধিল্ভবন দশঞ্জীবক্রান্তক সীতাখাসন অঞ্জনগর্গুলয়ন শীর্মনান্ত্রমান ক্রান্তকার ক্রিনাঞাকান স্থানিকাধারণ পর্কতেহেলাটন বালবন্ধচারিন, গল্ডীরশন্ধ সর্ক্রহিনাশন সর্ক্রহান্তেদন ভাকিনীবিধ্বংসন ওঁ জাঁং হা হা হা হসৌ হসৌ সর্ক্রিয়ং হর পদ্রলং ক্রেজ্জন মে সর্ক্রার্থাণি সাধন লাধন হং ফট স্বাহা এই মালামন্ত্র সর্বার্থিকি প্রদান করে ইহার ক্রিক্রির, অন্তইপ ছন্দ, হন্মান দেবতা হং নীজ্ স্বাহাশক্তি প্রবং হারাহা কীলক। অর্থাৎ অঞ্চ মন্ত্রন্ত ক্রম্বর ক্রিরন্ত্রন্ত্রন্ত প্রক্রমান দেবতা হং বীজং স্বাহা শক্তি হা হা কীলকং হসৌ হন্মং ব্রীণনার্থে বিনিধ্বান্ত এই প্রক্রম্ব ক্রিক্রেল্য হন্মং ব্রীণনার্থে বিনিধ্বান্ত এই প্রক্রম্ব ক্রিক্রেল্য গ্রিক্র হন্মং ব্রীণনার্থে বিনিধ্বান্ত এই প্রক্রম্ব ক্রিক্রেল্য গ্রিক্রিক্র হারাহা স্বাহাল ক্রিক্র হারাহা ক্রিক্রেক্র হন্মং ব্রীণনার্থে বিনিধ্বান্ত এই প্রক্রম্ব ক্রিক্রেল্য গ্রিক্রিক্রেক্র ব্রীণনার্থে বিনিধ্বান্ত এই প্রক্রম্ব ক্রিক্রেক্র প্রক্রিক্র ক্রম্বর ক্রমান ক্রমান

বাল্ডক্রচারিমিডি গন্তীরশব্দপদং তথা। সর্বতাহবিনাশন সর্বাত্তদনেতি চ। ডাকিনীবিধাৎসন্পদং ততকার-मुनीतरप्रद। माग्रा हाज्यसमुक्तार्या हमार्त्वो हिनरमञ्ज्य ( रनपन्-হুদো পুন: )। সর্কবিষং ছর পরবলং ক্লেভিয় মে ইতি। দৰ্ককাৰ্য্যাণি সাধয়েতি পদং দিক্লেরেং। ছুঁ ফট্ স্থাহেতি-সজোহয়ং মালাখ্যঃ সর্বকামধুক্। ঋষিরীশন্ত এব স্যাদসুষ্টুপ্-ছন্দ উচাতে। হনুমান্ দেবতা প্রোকা হুঁ বীলং শব্দিরস্তালা। কীলকং হাত্রয়থ প্রোক্তং অস্য মন্ত্রণ্য নিশ্চিতং। হন্নৎ-थीननरेक्षव कत्रमानामूनाक्**ष्ठर । नत्मा क्रावटक**ाक्षत्वयाया-भूर्षरमान (रमर । ऋक्त मूर्खम्रहेरला वर जर्म्ब्नीलामनखतः । वासू-মতায়াহপি তথা মধ্যমাভ্যামপি ক্ষুটং। অগ্নিগৰ্ভায় চ তথা নামিকাভ্যাৎ প্রবিশ্বদেৎ। রামদূতায় চ পুনঃ কনিষ্ঠাভ্যাং বিচক্ষণঃ। একান্ত্রনিবারণায় অস্ত্রমন্ত্রঃ সমীরিতঃ। এবং यङ्क्रक मृत्व कृष् धार्यप्रत्मकाषीः । ऋषिकाः वर्गकास्तिः ষিভু**দঞ্ কৃতা**ঞ্জনিং। কুগুলহয়সংশোভিমু**ধান্তো**জং মৃত্মু তঃ। অযুতঞ্চ পুরশ্চর্যা রামদাত্রে শিবস্য বা। পূজাস্ত বৈষ্ণবে পীঠে শৈবে বা বিদধীত বৈ। আর্ত্তিভি-বিনা নিত্যং নক্তাশী বিজিতেজিয়ঃ। কুদ্রেরোগনির্ভ্যর্থ-মফৌত্তরশতং মুনে। জপুা ত্রিদিনমেকাস্ত তেভ্যো মুচ্যেত

জুনুত্বর অলনাসাদি বলিভেছেন।—নমো ওগবতে অসুঠাভাাং নমঃ, ক্রমুর্তবে তর্জনীভাং খাহা, বায়ুস্তার মধামাভাগং ব্যট, অল্লিগরার আনাবিকাভাগং হং, রামদ্তার কলিঠাভাগং বৌষট, অল্লাজনিবারণার অল্লার কট এবং অলভাগ ও এই রীতিতে করিরা ফটিকাভং খর্ণকাতিং ইভারি খুলোজ ধানে করিভে হইবে। গানের আকার এই —হন্সান্ ফটিকের স্তার ভ্রবর্ণ; খর্ণকাতি, বিস্তুল, কুডারলি এবং শুইটি কুওলে ইহার খুব্পদ্বের অভিশ্ব

**७९कगर। ভূতপ্রেতপ্রশান্ত্যর্থ শতমটোর্তরং পুনঃ** ( দিনজেরমধো জপ্তা ভূতানাং মুচ্যতে ভরাং। মহারোগাদি-भाखार्थमाको तंत्रमह्य कर । अथ । ভন্মাৎ প্রমূচ্যেক নিশ্চিতং নিম্নতাশনঃ। জয়াভিকাজ্মিণাং রাজ্ঞাং যশ্মাদন্য-ধ্যারেদ্রাক্ষদহস্তারং অযুতং নিয়তাশনঃ । জপ্তা সংযতচিত্তঃ সন্ জয়েদ্দু ক্রয়মপ্যরিং। সন্ধানায় তু হুঞীব সন্ধাতারং স্মরন্দি। অযুতেনৈব বলিনা সন্ধিনাপ্রোভ্যসং-শরং। লক্ষায়া দাহকং ধ্যায়ন্ জপমযুত্তমাঞ্জনং। শত্রুরাষ্ট্রং **पट्टरिय प्रदाक्तिमिल ठानवः। कशार्थः तिशूमध्यानामन्त्राप्रदश**ा নবিদ্যতে। যন্ত গেছে হনুমন্তং সর্বদৈব প্রপূজ্যের। তৎ বঙ্গে-अगुनरञ्जन जमानक्यीत्रहक्षना । मीर्चनाशुक्रितरम्ब मर्द्यरजा ৰীজয়ী ভবেং। মাৰ্য্যাদিভূতদংকোভ: তদেশে নৈৰ লায়তে। শত্রবঃ দর্বদা মিত্তভাবেটনবাদতেলদ।। শৈবানাং বৈক্ষবা-নাঞ্ বটকর্মাত্র প্রদর্শিতং। নাগ্যৎগাধনমন্ত্যের মন্ত্রাদক্ষা-দ্বন্যতঃ। চৌরব্যান্তাদিভীতানাময়মেব প্রায়ণঃ। পহতরাজ্যানাৎ ধর্ষিতানাং পরৈঃ দদা। সন্নাত্ভাজাং যুদ্ধেশু

শোভা বছন করিবাছে। ইহার প্রফঃশে অর্ড জপ করিতে হয় পুরার বিধান বৈক্ষরপীঠে অথবা শৈরপীঠে জানিবে। সানিতে নিয়ামির ভোজন করিয়া সংযভভাবে অঠোতর শত হথ্মনার নিনজ্য জপ করিবে ক্ষ্ববোগ হইতে মুক্ত হয় এবং এই বিধানে জপ করিবে ক্ষ্তুতাপির ভয় নিবারণ হয়। মহাবাধি নিবারণের জন্ত এইমন্ত অঠাধিক সহত্র অপকরিবে কলপ্রাপ্ত হয়। জন্মভিলাধী রাজগণের এই,ক্ষম্ভ প্রধান সহল। রাক্ষ্য বিনাশ করিয়াছেন এইক্ষ হন্দ্দান্তে ধ্যান করিয়া অন্ত জপ করিবে ক্ষ্মির অরিও গরাভূতা হয়। এবং হন্দ্দান ক্ষ্মীবের সহিত সহি করিয়াছেন এইক্ষ চিঙা ক্ষিয়া জপ করিবে ব্যবান্ শত্তেও বভা হয়। স্কার্য ক্রিয়াছিবেন এইক্স ধ্যান করিয়া অনুত জপ করিবে ত্রুস্বান্ত বদি প্রক্রণ হন্দ্

क्रवानार अन्रदेनिर्देकः । याखाकारण इम्मखर अन्न यस चकान शृहार। निर्शन्तिक म त्यरणन देकीर्थमधिणाविक। ত্বাপকালে প্রবন্ধিতাৎ চৌরভূতাদিকান জয়েও। প্রশন্ধি-ভন্নং স্বোজাতযুক্তং হনুপদং। মহাকালঃ শশাহ্বাচ্যঃ কামিকাকলকজিয়া ৷ সনেত্রাণাস্তমীনোগদাছতো গিভ আয়ুরা। যলোহিতং রুরাহেতি বেদনেত্রাক্ষরো মসুঃ। প্রীহারোগহরস্যাস্য মুম্ঞাদ্যৎ পূর্ববিষ্যতং। প্রীহাযুক্তোদরে नामा नागवधीपमर छ छः। ত छू भर्या के श्रीन जर ब ख भा कहा परा শকলং তদ্যোপরিমুঞ্ছে কপিং শারণ্। 'আরণ্পশুরেরাৎপদে বংক্রি ঘটিং প্রতাপরেৎ। वमत्री ठक्रमस्रृ ७११ - मस्त्रिगात्म । তয়া সন্তা-फुरब्रम् वमब्रमकेनः कर्वतञ्चितः। मश्रकृषः भौर त्रार्थाः नभारकाव नृगाः कर्गाए। श्रूष्ट्राकादत स्वगत (लथना কোকিলোখয়া। অফাগনৈলিখি জপং কপিরাজস্য হশরং। তমধ্যেহকাদশার্গন্ত শক্রনামযুত্ত লিখেৎ। তেন মক্রাভিজপ্তেন শিরোবদ্ধেন ভূমিপঃ। জয়ত্যরিগণং সর্বাং पर्मनारिषय निश्विष्ठ । युक्तः जिगीयून् शिकः शृर्द्वाखः त्वथ-ध्वक्रमानाट्यां श्रेतार्शं मः ज्ञां भीट्यां क्रवां विश द्यम् श्वर्षः ।

। बाज्काः काभाग्रद शम्हाक्रमाः त्मन ह श्वरहर । महरिभ-खिनमः विदेखेः मरण्यारियाकगानि । भक्षणः अतः দৃষ্টা পলায়তে হরয়েহিচিরাং। মালামত্র: জপেদ্বস্ত হন্-মন্তং সারন্বে। বজাবে। জাগতে যুদ্ধে হনুমৎসমবিক্রমঃ।

আক্রান্ত এবং যুদ্ধ ক্ষেত্রে পরবৈত্তক ত্বিক অবক্ষা ব্যাক্তিদি:কর প্রম সহায় **जहे हम्मान क कामित्र । भवैनकारम अहे ६न्मग्रज्ञ ऋ म क**िरल (होबस्य) मध:व ना।

व्यनस्त क्त्रभारतम् हुक्तिः निह् व्यक्तत्र मञ्ज कशिष्ठ क्रेटल्युह । यूपा (स) (स) हन्मख एन क्निड धरा धरिष्ठः आयुदाय भक्त पार अहे हजू सि: भड़ाक्क वर्ग मह প্লীহানাশক। ইহার ঝ্যাদিকাস প্রভৃতি সমস্তই পুরুষত জানিবে। সংপ্রতি লীহা নিৰাবক প্ৰয়োগ অপিছিত ২ইতেছে।---

প্লীছার উপরি কভিপর নাগবলী (সর্পলভা) পত্র বিরুপ্ত করিয়া ডাথাকে ষ্ঠাইগুণিত ('আট ভাক কর') বস্ত্রধারা স্বাচ্চাণিত কারবে। পরে ভতুপদ্মি ध्यकांथिन वः नथ्छ (वाटनव उछा) वाथिया धनुमानटक याल कत्रछः स्थाहना পাখাণ (চকমকা) হটতে নিফাশিত অগ্নিতে একথাত বৃদ্ধীবৃক্ষের ষ্টি (কুলের লাঠা) সম্ভাপিত করিলা তদ্বাবা উক্ত মন্ত্র সাহতারে পাঠকবিয়া পूर्वस्थित वः नवास व्यापाल कवित्व धहेक्रम मास्तात कवित्व छरक्षार सीहा विमन्ने इडेरव । मुक्निवादक व्यासान क्षित्र १०१०१६,---- धर्मानि भूक्काकृष्ठि रक्षेत्र टकाकिन शाधिर शाधार दनयेनीरच यह श्रद्धा । वनुशास्त्र অভিনাপ অভিত কৰিয়া তল্মধোশক্তৰ নাম ও পূর্বোক জন্তাদশালৰ হন্মন্মন্ত निश्रितः। भरव डेक्टभन्न शाल्या थे नम्न शानितक प्रतरक दीविता, भव्यभग डेबाटक मर्भन करा माल প्रवाकृष्ठ क्रेंद्व। साह मृद्धक अवाधिलायी ৰাজি ধৰ্মেতে পূৰ্বোজ্ন মন ও শতানামের সহিত কণীখারের প্রতিষ্ঠি লিবিলা বাৰিৰে। পরে চক্রত্যা এছৰ দেৰিরা ক্রণব্ধ মোক্রণায় জন্ধক্ত बाजुकी खुश कविशा मुनारभामि निश्वशास्त्राटन ভিগমিশ্রিত স্বপ্রাবা (২:ম कतिरव । अमस्त्र युक्त काल विषय शृतं छे छे अन अनु अलिए क्रिया अविधा नक्तर्भ स्त्र मर्नन कतिहाहे भगामन कतिहरू । आव (ग राजि जनस्करक याच्या रन्मानरक चत्र कत्र वेरात मानामज्ञ कथ क्षित एव वकाल ७ स्त-त्रात्नत्र काद भवाक्रमभागी स्टेर्द ।

সংখা হত্মতো ষদ্ধং বক্ষ্যে রক্ষাবিধায়কং।—লিখেদক্তনলং পদ্মং সাধ্যাধ্যযুত্কণিকিং। দলেষ্টার্ণমালিধ্য
মালামন্ত্রেণ বেষ্টরেং। তছহিমায়য়াবেষ্ট্য প্রান্থানমাচরেং। লিখিতং স্থালেখন্যা দলে ভূজ্জভরোঃ শুভে।
রোচনাকুক্ষমাভ্যান্ত বেষ্টিতং কণকাদিভিঃ। সংপাত
সাধিতং যন্ত্রং ভূজে বা মূর্দ্ধি ধারয়েং। রণে জয়মবায়োতি
ব্যবহারে ছ্রোদরে। গ্রহৈবিদ্মেকিটেং শক্তিশেচটিরনৈবাভিভূয়তে। রোগান্স্কানপাক্ত্য চিরং জীবতি ভাগ্যবান্। বিয়দ্রিযুতং দীর্ঘ্যট্কাচ্যং তারসংপুটং। অফার্নোমন্ত্র আখ্যাতো মালামন্ত্রোহ্থ কথ্যতে। বজুকায়

সংগ্রিকাবিধানক হন্যান্যর কাণত হইতেছে । -- একটি অষ্টদল পদ্ম আছিত কবিমা ভাগাব কবিকাতে বক্ষণীযেব নাম এবং অষ্টদলে ওঁ জাঁ জ্বীং হুং হৈং ছৌং হুং ওঁ এই আই টালিব একটি একট লিখিনা পদ্মেরবছি-দেশে মামাবীল (জাং) দাগ বেইন কবিনা প্রাণ্শুভিন্ঠা কবিবে। এই যন্ত্র লিখিতে ভূজিপত, স্বালেখনা ও গোবোচনা ক্ষুন প্রভৃতি আবঙ্কাই। অনস্থ স্থাপণ দাগা যদ বেইন কবিমা দ্ধিণ ভ্লে অগ্যা মন্তর্গে বাবণ করিলে মৃদ্ধ, বিবাদে এবং দ্বাভাগাতে সন্তর্গত অব্যাভ কবিবে এবং দ্বাভাগাত সন্তর্গত সকল প্রাভৃত হুইবে এবং যাবজ্জীবন নিরোগী থাকিয়া স্থাভাগ করিবে।

वक्क वृक्ष किशित्वा किशित । किश्व किश्व विश्व किश्व विश्व कि विश्व किश्व किश्

গণেশাদি চতুর্ণান্ত রামাঙ্গতং প্রতীয়তে। সর্ব্বে দেবাঃ স্তবন্ত্রীতি সামান্যশ্রুতিচোদনাং। অস্যাগ্রেয়ে গণেশানং সূর্যুৎ নৈধ্বিতকোণকে। বায়ণ্যে হৃষিকামীশনৈশান্যাং

ওঁ রং হ্রাং ই গাণি অষ্ট:ক্ষর মধ্যে এবং এই মালা মধ্যে ধাষ্যাদিয়াস পূজাবিধান প্রস্কৃতি সমস্তই পুলমত জানিবে। এইসক্য মধ্যে মাহান্ত্য অবিক আব কি ব্যাব ক্লীবর স্লিখানে অলীভা কিছুই নাত।

হরিপ্রনে। তেষামনেকমন্ত্রা হাজেরা গ্রন্থরাদ্বুধি:। সংক্ষেণেণেছ কথান্তে গ্রন্থরিক্তরভাতিত:।

অথ গণেশমন্ত্রাদয়ঃ। তারং শ্রীশক্তিয়য়ভূষবীকং
গণপতিং বদেৎ। ঙেহন্তং বরান্তে বরদং সর্বযুক্তং জনক্ষমে। বশকেতি বদেৎ পশ্চাৎ আনয়েতি চ ঠয়য়ঃ।
অকটাবিংশত্যক্ষরোহয়ং মহাগণপতের্মসুঃ। গণকোহস্তঝাষশ্চশ্লো গায়ত্রী নিরদন্ধিতা। মহাগণপতিঃ প্রোক্তোদেখো ভূবনবন্দিতঃ। তারাদ্যাদিস্ববীজেন দীর্বভাজাঙ্গকল্পনা।
নবরত্বময়ং দ্বীপং সারেদিক্র্রসাম্বুধে। তদ্বীচিধেতিপর্যাঙ্গং
সশ্লমাক্ষতগেবিতং। মন্দারপারিজাতাদিকল্লবৃক্ষণতা
কুলং। উদ্ভূতরত্বচ্ছায়াভিরক্ষীক্তভূতলং। উদ্দিনকরেকুত্যামুদ্রাসিতদিগন্তরং। তস্য মধ্যে পারিজাতং নবরত্বসয়ং
স্মরেৎ। ঝাহুভিঃ সেবিতং ষড়ভি রনিশং প্রীতিবর্দ্ধনৈঃ।
তদ্যাধন্তানহাসীঠে রচিতে মাভ্কামুজে। ষ্ট্কোণান্ত-

नभः, पृत्य निवृत्त नायकी क्षान्त नभः, श्रांत महान्य प्रवास नमः। कहेवाकात्व अवासिकाम कित्रा का व नाः क्षाप्त नभः कि नीः नित्रम चाहा, कि गृर् निवादे वहते, कि नित्रम का कि निवादे वहते, कि निवादे का कि कि निवादे का क

জিকোণহং মহাগণপতিং স্মরেৎ। হস্তীক্রাননমিন্দু চূড়মঙ্গণছায়ং ত্রিনেত্রং রসাদালিকং প্রিয়য়া সপদ্মকরয়া
বালহয়া সম্ভং। বীদ্যাপুরগদাধকু ত্রিশিখমুক্চজাজপাশোৎপলং ত্রীছ্প্রস্বিধাণরত্বলসান্ হলৈ ক্রিহুণ
ভল্পে। গণুপালীগলদানপুরলালসমানসান্। হিরেফান
কর্ণভালাভাং বারয়ন্তং মুহ্মুছঃ। করাগ্রম্ভমাণিক্যকুম্বক্ত বিনিঃস্মৃতিঃ। রত্ববর্ষঃ প্রীণয়ন্তং সাধকান মদবিহলাং। মাণিক্যমুক্টোপেতং রত্বাভরণভূষিতং। ইত্যসা
ধ্যানং। অগ্রেহণ বিভ্রমভিতশ্চ রমারমেশো ভদ্দিশে বটমুমো গিরিজার্বাকো। পৃষ্ঠে চ পিপ্পল্যুমো রভিপুষ্পবাণে সব্যে প্রিয়েস্মভিতশ্চ মহীবরাহো। সন্যাপস্বাভাগে
ভদ্ম ধ্যেমো শন্ত্রপানধী। নিবন্ধেহপি—ত্রিকোণসা
বহির্কিল্বটিপিপ্পল্লুরুহাং। প্রিয়ন্ধারপাণো মন্ত্রী

রচিত যে মহালীঠ তাহাতে উপনিষ্ট, গলানন, ত্রিনয়ন, চ্ডাতে চক্স. রক্তবর্ণ থবং বামভাগন্থিতা পরজ্পানি নিজকান্তাক কৃষ্ণ আনিজিত গণপতিকে চিন্তাকরিবে। ইনি হস্তবলে দাড়িম্বকন, গলা, চাপ, থিশুন, চক্র, পল্প, পাশ, উৎপল, ধানাগুছ, গঞ্জদন্ত এবং বহুনিশ্বিতক্স ধারণ কবিবাছেন। ইছার গণ্ডদেশ হইতে অবিরক্ত মদধাগা পতিত হইতেছে। এই মদধারা পান কবিবাবজনা ইতত্তে চঞ্চল অনিকৃলসকল কর্ণছল্প সঞ্চালন হালা অবিরত নিবারিত হইতেছে। ইনি নিজকরস্থ রক্তমন্ত কলি হুটতে বিনিঃস্প্ত রন্ধ করিলা সাধকবৃন্দকে আপ্যায়িত করিতেছেন, এবং উত্তমাজ নাণিকামলমুকুটে স্থানিভিত ও নানাবিণ অলকারে অলক্ত । এই প্রকার চিন্তা করিয়া মন্তাদিতে যথাবিধি পৃষ্ঠা করিবে। যজ্ের প্রকারিণে বিবর্জের নিকট ওঁ প্রিবৈ নমঃ ওঁ নারামণার নমঃ এবং ভাছার দক্ষিণে বিবর্জের নিকট ওঁ প্রবিষ্ঠানমঃ, ওঁ বিভাগনমঃ, ওঁ রতৈয় নমঃ, ওঁ বিভাগনমঃ, ওঁ বিভা নমঃ,

দিক্ষু প্রাণিতো যদ্ধে। তে তে তি তিরং প্রীপতিঞ্চ গোরীং
গোরীপতিং তথা। রতিং রতিপতিঞাপি মহীমপি বরাহকং। অতাে চ প্রায়েলক্ষীসহিতং গণনায়কং। অতাে
কোণে তথা দিদিদহিতানাদ্যিত্যাপি। অগ্নিকোণে সমৃদ্ধ্যা
চ সহিতঞ্চ প্রমোদকং। ঈশানে কান্তিসহিতং স্থমুখং
পশ্চিমে তথা। দুন্দুখং মদনাবত্যা সহিতং নৈশ্বতি তথা।
সহিতং মদদ্রবয়া গণস্যাপ্যধিনায়কং। ঈশানে দ্রাবিণ্যাসহিতং বায়ে বিশ্বকর্তারমেব চ। ষ্টকোণপার্যয়েঃ শখং
নিধিং বস্থায় যুতং। বস্থমত্যা যুতঞাপি যদ্ধেং পদ্দনিধিং ক্রেতং। ধ্যায়ন্মন্তং জপন্মন্ত্রী চতুর্লকং সমাহিতঃ।
চতুঃসহস্রসংযুক্তং চম্বারিংশৎসহস্রকং। দশাংশং
ক্রেয়াদ্দ্রব্যরক্ষীভিমেণিকাদিভিঃ।

## অথ সূর্যমন্ত্রাদয়ঃ।

তারং দ্বণিস্থ্যপদমাদিত্য ইতি চোদ্ধরেং। এবনন্তা-ক্ষরঃ সূর্য্যমন্ত্রোহয়ং সমুদাহতঃ। ভার্গবোহস্য ঋষিশ্ছন্দো-

ও ববাহর নমঃ, এবং অথো ও লকো নমঃ, ও গণনায়কার নমঃ ইভ্যাদি সংস্কৃত বচনোক্ত দেব গাসকলকে পূজা কবিবে। ইহার পুরন্চরণে ৪ চারিলক্ষ ৪৪ হাজার জগকবিয়া বিবানোক্ত মই এবা ধাবা হোমাদি কবিতে হয়।

আন্তর ক্ষোর মন্ত্রাদি ক্থিত হুইতেছে। ও খণিক্ষা আদিতা এই আটাক্ষর ক্ষামন্ত। এই মধ্যের ভাগিব ধাবি,গায়ত্রী ছলঃ এবং দটাদৃইফলপ্রাদ আদিতা দেবতা, ভার (ওঁ) বীজ, যং শক্তিঃ। অত মন্ত্রত ভাগিব ধাবি পায়কী ছল আদিতো৷ দেবতা ও বীজং যং শক্তিঃ দৃইাদৃইফলপ্রাইপ্রাবিনিয়োগঃ এই প্রকার ধ্যাদি পাঠ করিবে। এবং সভ্যায় হৃদয়ায় নমঃ, ব্রহ্মণে শিবসে স্থাহা, বিহুহে শিশ্বিয় ব্যট্, কলায় ক্রচায় ভূ, আমধ্যে নেক্রমায় বেষ্ট্, স্বায় ক্রতণপৃষ্ঠাভ্যাং অল্লায় ক্ট,এবং সভ্যায় অষ্ঠাভ্যাং নমঃ, ব্রহ্মণে ভজ্জনীভ্যাং স্বাহা ইত্যাদি ক্রমে অক্সন্তাস কর্ত্তাস

গায়ত্রী দেবতা মনোঃ। খাদিত্যো মুনিভিঃ প্রোক্তে। দৃষ্টাদৃষ্টকলপ্রদঃ। তারং বীজমিতি প্রোক্তং যং শক্তিঃ সমুদাহতা। অসমস্ত্রাঃ প্রদর্শন্তে— সত্যায় হৃদয়ং পুনঃ। ত্রহ্মণে
চ শিরঃ প্রোক্তং বিকেবে চ শিথা মতা। রুদ্রায় বর্মনির্দিষ্ট
সময়ে নেত্রমীরিতং। সর্বায়াত্রঞ্চ বিজ্ঞেয়মিতি স্যাদন্দকল্পনা। রক্তাজবুগাভয়দানহন্তং কেয়ুরহারান্দদক্তলাতাং।
মাণিক্যমোলিং দিননাথমীড়ে বল্লুককান্তিং বিলস
জিনেত্রং। ইতি ধ্যানং।

অথ শিবস্য মন্ত্রাদীন্ বক্ষ্যে সংক্ষেপতোহধুনা।

সান্তাকু গ্রহদং যুক্তো বিন্দু ভূষিতমন্তকঃ। প্রাদাদাখ্যান্দু: প্রোক্তো ভজতাং কামদো মণিঃ। ঋষিঃ স্যাদ্বামন্দেবাইস্য পত্তিশ্চন্দঃ সমীরিতং। সদাশিবো দেবতা চহং বীজং শক্তিরোং শ্বভঃ। দীর্ঘ স্বর্মুজা মূলবীজেন কবিঃ। রক্তাজ্যুলাভয়দান হতং ইতাদি মূলোক ধান কবিৰে। ধানার্থহার বলর ও কুগুলাদি আভবলে বিভূষিত, বন্ধুক পুলেব জুলা রক্তবণ, তিনেত্র
এবং ইহার কপালে মাণিকা আছে এইরূপ ধানে কবিয়া মথাবিধি পূজা

धनश्च निर्दे महानि क्षिण क्रेट्ड्ड्ड नाम्य — ह, ध्रम्म — ए ध्वर विम् (१) याण करित (होर अहे ध्वराम ज्ञान मध्य करित (होर अहे ध्वराम ज्ञान मध्य करित अहे नाम करित है होर करामानम वर्ष । अहे मर्यं वाम प्रव क्षित महिल हे कर्म, मनानित (मवणा, हर वीक ध्वर क्षे निक्त । ध्या महाक वाम प्रव करिया शर्क महानिता (मवणा हे छानि क्ष्मा मार्य व्यवस्था करिया शर्क क्ष्मा मार्य कर्माम क्ष्माम कर्माम खड़िल क्षित्र मुकानी करित है हिला है छानि स्वाक सार्य यथा वित मूकानित्र लिखन क्षित्र प्रव स्वाम करित । सामार्य — विनि मूकानित्र लिखन क्षित्र हिला है स्वाम करित । स्वाम करित है स्वाम

স্যাৎ বড়ককং। মৃক্তা-পীত-পয়োদ-মৌক্তিক-জবা—বলৈ

মৃ থৈঃ পঞ্চিঞ্জাকৈরকিত্রীশমিদ্মুক্টং পূর্ণেলুকোটিপ্রভং। শূলং টক্ষ্পাণবদ্ধু দহনারাগেলুঘণ্টারুশান্ পাশং
ভীতিহরং দধানম্মিতাকল্পোজ্যলাকং ভজে।ইতি ধ্যানং।

অথ ভুগনেশ্রীমন্ত্রাদয়ঃ।

नक् नी स्मार्शियात ए। वाया प्रतास कि खेवा । कि शिका खंद कर स्वा । कि शिका खंद कर स्वा । कि शिका खंद कर स्वा । वाया के शिका खंद कर स्वा । वाया के शिका खंद कर स्वा । वाया के शिका खंद है के शिका खंद है के शिका स्व । कि शिका के शिका

चनसत्र ज्वानचती ज्ञांत मञ्जाम कथि ठ व्हेट्टा । नक्नीन—ह, चित्र—त, वामत्व—मे, चक्रिक्ट—में वहेर मक्न युक्त हहेरा ही। वहें विकास में के कि वहें हेरें हो। चित्र में कि वहें हेरें हो। चित्र में कि वहें हो। चित्र में कि वहें हेरें हो। चित्र में कि वहें हेरें हो कि वहें हेरें हो कि वहें हेरें में कि वहें हो हो। चित्र में कि वहें हेरें हो हो। चित्र में कि वहें हेरें हो। चित्र में कि वहें हेरें हैरें हेरें हैरें हेरें हैरें हेरें हैरें हेरें हेरें हैरें हेरें हेरें हेरें हेरें हेरें हैरें हैरें हैरें हैरें हैरें हेरें हैरें हैं हैरें हैरें हैरें हैरें हैरें

সংকাশাং ত্র্যক্ষাং স্মেরমুখীং ভজে। পাশার্শভিয়ব্রান্ দথতীং অগদখিকাং। সিদ্ধাদিশোধনং নৈযামলতে সভি বা জপেং। পূজাপ্রকারঃ প্রাধাতে দেউব্যো গ্রন্থবিস্তরাং। ইত্যসদেবতানাং মন্ত্রোদ্ধারাদয়ঃ।

> অগব্যোক্তক মাহাত্ম্য: প্রাধান্যে কারণং মহৎ। বক্ষ্যে শ্রীমন্তরাজস্য শ্রুতা যদয়তি সদগতিং!

मर्त्तव मल्लवर्षाष् ८ छ्रकेः देवस्यम्हारः । नानेनर्जाष् नार्व्य देनवर्गाद्वस्र होनेन्द्र । देवस्य देश मर्व्य द्वानेन्द्र । देवस्य देश मर्व्य देश होनेन्द्र । नानेन्द्र । नानेन्द्र । नानेन्द्र । निर्देश क्ष्यां के देखें । निर्देश क्ष्यां के देखें । निर्देश क्ष्यां के देखें । निर्देश क्ष्यां के दिनेन्त्र क्ष्य क्ष्यां निर्देश क्ष्यां के दिनेन्त्र क्ष्यां के दिनेन्त्र क्ष्य क्ष्यां निर्देश क्ष्यां के दिनेन्त्र क्ष्यां क्ष्यां के दिनेन्त्र क्ष्यां के दिनेन्त्र क्ष्यां क्

আনত্তৰ অগত্যোক্ত শ্রীবামমন্ত্র (জব মাহাত্মা কণিত হট তেছে, ইচা শ্রবা কাবলে সাধকগণ সকাতি লাপ করিয়া থাকেন। গাণ পতা, সৌর লৈও ও শাক্ত প্রাচিত যাবতীর মধবাকের মধো এই বাম মন্ত্র সকলেওই, বৈক্ষমন্ত্র সকলেব মধো ও শ্রীরাম মন্ত্র প্রেট আনিবে। গাণ পতাাদি মন্ত্রে কোটিং প্রশংসা থাকিলেও এই মন্ত্র সকল অপেকার শ্রীকা প্রশাসক লাল হয়। বামের বহুবিগ মন্ত্র আছে সেই সকল কার্ক কলিবেই রামমন্ত্র কলপ্রমান হয়। বামের বহুবিগ মন্ত্র আছে সেই সকল কার্কার বহুবিগ মন্ত্র আছের সকল কার্কার কলিবেই রামমন্ত্র কলিবিল করে। আনল বেই প্রকার পর্বভাকার তুলারাপিকে নিংশের কর্ম করিবা থাকে তক্তপ এই মন্ত্র আভিদিন, পক্ষ, মান্ত্র, আছু ও বংশরে সমূর্বার পাল সকলকৈ অভিনে বিনাশে করে। রামমন্ত্রের অন্তর্গান করিবা করিবা আনকারক আভিনে বিনাশে করে। রামমন্ত্রের অন্তর্গান করিবা করিবা আনকারক আভিনে বিনাশে করে। রামমন্ত্রের অন্তর্গানীকার করিবা করিবা করিবা আনকারক আভিনে বিনাশে করে। রামমন্ত্রের অন্তর্গানীকার করিবা করিবা করিবা আনকারক আভিনে বিনাশে করে। প্রাণাল, প্রাণাল,

শেষং তুলাচলমিবানলঃ। ত্রহ্মহত্যাসহস্রাণি জ্ঞানাজ্ঞান
কুতানি চ। স্বর্ণন্তের্ম্বরাপানগুরুত্রাযুত্যনি চ। কোটি
কোটিদহস্রাণি অপুপাপানি যান্তাপি। সর্বাণ্যপি প্রগুলার রামনন্ত্রাস্কার্তনাং। তথাচ প্রুতিঃ
ব্যাহ্রাণ্য বির্বাহিত। তথাচ প্রুতি, স মুখুঃ তরতি,
স সর্বাহত্যাং তরতি, স সংসারং তরতি, স সর্বাং
তরতি। স বিবিক্তাপ্রিতা তরতি সোহ্যুত্ত্র্প গছতি।
জানেন সদৃশো মন্ত্রো জগংস্থান ন বিদ্যুতে। অনেনারাধিতোরামঃ প্রসাদত্যের সম্বরং। স্যাহ্রিনবসর্বেষাং মন্ত্রাণাং
রাঘ্বস্য তু। অনুষ্ঠানবিধিজেন্মা বিশেষস্তত্র তত্র বৈ।
ইতি জ্ঞীরামচন্ত্রমন্ত্রমাহান্ত্রাং।

শ্রীরামনন্তরাজস্য সমগের্থেহিভিধীয়তে।
সংহিতোপনিসন্লঃ সর্বকামার্থনিদ্ধিদঃ।
রকারো বহ্নিবচনঃ প্রকাশে পর্যবস্যতি। স্ফিদানন্দ রুকোর্য্য প্রমান্থার্থ উচ্যতে। ব্যঞ্জনং নিক্তনং ব্রহ্ম

শুরুপদ্বীগমন এবং কোটিং সহল উপপাতক গর্যান্তও বিনর চর। ঐতিও বলিয়াছেন——বে ত্রাহ্মণ এই ভাবকর্মির রামমন্ত্র প্রভিন্নন উচ্চারণ কবে সে পাণ হইতে আগ পার, সে মৃত্যু হইডে আগ পার, সে পণ্ডিড হডা। হইডে আগ পার, সে সকল হতা। হইডে আগ পার, সে সংসার হইডে আগ পার, সে সকল হইডেই আগ পার, সে বিবেকী হয়, সে মৃক্ত হয়। ইহার সদৃশ মন্ত্র জগতে আছিতীয়। গুমে এই মলে আরানিত হইলে সহসাই প্রসর হন।

জনন্তর সৃক্তি ইবাদ বীধার্য জঙিহিত চইতে। রশন বহিলাটী কিন্ত এই স্থানে প্রকাশার্থে প্রাবাসভাহত্ক স্থিতদানক্ষণ পরনাত্তাকে কুমতে হইবে। "ব" এই ব্যক্ষার কথা নিজ্লাভক্ষ এবং "আ,-- প্রাণো নারেতি চ বরাঃ। ব্যঞ্জনস্বরূপৎবোগো বিশ্বি তৎপ্রাণযোজনং। কেনো ক্যোতির্ম রস্তস্মাৎ ক্তনাকার
বাজনং। নকারোহভূদেয়ার্থরাৎ সমার ইতি কথাতে।
করমেবান্তরূৎকজা রামিত্যেকাকরোমকুঃ। সোহরৎ
বীজাত্মকন্তস্মাৎ সমারং এক উচাতে। প্রকৃতিঃ পুরুষকেচাতে সমারাধুক্ষণস্ততঃ। বিক্রাদাত্মকং বাজং বাজ্বং
সোমকলং মতং। অগ্রীদোমাত্মকং বিশ্বং রামবীক্রে প্রতিতিতং। যথৈব বটবীজন্তঃ প্রাকৃতশ্চ মহাক্রমঃ। তথৈব
রামবীক্রন্থ জগদেতচ্চরাচরং।

ইতি বাজার্থঃ।

অক্ষরার্থেহিধুনালৈয়ৰ বিশ্লীক্রিয়তে মনোঃ। বীজার্থমূভয়াগ্রং ধামনামনি দৃশ্যতে।

বীজ: সায়াবিনিশ্মকং পর:এক্ষেতি কীর্ত্যতে। মুক্তিদং সাধকানান্তন্মকায়ো ভুক্তিদো মতঃ। মারূপছা-

व्यक्त्राहक, ताम এर महत्र पुरक्तिश्रम क मुक्तिश्रम क्षेत्रवाहर नुवाय व्यक्त

অই শরবর্ণে অর্থ মানা, (-' এই মঙ্গাবের অর্থ অনুন্ধ্য। এই সকল বর্ণ ব্যাপকাবলে রাং এই একাকর মণ হঠন। ইহাছারা মাধাবিশিষ্ট বীঞ্জালার রাধা অভিহিত ইইভেচে। প্যাগেরানে এইট ব্রার্থে ইউবিংশ, বউর্কের বাজি মাধা বে প্রকার সেই আন্ত বিশাল মহাজ্যে পরায়ত আহ হিলাল মহাজ্যে পরায়ত এই চর্চের ভাগতই ঐ একাকর মধ্যে প্রকাশিত ইইডেচে।
আন্তর কাকর্যার কিল্পার অর্থ রাম এই শক্তের ব্যাপ্ত বিশাল কর্ম স্থানিক বালা বিশ্ব বিশ্ব

দত্যে রামো ভূজিমৃজিফলপ্রদঃ । আদ্যো রা তৎপদার্থঃ স্যাৎ
মকারন্তৎপদার্থনান । তয়াঃ সংযোজনমসীত্যাল্পতছবিদোবিচঃ । তছমস্যাদিবাকাল্প কেবলং মৃজিন্থ যতঃ । ভূজিমৃজিপ্রদক্ষৈত তল্মাদপ্যতিরিচাতে । রমন্তে যোগিনো
নিত্যং যদা রময়তি স্বকান্ । নিত্ত বিং স্ফিলানন্দং সন্তবক্ষেতি
কার্ত্যতে । জীববাচি নমো নাম চাল্পারামেতি কর্তিতে।
তদাল্পিকা যা চতুর্থী তয়া চাদীতি কথ্যতে । মল্লোহয়ং
লাচকো রামো বাচ্যঃ স্যাদ্যোগ এতয়োঃ । ফলদকৈব সর্ক্ষোৎ
সাধকানাং ন সংশয়ঃ । চিনায়ন্যাদ্বিতীয়স্য নিজনস্যাশরীরিনঃ ।
উপাসকানাৎ কার্যার্থং ক্রেলে। রূপক্রনা । রূপস্থানাং
দেবতানাং ক্রাক্ত্রীপুংপ্রক্রনা । মননাৎ ত্রাবনাৎ মল্লোমল্লিণং কর্লভুক্তঃ । মূলত্বাৎ স্ব্বিমন্ত্রাণং মূলাধার

ভ্ৰম্য্যাদি ৰাণ্য হইছেও ইহাকে প্ৰধান ও অভিবিক্ত স্থাকাৰ ক্রিছে। হয়।

ভাব যোগাগণ বাংতে ভাববত বত অথবা বিনি বোগাগণকে বত করাইতে, ছেন সেই সাচিদান দট রামপদের প্রাণ্ড পাদা, ইহাতে সন্তান ও নিপ্ত দি উভবট অভিহিত হইল এবং নমঃ শ্রা জীববাচক স্থতরাং 'ভাষা বাম এই প্যাঞ্জ লব্ধ হইল অনশ্বর রামাণ এই চতুর্ঘতিত 'অগি' এই বুঝাইল অভএব রামাগ্র নমঃ ইহাতে আরা রামোহাস ভাবাং আছা আর রাম অভিন এই অর্থ প্যাবনিত হইক এই মন্ত্র বাচক, ইহাব বাচা রাম এই বাচা বাচকের বে যোগ ভাহা সাধক সকলের অভিশন্ন কলারক। রাম চিল্লয় নিক্ষণ অশ্বারী অভিভাগ এক হইলেও উপাসক দিকের কার্য্যের অন্য ইহার কাশ করনা ক্ষিতে হয়। রূপ ক্ষিত হইলেও উপাসক দিকের কার্য্যের অন্য ইহার কাশ করনা ক্ষিতে হয়। রূপ ক্ষিত হইলেও জাগক দিকের কার্য্যের অন্য ইহার কাশ করনা ক্ষিতে হয়। রূপ ক্ষিত হইলেও জাগক দিকের কার্য্যের অভিপাদা, মন্ত্র সাধকের কলতক সদৃশ । স্কল মন্তের মূল, মূল্যধার হইতে উৎপন্ধ এবং মূশ শ্বরূপ যে ভাহাকে মূলমন্ত্র বলে । মূলমন্ত্র সাভ্যোতি, উপাসন্ত সাজ

मध्रवाद । मृत्रवस्त्रशित्रषाद मृत्रमञ्ज है जिस्का । नश्यकां कि महामञ्जा किनमञ्जाक कामृभाः । वर्गमाञाः व्यताः मद्श्य मृत्रमञ्जाद मस्थिकाः । एकनाशीकः व्यक्तः एकन एकन मर्श्य-भ्रम्भिक्यः । मृत्रमञ्जद विकानां कि द्या विकान् क्ष्रमार्मिकः । मृत्रविकानमाद्यक कोवन्यु एकः। क्षरमञ्जाः । क्षरिमानिक-देमवर्षामिन्नादिन कार्यस्य ।

# ইতি জীরাসচন্দ্রবীজার্থ:। অধাধিকারনির্ণয়:।

মসুদেতের সর্বেষামধিকারোইন্তি দেহিনাং। মুগৃক্ণাং
বিরক্তানাং তথা চাতামিণাং সদা। রামো ধ্যেয়ঃ প্রণবদ্ধাং
ঘতীনাস্ত বিশেষতঃ। শ্রুত্যক্তদালারকত্বং মন্ত্ররাজদ্য
ঘৎ ক্ষুটং। ভগর্জমাত্রা বিক্ষুণ্ট নাদো বর্ণাঃ ক্রমেণ ষট্।
ভারকত্বালারকত্তং শ্রুত্তমবধারিতং। অথ ভরদাক্রঃ
পপ্রচহ যাজ্ঞবন্ধ্যং—কিং ভারকং? স হোবাচ যাজ্ঞক্রঃ।
ভারয়তীতি ভারকং দীর্ঘাননং বিক্ষুপ্রকিং। দীর্ঘাননং

কোটি। সমস্ত বৰ্ণ মৃশমন্ত হইছে উৎপন্ন। যে বাকির শুক হইছে ম্বমন্ত্রেযথাবিধি দীকা হয় ভাষার ভাষাতেই অন্যয়নাদি সদস্তান সমত সিদ্ধ হয় এবং ভাষাকেই বিশ্বান কহে। মহুৰা মুব্যন্ত জানামাত্র জীবসূক্ত হয় এবং আনিমাদে ঐবর্থা দক্ষ অচিরেই প্রাপ্ত হয়।

क्रमण्ड वासम्या दक दक क्षिकाडी वह छावा निर्मिष्ठे व्हेष्टह् । नहीं ही मार्टका के क्षेत्र निर्माण क्षिण क्षेत्र क्षिण है जिस मार्टि के म

পুন্মায়া নমঃ। ইত্যেতদ্ অক্ষাত্মকাঃ সচিদানশাখ্যা ইত্যু-পাদিতব্যং। অকার: প্রথমাকবো ভবতি, উকারো দিতীয়া-করোভবতি, মকারস্তীয়াকরে৷ ভব্তি, অর্জনাত্র-**শ্চত্রক্ষরো ভবতি, বিন্দু: পঞ্চাক্ষরো ভবতি, নাদঃ** ষষ্ঠাক্ষরো ভবতি, তদেব তারকং ব্রহ্ম ঘং বিদ্ধি ইতিশ্রুতিঃ। রামেতি প্রমং জ্বপাং তারকং এক্সসঙ্গিতং। তথাচ রাম-রামেতি রামেতি এত ভারকষ্চ্যতে। ইত্যাদ্যাঃ শ্রুতয়ঃ সন্তি স্মৃতয়ণ্ট সহস্রদ:। এতদেবাবিমুক্তে জ্রীরুদ্র: কথয়তি স্বয়ং। মুমুর্বোম ণিকর্ণিক্যামর্দ্ধোদক নিবাদিনঃ। অহং দিশামি তে মন্ত্রং তারকং ভ্রহ্মসঙ্গিতং। ভ্রহ্মন্থং জানকীনাথ ইতি পাল্পে শিবেক্তিতঃ। রুদ্রস্ত তারকং ত্রন্ম ব্যাচষ্টে শ্রুভিরপ্যথ। সর্বেধামধিকারে। বৈ জ্ঞাতব্যো দেশিকোন্তনৈঃ। অগস্তা-সংহিতায়ান্ত হেতদেবোপপাদিতং। শুচিত্রতত্যাঃ শূদ্রা ধার্মিকা বিজ্ঞদেবকাঃ। স্তিয়ঃ পতিত্রতান্টাত্তে প্রতিলোমাকু লোমভাঃ। লোকাশ্চাগুলপর্যস্থাঃ সর্ব্বেহপাতাধিকারিনঃ।

ভ, ত্রী ও নয়ঃ এই সকল সচিদানন্দ ব্রহ্মায়ক মন্ত্র ইবারা সকল উপাস্য জানিবে। ভ্—ইথাতে চর্ট অকর, তাহার প্রথম অকর অকার, বি নীয় উকার, কৃথীয় মকার চঙ্গ অর্কমার, পঞ্চম বিন্দু এবং বন্ধ নাদ ইহানিশকে তারক ব্রহ্ম জানিবে। আর ''রাম'' এই নামটি শ্রুণিডে এবং সংজ্ঞ সন্ত্রে আর্কিবর বিশিয়া কথিত আছে। মহাদেব মণিকবিরাক্তেরে অর্ক্ষলক্ত্র মুরুক্ত করিবার জান্য 'বাম'' এই তারকব্রহ্ম নাম বলিয়া থাকেন এবং পাল্লেও মহাদেব প্রীরামের তারকব্রহ্ম প্রকাশ করিয়াছেন। রাময়ত্র গ্রহণে সাধারণের অধিকার আছে জানিবে। অপতা সংভিতাত্তের এইটিই প্রশক্তি হইয়াছে। জী, শুল্ল এবং প্রতিলোম ও অন্থলোমে জাত চঙাল প্রভৃতি সাধারণই এই তারকব্রহ্ম রাম্যন্তের অধিকারী। সংগ্রতি এই

শ্রুতির ক্ষাবজ্বর্ণ ক্ষৃতির্বর্ণ রাজ্মকং। ছয়ের্কিবোধঃ
সংপ্রাপ্তো নাশ্রতে তহ্যবহ্মা। শ্রুতির রাধে তু
শ্রুতির বগরীয়সী। ব্যবহাভাগমাঞ্জিতা বাক্যমেত প্রিয়াণ
নকং। ষড়বর্ণ রাক্ষণাদীনাং ত্রয়াণান্তদ্দিধর্ণকং। শ্রুতেয়াং
দেশিকেন্দ্রেণ বক্তব্যু তারকং পরং। বিনা তু প্রবং মন্ত্রং
গায়ত্রীং শ্রুতিবাধনাং। তথা চ সাবিত্রীং প্রণবং মন্ত্রং
শ্রুতি কানীয়াং স্ত্রী শৃদ্রঃ সম্বতাহধাে গচ্ছতি তত্মাৎ সর্বরণা
নাচন্টে স আচার্য্যন্তেনৈর মৃত্যে ভবতীতি তাপনায়শ্রুতিঃ।
তন্মুলং দ্বাক্ষরং বাচ্যং ন চপূর্ণং বড়ক্ষরং। ভেইন্তান্তেপকা
হীনছাং শ্রুতিরপ্যাহনির্ভামং রমস্তে যােগিনাহনন্তে সত্যান্
নন্দে চিলায়নি। ইতি রামপদেনাসে পরং ত্রক্ষেতি
কথাতে।

ইভ্যধিকারিনির্ণয়ঃ।

অথাভিষেকৎ বক্ষ্যামি দীক্ষাবিধিমস্বস্তমৎ। উপাসকশতেনাপি বিনা যেন ন সিধ্যতি। মধুমাসে ভবেদুত্বঃখৎ মাণ্যে রতুসক্ষয়ঃ। মরণ্ড ভবতি

একটি বিরোধ উপস্থিত হইল যে, আছতি বলিতেছেন ষড়কর তারকএম.

মৃতি বলিতেছেন দাকর তারকএম। আর আছতি ও স্মৃতি এ উত্তরে বিরোধ
উপাস্থিত হইলে আছিটিই বাননীর হয় অতএব হাক্সরের তারকএমর সক্ষত
হয় না। অতএব এইছলে এইরপ মীমাংসা করিতে হইবে যে প্রাদ্ধন,
ক্ষতিব ও বৈশা এই বর্ণায়ের স্থয়ে বড়বর্ণ তারকএম, প্রা, শৃত্র ও চণ্ডাল অভ্যতির পক্ষে কেবল দাকর, রাম এইময় তারকএম। স্ত্রী ও শৃত্যাদির
বড়ংগিয়েক তারকএমে অধিকারই নাই। তাপনীর আছতি বসিয়াছেন বে.
গ্রী শ্র প্রতি বদি গার্থী, অপেব, বপ্ত প্রীবীক্ষ অভ্যতি অবগত হয় ওবে
ইহারে মবশানস্তর অধাগানী হয় এবং উপদেষ্টাও এইরপ প্রভাবায়ভাগী
হন। অগন্তাও বলিয়াছেন এই সকল ময়ে প্রাদ্ধাদি কয়রূপে উপদেষ रेकार्छ कार्यात् वसूनांभनः । मृत्रुक्तः खावरं मृत्रुकः खरमः । छाज्रशरम क्षतः । धकानांभावित् भागि मर्क्कः खळरमं हि । छानः मार्थः कार्जिकः तर्माश्रुरं भागिति छवछानि । त्रित्व छानकरता भाषः छत्वरम्भाविवर्कनः । कास्रुत्वर्शिं मृद्धिः मार्थः मनमामः विवर्ष्ट्रसः । .

ইতি মাদনিয়মঃ।

त्रवी क्षरती उथा भारत कर्तवा बुधककार्याः।

# ইতি বার্নিয়মঃ।

অশিনা রোহিনী স্বাতী বিশাখা হস্তভের চ। জ্যেষ্ঠো-ভরত্তয়েষের কুর্য্যামন্ত্রাভিষেচনং। নারদতন্তে।— রোহিনী অবণার্ক্রাচ ধনিষ্ঠা উত্তরাত্রয়ং। পুষ্যা শতভিষাচৈর দীক্ষাণ নক্ষত্রয়চ্যতে। ইতি নক্ষত্রনিয়মঃ।

দিবে। অর্থাৎ উকার প্রভৃতিপূর্কক যে মন্ত্র ভাহা ব্রাহ্মণাদি বর্ণনারকে, ভাজির বালা গেই সকল স্ত্রীশৃদ্পভৃতিকে দিবে, ত্রী শৃদ্যাদির রাম এই ব্যাক্ষরই মূল আনিবে ইহাতে চতুথী প্রভৃতির অপেকা করে না। বোগীপণ বেই সচিদানক অনন্ত প্রমান্ধাতে নীন হইরা থাকেন রামণকে সেই প্রমন্ত্রক্ষেই ব্যার।

অনতঃ অভিনেক ও দীকাবিধি কবিত হইতেছে দীকা ব্যতিঃকে শভ উপাসনা করিলেও কল লাভ হয় না। অধনতঃ দীকাগ্রহণে কোন মাস অলভ, কোন মাস অগশন্ত ভাষা কবিত হইতেছে।

देवच मार्ग मह शहर कि विशास हाथ साहेट हत, देवसाथ मार्ग त्रम्नास, देवाहं मृत्रा, आवाद्य वस् विमास, आवद्य मन्यांत. कार्य मन्नास, आवद्य मन्यांत क्रिय मन्यांत क्रिय मन्यांत क्रिय मन्यांत क्रिय क्रिय मन्यांत मन्यांत क्रिय मन्यांत्र क्रिय मन्यांत मन्यांत्र मन्यांत क्रिय मन्यांत्र क्रिय मन्यांत्र क्रिय मन्यांत्र मन्यांत्य मन्यांत्र मन्यांत्य मन्यांत्र मन्यांत्र मन्यांत्र मन्यांत्र मन्यांत्र मन्यांत्र मन्

পূর্ণিমা পঞ্চমী চৈব ছিতীয়া সপ্তমী তথা। এরোগনী চ দশমী প্রশন্তাঃ সর্বাকামণাঃ। মন্ত্রসারসংগ্রহে।—ছিতীরা পঞ্চমী চাপি বন্ধী চাপি বিশেষতঃ। ছাদশ্যামপি কর্তব্যং ব্রেরোদশ্যামথাপি বা ইতি তিথিশুদ্ধি।

পকাঙ্গভাদিবনে স্বোদয়ে রাশিতারয়ো:। গুরুশুজো-দরে গুরুলয়ে বাদশহশাধিতে চল্লাহকুলে চ শসতে সর্বকর্ম তু। ইতি কালগুদি:।

স্থা এইণকালে তুনা অদ্যেষণং ভবেৎ। সূথ্য এইণকালেম সমানো নাজি কশ্চন। তত্র যদ্যংকৃতং সর্বামনস্ফলদং ভবেং। ন মাসতি থিবারাদিশোধনং সূথ্য পর্বাদি । দদাতী উৎ গৃহীতং বৃত্তি মানু কালে গুরোন্ য়। সিদ্ধিত বৃত্তি মানুস্য বিনায়াসেন বেগতঃ। অভ্তত্তিব রামস্য মন্ত্র গৈছিল বৈচনং।

বার্নিরম কথিত হইতেছে--- থাব, বৃত্তপতি, সোম, শুক্র, বৃধ এই সক্ষ বাবে দীকা প্রশস্ত !

तक्क निष्ठम — विनी, त्वाविनी, वाणी, विनावा, व्या, त्वावा देवव क्रम् श्वनी, देववावाण स वेवववाल श्वे नक्ष मक्ष्य श्वादन वान्छ का'न्त्व। नावष्ठद्व निविक व्याद्य-- त्वांद्यी अवना व्याचा धनिका. देखव्यक्ष्यनी देववावाण देखवाल, श्वा स्व नक्ष्य मक्ष्य श्रीका व्यव्य क्रिया

অনস্তব তিথি নিরম কথিত হল্ডেছে।—— পূর্ণিমা, প্রক্ষা, ছেতীয়া, স্থামী, অরোদলী ও দশ্মী এই সকল তিথিতে মন্ত্র এইণ করিলে মনোছ-ভীষ্ট সিদ্ধাহয়।

স্বিধংগ্ৰহে विश्विष्ठ আছে--- विशेषा, नक्षी, वही, पाननी अञ्चलावणी अहे मकन नक्ष्य ग्रज श्रह्म कविद्य।

লগ্নতি ।—গঞাল তথা দিনে বৃহম্পতি ও তাক্রের উদরে এবং ওভরাশি নক্ষত্রে আর লগ্নের ধাদল স্থানে ওভরেছ থাকিলে এবং চন্ত্র ও ভার। অমুক্শ কইলে স্কল্ কর্ম শ্রেশস্ত । কর্ত্তব্যং দর্ব্যত্ত্বন মন্ত্রদিদ্ধিক্তীপ শুভি:। তথাছি।—
হতীর্থেক বিধুগ্রাদে তথৈব দেবপর্কণি (তন্ত্রদামনপর্কণোঃ) ইতি পাঠান্তরং। মন্ত্রদীক্ষাং প্রকৃর্কাণো
মাসক্রিদিনশোধ্যেং। ইত্যপ্রদিকালঃ।

উপাদকস্ত শুদ্ধাত্মা গুরং যত্নেন তোষয়েৎ। স্ববিত্ত-চিত্তকাথৈশ্চ ভক্তিশ্রদ্ধাদমন্বিতঃ। যথা দদাতি সং তুষ্টঃ প্রথমো বরদো মনুং। স্বয়মেব তথাচৈব মিভি কর্তব্যতাক্রমঃ।

গুরুর্বিশুদ্ধ প্রাগেবং শুদ্ধালা সপ্তমেহহনি। সংকল্পোপোষ্য কর্ত্তব্যমন্ধ্রারোপণং শুভং। কুর্ব্তমান্দীমুখং
শ্রাদ্ধং পূর্বেজ্য স্বস্তিবাচনং। স্বগৃহ্যোক্তবিধানেন
তাদেব বিদধীত বৈ। চতুর্ভিব্বর্ণ কৈঃ সম্যক্ নীলপীত
সিতাসিকৈঃ। সর্বতোভদ্রমালিখ্য তত্ত্র ধান্যাঞ্জলিদ্বয়ং।

আন ধর বিশেষবিধি কথিত ভইতে গুলাগুলা সময়ে দীক্ষিত হইতে হইলে অন্তোক্ত তিথি বাব প্রভৃতিব দোষপ্রণ বিচার কথিতে হয় না। প্রা-প্রবেশ তুলা প্রশন্তকাল অদিতীয়। স্গাগ্রহণ সময়ে যে বে কার্যা করা হয় সেই সকল অনম্ভ কলদায়ক হয় এবং বিনা পরিশ্রমে মধ্যদিদ্ধি হয় অত্য এব মন্ত্রসিদ্ধি প্রাণ্ডিকে যত্নপুর: সব গ্রহণ সময়ে দীক্ষিত হইতে হইবে। ভন্তান্তরে লিখিত আছে পুণাতীপে, চক্ত স্থা গ্রহণে এবং দেবলকো মঞ্জ গ্রহণ করিতে হইলে মাস ভিথি প্রভৃতিব বিবেচনা করিতে হয় না।

কর্ব্যতা।— গুক যাহাতে সন্তুট হইয়া প্রসন্ন চিত্তে অভিল্যিত ফল-দায়ক মন্ত্রদান কবেন ভদত্সাবে শিবাকে ভক্তিশ্রদাপুরংসর অর্থ, মন ও শরীর বাবা গুরুর সংস্থাম জ্যাইতে হটবে।

অনস্তর গুরুকে ওচি হইগা দীক্ষাব পূব্য সপ্তম দিবৰে সহর উপবাসাদি কিরিরা অনুবারোপণ করিতে হইবে। শিষ্যকেও স্ব গৃহোক্ত বিধানাসুসারে স্বান্তিবাচনাদি পুরংসঃ নান্দীমুখপ্রাদ্ধ প্রভৃতি করিতে হইবে। গুরুও

নিধায় কলসং তত্ত্ব ভীর্থতোয়প্রপুরিতং। বেষ্টিতং বস্ত্র-যুগ্মন পঞ্চরত্বসমন্বিতং। আত্রাম্বত্পপ্রস্নাচ্যং শাখাভি-ক্লপশোভিতং। 'নারীকেলফলোপেতং মাঙ্গলৈঃ পরিতো-জলং। দর্কোৎদবসমাযুক্তৎ কৃষা তত্তার্চ্নয়েদ্ধরিং। ঋগ্-য়ঙ্গুঃ দামদূক্তৈশ্চ স্মার্টের্ডঃ পৌরাণিকৈরপি। মন্ত্রৈকাগমিকৈ-टेन्डव देवखदेवरम् वमर्क्डरयः । वत्रराम् खाकारान् वामः-কুগুলাঙ্গুলিভূষণৈঃ। আবয়েতিস্ত সূজানি মন্ত্রনিধাৎসবে শুভে। গুরুওৎকল্পবিধিনা ভূতশুদ্ধাদিমারভেৎ। স্থাস-कानक विश्वमा विधिवछ्छ शृक्षस्य । शृक्षनीरेश्रम्ट शृर्त्वाकु-সাধনৈঃ পুরুষোত্তমৎ। পুর্ন্মোক্তনৃত্যগীতালৈয়ক্তৎসবং কারয়েৎ। পুণ্রেভিয়া গৃহস্থাভ্যো দণ্যাদ্বত্ ञ्चितछः । गऋतूष्याम् जान् नमन्यारमाष्ट्रमगानिकः । ८ । ४ । চানপানারৈরবন্যভ্যোহপি অদীয়তে। এবং তত্তোৎসবৎ কৃষা वार्ष्यो झानवनकरत् । जन् दिन ह वार्ष्यो ह जिकालः পূজারেৎ প্রভূং। ষ্ট্রহ্মং জপেতত পূজাতেইছনি শং শুরুঃ।

নীল শুক লাছিল পঞ্চৰবিধা যথাবিধি স্পান্তে ভ্রমণ্ডন করিয়া ভালতে অজ্ঞান্য প্রিমান শুক্র ধ্যান্তোপরি পঞ্চজু, পঞ্চন্ধর, বস্তু মুগ্র ও নারীকেলন্ক ভার্তিলপুর্বকুত্ত স্থাপিত করিবেন। এবং ভাষাতে ব্লবিধ উৎসব প্রান্তব স্থানিত করিবেন। এবং ভাষাতে ব্লবিধ উৎসব প্রান্তবিধ অর্চনা করিবে। অনপ্তর অঙ্গুরী, কুণ্ডল বলার প্রভৃতি নানাবিধি অগজনা ও বস্তানিয়ার প্রান্তবিদ্যার ব্যান্তবিদ্যার স্থানাবিধি অগজন ও বস্তানিয়ার ব্যান্তবিদ্যার করিবা স্থানাবিধি অগজন ও বস্তানিয়ার ব্যান্তবিদ্যার করিবা স্থানাবিধি অগজন ও বস্তানিয়ার ব্যান্তবিদ্যার করিবা স্থানাবিধ ব্যানিথি স্থানাবিধ অগজনা করিবা স্থানাবিধ ব্যানিধি অগজনা, চন্দন, প্রসা, ভালাল ও উন্তন্য বস্তানির করিয়া প্রান্তবিধ্য করিয়া ক্রিপ্ত করিয়া ক্রিপ্ত করিয়া ক্রিপ্ত করিয়া ক্রিপ্ত করিয়া ক্রিপ্ত কাল্ডব স্থানাবিধি মহোৎস্বের স্থিতি কাল্ডব্যে গাড়ব্য অর্চনা করিয়া

পরেহ্ বি তথা প্রাতঃ পূর্বেবৎ সর্ব্যাচরেৎ। সংপ্রা
বিধিবলাময়ির কার্যামথাচরেৎ। বিশিষ্ঠ সংহিতারাস্ত
ক্রলকণনীরিকং। তথাহি ।—গৃহ গৈশোনভাগে তু
মতপং কারয়েদ্বৃধঃ। বড় দাশাইভিহ তৈঃ বোড় শৈর্বা
সমস্তকঃ। চতুর্ঘারসমাযুক্তং তোরণাদ্যেরলঙকতং। কৃতং
তন্মধ্যভাগে তু কারয়েচত তুরত্রকং। বিতত্তি দ্বর্ধাতং
যৎ কৃত্যকুৎ মনীষিভিঃ। বিপ্রাণাং ক্ষত্রেয়াণান্ত দকুলি জ্রয়সংযুক্তং। বৈশ্যানাং দ্যুক্ত নাধিক্যং শুদ্রাণাং হল্তমাত্রকং।
প্রথমা মেখলা তত্র দাদশাক্ষ্লবিস্তৃতা। চতুর্ভিরক্ষু লৈশ্বস্যাক্ষোমতঞ্চ সমন্তকঃ। তস্যাশ্চেণিরি বপ্রঃ স্যাচ্চত্রক্ষ্লমুন্তঃ। মন্তীভিরক্ষু লৈঃ সম্যুণ্ বিস্তীর্ণন্ত সমস্তিঃ। তদ্যাপরি পুনঃ কার্যো বপ্রঃ সোহপি তৃতীয়কঃ। চতুরক্লবিস্তীর্ণশেচামতশ্ব তথাবিধঃ। যোনিস্ত পশ্চিমে ভাগে প্রাঙ্মুখী
মধ্যমংক্তি।। ষড়ক্ লৈশ্চ বিস্তীর্ণা চায়তা দাদশাক্ষ্পিঃ।

রাজিতে ভাগরণ করিবে। এবং গুরুকে পূজা সমাপন হইলে দিবা রাজিতে ভ্রম্ভাঞার মূলমন্ত কবিছে হইবে। অপর গ্রাভিক্তিকাকে পূর্কোকে সমত কর্ত্তান করিয়া যথাবিধি আবামপূজা সমাপন করিয়া কুশু অথবা স্থান্তিলে বহিল জাপন করিয়েও হইবে।

সংগতি হলিং বিভিন্তাক কুও নুক্ৰু ক্থিত কই তেছে। অধান প্ৰের ঈশান কাণে ৬ হড়, ৮ হড়, ১২ হড় অথবং ১৬ হড় পরি-মিত চতুর্বার্থক ও ভোরণ—প্রভৃতিধারা স্থানান্তিত মণ্ডণ নিম্নিত করিয়া ভালার মধান্তানে আহ্মণের শক্ষে একহন্ত ৪ অসুলি কারেরের শক্ষে একহন্ত ৩ অসুলি, বৈভার পক্ষে একহন্ত ২ অসুলি, শৃঞ্জের পরে কেবল ১ হন্ত পরি-মিত ধাত কলিয়া চতুরক্ষ কুণ্ড করিবে। ইহাতে ৪ অসুলি উল্লত এবং ঘাদ্শাস্থ বিশ্বত নেবলা, করিয়া ভাহাব উপরি ভাগেও অসুলি উল্লত ৮ অসুল বিশ্বত চতুদ্ধিণে ব্যানিম্নাণ করিয়া ভাহার উপরি ভাগেও প্রকারে

পৃষ্ঠোনতা গলেন্টের সন্ধিন্ত। মধ্যমোন্নতা। কঠোইনং বরমান্তঃ স্থাৎ কৃতে চ করমান্তকে। কঠো যত্নেন কর্তব্যা ভূতিমুজিকলেন্সুভিঃ। নাভিরপাথরা কৃতমেকমেথলকং ভবেং। এবং লক্ষণসংমুক্তকৃতমিন্টার্থনিদ্ধিনং। অনেক-দোবদং কৃতং তত্ত্ব ন্যাধিকং যদি। ভন্মাৎ সমাক্ পরী-ক্যৈব্যং কর্তব্যং শুভমিদ্ধতা। হস্তমান্তং স্থিলং বা সংক্ষিপ্তে হোমকর্মাণ। ইতি কৃতলক্ষণং।

বায়ব্যে চাথ বৈশান্যে পূজাবেদীং প্রকর্মেৎ হস্তো-মতাঞ্চ বিস্তীণীং চতুর্হস্তাং সমস্ততঃ। শালিতপূল চুর্ণেশ্চ নীলণীতাসিতাসিতৈঃ। রক্তারুণেগুল্রগৌরের্বরণির্যন্তং সমালিথেং। রাজ্ঞা দীক্ষা যদান্যত্র বহুপত্তং নির্দ্ধাতং। আদৌ রেখা চতুর্দিকু দশ সপ্ত চ কার্মেং। মধ্যে বোড়শ-কোষ্ঠানি যন্ত্রার্থং পরিমার্জ্জ্মেং। ততঃ পংক্তিব্য়ং মার্জ্জাং দিকু কোণধরং গৃহং।বিদিকু চ সমা রেখা স্তত্র দাদশ রাশ্যঃ। কৃত্বা পংক্তিব্য়ং বাহ্যে বহুস্থিং স্থাপয়েওতঃ। শেষপঙ্কিব্যুরে ষড়ভিঃ কোঠেছারং সমস্ততঃ। শোভো-

ভজুলা বথা কৰিয়া কুণ্ডেৰ পশ্চিম ভাগেও অসুল বিজীপ ১২ অসুলি আয়ত এবং পৃষ্ঠভাপে উন্নত, লচ্চিত্ৰ পূৰ্বমূখী খোনি নিৰ্দাণ করিয়া ক্তমান কুণ্ডে বৰমান কণ্ঠ করিতে কটবে। এই প্রকার লক্ষণে লক্ষিত কুণ্ড অভিলব্যিত ক্লান করে,ইচাতে যদি নানাধিক কিছুহয় তবে অনেক . আনিই হয় অভন্তব বিশেষ অবধানের সহিত কুণ্ডনির্দাণ করিবে। হোমের সংক্ষেপ ছইলে হস্তপরিমিত স্থানিক করিতে হটবে।

আর বাষুকোণে অথবা লিশান কোণে একছত উরত ৪ হাত বেনী কৈরিয়া ভাষতে শুরু, পীত ক্লফ ও যক্ত প্রকৃতি বর্ণবারা যন্ত্রলিধিবে। রাজাভিয় সাধারণের পক্ষে অইপক্ষ পদ্ম লিখিতে হইবে। ইহাতে প্রথমতঃ পুরুষ্ধ ও পশ্চিমে ১৭ টা ব্রথাবারা একটি ক্ষেত্র করিয়া ভাষার মধ্যত্ব বোড়শ

কোষ্ঠা যন্ত্রের জন্ত মার্চ্জিত করিয়া রাখিবে। এবং ভাষার পরের ছই গণিক্তি মার্চ্জিনা করিয়া ভাষাতে দাদশ রাশি ও কোণ কোষ্ঠা করিবে। আব বহি-ক্রেনা কংজিদ্বর বহিন্ন স্থাপনার জন্ত মাজিতি করিবে। শেষণংক্তিদ্বরের অধন্তন পংক্তিদ্বর চারি কোষ্ঠা এবং উপরিতন পংক্তিদ্ব ছই কোষ্ঠা এই চর্ কোষ্ঠাদারা চতুর্দিগেই চতুর্দ্ধার করিয়া উক্তপংক্তিদ্বয়ের ভিন ভিন কোষ্ঠাতে শোভা ও উপশোভা করিবে। পঞ্চায়তন দীক্ষান্তে এই সাধারণ নিয়ম জানিবে। বহির্ভাগে ভিনটি বৃত্তাদিয়া ভাষার মধ্যে অইদলপদ্ম করিবে। ঐ বৃত্তত্তর চক্ত স্থাও বহ্নির সদৃশ। ভাষার বহিংক্তদেশে চতুরত্র এবং কর্ণিকার মধাভাগে ষট কোণ লিখিবে। পদ্মের পূর্বাদিগের পত্র পীতবর্ণ, পশ্চিমে শুক্রবর্ণ, উত্তর্নিগের পত্র রক্ত, দক্ষিণের কৃষ্ণ, অগ্নিকোণের পাটল, নৈখতে নীল, বার্কোণের ধূত্র এবং ঈশান কোণের পত্র গৌরবর্ণ এই নিরমে অইপত্র শিবিয়া মণ্ডলে শত্র, চক্র, ধৃত্ব ও বাণ লিখিয়া মণ্ডলোপরি শ্রীরামের পূলা করিবে। ক্রায়োপাজ্জিত বিভ্রারাতেই স্থান ও বঞ্চাদি কার্য্য করিবে। জন্তানোজিতিত বিভ্রারা ভিজ্ঞপুরঃসর কার্য্য করিবেশ্ব

## वर क्रिक्शिकरः।

• আগস্তো।— আচং ৰাজ্প্রমানেন হোমান্নং । বদ্ধ। ত বৈ । বিংশত্যংশৈর্ডবৈদ্ধণ্ডো বেদীতৈর ইভির্তবেশ্ব । একাংশেন মিতং মুখং। বেদীত্রাংশেন বিস্তান্তঃ কঠাঃ দপ্তাংশেন মিতং মুখং। কেদীত্রাংশেন বিস্তান্তঃ কঠাঃ দপ্তান্তিতঃ। মুখং কাঠা প্রমাণং স্থাৎ মুথে মার্গং প্রকল্পরেশ্ব। কনিঠাক লিমানেন সর্পিয়োনিন্দির্মান্ত। বেদীমধ্যে বিধাতব্যা ভাগেনৈকেন কর্ণিকা। বিদ্ধীত বহিস্তান্যা একাংশেনাভিত্যে বইং। তদ্য থাতং তিভির্ভার্কির্বৃত্তমন্ধাংশতোবহিঃ। অংশেনেকেন পরিজ্ঞানি পরিকল্পরেশ্ব মেখলা মুখবেদ্যোঃ দ্যান্থ পরিজ্ঞানি সমানতঃ। দওম্লাগ্রমাঃ কুন্ডৌ গুণবেদাস্থলৈঃ ক্রমাণ্ড। গণ্ডীমুগাৎ সমাংশংদ্যাণ্ড। দণ্ডদ্যানাই করিতঃ ষড়ভিরংশৈঃ পৃষ্ঠভাগো বেদ্যাঃ ক্র্মান্কতির্ভবেশ্ব। হংসদ্য বা হস্তিনো বা পোজিলোবা মুখংলিখেশ্ব। মুখস্য পৃষ্ঠ-

অংগাগামী হইতে হইবে। আর কুণ্ডান্তব হইবেও এইরূপ নিষ্মাত্র সারেই পূজা করিবা হোমাদি করিবে।

আন্তর শ্রুক ক্রেৰের লক্ষণ অভিত্তিত চ্টুভেছে। হোমাণ বাত প্রমাণ
শ্রুত করিতে হর, প্রথমত প্রভাবে কাই থানিকে ৩৬ ভাগ অভিত করির।
তাহার বিংশতি অংশহাবা দণ্ড নির্মাণ কবিবে এবং পর্কোক্ত অভিত ভাগের
৮ ভাগহাবা বেদীর আকৃতি করিবে আর একভাগে কঠ এবং সপ্তমভাগে
মুখ নির্মাণ করিবে। উক্ত কঠের বিস্তার বেদীর তিনভাগের একভাগ
হইবে। কঠের পরিমাণামুসারে মুখ করিয়া ভাহাতে মৃত নিঃসরণার্থ কনিটা
কুলি প্রবেশ হর এইরূপ একটি পথ করিবে। আর পুর্বোক্ত বেদীর মধ্য
হানে প্রকাশ পরিমাণে কর্ণিকা করিবে। ঐ কর্ণিকার বিভাগে চতুর্দিকে
প্রকাগহারা ক্রিবিট করিবে ঐ বটের যে প্রমাণ ভাহাব থিভাগ পরিমাণে
ভাহাতে খাত করিবে এবং ভাহার বহিভাগে মন্ত্রাগ পরিমাণ বৃত্ত করিতে

ভাগে স্যাৎ সংশ্রোক্তং লক্ষণং ক্রচঃ। ক্রচশ্চতুর্বিং শতি ভির্ভাগৈর্বিরচয়েৎ ক্রবং। ঘাবিংশত্যাদগুরানং অংশৈরেভাস্য কীর্ত্তিতং। চতুর্ভিরংশৈরানাহঃ কর্বাজ্যগ্রাহিত। চিছরঃ। অংশঘ্রেন নিখনেৎ পক্ষে মুগপদাকৃতিঃ। দগুন্দাগ্রয়োর্দ্ধতীভবেৎ কঙ্কণভূষিতঃ। পিলাশপত্তে নিশিহ্তে ক্রচিরে ক্রফক ক্রতে তিতঃ। বিদধ্যাৎ বাশখপত্তে সংক্রিপ্তে হোমকর্মাণ।

শ্রুতং বাজ্ প্রমাণেন হোমার্থং বিদ্যীতবৈ। চতুরজ্ঞং
বিধারাদো সপ্তপঞ্চাঙ্গুলং ক্রমাং। ভৃতীরাংশেন পর্তংস্যাৎ তদন্তর্তশোভিতং। খাছা সমং তীর্ব্যপ দ্বং তদধঃ
শোধয়েছহিঃ। চতুর্থাংশং চাঙ্গুলস্য শেষাচ্চার্দ্ধং তদশুতঃ। রম্যাঞ্চ মেধলাংখাতে শিকেনার্দ্ধন কারয়েং।
কুর্যাক্রিভাগাবিস্তারমঙ্গুকেন সমায়তং। সার্দ্ধমঙ্গুক্তি
কং বা স্যাৎ তদ্বে তু মুধং ভবেং। চতুরজ্ববিস্তারং

ভইবে, ঐ বৃজ্ঞের চতুর্দিকে অকজাগ পরিবাণে পত্র কমিত করিবে। আর
মূখ ও বেদীর চতুর্দিকে অর্থাংশ পরিমাণে যেখলা করিবে। দণ্ডের মূলে তিন
আর্থুলি এবং দণ্ডের অন্তভাগে চারি অস্থলি পরিমাণে ছইট রুক্ত করিবে।
আর তুলাভাগে বলয় যুগা অভিত করিবে। শ্রুক্ত পরিমাণ এই প্রকার
ক্ষিত আছে। অনস্তর পূর্বোক্ত বেদীর পূর্তকে ও ভাগে বিভক্ত করিয়।
পৃষ্ঠভানটিকে হল্ডির পৃষ্ঠদেশের তুলা নির্দ্ধাণ করিবে। আর নির্দ্ধিত মুখের
পৃষ্ঠভাগে হংস এবং হল্ডা ও বরাহের মুখের আকৃতি অক্তিত করিবে।

আনতার ক্রেবের লক্ষণ কথিত হইডেছে। ক্রচের ও আগের একজার পবিভাগে করিয়া তিনভাগ বারা ক্রব নির্মাণ করিছে এইবে। অর্থাৎ মইন্ ব্রেবেৎ ভাগেক্ষক হইবে ভাহার ১২জংশ পরিভাগে করিয়া ২০ অংশবালা ক্রম করিতে হইবে। উক্ত চতুর্বিংশভি, ভাগে ২২ অংশে ক্রমণ্ড করিছে, অর্থানী ২ ভাগবারা ক্রবের মুখভাগ করিছে করিবে। ব্র মুখভাগ এইরুপ শঞ্চাল লমথাপি বা। ত্রিছয়াল্পকং তদ্য মধ্যান্তন্ত্র শোলনং। শুবিরং কণ্ঠদেশে দ্যাৎ বিশেলয়াবৎ কনীয়সী। শোলং কৃতস্ত কর্তবাং যথাক্ষতি বিচিত্রিতং। চধকেণ দমা'যুক্তো হস্তমাত্র: অবো ভবেৎ। চতুক্ষকং শোভনং স্বতং বালুলং বিদধীত বৈ। যথালপ্রসে গোল্পাদে প্রতিরং দৃশ্যতে তথা। এক মিন পুস্তকে এতাদৃশানি শুচকশ্রের প্রমাণানি।

ততঃ কৃত্তহলং সমাক্ গোময়েনোপলিপ্য চ। আদে বিহ্মথং ক্র্যান্ত্পবিষ্ণঃ প্রবিষ্টরে। প্রাণানায়ম্য মনসা জপেনান্তমননাধীঃ। যাবৎনাক্তং সঞ্চরতি সর্বাঙ্গেরপি নিশ্চলঃ। সংকল্পা স্থান্তিলে কৃত্তে ক্ত্রা সেবাশ্চ মধ্যতঃ। মটকোণং বা জিকোণং বা বহ্দিমত্রাদ্ধীত বৈ। প্রোণ্ছ্যাপদার্য্য তৎ পশ্চাৎ দত্রা বিষ্টরমাদরাৎ। লক্ষ্মীয়ৃত্মতীং তত্র প্রভানে রিায়ণস্য চ। প্রাম্যধর্মেণ সংজাতং বহিহুৎ তত্ত্রে প্রভানে রিায়ণস্য চ। প্রাম্যধর্মেণ সংজাতং বহিহুৎ তত্ত্বে বিচারয়েছে। প্রাথমাবিধিনৈবায়িমাহিতায়েগ্রহাদিপি। অভিত ক্রিণেদ চিহ্ন যেরপ লক্ষিত হয় জনগুদাবে উক্ত ক্রেরে অগ্রন্থাগ নিশ্বিত ক্রিবে। ক্রেবে অগ্রন্থাণ ও নিম্নাণে বন্যকুক ক্রেবে অগ্রন্থাণ করিতে হইবে। এই প্রকার ক্রম্ক ক্রবে প্রভাগে বন্যকুক ক্রেবে নিশ্ছ দ অশ্বপ পত্র দাবা অথবা প্রাণপ্রভাবা ক্রম্ক ক্রবে প্রভাগে চাহাবদারা হোম করিবে প্রক্ ক্রবের প্রমাণ প্রকার্য ক্রম্ন লিখিত হইরাছে, জনাবস্ত্রক বনিয়া ভাহাব অস্বাদ করা হইল না।

আনস্তর আয়িছাপন বিধি ক্ষিত ক্টতেছে। কুওলানে গোমর ছাব।
ভালরপ পেশন করিয়া কুশাসনে উপথেশন পূক্ক বাক্তাপন করিব।
ভালরপ সেতি বাহু সক্ষাজে সঞ্জন করিয়া নিচ্চল না হল তাবংকাল পর্যার
আনস্তচিত ক্ট্রা প্রাণারাম ও মন্ত্র জল করিয়া সংল্ল করিবে। অনস্তব
ক্তিলে করেবা কুডে স্থাহানে জিকোল অব্ধা বটকোল অব্ধা পূর্কাঞ

খানীয় চাদণীতাত্ত কুশৈঃ প্রস্থান্য ষত্নতঃ। সংপ্রোক্ষ্য থাজিকৈঃ কাঠিঃ পুনঃ প্রস্থান্যদপি। প্রাণায়ামং ততঃ কৃষা প্রবিস্তার্থ্য কুশাক্ষুরান্। স্বগৃহ্যাক্তবিধানেন বাহ্য-দেবাদিমর্চয়ে। তান্যবেক্ষ্য পবিত্তেণ চোত্তানানি বিধার চা পুনঃপ্রকালয়েৎ পাত্রং পরিপূর্য্য শুভাস্থ্না। দত্থা-ক্ষতান্ পবিত্রক্ষ তত্তাৎপূর্য বিধার তথা দিশুয়তরস্যাৎ তৎপাত্রং প্রণীতেত্যুচ্যুতে বুধৈঃ। তত্তার্চয়েৎ প্রস্থুং বিষ্ণুং ক্রন্মাণং ব্রান্মণৈর্ভুৎ। আজ্যঃ সংস্কৃত্য বিধিবৎ প্রাক্ত্রকাণং ব্যন্ত্রক্রিবাহা-জঃ সমাচরেৎ। অক্টাবক্টো চ তারেণ চৈকৈক্স্য চকর্মণঃ। ভুত্রাদর্চিতে বক্ষো বেষজ্বঃ সমাপ্য চা ইধ্ন-দানাদ্যন্মিম্থাজ্যভাগে ভুত্রাৎ পুনঃ। ইত্যামিম্থং।

রেখারর লিখিরা তোকণ করিতে হইবে। অনস্তর কুওমধ্যে অগ্য স্বজিলে বিষ্টৰ আলোন করিয়া মদনাডুৱা অভুমতী লক্ষার আঠনা করিবে। অনস্তর অগ্নিকে লক্ষীনাবায়ণের সম্পন্মে উৎশন্ন চিন্তা করিয়া সাগ্নিকের গৃহ হইতে অগ্নি আনমন করিয়া কুশাধারা প্রজ্বতি করিবে। জলের প্রোক্ষণ করিয়৷ যজ্ঞার কাঠবারা অগ্নিকে পুনর্বার অভিশর প্রজ্ঞানিত করিবে। অনম্বর প্রাণামাম করিয়া কুশাধুর বিশুভ করিয়া তাহাতে বিধানা-পাত্রাসাদন कतित्व। अनक्षत्र व्यनीकामि भावमकन देखानी-ক্লত করিয়া রাধিয়া পুনর্কার প্রকালন করত শুদ্ধ জলবাবা পরিপূর্ণ করিবে। আর ঐ প্রণীতাতে আতপ তপুল ও পবিত্র কেণণ কবিয়া ঐ পবিজ্ঞাবা প্রণীতার জল উৎপ্রবন ও ক্ষেপণ করিবে এবং ঐ প্রণীতাপাঞ্চিকে অগ্নির উদ্ভর দিকে স্থাপিত করিবে । অনন্তর ঐ অগ্নিতে বিষ্ণু ও ব্রাদ্ধণের সহিত ব্ৰদ্ধাকে অটনা করিবে এবং বিধিপূৰ্মক আজা ও শ্ৰুক ক্ৰৱ প্ৰভৃতির সংস্কার ক্রিয়া (e) এই মত্র উচ্চারণ পূর্বক আচিত বৃহ্নিতে আরির গর্তাধান তইতে বিবাহ পর্যান্ত অভ্যেক সংস্থারের ৮টি হোম করিয়া বড়ক হোম ◆तिरव 1 व्यनखत गक्त भूभाविषात्री व्यतित व्यक्तना कृतिया देशामानाहि व्याका-

অবময়ে হুসম্পন্ন বৈষ্ণবং প্রশক্ষেক্র । সালাবরণমত্রামো প্রুমেন্দ্র । সমিদাক্তাচরণাঞ্চ প্রত্যকং
বোড়শাহতীঃ । জুহুয়ামালমন্ত্রণ পরিবারেভ্য এব চ।
ভিল্রো বিনায়কাদিভ্যঃ সর্বেভ্যোহ্ণগ্যাহ্তীমুনে।
দ্বারাসপরিবারেভ্যঃ স্থান্ত্রা জুহুয়াৎ পুনঃ। হুত্বা তে
নাহতীস্তত্ত্র প্রদদ্যাত্ত্তদাপ্তরে। অঙ্গদিবৈষ্ণবান্তেভ্যন্তিক্র
আল্যাহ্তীঃ পৃথক্। ততঃ সিপ্তিকৃতং হুত্বা য়তেন মুনিসত্তম। অনেন বিধিনা সম্যক্ পরিধিচ্য সমস্ততঃ। প্রণীতামার্চ্ছনং কৃষ্ণা দিল্লাক্ত ত্রক্ষদক্ষিণাং। স্বস্থবিতাকুসারেণ
লোভমোহবিবর্জিতঃ। ততো ত্রক্ষাণমুদ্দায় ত্রাক্ষণান্
ভোজয়েরতঃ। অগ্রিমধ্যগতং দেবং পুনঃ স্বাত্মনি যোলয়েৎ। একীভূতং বিচিত্তিরণ বাচয়েৎ স্বস্তিবাচনং।
সাশীর্বিচোভির্বিহ্রামেধ্যমানঃ হুথী ভবেৎ। হুত্রশেষ্
ভাগান্ত কার্যা সমাপন করিয়া প্রধান হোমাদি করিবে। বিশেষ প্রেই গিবিভ
হবে। ইত্যান্ত্রগণনং।

আনম্ব প্রকৃত হোম কৃষ্তি হুইতেছে। এই প্রকার বিধানাম্নাবে আনি সংখাপিত হুইলে যথাবিধি বৈশ্বৰ চক্ষপ্রণ ক্রিয়া, অনিতে আদ ও আবেষণ দেবতাগণের সহিত গুল্লনের পূজা করিবে এবং যথোক্ত সমিধ, মৃত্ত ও চক ইহার প্রত্যেক ধারা রামের মৃণমন্ত উচ্চারণ করিয়া কোড়শান্ততি প্রদান করিবে। এবং বিনায়কাদি সমস্ত পবিবার দেবতা সক্ষের ও প্রত্যেক উক্ত প্রত্যেক অভারার। তিন তিনটি করিয়া আন্ততি দিয় প্রকার আন্বাধারা ধারদেবতা, পীঠ বেবতা ও অস্ব দেবতা প্রত্তিব আন্ততি প্রদান করিবে।এবং সম্পাদিবৈঞ্চবাত সক্লেণ পূথক পূথক তিন তিনটি আন্ততি দিবে। অনম্বর মৃত্যাবা শিষ্টিকং হোম সমাপন করিয়া বিধানাম্পারে অল্বন্ধ ও প্রশীজানার্জন করিয়া এক্ষাকিণা কাবে। অনপ্রব শিষা নিশ্বের বিপ্রাম্পারে গোভ যোহ বজিত হইয়া আদ্ধণ ভোজনাদি ব্যাপার সক্লানিবাহ করিয়া অগ্রামণ্য প্রত্যাবা সক্ল

ততঃ প্রাণ্য কুরুটা গুপ্রমাণকং। মস্ত্রিতং রামগায়ত্রা।
ততন্ত সৈ বলিংহরেং। সমিধাবপি দেবন্য বাহ্যান্তর্দিকু চাক্ষণা। নিত্যনৈমিতিকে কাম্যোপ্যহতেদ্যামুখং স্মৃতং। সর্কাত্রাভাদয়প্রাক্ষেকুরারোপণং তথা। আদাবেব প্রকৃবীত
কর্মাণেহভাদয়ার্থদং। ইতি হোমবিধিঃ।

কলসন্থায় রামায় দদ্যাৎ পুস্পাঞ্চলিতরং। ততঃ শিষ্য মুপানীয় ভক্তিনঅমকল্মষং। প্রাণানায়ম্য বিধিব দভূতভূদ্ধিৎ স্থরাস্বামিতি মন্ত্রেণ বহুভিত্রা ক্ষণৈঃ বিধায় চ। অভিষিঞ্চেত তং মুদ্ধি ভাষেতংকলদোদকং। ওঁ স্থরাস্থামভিষিঞ্জ ত্রন্সবিষ্ণুমহেশরাঃ। বাস্থদেবোঞ্জা-মাথ তথা সম্বৰ্ধণঃ প্ৰভুঃ। প্ৰহ্যুদ্ধশ্চানিরুদ্ধশ্চ ভবস্তু বিজ-য়ায়তে। সাধওলোহগির্ভগবান যমে বৈ নৈঋ ভক্তপা। বরুণঃ প্রনশ্চের ধনাধ্যক্ষন্ত থা শিবঃ। ব্রহ্মণা সহিতঃ শেষো-দিক্পালাঃ পান্ত তে দদা। কীর্ত্তির্ন ক্ষীধু তিমে ধা পুষ্টিঃ শ্রদ্ধা ক্ষমা মতিঃ। বুদ্ধিল জ্বা বপুঃ শান্তির্মায়ানিদ্রা চ ভাবনা। এতান্তামভিষিঞ্জ দেবপত্ন্য: সমাগতাঃ। আদিত্যশচ্চুমা ভৌমে। বুদজীবসিতক জাঃ। গ্রহাস্থামভিষিক্ষ রাছঃ কেতৃশ্চ তার্পতাঃ। ৠষয়ো মূনয়ো গাবো দেবমাতর এব ह। (मनशङ्का क्ष्मना नाग) मिल्याम्हान मन्नाश्मा । ब्रह्मनि সর্ব্বশাস্ত্রাণি রাজানো বাহনানি চ। ঔমধানি চ র্ত্নানি

করিবে। এবং আত্মাও দেবতা এক হটণ টহা চিন্তা করিব। আন্দর্গদিগকে স্বান্তবাচন বলাটবে। আন্দর্গদের আশীর্নাদে বর্দ্ধি ট্রান্তবাচন স্থাতবাচন বলাটবে। আন্তর শ্রীরামের গারতী পাঠ কবিলা কুকুট (পন্দিবিশেষ) ডিম্ব পরিমাণ স্করেশ্ব ভোজন কবিবে এবং স্ক্রীয় অল্লাম্বান্তবিভার নমীপে দশিকে বলি প্রাদান করিবে। নিত্য, নৈসিন্তিক ও কামা সাধারণেই এই

কালস্যাবয়বাশ্চধে। সরিতঃ সাগরাঃ শৈলান্তীর্থানি জনদা নদাঃ। এতে ছামভিবিক্সন্ত বর্দ্দকামার্থসিদ্ধয়ে। ইতি
বলিষ্ঠসহিতোক্তা অভিবেক্সন্তাঃ।

नात्राप्तपः यग्नः त्रामः नित्या मजिनशंकू देव । मर्व्यभः मर्व्य-তোহপ্যান্ত প্রদীণভূ কুণানিধিঃ। ইজি সংস্কৃত্য সংস্কৃত্য ভজ্জলৈরভিষেচয়েৎ। পরিধাপ্য স্বাসশ্চ চল্দনাদ্যব-निभा ह । क्खरन हाझ नीयक धार्त्राञ्चा नारमञ्जः । रेवकवीः মাভ্কাঞৈব তত্তভাদং বিশারদঃ। তন্ম র্ত্তিপঞ্চরন্যাস-म्यानिकामत्यव ह। शृद्धवन विधिव नियाजनात्वव धार्व-ততত্তিরদি স্বদাহত্তং দল্প। শতংজপেৎ। षस्टिन्दिर ততো মন্ত্রং দদ্যাত্মদকপূর্ব্বকং। আবয়োস্তল্য कलामा ভवछावयूमी ब्रायट । श्रममवनन खरेषा निमाम सूनि-পুদব। সভো ভ্যোতির্ময়ীং বিদ্যাৎ গচহন্তীৎভাবয়েদ্গুরুঃ। আগতাং ভাবয়েচিছব্যোধন্যোহস্মীতি বিশেষতঃ। কৃতকৃত্য-ख्या भिनाः नर्दाः जरेना निर्वतरायः । यक योवक जन्जका গুরবে হৃষ্টচেতনঃ। গোভূহিরণ্যবিপিনগৃহকেতাদিকৎ वङ् । नटमर्द्धः जनदः वा जनमाः ममथानि वा । चार्तमा-দন্মবস্ত্রাদি দদ্যাদ্বিত্তানুসারতঃ। শ্রীভাগবতে।—ইয়-মেব হি সচিছবৈয়ঃ কর্ত্তব্যা গুরুনিক্ ভি:। ভাবেন সর্ব্বার্থাক্সার্পণং গুরাবিতি। প্রকারাম্ভরমালস্ব্য রুণ হোম বিধান আভু।দরিক প্রান্ধ ও অসুরারোপণ প্রভৃতি আদিতে করির। शत व्यथान कार्या काश्व कतित्व छत्वहे कार्या यक्षण स्हेर्य ।

देखि स्थाम विधि।

অভিবেক বিধি কবিত হটুতেছে। গুরু কলসং রামকে পুলাঞ্চলি বিয়া ভক্ত ও নিলাপী শিষ্যকে স্থীপন্থ করিয়া প্রাণায়াম ও ভূত গুছি

শুরুং যত্নেন তোষয়েৎ। শুরুপুরকল্রাদীংস্থাবরেৎ
কণকাদিভিঃ। অর্হণাভিন্দ বছ্বা ভজ্যাচ্ছাদনভূষণৈঃ।
এবমুক্তপ্রকারেণ শুরবে দত্তদক্ষিণঃ। কৃতকৃত্যং তথাজ্ঞানং
মত্বা বিপ্রাংশ্চ ভোক্তরেৎ। তেভ্যোহিপি দক্ষিণাং দত্বা
সর্বাং তৎপরিপুরয়েৎ। ত্রাক্ষণাশীর্বচোভিন্দ শুর্বাণীভিঃ
সমেধিতঃ। বিশব্ধমেদশুর্বাদীন্ ততো ভুঞ্জীত মন্ত্রবিং। এবং
লক্ষমুর্বিপ্রঃ কৃতার্থঃ স্যাদ সংশয়ঃ। ইতি দীক্ষাপ্রকারঃ।

প্রভৃতি করিবে। অবস্তর বহুতর প্রাশ্বণের সহিত (প্রবাদ্বাদভি-विक्रक ) हेल्यांकि मात कनमात्र कन पांत्र निरमात मखरक व्यक्तियक विद्या সকাণ স্বয়, প্রাময় রাম শিব্যের সলিচিত হইয়া প্রসল্ল হউন এই বলিরা क्षान्य कन शांत्रा चिक्रियक मुलामन व्हेटन निवा चेख्य बलामि शतिशान করত চলনাদি দাবা শরীরে অবলেপন এবং কুওল বুপল ও অঙ্গুরীষক व्यक्षि अनदाव धावन कविरत। अनखन शक निरमान भंदीरन माक्का, খব্যাদি ও মুর্ত্তিশঞ্জর প্রভৃতি ন্যাস সকল করিবেন। এবং শিব্যের মন্তকে ঋণ व्यक्षान शृक्षक निध्यत्र इस त्रांचित्रा चार्टाखरमण मृतमञ्ज स्वत्र कतिता हेहेएन आभारमञ উভয়েবট ভূলাফলপ্রদ হইলেন এট বলিবা প্রসন্তাতি নিজের আত্মা হটতে জ্যোতিঃ শ্বরণা বিদ্যা শিষ্যে সংক্রান্ত হটল এটকপ চিন্তা করি-শিষাকেও ধন্ত অবং কৃতকার্যা মনামান করিয়া সমুষ্ট চিত্তে পো,ভূমি,কাঞ্চন,উপ বন ও গৃহ প্রভৃতি সকল সম্পত্তি ভক্তি পুর:সব শুক্পদে निर्दापन कदिए इहेर्द । अने क इहेर्ग छप्त किया हर्र्गारन अर्थवा मनारन चर्नन कदित्व। धकांश चमक हरेल विश्वाकृतात चत्र वञ्चानि धावा महारे কবিবে।ভাগৰতে শিখিত আছে ভক্তশিষা সমস্ত সম্পত্তি ও আগ্রাকে সমর্পন করিয়া গুরুব নিকট নিফৃতি লাভ করিবে। এবং গুরুপুত্র শুক্পদ্দী প্রভৃতিকে ও ভক্তি পূর্বক অর্চনা করিয়া স্বর্ণ অলঙ্কার ও বস্ত্রাদিছার। সম্ভষ্ট করিবে।এই व्यकात अकटक प्रक्रिया क्रिया क्रुआर्यचना रहेका आक्रमिनाक (आक्रन क्राहेश ভোকন प्रक्रिना पिट्ट । अनक्षत्र अक ध्वरः बाक्सलत्र जानीकाम श्रवन कतिया ভাষাদিগকে विषात्र कतियां निरक (श्राक्षम कतिहत्। এই রুপ বিধানালুসাবে भीकिछ इहेरन निम्ध्य हे क्वजार्थ इहेरन ।

দীকাং বক্ষেত্রণ সংক্রিপ্তামশক্তাবার্য্যসম্বতাং। ভদ্ধনারে।—যদৈবেচ্ছা তন। দীক্ষা গুরোরাজ্ঞামুরূপতঃ। ন তিবিন বিভং হোমোন স্নানং ন ক্রপক্রিরা। দীক্ষারাঃ কারণং কিন্তু ক্ষেচ্ছাবাপ্তে তু সদ গুরাবিতি। তদেব লগ্নং স্থাদিনং তদেব তারাবলং চন্দ্রবলং তদেব। বিদ্যাবলং দৈববলং তদেব লক্ষ্মীপতে রঙি স্থাছিন্তনে চ। মৃহুর্তে সর্ব্বতোভদ্রেন বকুন্তং বিধার চ। সোদকং গদ্ধপুশাভ্যামর্চিতং বস্ত্র-সংরতং। সর্ব্বেমিধীপঞ্চরত্বপঞ্চপত্রবসংযুতং। ততো-দেবার্চনং কৃত্বা ভ্রেনদফ্যেতরং শভং। শিষ্যং স্বলঙ্কৃতং বিদ্যান্ত্রপাগ্নি চোপবেশয়েও। মন্ত্রিতং প্রেক্ষণীতোরৈঃ শান্তিকুন্ত জলৈত্তথা। মূলমন্ত্রেনাইশতমন্ত্রিতিরভিষেচয়েও। অথ সম্পাদয়েশস্ত্রং হন্তং শির্দি ধারয়েও। সমাহন্তিত্যক্ষতান দদ্যাদ্র শিষ্যোর্চয়েদগুরুং।

অত্তাপ্যশক্তঃ কশ্চিচেদজনভ্যর্ক সাক্ষতং। তদ-বুনাভিবিচ্যাক্টবারং মূলেন মস্তকে। নিধায়াক্টো জপেৎ

অন্তর সংক্ষেদীকারিধান ক্রিড হইতেছে। তদসারে নিখিত আছে—গুরুর আজ্ঞাপুসারে যে সমগ্র ইছা হইবে সে সমগ্র মন্ত্রহণ ক্রিডে পারিবে। গুকুর অভিপ্রেতদিনে তিথি বিচার, হবিষ্যাশন, হোম, স্থান গুরুপ প্রভৃতি কিছুই আবশাকীয় নহে।

श्वक्त हेष्ट्। इहेरनहे माधरकत शक्क बहेक्कण विरवहना कतिए इहेरव (य, अप। श्रष्ठमिन, श्रष्टनक्ष, श्रष्टनकृष, रेमववन, विम्यावन, छात्रावन आत हत्त्ववन ममस्त्रहे इहेन।

শংশ্রতি কাথাপদ্ধতি বিবৃত হইতেছে। শুক নিখের অভিপ্রেত দিনে মুহুর্ত্বনময়ে সর্কাত্তমশশুলোপরি নৃতন বস্ত্র, পঞ্চপরব, পঞ্চরত্ব গলপুশ সংক্ষাবাধীযুক্ত অলপূর্ণ নৃতন কুন্ত স্থাপিত করিয়া ভাষাতে বথাবাধ দেবভার অর্জনা করিয়া স্থতিলে অষ্টোত্তরশত হোম করিবেন। অনতর অলভায়াদি বিভূষিত শিষ্যকে অ্যিসমীপে উপবেশন করাইয়া অষ্টোত্তরশত মুলময়ে

कर्ल छेशरतरण प्रश्रः विश्वः । हस्तमूर्याधारः छोर्थ निष्काक्षरत्व निर्वातरम् । मस्त्रभाव्यकथनम्श्रात्मः मस्त्रहारक । हेजूल-रमणः ।

দিবিবং স্যায়কমনোর্বাহ্যান্তরমুপাসনং। স্থাসিনাঞ্চান্তরং প্রোক্তমন্থেয়ামূভয়ন্তথা। পঞ্চবর্ণাত্মিকা শক্তিকিন্দুখ্যা সমুদাহতা। নাদান্ধকে শিবে বর্ষ্ঠে সংহাত্যাত্মানু
চিন্তনং। আত্মনন্তত্বচিন্তা তু তত্যাপ্যাত্মনি চিন্তনং।
উভয়োরৈক্যচিন্তা তু উভয়ান্তরমান্তরং। (তত্তবান্তরমান্তরং)। দ্রব্যাদ্যারাধনং বাহুং গৃহস্তু ভদপ্যথ। তদ্যেবোক্তং সংহিতায়াং শন্তুনা শান্তবীং প্রতি। ন গৃহী জ্ঞানমাত্রেন পরত্রেহ চ মঙ্গলং। প্রাপ্রোভি চন্দ্রদনে দানহোমাদিভির্বিনা। গৃহস্থা যদি দানাদি দদ্যায় জুভ্য়াদপি।
অভিমন্তিত প্রোক্ষণাত্র ও শান্তিক্তের জল হারা অভিবিক্ত করিয়া শিবোর
মন্তকোপরি হন্ত প্রদান পূর্বক ইইমন্ত বলিয়া সন্মাহন্ত এই বলিয়া ভঙ্ল বিক্ষেপ করিবেন। অনন্তর শিব্য বর্ণাশক্তি শুক্তকে অর্চন। করিয়া আশীক্রিয়াদি গ্রহণ করিবে।

ইহাতেও বে সাধক অপক্ত হইবে তাহার পক্ষে গুরু সংক্ষিপ্তবিধানে ইটদেবের পূজা সমাপন করিয়া অর্থা পাত্রস্থ জল হারা মূলমঙ্গে ৮বাও অভি-বেক কবিয়া মন্তকে হন্তার্পণ করিয়া কর্ণে ইটমন্ত্র বলিবেন।

উপদেশ——- চক্রপ্র্যাগ্রহণসময়ে, তীর্থ স্থানে, প্রাসিদ্ধ স্থানে ও বিবালকে মন্ত্রমাত্র কথনেব নাম উপদেশ।

দীক্ষিত বাজির উপাসনা বিবিধু—বাহ্য ও আন্তর (মানসিক) ডমধো বাহারা ভাসশাল তাঁহাদের আন্তরিকী উপাসনা,তদভিরিক্তেরআন্তর আন্তাধন বাহ্য আন্তাধন উত্তরিধই হইতে পারে। ৩ং এই বে গঞ্চবর্ণান্থিকা শক্তি ইহাকে কিন্দু বলে এই শক্তিকে ষষ্ঠ বে সহলার ভিতনান (৬) রূপ শিব ভাচাতে সংমিলিক্ত করিছা৷ সেই পরসাম্বার বে চিন্তা করা এবং আন্তাভ সক্ল চিন্তা করত আন্বাভিত্ব সক্ল এই উভ্রের বে একাচিন্তা ইয়ার নাম পূর্লবেছিবিনা নৈব কঃ কুর্ঘাদেতদম্বহং। ন প্রকালারণো দাতুমধিকারোহতি ভাবিনি। গুরুভ্যাহপাজ সর্বেড্যঃ কোবা দাস্যত্যপেক্ষিতং। নারণ্যবাসিনাং শক্তিন তে সন্তি
কলো মুগে। পরিপ্রাড্জানমাত্রেণ দানহোমাদিভির্বিনা।
সর্বেত্তঃপপিশাচেড্যো, মুক্তো ভবতি নাতথা। পরিপ্রাড্
বিরক্তণ্ট বিরক্তণ্ট তথা গৃহী। কুস্তাপাকে নিসক্তেতাং
তাবুভৌ কমলাননে। পুণ্জিয়ো গৃহস্থান্ট মঙ্গলৈর্জ্বলা
লার্থিনঃ। পুজোপকরণৈঃ কুর্জিল্লানানি চাহণং।
বানপ্রযাণ্ট যতয়ো যদেবেং কুর্জিরহং। সংসারাম নিবর্তত্তে বিধ্যতিক্রমদোষতঃ। আর্চপ্তিতা হ্যতে ভবেযুদ্রিখভাজনং। অহিংশা প্রমো ধর্মস্তেষাসেয়া ন পদ্ধতিঃ।

ন হিৎ সাবাতিরেকেশ লভাঙ্কে তানি তানি বৈ। ভাবনাকলিতৈঃ পূজা সাধনৈরেব যুজাতে। ন বহিরোগযুজানাং অস্ত্রতেষাং প্রশাসতে। আত্মানং সভতং রামৎ সন্তাব্য বিহরতি
বে। তেষাৎ ন ছুক্তং কিঞ্চিদ্ধুক্তোখা ন চাপদঃ। যতিভিতাবিতৈদ্ধু বৈঃ প্রো রামোহয়হৎ ততঃ। সংপাদিতৈগৃহিষ্ণেচ ল এব ক্রম উচ্যতে। ইত্যুপাননা।

ইতি শ্রীমৎপর্নহৎস পরিব্রাজকাচার্য্য শ্রীমম্মুক্ষান।
চরণ শিষ্যানন্দনন বিরচিতায়াং রামার্চ্চনচন্দ্রিকায়াং প্রথমঃ পটনঃ॥

গৃহত্বের ন্যায় বিধি হণ না বেহেওু হিংল। ব্যক্তিরেকে সেই সকল উপকরণাদির সম্ভব হর না অভএব যতিদিকের চিন্তা ছারা ক্ষিত উপচারেই আরাধনা করা উপযুক্ত। আর গৃহত্বের পক্ষেও কেবল মানসিক আরাধন প্রশন্ত নহে। যাহারা আবরত আয়াকে রামকপে চিপ্তা কবে ভাহাদেব ভ্রিত নিকর ও বিপদসকল বিদ্রিত হয়। পর্যাবসানে যতি ও গৃহত্ব সম্ভব্ধে এই নিয়ম অভিহিত হইল যে, যতিগণ মানসিক তাব্য ছারা এবং গৃহীগণ নানাবিধ উপপাধিত তাব্য ছারা প্রতিধিন শ্রীরানের আরাধনা করিবে।

व्यवम भवेत नवाश ।

# দিতীয়ঃ পটলঃ।

## -unideality

বদন্তি ততত্ত্ববিদন্তব্বং বজ্ঞানমন্ত্রং। একোতি
পরমান্ত্রেতি ভগবানিতি শক্ষতে। তচ্খন্ধানা কুনরো
জ্ঞানবৈরাগ্যস্ক্রা। পশ্যন্তাত্মনি চাত্মানং ভক্তা শ্রুতি
গৃহীত্য়া। অতত্তে চ বিজ্ঞানি চাত্মানং ভক্তা শ্রুতি
গৃহীত্য়া। অতত্তে চ বিজ্ঞানি বাশ্রিমবিভাগকে।
স্মুতিত্যা ধর্মায় সংমিদিং রিভোষণং। তত্মানেকেন
মনসা ভগবান সাম্বতাং পতিঃ। শ্রোত্বাঃ কীর্তিত্রাশ্রুত
প্রেরং প্রজ্ঞান নিত্যশঃ। অব্যক্তব্রেমসেনা চ নির্কিত্রং ন
পরং ব্রজেং। ছক্ত্রো হ্যরিষড় বর্গো মূর্তং ব্রক্ষ ত্রো
ভ্রেরং।

# ইতি ভক্তিমার্গ:।

चीव चीव वर्ष व्यवज्ञात कृतिवारे छेनाममा करा कारनाक त्यरस्कू चन्छ

অনত্ত ভ্রিমার্গ প্রদাশিত চইতেছে। তথ্বিদণ্ণ বাহাকে অধৈত বলিয়া জানেন এবং দিনি জন্ধ, পরমাত্রা ও ভগবান এই শন্ধরের প্রতিশাদা, মৃনির্গণ উলোতে দৃঢ় বিশাসী হইরা জ্ঞানবৈর্গায়ক এবং শ্রুতি নির্দাণিত ভক্তি হারা আত্মাতে দেই পরমাত্রাকে দেখিতেছেন, এই অন্তই মৃনিগণ বর্ণশ্রম বিভাগে বিজ্ঞাত । তরির সজোবই সমাক্ প্রকাবে অপুষ্টিত বশ্মের ফল মাপ্তি, এই কেইই সেই ভগবান মাদ্বেশ্বর স্থাদা চিন্তনীয়, প্রকার, শ্রুণীয় এবং প্রসংশনীয়। যিনি অবাক্ষ প্রন্ধোপাদক হন ভিনি নির্দ্ধিয়ে সদ্গতি বাভ করিতে পাবেন না বেহেতু কাম, ক্রোধ, লোভ, মেত, মৃত্ত মাংলার্ক প্রিকৃল ছক্তর। অভএব সেই মৃত্তিমান এককে উপাসনা করিবে।

বিলা স্বধর্মং স্থকিঞ্চি দ্বেতারাধনাদিকং। পরিজৎখ্যেত যন্তস্মাৎ ক্ষণাৎ শৈকতহর্ম্যবং। ইতি ধর্মনিষ্ঠা।

ব্রাম্ম্যে বৃহ্তে চোথার চিন্তরেজ্রন্দন্। রামরামেতি রামেতি তারকাথাং পরং স্মরেও। শ্রীপূর্বাং জয়য়য়য়য়ৼ ছিল্লান্তং বিচক্ষণঃ। প্রাতঃ স্মরামি দিননায়কবংশ- ভূবং বেদান্তবেদ্যমভয়ং ক্রেরাজবেশং। বৈদেহিলক্ষণ- যুত্তং ভূবনাভিরামং সংসারস্পার্লোপশমায় রামং। প্রাতঃ স্মরামি চরিতং তুরিতং নিহন্তং রামস্য তস্য পশভক্ষ-ক্রান্তক্যা। যঃ সিক্ষ্বক্ষকথয়া ভববক্ষহন্তা রাজ্যং ভনোতি চ বিভীষণরাজ্যদাতা। প্রাতঃ করোমি কলিকস্মধ-

হুইতে প্ৰিতাক হট্য। যে দেবতাৰ উপাসনা কয়। হয় তাহা হুইতে ক্দ্ম-মন্ম প্ৰাসাংগ্ৰায় তৎক্ৰেই অধঃপ্ৰিত চুইতে ১য়।

সংপ্রতি শ্বণনিত্র অভিহিত তইতেছে। আশা মৃত্রে গালোপান করত শ্রীনাম রাম কর বাম কর কর এই ভানকএজনাম উচ্চাবণ করিয়। বভ্
নক্ষনকে শ্বনণ করিবে। এবং প্রাক্তঃ শ্বনামি দিননায়কবংশভ্ষং বেদান্ত নেদামভয়ং কভলাপবেশং ইত্যাদি মৃশ্লাক্ত স্তব পাঠ করিবে। স্তোজার্থ— বিনি দিবাপতি বংশেণ ভূনণ শ্বরূপ, নেদান্ত হারা বোধবিষয়, সৌমা মৃত্তি, রাজবেশভ্রাতে পিভূষত, জানকী ও লক্ষণের সহিত বিবাজমান এবং বিশ্বমনোরম, শ্বামি সংসারকাপ ভূজাবিষ নিবাববের কভ সেই শ্রীরামকে প্রাভঃসমলে চিন্তা। করি এবং মাংসানী রক্ষেসকূলের কালস্করপ আর বাহাকে সম্প্রবন্ধন মোচন প্রভাবনাদ্বাধা সংসার বন্ধন নির্বীক এবং বিভী-বণকে রাজা প্রদান করিয়া ভিলেন ইহাছারা রাজাদ্বাতা জানা জাইভেল্ আমি পাণাপনোদনের জন্য প্রাভঃসমলে সেই শ্রীরামচল্লের স্থাক চরিত শ্বন করি। আমি সেই অভ্যন্তবন্ধিত মনোহর ক্ষরাপী কলেবর সচিচ দানক্ষর শ্রীরাম কর্তৃত নির্ক্ত হট্যা কলি ক্ষুব্র বিনাশক কল্ম করিছেছি। এই বে রক্ত প্রতিঃকালীন কাথা করিন্তেছি ইহা সামার ভঞ্জিকর ও শ্বণ- নাশকর্ম ডচছর্মণ: ভবতু ভক্তিকর: পরং মে। অন্তঃ বিজেন
হুখভানচিদান্তকেন রামেণ রাজ (রম্য) গুরুদেহবতা
নিযুক্তঃ। প্লোকত্ররং যঃ পঠতি প্রভাতে জ্রীরাষ্ট্রনাপিত
চিত্রবিদ্ধঃ। পারু: প্রিয়ৎ কীর্তিমনস্তসৌধ্যং কর্। চিরৎ
রাষপদং স এতি। গুর্বর্থে ত্যক্তরাজাো ব্যচরদমুবনং
পদ্মপন্ত্যাং প্রিয়ারাঃ পাণিম্পর্শান্তমণোন্য জিতপবিক্রালা যো হরান্তামুজেন। বৈরুপ্যাৎসূর্পনিখ্যা প্রিয়বিরহ্মধারোপিত্তু বিজ্গুরুস্তার্কির্বন্ধসেতুঃ ধলদবদহনঃ
কোশলেক্রোহ্বভারঃ। ইতি স্মরণং।

সন্ধ্যাসুদঙ্গুথোহজাপি নিশি তু পুনর্দকিশাস্যো নিবীতী কুর্যান্ম ত্রাদিশোচং বহিরথ সলিলৈন্ডত্র লিকে মুদেকা। পঞ্চাপানেহথ ২তে দশ পুনরুভয়োঃ সপ্ত বৈ তদগৃহক্ষে

প্রাদ্ধ করে । যে ব্যক্তি শ্রীরামচন্তে মন ও বৃদ্ধিকে অর্পিত কবিয়া প্রাভঃসময়ে এই শ্লোক এব পার্চ করে সে দার্যায়, সমৃদ্ধি, কীর্ত্তিও অপার মুখ লাক করিয়া বামপদ প্রাপ্ত হব। যিনি জনকের অমুস্বভিত্তে রাজ্য ভাগে করিয়া পদ্ধ্রশ্রে বনে বনে বিচরণ করিয়াছিলেন, যিনি বনপথে বিচরণ সময়ে প্রিয়ভমার করম্পর্শে অসমর্থ কপিরাজ কনিষ্ঠ শ্রুগ্রীব কত্ত্ব সেবিভ হওয়ান্তে কঠায়ভ্তব করিয়াছিলেন না, অভিপ্রিতের প্রভিকৃত আচরণ নিবন্ধন প্রিয় বিরুদ্ধে কোপিতা শুর্পাথার প্রতি মাহার জ্বকৃতি কৃতিল হউয়াছিল, যিনি সিদ্ধ্র মধ্যে সেতু বরুন করিয়াছিলেন এবং যিনি প্রণার্গ্রণ লাক নিচয়ের প্রান্তি অনলক্ষরণ সেই কোশলাধীশ্রব প্রীরাষ্ঠক্ত আমানিগ্রকে রক্ষা করুন।

আনস্ত্র শৌচ্বিধি কথিত হইতেছে। দিবসেও সন্ধার সময়ে উত্ত-রাস্য এবং রাজিযোগে দক্ষিণাস্য হটরা বজ্ঞ স্থকে কঠাবলম্বিত করিয়া, মুজিকাদি বারা মুলাদি শৌচ করিতে হয়, তাহার বিধান এই লিক্ষে ১বার বৃত্তিকা লোপন করত প্রকালন করিবে এবং গুঢ়াস্থানে ধবার, দক্ষিণ হত্তে ও বানহত্তে দশবার, উত্তর্ভত কৃত্তে করিয়া সাত্তবায় লোপগালি করিবে ব देव अशामिक मा तब् जिवनियं जियू महाजनकः निर्माद्याः । ই जि ट्यां हिविषेत्र ।

ক্রাদে পাদশেচং বিমলমথ জলং তিঃ পিবেছুম জে দি দেশিগুস্ত বৃথাৎ সজলমভিমুজেয়াসিকারক যুথাং। অসুষ্ঠানামিকাভ্যাং নর্নযুগ্যুতং কর্ণযুথাং কনিষ্ঠান্তাং নাভিদেশং হৃদয়মথ তলেনাসুলীভিঃ শিরোহশং। ইত্যাচমনবিধিঃ।

দন্তোলেখো বিতন্তা ভবতি পরিষিতাদায়ুরিত্যাদি-মন্ত্রাৎ প্রাতঃ ক্ষীর্যাদিকাঠেকটিথদিরপলাশৈতথাআ-ক্বিবৈ:। ভূক্ত্বা গণ্ডুষষট্কং দ্বিরপি কুশমুতে দেশিনী-মঙ্গুলীভিন্দাভূতাই (ভূতাদি) পর্কাণ্ডাপ ন চ নবনী

এই নিরমটি গৃহত্তের পক্ষে নির্বাচিত জানিবে, ত্রতী, বনবাসী ও বতি দিকের জনাত্সারে উলিখিত নিরমের হিন্তুণ করিতে হয়। কিন্তু রাজিবোগে সাধারণেরই স্ব স্থানিরমের কর্ম কর্মতা।

সংগ্রাতি আচমনবিধি প্রদণিত হউতেছে। প্রথমত যথাবিধি পাদবর প্রকালন করিরা বার্ত্তর বিশুদ্ধ জলপান করিবে অনন্তব (অকৃলির মূলভাগ বারা নাসিকারকের অধস্তন ভাগে) ছইবার উন্মার্ক্তন করিরা অনুসাল পূর্বাক অসুষ্ঠ ভর্জনীকে নিলিত করিয়া ভাগার অগ্রভাগ বারা নাসিকাংক্তু-বার ছইবার মার্ক্তন করিবে এবং নিলিত অসুষ্ঠ ও অনামিকা বারা নেজ-বারে এবং কর্ণবার ছইবার ঘ্টবার ঘ্টবার মার্ক্তন করিবা মিলিড কান্ট্র ও প্রস্তুত্ত বারা নাভিতে, করতল বারা ছলরে, একজিত অসুলি সমস্ত বারা ভ্রম্বর-মূলের উর্জভাগে ও মন্তব্য একবার অক্বার মার্ক্তন করত আচমন্ত্র সমাপন করিবে।

় ৰঙধাৰন।—প্ৰাতঃসময়ে (সুৰ্যোদয়ের পূর্ব্ধে) দাদশাসূল পরিবিত আত্র বট বদিদ পলাশ বিদ্ব অবশ প্রভৃতি প্রান্ত কীরীবৃক্ষের কঠে দারা 'আরু-ব্যবং বংশা রর্জ্য প্রজাঃ পশুৰুদ্ধি চ র ক্ষরপ্রজাক সেধাকজনো ধেরি বন- सम्बात्र जाउन् । श्रे जात्र् क्तर या गाववर्तः श्रे काः श्रेष्ठ गृति । जिल्ला श्रेष्ठ विद्या । देखिन स्थापन महाः । नथर नमश्रेर मः गाया श्रेष्ठ का विष्य क्रिया । स्थापन क्षाप्र क्षाप्

তৈলেক্যতৈত অময়াধিদেব শ্রীনাথ বিক্ষো ভবদাজায়া বৈ। প্রাতঃ সমুপান্ন তব প্রিয়ার্থং সংসার্থাজামপুরর্ত্ত-গ্লিয়ো। জানামি ধর্মং ন চ মে প্রবৃত্তির্জ্জানাম্যধন্মং ন চ মে নির্ভিঃ। ত্বয়া ক্ষীকেশ ক্ষানি স্থিতেন যথা নিষ্কোহ্মি তথা করোমি। ইতি প্রার্থনাবিধিঃ।

ল্পতে" এই মন্ত্রপাঠ করিয়া দস্তধাবন করিতে হয়। উক্ত প্রশস্ত কাঠের অন্তাবে এবং প্রতিপদ, দশমা, বঁটা, নবমী, চতুর্দলী, অইমী, অমাবসাা, পূর্ণিমা। সংক্রোপ্তি, প্রাদ্ধবাসর, জন্মবার ও এত্রিবস প্রভৃতিতে হাদশগত্মু জল হারা মুখ শুদ্ধি করিবে ঐ সকল দিবসৈ ও তৃণাদি হারা দ্বধাবন শাল্প বিরুদ্ধ। এবং দ্বধাবনে ওর্জনী ভিন্ন অস্থাল সকল নিষ্টিই চ্ইল জানিবে।

ভাবনা—নথাদির সংশোধন হইলে সাধক গুচি হইয়া আন্তিকাদি আসনে উপবেশন কারয়া সেই পরমাত্মা র্যুনক্ষনকে চিন্তা করিয়া আমি দেই রাবই অস্ত নাল, সেই,সচিদানক ব্রহ্মত্মপেই শোকাশ্রয় নহি এবং নিতামুক্তত্মপ্রপ এইয়প আস্থাকে ভাবনা করিবে।

আর্থনা—হে প্রনাথ! হে বিফো! তুমি ত্রিণোকের চৈতপ্রময় অধীবর, আমি তোমার আজ্ঞাতে প্রাতঃকাশে গাজোখান করিরা ভোমার তৃত্তির জন্য এই গংসার যাত্রার অন্তবর্তন করিতেছি। সংকার্যা করিলে ধর্মা হর আমি রাটি করিছে লানি বাটে, কিন্তু ভাষাতে আমার প্রস্তুতি কইতেছে না, আর অসং কার্যো অধর্মা হর ইহা আমিরাও ভাষাতে আমার নিরুভ হইতেছে বা, মুনরুছ তুমি সাহাতে সিমুক্ত করিতেছ ভাষুাই করিতেছি।

ভাচো দেশে বিধানেন কৃতং যৰু কাস্ত্ৰকং। থজোপনীজ্ঞানিত্যতমন্ত্ৰেণ ধাররেচ্ছতং। ন দক্ষিণামুখো নোৰ্দ্ধঃ কুৰ্য্যাৎ কেশপ্রসাধনং। স্থান্থাংকারঞ্জ গায়ত্তীং নিবন্ধীয়াচিছখাং ততঃ। ধৌতাম্বরাণি দর্ভাংশ্চ গৃহীত্বা মৃত্তিসাংস্তথা। নদ্যাদিজীরমাগত্য স্থায়াৎ স্বস্ববিধানতঃ। অধোতেন চ বজ্ঞেণ নিত্যনৈমিজিকাং ক্রিয়াং। কুর্বন্ কলং ন চাথোতি দতং ভবতি নিক্ষাং। ধৌতাজ্যি পাণিরাচান্তঃ কুর্যাৎ সংকল্পাদুতঃ। রামার্চান্ত্রা স্থানং করিষ্যেত্হং তদাজ্ঞা।

বৃদ্ধিতং পুগুরীকাক্ষং মন্ত্রমূর্তিং প্রভুৎ শ্বরন্। অনন্তাদি-ভাসং কাসং বাহ্যদেবং চতুত্বিং। সভাচক্রগদাপদ্ম মৃকুটং বনমালিনং। তৎপাদোদংকলা ধারাং নিপতস্তাং খ-

অনস্তব স্থান বিধি কথিত হইদেছে। পবিত্র স্থানে বিধানাক্সাবে
নিশাদিত বে যজোপবীত ভাহাকে 'যজোপবীতং পরমং পবিত্রং বৃহশাভিবিৎ সহলং প্রস্তাৎ আয়ুং সমগ্রং প্রতিম্ঞ শুদ্রং যজোপবীজং বলমস্ত
ভেজঃ (সামবেদীয় ও যজোপবীতমদি যজসাজোপবীজেনোপনেহামি)
এই মত্রে ধারণ করিয়৷ দক্ষিণাসা ও উর্জিত না হইয়া কেল প্রাসাধন
করিয়৷ ও বার উজ্ঞারণ পূর্বক লিথাবন্ধন করিবে। অনস্তব ধৌত
বস্ত্র, উস্তরীয়, দর্ত্ত, মৃত্তিকা ও তিল প্রহণ করিয়া নদী প্রভৃতির তটে গমন
করত স্থ বিধানাম্পারে সাম কবিবে। অবোত বস্ত্র পরিক্ষন করিয়া নিতা
নৈমিত্তিক কার্যা করিলে ভাহার ফল প্রাপ্ত স্থ না এবং দানাদি কবিলে
ভাহান্ত নিক্ষল হয়। অনস্তর হস্ত পদ প্রক্ষানন করিছা
শ্রীয়ামের আজ্ঞান্থসারে ভদীর অর্চনার অল প্রান করিভেছি এই প্রসাম
নাম গোজান্তিরেশ্ব পূর্বক সক্ষম করিয়া প্রান করিবে। শীয় ক্ষর্মান্ত
বিভূবিত প্রত্র বাস্থদেবকে শ্রেণ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সমৃত্র বাস্থদেবকে শ্রণ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সমৃত্র বাস্থদেবকে শ্রণ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সমৃত্র ক্রিয়া ব্রন্ধ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সমৃত্র ক্রিয়া ব্রন্ধ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সমৃত্র ক্রিয়া ব্রন্ধ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সমৃত্র ক্রিয়া ব্রন্ধ করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সম্বাদ্ধ প্রত্ন করত ভদীর শ্রীচরণে সমৃত্র জ্বলধারণ
নিজ্যের সম্বাদ্ধ প্রতির স্থান করিছের ব্যাম্বার ব্যাম্বার স্থান করি বিধার ব্যাম্বার স্থান্ত করি সমৃত্র স্থান্ত করের স্থান্ত করি বিধার প্রত্র স্থান্ত করি স্থান্ত করের স্থান্ত করি সাম্বার স্থান করিবের সম্বার্থ করের স্থান স্থান্ত করিবার সম্বার্থ করের স্থান্ত করিল স্থান্ত করের স্থান স্থানী স্থানিক সম্বার্থ করের স্থান স্থানী স্থানিক সম্বার্থ করের স্থানী সম্বার্থ স্থানী সম্বার্থ করের স্থানী স্

শ্বান। চিত্তবেদ্রকাংকে পুল প্রবিশন্তাং স্বকাং ভশুং। তথা
দাকালরেং দর্বমন্তর্দেহগতং মদং। দহক্ষণাথ নির্দ্ধা মন্ত্রী
কারতে ক্টিকোপমং। ইদং স্থানং বরং মন্ত্রাং সক্ষমধিকং স্মৃতং। ক্রাদে বৈদিকং স্থানং ততন্ত্রাপ্রিক্ষাচরেথ।
বিক্রদানে বড়পানি প্রাণায়ামপুরংসরং। প্রিদ্র্বমন্তলাভীর্বমাক্র্যাপ্র-মুদ্রা। বিগত্তবেন চাপ্লাস্য কন্তেনাবন্তঠিব্রেথা সংরক্ষাত্রেণ মূলেন বস্ত্রেম্কদ্রসংগায়া। নিমন্ত্রা
ভিন্মিন্ বাবেথ গুরানং ভল্তা। জপেন্দুং। উন্মন্ত্রা কৃষ্ণমুদ্রাঞ্চ বদ্ধা স্থায়াদ্দিদ্র ভতঃ। শান্তরামন্ত্রার্থই
ভূলদীগন্ধমিপ্রিতং। ক্রা শাঙ্গ প্রাম্বর্ণস্থিত প্রদ্রিন। শাল্পামন্তিবিদ্রাহাণ প্রায়েশ স্থায়া ব্রুদ্রিন। শাল্পামন্ত্রিকাল বিস্কর্মান্ত্রাহাল প্রক্রিন। শাল্পামন্ত্রিকাল বিস্কর্মান্ত্রিকাল প্রক্রিন। শাল্পামন্ত্রিকাল বিস্কর্মান্ত্রিকাল প্রক্রিব। বিপ্রপানেদকং পিবেথ। বিক্রমান্ত্রিনাহালাভাবিদ্রিকাল

তেছে এইকণ দ্বি কৃতিয়া ত্ব বা শ্রীন্থে হিল সমন্ত প্রাথানিত করিবে তি শানে বিশ্ব সাধক সন্দেশ্যে বিশ্ব হ হ ১৯৮ ছেটি কৰি নায়ে নিশ্বপ প্রজা বিশিব হয়। এই মান মন্ত্রান কন্দেশ ও গেই, সংজ্ঞান ফ্রান্ত করিছে ইউনাছে। প্রথমত বৈ, দ্ব প্রান করিছে হয়। অনুভার প্রথমত বিশ্ব কর্মান করিছে হয়। প্রাণান্ত্রাম প্রথমব সভ্যান্ত্রাম তিনি ভঙ্গ মুলা হারা প্রথমবুল হারা প্রথমবুল হারা ক্রিডে ইউনি করিন করিব ক্রিয়া বরণ বালে (বং) ধানা আগ্রবন, করত ছেই খানা আক্রে করিব। হরণ করিব মুলার হারা করিব করিব। মুলার হারা করিব এবং জ্ঞানিকে ধানা করিব। হরণান করিব। মুলার হারা করিব করিছা বালা করিব করিছা ভাগাহের সম্পুক্ত ভুল্মী হনান মিলার জল হারা মুলার পাল প্রথম করিব। আর হারা শ্রেমার ক্রিটের ক্রিমার প্রথম করিব। আর হারা শ্রেমার ক্রিমার ক্রিয়ার ক্রিমার প্রথম করাইরা অভ্যান্ত্রাম মুলার হারা আর্থান করিব। আর হারা শ্রেমার ক্রিমার ক্রিমার প্রথম করাইরা অভ্যান্ত্রাম মুলার করেব। ক্রিমার ক্রিমার প্রথম করাইরা অভ্যান্ত্রাম মুলার করেব। ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার হারা মুলার ক্রিমার ক্রমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রমার ক্রিমার ক্রিমার ক্রমার ক্র

হা দ নিগদতে। পৃথিবাং যানি তীর্থানি তানি তীর্থানি দাগরে। দদাগরাণি তীর্থানি পাদে বিপ্রদ্য দক্ষিণে। ততঃ সংক্ষেপতো দেবান্ মন্ত্যাং কর্পত্তে পিতৃন্। পীড়িছিছা- মরং চোর প্রকাল্যাচন্য মরতঃ। ধারয়েয়াদদী ভাছে পরিধানোত্তরীয়কে। অচ্ছিরজ্বদেশ ভালে আচাদেৎ পাঠনং- ক্ষিতঃ। বহুল চপরিশিক্ষে।—যতীনামালনং ভারং ক্ষা-কারস্ত কারয়েৎ। অভ্যাস্ত চতুপাদং চত্রভান্ত কারয়েৎ। গোলক্ষ্মান্ত ভিন্নং তথা পালাশ্বিপ্ পলং। কোহবিদ্ধং সদৈবাক্ষিং বর্জনোলনং ব্রঃ। দানমাচননং হোমং সেলজনং দেবজার্জনং। প্রোচ্পাদো ন ক্রিতি মাধ্যার-বিধান। আন্নার্লগাল্য প্রোচ্পাদঃ স উচাতে। ইতি মান্বিধিঃ।

মুক্ত পান করিছ। অনন্তর বিক্যু পাদ্যোদক পান কবিবে। মোই ধশত ব্যক্তি ক্রেম আচিত্রণ কবিলে স্থায়ুহত্যাপাপভাগী ১ইবে।

গৃথিনী মণ্ডলে যে সকল তীর্থ আছে নেই সফল তীপ ই সাগবেকে বর্তমান আছে। কিন্তু প্রাধ্যনের ক্ষেণপাদে দেই সাগেরের সহিত্য সমস্ত তীর্থ বিদামান জানিব। অনন্ধর সংক্রেশত দেবতা, মনুষা ও পিতৃপুক্ষগণের ভর্ণণ ক্ষিয়া ব্যস্ত্রনিপাড়ন করিবে। এবং উক্ত্রগণ প্রকাশিত ক্ষিয়া আচমন ক্ষত পরিশুদ্ধ শুকুষর্ণ অছিরদ্ধান্তিত উদ্ভবীয়া ও প্রিধেয়বস্ত্র প্রিধান ক্ষিয়া পীঠোপৰি ইপ্রেশন ক্ষিয়ে

ৰহ্যুচ পরিশিষ্টোক্ত আসনের নিরম অভিনিত চক্টতেছে। প্রকানী-বিকের আসন শুক্রবণ ও কুর্মাক্তি, তন্তিগরর চকুপদাধিক ও চকুর্দিকে তুলা করাইবে। গোমর, মৃত্তিকা, পলাশ শিপ্নল ও অক্রিক ছারা নির্শিত এবং লৌচবিদ্ধ ও ভয় আসন বর্জনীর জানিবে। শ্রোচ্পাদ হইয়া ছান, আচমন ভোজন, জোম, দেবার্চন, অধারম ও তর্পণ করিবে না। আসনার্চ্চ পদে অর্পাং কার্যর উল্লোচন করিরা পাদ্যর মাত্র আসনে সংলগ্ধ করিয়া বে উপ্রেশন করে ভারার নাম ক্রেট্যাদ আনিবে। ইতি সান বিধি। বেশবাদৈয়ন্তিভিঃ পীছা ষাভ্যাং প্রকালয়েৎ করে।

যাভ্যামোন্ত্রী চ সংমার্ভন্ত ঘাভ্যামুম্মার্ভন্তনং তথা। একেন

হস্তং প্রকাল্য পাদারণি ভথৈকতঃ। মংপ্রোক্ষ্যকেন মুর্জানং

ভঙঃ সংকর্ষণাদিভিঃ।আন্যনাশাদ্দিকর্ণাংশ্চ মাভ্যুরঃ কং ভূজং

লপ্শেৎ। এবমাচমনং কৃষা সাক্ষামারায়ণো ভবেৎ। কেলব

(১) নারায়ণ (২) মাধব (৩) গোবিন্দ (৪) বিষ্ণু (৫)

মর্সুদ্দন (৬) ত্রিবিক্রম (৭) বামন (৮) প্রীধর (৯)

হ্রমীকেশ (১০) পদ্মনাভ (১১) দামোদর (১২) সম্বর্ণ

(১৩) বাহ্যদেব (১৪) প্রান্ত্রম (১৫) জনিক্রম (১৬)

পুরুসোন্তম (১৭) অধ্যক্ষজ (১৮) নৃসিংহ (১৯) অচ্যুক্ত

(২০) জনার্দ্দন (২১) উপেন্দ্র (২২) হরি (২৩) কৃষ্ণাঃ

(১৪)। চতুর্থীনমোন্তেরেভির্নামন্তিঃ কর্ত্রবাং। ইতি

ইবফবাচমনং।

#### व्यमखन रेन्छनात्रभन काम्निष्ट इहेर्डाइ।

কেশবার নমঃ, নারায়ণায়নমঃ এবং মাধবার নমঃ এই মন্তর্য উচ্চারপ করত তিন বার জলপান কবিয়া গোবিন্দায় নমঃ এবং বিশ্ববে নমঃ এই বলিয়া ক্রমে হত্তময় প্রকালন, মধুস্থনায় নমঃ এবং ক্রিকিলায় নমঃ এই বলিয়া ভঠয়য় সংমার্জন বামনায় নমঃ এই বলিয়া ২ও প্রকালন, পল্যনাভায় নমঃ এই বলিয়া পাদ্যর প্রকালন এবং দামোদ্যায় নমঃ এই বলিয়া অই বলিয়া পাদ্যর প্রকালন এবং দামোদ্যায় নমঃ এই বলিয়া মস্তকে অভ্যক্ষণ করিবে। মৃথে সম্বর্ধায় নমঃ, ছকিণ নাসিকাতে বাস্কদেবায় নমঃ, বামনালিকাতে প্রভালায় নমঃ, ছকিণ্যেত্র আনর্কয়য় নমঃ, বাম নেরে প্রকালেয়য় নমঃ, দক্ষিণ্যাকর্ময় নমঃ, বাম কর্পে কুলায় নমঃ, বাম লাভিত্তে অচ্যভার নমঃ, বক্ষে ক্রনার্দনায় নমঃ, মন্তকে উপেক্রায় নমঃ, ছক্ষিণভূলে হরয়ে নমঃ, এবং বামভুলে কুলায় নমঃ বলিয়া ব্যাবিষি স্বাল ক্রাছি ছারা স্পৃতি করিছা বৈশ্ববাচন্য করিবে। ললাটে কেশবং ধ্যায়েৎ নারায়ণমথোদরে। মাধ্যং
লাগের ধ্যায়েদ্গোবিলাং কণ্ঠদেশকে। বামে চ দালিলে পার্থে
বিষ্ণুং ব্যাপ্তার চিট্রন্তায়ে । তৎপার্শবাহ্তমধ্যে তু চিন্তায়েব্যাপ্তানাম্য তৎক্ষরে বামপার্থে তু বামনং।
ব্রীধরং বাহুকে বামে ক্ষরীকেশস্ত কম্বরে। অপরে পদ্মনাতঃ
আৎ ককুলামে।দবং স্থারেং। তৎপ্রকালনতায়েন বাম্যদেশেতি মুর্নি।দবিল্লে তু করে বিপ্রো বিভ্রায়ৈ হলদনিং।
পদ্মং মহদ্যং চাপরেহণ শহ্মং কুর্মাং গলান্তথা। ললাটে তু
গদা ধার্যা। হৃদ্রিটালং শংশতথা। নন্দর কৈন ক্রাধ্যে সন্থাচল্লে প্রক্রের। শহ্মন্তালং কিতো বিপ্রঃ শ্রশানে ব্রিয়তে বদি।
প্রাণে বা গতিঃ প্রেক্রিনা ব্রায়্র পান্তাং সন্ধাং স্মাচরেং।
ব্রারথ । নন্দাহিরিরা ব্রায়্র পান্তাং সন্ধাং স্মাচরেং।
ক্রেরণা ক্রন্তের ম্প্রানং ভস্যাফলং ভবেং। ব্রং ব্রেগুনিতং

#### অন্তব ভিলক ধাৰণ্থিধি অভিহিত হুইভেছে।

কালাটে কেশব, উদ্বে নাবায়ণ, হৃদয়ে নাধ্ব, কাঠ গোবিন্ধ, ধনিপ্র পার্ষে বিষ্ণু, দক্ষিণপার্যন্ত বাত্মধ্যে মধুস্থান, দক্ষিণসংশ্য তিনিক্রম, বামপারে বামন, বামবাইলে শ্রীধন, জীবাতে প্রবীক্ষেম, দক্ষিণ বাহুতে পদ্মনান্ত, কর্ম প্রনেশে দামোদৰ এবং মন্তাক বাত্মদৰকে চিন্তা করিবা শালগ্রামচক্র রাম্পুন্দ বিশ্বমান ও পৃত্তিকা ধারা তিলক ধারণ করিবে। আর ধ্বিন্দিন হতে হান্দান, মন্সা ও পদ্ম, বামহুত্তে শ্রু, কৃষ্ম এবং গদা, লগাটে,ও গদা এবং মন্তব্য ধন্ম ও বান, হালয়ে মন্দ্র এবং গদা, লগাটে,ও ক্ষা এবং মন্তব্য ধন্ম ও বান, হালয়ে মন্দ্র এবং ভ্রম্বরে শ্রু ও চক্র অধিক ক্রিবে এই সকল ধারণ করিয়া সামান্ত শ্রমানে আন ভ্রাণ ক্রিবেও প্রায়াগে মরণে ধ্রুগে স্কাভি ক্রিত হ্রমান্তে ভ্রেগসন্ত্রীভ কর নিশীকৃষ্তি মন্দ্রীঃ । র্থা স্নানং ভবেত্বস্য নিশ্বীকৃষ্তি
চাল্পনি । রামাল্পকং গুরুং নহা রামস্ক্রাং স্মাচরেং ।
সায়ং প্রাক্তন্ত মধ্যাকে রামং ধ্যাত্বা মন্ত্ জণেং । জলমজ্রেণ
সংশোধ্য কবচেনাবপ্রপ্তা চ । চক্রীকৃত্য জলং স্মাক্ দর্ত্তস্বোদ্ধা মন্ত্রবিং । আবাহনাদিমুদ্রাভিস্তীর্থমাবাহ্য পূজ্বেং ।
ব্রন্ধানোর ভীর্থানি করৈঃ স্পৃষ্টানি তে ববৈঃ । তেন সভ্যোন
মে দেব ভীর্থং দেহি দিবাকর । গঙ্গে চ ষ্মুনে চৈব গোলাবার
সর্বভি । নর্মদে সিল্পু কাবেবি জলেহ্মিন্ স্থিধিং কুরু ।
ব্রন্ধাবাত্য চারাধ্য বিধিবত্তভালং মুনে । আদাযাগুলিনা
সম্যাজপ্রদানানত্বং সর্বং । জলং দক্ষিণহত্তম্বং স্বাহত্তে
বিনিঃক্রিপেং । ত্রিঃস্তাম্বা মুর্জি সিঞ্জেন্মালামন্থং স্থারন । দশাক্ষ্রেণ ভচ্ছেশ্মভিমন্ত্র্য জলং পিরেং ।

বস্ত্রনিপ্ট্রন ক্রিয়। পবে সন্ধার অহঠান ক্বিবে, ইছার বাতিক্রেম ক্রিলে সান নিক্ল হয় জানিবে। আর যে নক্তৃত্বি বস্তুকে তিওিপিয়ত (ভিন ভাজ) ক্রিয়া জল মধ্যে নিস্ট্রন করে ভাহার সেই সাম বুণাহয়।

সদ্ধা – বামকলী জ্বলদবকে নমস্কাব এবং শীরামচন্ত্রকে থান করিয়া জনীয় মন্ত্রজপ করক সান্ত্রকালে, পাতঃ চালল ও সধান্ধালে শীরাম চল্লের সন্ধাবে অফ্টান কবিবে। প্রথমত জলমন্ত্র (বং )হাবা লোধন কবচ (ভূ )হারা অবজ্ঞান এবং দত্ত মূল হাবা প্রোক্ষণ করিয়া ল মন্ত জল মধ্যে আবাহনালি মুদ্রা কবত 'এক্ষাণ্ডোদব তীর্থানি কবৈঃ স্পৃষ্টানি তে বটবঃ তেন সভ্যোপ মে দেব তীর্থং দেবি দিবাকর। গজে চ যমুনে চৈব গোদাববি সরম্বতি চ নর্মাদে সিন্ধু কাবেরি অলোহমিন্ সামিবিং কৃষণ এই মন্ত্রম পরিয়া তীর্থ সকলের আবাহন করিয়া বিধানাল্সাবে উক্ত ভলের অচনা করিবে। অবং মালাম্য স্থবণ কবক বামহত্তেকিন্ত জলের ক্ষিত্রত ক্ষেণ্ডা কবিবে। এবং মালামন্ত্র স্থবণ কবক বামহত্তেকিন্ত জলের ক্ষিত্র বিক্ষুবার্য স্থাকের করিয়া আবাদিন্ত জলে দ্বানা স্থাকের ক্ষিত্র ক্ষানা বিধানাল্য স্থবণ কবক বামহত্তেকিন্ত জলের ক্ষিত্র বিক্ষুবার্য স্থাকের ক্ষিত্র ক্ষানামন্ত্র স্থবণ কবিত্র। এবং মালামন্ত্র স্থবণ কবক বামহত্তেকিন্ত জলের ক্ষিত্র বিক্ষুবার্য স্থাকের ক্ষিত্র ক্ষানামন্ত্র ক্ষানা বিধানাল্য ক্ষানাল্য স্থাক্ষ স্থাক্ষ স্থাক্ষ স্থাক্ষ স্থাক্ষ ক্ষানাল্য স্থাক্ষ স্থাক্ষ স্থাক্ষ স্থাক্ষ স্থাক্ষ ক্ষানাল্য স্থাক্ষ স্থাক

পুনয়ঞ্জলিমাদায় জলং মৃধি ত্রিক্লংকিপেং। মণ্ডলমার রামায় নিয়েছা নিয়েছা কলেং । জ্রামায়ং।ততো রামোহহুসন্মীতিগায়ত্রীং নিয়ভা জপেং । জন্ম প্রভৃতি বংপাপংদশভির্বাতি দক্ষিতং । পুরাকৃত্তং শতেনৈব সহস্ত্রেণ জপেন চ । বদেদাশরখায়েতি বিল্লছেইতি পদস্ততঃ । দীতাপদং সমৃদ্ধৃত্য বল্লভায় ততো কলেং । ধীমহীত্যপি তলোহথ রামশ্চাপি প্রচোদয়াং । এয়া স্যাদ্রামা গায়ত্রী ভক্তানাং ভুক্তিমৃক্তিদা । পুরশ্চরণমপ্যত্যাশ্চতুলক্ষি জপাবধি । যচ্চ যাবচ্চ পূজাদি সর্বাং পূর্ববিদাচরেং । ওমাদি রেষা গায়ত্রী মৃক্তিমেব প্রয়ন্তি । মায়াদিরপি বৈ মৃধ্যং রমাদিশ্চ ভ্রিয়ং মুনে । মদনেনাপি সংযুক্তা সন্মোহয়তি মেদিনীং । জনয়ায়াধিতো রামঃ সর্বাভীক্তং প্রয়ন্তি । তপ্রেচ্চ ততে। মৃলমন্ত্রোচ্চারণপূর্বকং । রামং তর্পয়ামি নমঃ

করিয়া ঐ জল পান করিবে। জ্ঞাপর জ্ঞাল প্রিয়া জল উঠাইয়া জলায়ালকে ললাট সংলগ্ন করিয়া জীরাম উদ্দেশে এব জলাঞ্জলিঃ নমো যশুল
ছায় রামার নমঃ এই বলিয়া ভিনবার জ্ম্মা দিবে। পবে অংং রামো
হল্মি জ্মাৎ জাল্মা ও রামের অভেদ চিস্তা কবিয়া রামগায়তী জ্ঞা করিকে।
দল্শভবার গায়তী জ্ঞা করিলে জ্মা হইতে স্থিত এবং শত স্থ্য জ্বণে
পূর্ব জ্যাজ্যিত পাণ স্কল বিনষ্ট হয়।

আনন্তব বামগায়তী ইচ্ছৃত হটতেছে। দাশরথার বিশ্বহে মীতাবনভাষ
ধীমহি। ভরো রাম: প্রচোদযাং। এই শ্রীরাম গায়তী ভক্ত বুলের ভোগ
ও মুক্তি প্রদান করিয়া পাকে। ইহার পুরক্তরণে চারিলক লগ ও
পূজাদি যে কিছু সমস্তই পূর্বোক্ত বিধানাম্নদারে কর্তব্য। এই পায়তীর
পূর্বে উকার যুক্ত করিয়া লগ কবিলে মুক্তি, হ্রীং পূর্বেক জলে প্রাধান্য এবং
শ্রী পূর্বেক লগ করিলে শ্রী লাভ হয়। আর মদন বীল (রীং), পূর্বক
লপে পৃথিবী মোহিতা হয় এবং ইহার ছায়া শ্রীবাম চক্ত আরাখিত হইকো
লয়ত্ত মনোরও প্রদান করেয়। আনত্তর মূলমন্ত উচ্চারণ পূর্বেক রামং
ভর্গরামি নমঃ এই বলিয়া শীঠ কেবতা সক্লের সহিৎ ৪০ বার, ভূর্বের

পীঠদেবাদিপ্রবিং। চভারিংশতপ্রিত্বা সীভাদীংশচভুরঃ জ্মাৎ। হলাদীং স্তর্পরেৎ পশ্চাৎ মধ্যে মধ্যে রঘ্রহং। নাম-মত্রৈভবিদেবং চভারিংশচহত হরং। স্তবংশচ প্রণমেজামং ঘথাশক্তি মুদীখর। কৃত্রৈতংপ্রভাহং সম্যক্ জিসন্ধ্যক্ষ যথাবিধি। কৃতকৃত্যো ভবেমান্ত্রী সভ্যং সভ্যং ন চাল্লথা। ওঁ হংসং প্রবিষ্টার্যা দোহমিত্য হলাং জপেৎ। ঋষিহ্ৎসোহ্বারং ছলাং পরমাজাত্র দেবভা। সুর্যাজ্যনে হুৎ, দোমাজ্যনে শিরং, নিরঞ্জনায় শিথা, নিরাভাষায় কবচং, অভকুঃ সৃক্ষং প্রেটানয়াদপ্রং। দ্যাং মুর্দ্ধানং যক্ষ বিপ্রা বদস্থি থং বৈ নাভিং চকুষী চন্দ্রস্থাে। দিশঃ শ্রোত্রে যদ্য পাদে ক্ষিতিক ধ্যাতব্যাহসে সর্বভ্রান্তরাজ্ম। একবিংশভিসাই ক্রমান

कतियां मीजा, नकन, खत्र अ मळाप्यत छर्मन कवित्य खवः मध्य मध्य श्रीयां कर्मन कत्र छ हमयामित कर्मन अ श्रीयां मध्य नाम मकन छ छ। तम मुद्रांक छमीय कर्मन कतित्य। ममिछिछ २८० वात छर्मन कविया। यनामिछि छन भाक्ष मुर्त्यक श्रीयां कर्माख्य कितायां कर्माख्य करित्य। खेने कर्माख्य कितायां मध्य मिन्छ हो क्रिन्य । खेने स्व विधान श्रीयां कर्माख्य करित्य मध्य मिन्छ हो क्रिन्य हे क्रिन्य । खेने स्व विधान क्रिन्य क्रिन्य मध्य क्रिन्य क्रिन्य

ধ্যানার্থ—বোদীগণ থগঁ ধাহার মন্তর এবং আকাশমণ্ডল নাজি, চল্ল পূর্ব্য চন্দু, দিঙ্গগুল শ্রোত এবং পৃথিবীকে পদ বলিয়া থাকেন সেই স্বিভূত্তের অন্তরাত্মাত্মকুল উত্তর আবাধের বোর। নোজাগলপেন ষট্। শতাবিকেন **প্রিরামঃ প্রীভাংস্থিতি** বিদর্জনেৎ। ইতি জীরামদকা।।

রামং মহা গুরুন্ ক্রেষ্ঠান্ কুণাছঃপুল্পধারকান। মুক্রা ভবৈব পারপ্রান্থং শুহা গৃহং বিশেৎ। ভাগে তু প্রথমে রাজন দিবসন্য শুটিঃ ব্যং।হোমং কুর্যাদ্ বিধানেন দ্রবৈদ্রী-হাদিভিছিজঃ। দেবপূজাং ততঃ কুর্যাৎ ক্ষমন্ত্রেশ মন্ত্রবিৎ। দদ্যাদ্দানং ষ্থাশক্তি পাত্রে রামপরে ভ্রথা। ভ্রাক্রান্তঃ পশুর্বিদ্ধঃ ক্যুকাচ রজন্মা। দেবভা চ সনির্মাল্যা ছান্ত পুণাং পুরাক্তং। ইতি দিবসন্যাদ্যভাগক্ত্যবিধিঃ। দিবসন্য ছিতীয়েংহশে বেদাভ্যনন্মাচরেৎ। মীমাংনা-ভর্মধ্যার্থশান্তাদীনাম্প বিদ্ধঃ। সাল্কারঃ শ্বছ্মনাঃ সং-

শনস্তর এই ছয় শত একবিংশতি সংস্র অন্ধণারূপে এরামচক্র ক্রীক্তি শাভ করুন এই বলিয়া সন্ধা সমাপন করিবে।

#### हेडि ब्रिवाम मन्तारिति ।

আনন্তর প্রীবামের নমন্বার পূর্বক শুরু তন ও জোষ্ঠ সকলকে প্রণার করত প্রীবামকে শারণ কবিয়া গৃহে প্রবেশ করিবে। পাষও ও বাধাদের হতে দর্ভ, কল ও পূপা থাকিবে ভাষাদিগকে নমন্বার কবিবে না। আনরার দিবসের প্রথম ভাগে উপাসক ওচি হইয়া প্রীছ প্রভৃতি প্রবা ধারা ধর্মাবিধি হোম করিয়া শা শা মান্ত প্রিরাম চল্লের অর্চনা সমাপ্রম করিয়া রাম্ভাজিপরায়ব সাধক সকলকে বর্গাশক্তি দানীয় প্রবা ধান করিয়া নিশালা বিসজ্জান ভরিবে। পিপাসিত পশুকে ব্যান ব্যাধিয়া রাথে, অবিবাহিতা শালা বিদ্যালয় করিছা লালা হর আর দেবতা বহি নিশালা যুক্ত থাকেন ওবে পূর্বক শালাজিত পূর্বা সকল বিনষ্ট চয়া দিবার প্রথম ভাগের-কার্যা বিধি সমাপ্রম আনল্ডর দিবসের বিভীয় ভাগে উপস্থিত হইলে বেদ পাঠ পূর্বক নীমাংমা ভঙ্কা ধালা ও অর্থ শাল্প প্রকৃতির আলোচনা করিয়া কুওলান্বি অনভারে আনল্ড ইইয়া পরিল চিত্তে ধ্যো, ভূবি, প্রাশ্বন ভীথোন্ত কার্যা শালাজ ও প্রাণ্ড ও স্থাতি প্রভৃতির মান্তালা সক্রম মুর্যা শ্বন্ধ ও

পশোশস্বাউকং। গোভ্বিপ্রান্ত্রস্থানি সেই স্থানিভি। ইভিমিজীয়দিনভাগক তাবিধিঃ।

বিজ্ঞানেংক্তৃতীয়ে তু পোষাবিং পোষণায় চ। বেদলান্তাবিক্লানেন জাবিবং কর্মনার্জয়েরে । ঋতায়তাভাং জীবেত
য়তেন প্রস্তুতন বা । সত্যান্তাভ্যাসশি বা ন শবুভ্যা কথকন।
কত্যক্ষশিলং প্রোক্তময়তং যদযাচিতং। যুতস্তু নিত্যধাচ্ঞা স্যাৎ প্রয়তং কর্ষণং স্মৃতং । সভ্যানৃতক্ষ বাণিজ্ঞাং
শবুতিনীচ্দেবনং। শবুতির্গাহ্তা সম্যক্ নাঙ্গীক্র্যাৎ
কদাপি ভাং । স্ফল্ফচরিতঃ কখা স্বাধীনঃ ক চ সেবকঃ।
প্রীক্ত্যাক্তনঃ প্রাণান্ যে বর্তন্তে বিজ্ঞাধমাঃ। তেষাং জ্রাস্থান্তঃ ভ্রান্ত্রা চাল্রাবাক্ষরে । সনপেক্ষ্ট তৌ ভাগো
তিষ্ঠমন্ত্রী জপেমকুং। রামাজ্ঞাক তবিখালো দাতা সর্বেশ্বরো
যতঃ। ইতি তৃতীযদিনভাগকুত্য বিধিঃ।

অউধাকো বিভাগঃ স্যাক্তভূর্বেংহশে যথা দ্বিদ্ধঃ। কুর্যান্যাধ্যাক্তিকং স্মানং জপদেবার্চনাদিচ। মুদেনাময়াংশুক-

অনস্থা দিবদের তৃতীয় লাগ উপপি ৪ ই ল শবিবাৰ বর্ণের পোষণার্থ বেলাদিশাল্ল বিহিত কার্যা কৰতঃ সংগণিশজন কমিবে। জীবিকা দির্মান্তের পথ প্রদর্শিত হইতেছে। গ্রহ—উপার্যাব, সমূত প্রাথিনা বাভিথেকে লক্ষ্যুত—নিভা জিলা, প্রমুত্ত—ক্ষবিক্র্যু, সভ্যানৃত—বাণিজা এই সকল বাব-লাতে জীবিকা নির্মাহ করিবে। কিন্তু কথনও স্বত্তি (নীচ সেবা) করিবে লা, বেছেছু নীচদেবা সর্ম্মণা প্রকাবে গহিত, কুকুর এবং সেবক ক্ষাচ ছু স্বেছাটারী ইইছে পারে না। যে বিজ্ঞাণ আত্মানে পণ কবিয়া জীবিক্ষানির্মাহ করে ভাষাদের অন্তল্জন করিলে চাজায়ণ করিতে হব। অববা সাহক উক্ষ বাম্বন্ধে ক্ষিত্তে অপেকা না করিয়া রাম্যক্ষাত্তে প্রকাশ বিশাসী হটরা ভ্রমীয় মন্ত্র অপ করিবে ভাষা হইলেই লাভা ক্ষ্যুত্তের প্রমুদ্ধ হইতে পারিবে।

কুণাসনমুক্তিকাদি পুলাক্ষতাং বিলক্ষ ওস্কুলাদি।
নীয়া জলান্তিক্ষননম্মনা মনীধী শ্বহার্চ্চয়েং সকলতীর্থপবিত্তকীর্তিং। স্বগৃহ্ছোকৈ মজববৈঃ স্নাহা সন্ধ্যাং বিধায় চ।
বেত কর্ববুর কৃষ্ণৈশ্চ দেবাদীংস্তর্গয়েতিলৈঃ। তথেব ভ্বনেশদ্য স্নানং সন্ধ্যাঞ্চ তর্পাং। পূর্ববদাচরেশান্তী রামং
নহা বিসর্জ্ঞাং। ততাে দেবালয়ং গছা ম্যানান্ কৃছার্চয়েদ্বিং। লক্ষ্যাপ্তাং বিশেষান্তী মন্দিরং স্থানরং স্বকং।
ইতি চতুর্থদিনভাগক তাবিধিঃ।

গৃহাগতোহর্চ্চযেন্দ্রামং পঞ্চমে দিবসাংশকে। প্রকাল্য পাদাবাচম্য দদ্যাদর্ঘ্যং রবের্বহিঃ।যো দেবঃ পূজকশ্চাথ পূজা দ্রব্যাণি যথ ফলং। প্রাণবুদ্ধাদিকং সর্ববং তথ্যৈ রামাত্মনে-

## ইতি ভৃতীয় দিনভাগ কৃত্যবিধি।

দিবা অইভাগে বিভক্ত তাহাব চতুৰ্গভাণে মধ্যাক্ত কালীন স্থান ও অগ প্রাদি কবিবে। প্রথমতঃ মৃত্তিকা, গোমর, বস্ত্র, কুশাসন, মৃত্তিকা ( বাহা ছারা শত্তা চক্রাদি অন্ধিত কবে সেই যম্ভেব নাম মৃত্তিকা ) পূপা, আতপভত্তুল, তিনা, কমগুল ও চক্ষন প্রভৃতি শইরা জল সমীপে উপস্থিত হইবে অনস্তর দীর্থ সকলেব পবিত্র মাহাত্ম্ম ত্মবন কবিয়া আকন করিবে। অপর স্থ ত্মবদ্ধে বিধানালুসাবে মন্ত্র পাঠ করিয়া স্থান ও সন্ত্র্যা সমাপন কবিয়া খেত, ক্ষুব্ ও কৃষ্ণ বর্ণ ভিল ছাবা দেবতা প্রভৃতিব তর্পণ করিবে এই প্রকার শীরামেব সন্থ্যা তর্পণাদি কবিয়া পৃর্ধান্ধ শীরামকে নমস্থার পূর্বাক বিস্কোল করিবে। অনস্তর দেবতাগৃহে প্রবেশ করিয়া স্থাস সকল করত ব্যুনাপের অর্জনা করিয়া আদেশগুল্ব করিয়া আদেশগুল্ব করিয়া আয়ে স্বাদ্ধির বিশ্বান করিয়া আদেশগুল্ব করিয়া আয়ু স্বাদ্ধির বিশ্বান করিয়া আয়ু স্বাদ্ধির বিশ্বান করিয়া আয়েশ্বাক করিয়া আয়ু স্বাদ্ধির প্রবিদ্ধা করিয়া আয়ু স্বাদ্ধির বিশ্বান করিয়া আয়ু স্বাদ্ধির করিয়া আয়ু স্বাদ্ধির বিশ্বান করিয়া স্বাদ্ধির স্বাদ্ধির স্বাদ্ধির স্বাদ্ধির বিশ্বান করিয়া স্বাদ্ধির স্

# ইতি চতুৰ্থ দিনভাগ কৃত্য বিধি।

প্রনম্ভব পক্ষমতাপের কর্ত্তর কার্য্য কবিত হইভেছে। দিবার পঞ্চমতার্গে প্রীরানের অর্জনা করিভে হব, প্রথমতঃ পাদধর প্রকাশন করিয়া পাচমন করত বহির্দেশে প্রযাধ্য প্রধান করিয়া যো দেবঃ পুঞ্জভাগ পূলান্তব্যাণি বঁৎ করং । ं नगः। चरनन मञ्जा मन्त्रा बात्ररणवान श्रेश्वरत्तुः। चश्रक्तः-मर्हिजातांख श्वानः जरकारमं ह। चमूर्शांहर कारमनाथ ভাদেবোদ্ভা লিখ্যতে । ওঁনমো রামচন্দ্রার সং প্রেশায় ্তে নমঃ ৷ সংস্বিত্তে হোংশিবায় ঐ হ্ীং জ্বীৎ পর্ম-भक्रत्य । मीर मीननाथांत्र नमः क्रिर क्रिक्श जारा नमः। পুল্পাক্ষতাদিভিঃ পূজ্যা শ্রীকামধারদেবতাঃ। ষড্মারপুরতঃ छ छै: ध्यमधानर्करत्र स्थीः। चात्रध्यित्र नमस्कार्कः रमश्रेता ছারস্য শোভনায়াথ শাখয়ো র্দক্ষবানয়োঃ। शास्त्र विशास्त्र गनारेत्र यम्नारेत्र ह शृक्षिष्ठ । ७ छतात्र ञ्चलात्र भनारकृष्णक निकत्। । ७ हलात्र वहलात्र ८ तनाः তাপাঞ্চ পশ্চিমে। শন্তং পদ্মৎ নিধিঞাৰ বাণীং বেল্বাৎ তথোত্তরে। চতুর্বারং স্থদংপুদ্ধ্য গুংলাপরি ভতোহর্চায়েৎ। প্রছেশার গৃহায়াথ ফুলদেব্যৈ নমোহ স্থিতি। নমঃ দশর শাঙ্গায় কট্পিনাকার ফট্নম:। আভ্যামস্তর্গতং পুষ্পাশর যোগেন বামতঃ নিঃসার্য্য বিম্নসংঘং ত্রিঃ পাঞ্চিঘাতং সমভ্যদেৎ।

ं. तंरनीयम्भूभन् मक्षशंष्ठभूदिः विवाह । त्यांत्र क्षशंकिः भण्यः वाखुभूरत नत्यार्कत्यः । देखि कात्रभूका विविश्वः वरणाम्मणाक्रथत्रशैष्ठ्वणभ्यविनिर्वाछ । वर्ष्कत्यप्राममर वीमान् गात्रिक्षांकां निष्ठःथनः । कृकाक्षिनः वाख्वन्यः (कोः त्यांकाः प्राप्तः (वर्षान्यांकाः निष्ठःथनः । कृकाक्षिनः वाख्वन्यः (कोः त्यांकाः (वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षाः वर्षः । कृतिः भागाः विविदेशः भूतेष्वः भूत्रसः भूष्णकां निष्ठः । कृतिः भ्यां वर्षाः वर्षः । कृतिः वर्षाः वर्षः । कृतिः वर्षः वर्षः । कृतिः । कृति

ষারে ও চণ্ডায় নম:, ও প্রচণ্ডায় নম:, ও বেবাইর নম:, ও ভাপাইর নম:, উত্তর্বাবে ও শথার নম:, ও প্লায় নম:, ও নিধিভাো নম:, ও বালৈ মন:, ও বেবারে নম: এই প্রকার গরপুলালি বাবা চত্র্বির পূলা করিয়া পৃথ্যধ্যে ও গৃহেশায় নম:, ও গৃহাম নম: এবং ও কুলদেবৈ নম:। পরে, নম: সশব শার্মার ফট্রী পিনাকায় ফট্নম: এই মন্ত্রোচ্চারণ পূর্বক বামপাঞ্জিবাবা আঘাত অয় করত বিলোৎনাবশ করিয়া মন্তক নত রাধিয়া দ্রিশপাদপ্রক গৃহপ্রবেশ করিবে। অনন্তর ও শেবার নম:, ও কণা-বিপ্তরে নম:। ও বারপুক্রায় নম: এই সমন্ত বলিয়া পূলা কারবে।
ইতি হারপুলা।

বাশ, প্রস্থা, কার্র, মতিকা, তৃণ ও পর্ব এই দক্ষ দাবা নির্মিত জাসন
বর্জনীয়, ইছাতে উপ্রেশনে দবিজ ও জর হয়। ক্যাজিন, ব্যাস্তান্ত্র
কুশনিম্মিত, বেজনির্মিত, বস্তু, বঙ্কণ, ও কখন এই দক্ষ আদন প্রশন্ত
লানিবে। জনতার প্রশন্ত আদনে উপবেশন করিয়া আবহাকীয় প্রবাদানন
করিবে। জ্বদী ও পল্ল জাতি প্রভৃতি পূস্পক্ষ চয়ন করিয়া পুস্পান্ত
স্থাপিত করিবে। আর বাটীর দক্ষিণ দিগের জ্বাশের চইতে পবিত্র জ্বাধারা
পরিপূর্ণ নৃত্তন কল্ম নিব্দের স্মুখে ব্যস্তাণে রাবিয়া আন সম্ভব্য প্রশাদ্দ
কর্মণ সাম্বী সমূধে স্থাপিত করিবে।

ভুগদীকার্ডধার্টিত ক্রাঞ্চাকারকারি তৈঃ। শংশচুক্ত পদাপদাস্কাকারনির্দিটেতঃ। নির্দ্দিতাং মালিকাং কঠে মিধায়ার্চনমার্ভেৎ। তথামলকমাল্যঞ্জ সম্যক্ পুকর-মালিকাং। নির্মাল্য ভুলদীমালাং শির্দ্যাপি নিধায় বৈ। নির্মাল্যচন্দনেনাক্ষকরেন্তেল্য নামভিঃ। তল্যায়ধানি বাজ্যোল্য তেনৈব ভিজ্যত্তম। পাপিঠো বা হপ্যপাপিঠঃ সর্বজ্ঞোপ্যক্ত এব বা। ভনত্যেব্যাধিকার্যক্ত পুলাকর্মণ্য-সংশয়ং। ইতি মালাধারণং।

পুলাক্ষতাদিদ্রব্যাণাং ক্র্যাদ্যন্ত্রগা সোধনং। ক্ষালনেনামু-লেপাদের্থ ডিভিজিং সমাচরেৎ। অব্য এবেনারা শুদ্ধিং কিতি শুদ্ধি ততশ্চবেৎ। বিলিপ্য বেদিকাং সম্যক্ ম শুলং তত্র কারয়েৎ। শালি গুলুল চুণৈ কি নীলপীত সিতা সিতৈঃ। লিখেদ উদলং প্রং চতুবক্রসমারতং। ষট্ কোণং কর্ণিকা-মধ্যে কোণা গ্রন্তসংর্তং। সাধ্যমেবং ততঃ শোভা রেখাভি-ক্লপশোভিতং। সংপূজ্য মণ্ডলকৈব তত্র সিংহাসনং স্থানেৎ। চন্দ্রাতপপতাকাভিস্তোর্ণেরপি সর্বতঃ। চিত্রিতং তত্ত্ব

অনম্বর রজাক্ষের প্রতিবিধ তুলগীকাঠ দারা নির্মিত সালা এবং আমলকী ও পদ্মের মালিকা বঠেবারণ করিয়া পূজা আবস্ত করিবে। এবং
নিম্মাল্য তুলগী মালিকা মন্তকোপরি ক্রন্ত কবিয়া নির্মাল্য চন্দন দারা
বীরামের নাম নকল শরীরে অবিত কবিবে বাহদরে ও শ্রীরামের অল্পকল
চিত্রিত করিবে। পূল্যান্মাই ইউক আর পাণান্মাই ইউক পূর্ব্বোক্ত মালিকা
ও ভিত্রকান্ধি বারণ করিয়া সমন্তই শ্রীরামার্চনে অধিকাবী হইবে। অনস্তর
পূলাক্ষকানি ক্ষণকরণ জবা সকল ও বল্লের শোধন করিয়া প্রকাশন ও চন্দ্রনান্ধি ক্ষন্থিল করিয়া প্রতিক্ত হটরা
আন্তর্জিও ক্ষিতি ওদি করিয়া গোলম্বাধি দারা বেলী দেশন করিয়া ভারতে

ভতাপি ভিতিত্তত্ত্বাদির । অনুমাত্তত্ত্ব যা কুর্যাত্মগুলং কামানা কুর্যাত্ত্বি । মুদ্যোশিশ্ব বিভিত্তি ক্রিক্রি । যাও । ইতি শুদ্ধি চতুফীরং ।

পদাস্বন্তিকভন্তাদি রূপেণাকুঞ্চ পদ্বরং। পৃথি বরেতি
নজেণ স্থাপ্রেদাসনংবৃধঃ। পৃথি ব্রেতিমন্ত্রদ্য মেরুপৃষ্ঠথাষিঃ স্কলং ছন্দঃ কুর্মো দেবতা আসনোপবেশনে বিনিয়োগঃ। ওঁ পৃথি দ্বরা প্রতালোকা দেবি দ্বং বিষ্ণুনা প্রতা।
দক্ষ ধারয় মাং নিত্যং পবিত্রং কুরু চাসনং। ওঁ ভূর্ভুবিঃ স্বঃ
কুর্মার নমঃ। ওঁ আধারশক্তয়ে নমঃ। তঁ তুক্তবিদ্রাবণায় নমঃ।
শ্রীনৃদিংহায় নমঃ ইতি পূজ্য়েং। অপক্রামস্ত ভূতানি

পঞ্চবর্ণক দারা মণ্ডল করিবে। প্রথমত চতুরত্র করিয়া তদ্মধ্যে অষ্টনল পদ্ম অহিত করিবে। পদ্মের কর্ণিকার মধ্যে ষ্টুকোণ অক্ষিত করিয়া ভাহার विक्रिक्त कोनाओ मान्य कित्र वृत्त किक कित्र बदा कारांत विक्रिक्त পদ্মপত্র ও শোভারেথানি দারা উপশোভিত মণ্ডল করিয়া ভাহার অর্চনা করিয়া তথ্যধা সিংহাসন ক্লম্ভ করিবে। এবং চন্দ্রতেপ, পভাকা ও ভোরণ প্রভৃতি বারা মণ্ডণের শোষা বর্দ্ধন করিবে। মুত্তিকা, গোমর ও মন: भिनानि शाकु मकन बाता चाक मःस्करण ७ मधन कतिया एव वास्ति अवस्वत्र कार्कना करत (म कारख कम व्याध रहा। कानखन चित्रकामन, भवामन छ ভত্তাদন প্রভৃতি শাল্তনির্কাচিত আসনে নিষমামুসারে চরণছরের আকুঞ্চন উপবিষ্ট হইয়া পৃথিত্বয়া ইত্যাদি মন পাঠ করিয়া আসন শোধন করিবে, মন্ত্র—মেরুপৃষ্ঠ ঝঝিঃ হুওলং ছলঃ কুর্মো দেবতা व्यानत्नाश्रत्नात्न विनित्याशः ७ शृष्युषया युकारमाका हेलामि मृत्नक्षेता। অনতর গরপুল বারা এতে গরপুলো ওঁ ভুর্তুবং বং কুর্মার নমং, এতে গরু-शूरण व आधात मकारत नमः, अरक महत्रूरण व वृहेविकावनात नमः अरक श्रद्धभूरण व मृतिःहात नयः धहे व्यवानीरण कात्रत श्रृका कतिता व অপক্ষামৰ ভূতানি ইত্যাদি মুব্যাক্ষ মন্ত্ৰণাঠ কয়ত পাঞ্চি হান হায়৷ ভূতৰে অংশতবার করিয়া ভূতসম্ভবে বিদ্রিত করিবে এবং ও অভায় কট্

পিশাচাঃ শক্ষতো দিশং। স্বেধামবিরোধেন অক্ষ্ শনারভেং। পাকি বাততারং কৃত্বা মস্তেণানেন মন্ত্রবিং। ভূতসভ্যান্ সমুৎসার্ঘ্য সংবিশেষাসনে বুধঃ। ওঁ অস্তার কট্পোকা দিশাং বন্ধশন্ত্রপি। করাম্ফালনতো দিক্ষ্ ভতো শুর্কাদিসংনতিঃ। ইত্যাসনং।

বিনায়কং নমস্কৃত্য স্ব্যাংশে চ সরস্বতীং। দক্ষিণাং-শে পূর্ববিচ্চ তুর্গাঞ্চ ক্ষেত্রপং পুনঃ। তত আদিত আরভ্য নমেদ্ গুরুপরম্পাং। নমোহস্ত্রনস্তায় নমোহস্ত বেধ্দে নমো বশিষ্ঠায় নমোহস্কু শক্ত্রে। পরাশরায়াথ নমোহস্ত শর্বিদা নমোস্ত তে সত্যবতীস্থ্তায়। যোগী ক্রবর্ষপাদাংশ্চ

এই বলিয়া মন্তকোপরি করতালিপূর্বকৈ ছোটকাছারা চতুর্দিগে বন্ধন করিয়া গুরু প্রভৃতিকে প্রণাম করিবে। ক্পালের বামভাগে ওঁ গণেশার नमः, मक्किन ভात्त खँ नदयरेका नमः, खँ ध्रादि नमः, खँ क्किनाव नमः शूनसीय वामारा ह छा अव्या नमः। ह भारत्वा नमः ह প্রমেটিগুক্জ্যো নমঃ । কর ক্পাল সংবোগপুরাক এই স্কল দেবতার নম-স্থাৰ করিয়া নমোহত্বৰপ্ৰায় ইড্যাদি নমোহত্ত সীভাপতি পাছকাভ্য ইডাঙ্ক মূলোক্ত শ্লোকসকল স্বাবা নমস্কাব করিবে। অনস্তর কপালের মধাভাগে প্রীবামচক্রায় নম: এই বলিয়া প্রীবামকে প্রশাম করত উর্দ্বেশ ভাগত্তয় করিয়া ওঁ অস্তার ফট্ এই বলিয়া দক্ষিণ হস্তকে দক্ষিণাবর্তে লামিত করিবে। অপর মাদ পকাদি ভত্তংকালীন নিমিপ্ত দক্ত এবং আমি প্রভূব जुक्षार्थ ज्लोप कर्फनाटल व्यवस्थ इन्नाम हेजानि हिन्ता कश्चिमा माजुरकान मःशत कवित्व। अकात हरेटड क्रथगां छ वर्षम्कमरक माज्ञका वर्ष करह, एक-माल क्वारबद भूट्स । नवाव भविष्ठ इत्र ( यत्रनवनयगहनक ) विलाहम व्यर्गार क्यांव मकारत, मकात स्काट्ट एकाव, मकारत, मकात वकारत, वकांव শকাৰে এই ব্ৰীতিতে প্ৰশাৰ বাতিক্ৰমে অপৰ্য্যন্ত বৰ্ণদকলকে আ আ জানে লীক চিকা करिया करायक थे कारत मीन करण थे कातरक अक्षत्रकुष मध्यक्तम शोन हिंचा क्तिरव।

বেশ ততন্ত্বং । প্রিমণ প্রীশকরাচার্যান বিশারপান হতেন শরান্। বলারতান বেলারপান্ বেলাবিদ্যাপ্রবর্তনান্। সাধনান্ বাহুদেবাহ্বান সর্বযজ্ঞকৃতস্তথা। গদাধরান্ বামদেবান ভট্টান্ ছাগনিপিণ্ডিতান্। পরমানন্দরাজাহ্বান্ দোষানিশাভিধাং-ভথা। নিত্যাদিত্যান্ মহাসিদ্ধান্ মাগান্তরদৃশঃ প্রভুন্। প্রীম্বিফুস্বামিরাজান্ বিফুভক্তি প্রবর্তনান্। বন্দেংহং প্রভুরাজাংশ্চ বিফুস্বামিক্যারকান্। নমো গুরুভ্যো গুরু-পাছ্কাভ্যো নমঃ পরেভ্যঃ পরপাছ্কাভ্যঃ। আচার্যাসিদ্ধে-শরপাছ্কাভ্যো নমোংস্ত সীতাপতিপাছ্কাভ্যঃ। ইত্তি

ভতে দেবং নমস্কৃত্য কুর্যান্তালতেরং পুনঃ। ওঁ অস্ত্রায়ফট্ প্রোচ্য আময়েদ্দিশং করং। কালং স্মৃত্যা করিষ্যেইহং শ্রীরামপ্রীতয়েইচ্চনং। সংকল্পোবং ততে। ন্যাসন্থানা-স্মাত্রেস্ত সংহরেৎ। প্রাতিলোমে,ন ক্ষলয়ে। লকারস্য হকা-রকে। হলয়শ্চ সকারেইথ সলয়শ্চ ষ কারকে। ক্রমেনৈব মপর্যান্তং লয়মুৎপাদ্য যত্নতঃ। অন্তমিতি ব্রহ্মরক্ষ্রে সহস্রাজ্যে নিয়োদ্বয়েৎ। ইতিমাতৃকোপসংহারঃ।

জনতার জীবছাপন কংগত হইতেছে। শরীরাপ্তর্গত সহস্রার প্রাকৃতি ছানিবরে পরশার সহস্ক জ্যোতিমা। স্চিনানন্দর্গন দেবতাকে চিন্তা করিবে। এবং ভ্তপ্রেত পিশাচের কর নিবারণার্থ বারতার বহ্নি বীজ্ঞা (রং) তিমক্রিত জল ও গ্রুপুণ্ণ প্রকেশণ করত শবীবের চহুদ্দিগে অগ্নিময় প্রাচীয়ত্ত্বর চিন্তাকরিয়া প্রক্ষ মৃশ, জ্যাসমূণাল এবং এপর্ব্য অইছলে উপশোভিত বৈশাগ্য কর্ণিকা যুক্ত জ্বরপঞ্জে স্থিত জীবকে হংস এই মন্ত্রনা হাছশ্যমের স্থিত বিশিত ক্রিয়া বিশ্বনান্দ্রনারে ভূততান্ত্রির সম্ভানিকারে

ততক চিন্তবেদতর্পে বং স্থানত্তরান্তরে । জোজির্মার নসুস্তিং সভ্যজ্ঞানত্থান্তক। আন্দাং পরিতো বহ্নি-প্রাকারত্তর্মনের চ। ভূতপ্রেতিপশাচেভ্যাে বিধায় ওদ-নস্তরং। অন্তিঃ পূজাকতৈ কৈর বহ্নিরীলৈ জিমজিতিঃ। প্রকিপেৎ,পরিতাে মন্ত্রী ভয়বিন্দার্ভয়ে। হলমুলে ত্রন্দাকশা সংভূতে জ্ঞাননালকে। ঐশ্ব্যাইদলোপেতে স্থিতে বৈরাগ্য-কর্ণিকে। আরাগ্রসাত্তো জীবস্ত চিন্তনীয়ো মনীষিভিঃ। নেতবাে হংসমত্ত্রেণ ভালশাস্তে স্থিতঃ পরঃ। তেন সংযোজ্য বিধিবস্তুতগুদ্ধি মথাচরেৎ। ইতি জীবস্থাপনং।

পাদাদ্যাজায়ন্ম জায়াং পীতাং ক্রহিণদেনতাং। চতুরপ্রাং পঞ্জাং মেঁ। ব্রী ব্রঃ ফট ভূবং জলে। জায়াদ্যানাভিপ্রাক্ষং খেতমর্জেন্দু বৈক্ষবং। রসরূপস্পর্শান্ধং রং হুী হুঃ ফট জলং শুচো। নাভ্যাহ্লমন্তং প্রাক্ত্যান্ধ জিকোণং স্বাক্তি কারুণং। বহিং রূপস্পর্শান্ধং বং হুং হুঃ ফট সমীরণে। জুপর্যান্তং ছদো বায়ুং ষড় বিন্দুং স্পর্শান্ধবিং। রুত্তং সাক্ষর্ণান্ধং ধ্রং যং হুৈং হুঃ ফট বিহায়দি। জুমধ্যান্ জন্মরন্ত্রান্ধং বাহ্লদেবং দশক্ষাং। হং হুেং হুঃ ফট অহঙ্কারে হং মহন্ত্রকে চ তং। প্রকৃতি রামচন্ত্রাণ্ডে পরজন্তি সংহ্রেছ। ইতি ভূতসংহারঃ।

খনতার ভূতোপ সংহাব অভিহিত কইতেতে। চবণ কইতে লাম পর্যান্ত চতুরশা পীতবর্ণ। গলাদিপঞ্জণাক্রাতা ব্রহ্মাধিটিঙা পৃথিবীকে মৌঁ হীঁ ১: ফট এই মজে জলে লান করিবে, আত্তর্যাধ নাভিপল্লপর্যান্ত বিষ্ণু দৈৰত অর্দ্ধনের ভাষ খেতবর্ণ রস রূপ স্পর্শ শাল গুণবিশিত লগকে এং লুং ২: ফট এই মজে অলিভে নান চিন্তা করিবে। নাকি কইতে ল্লারপর্যান্ত লাক্রায় বৈবত জিকোণ রক্তবর্ণ রূপ, রস স্পর্শ গুণাক্রান্ত বহিছে বং ফং ছুঃ ফট এই মজে বালুভে বিনীন করিয়া ল্লায় করিছে ভ্রম্বান্ত স্কৃতিক, স্পর্শ শরীরাকারস্থানাং স্থানাং বিদেশিবং। অব্যাদ্ধর বিদ্যাদ্ধর বিদ্যাদ্ধ

গুণাক্রান্ত বর্তু পাকাব সন্ধবিণ দৈবত ধ্মণণ বায়ুকে মং হৈ; ছু: ফট্ এই
মঙ্গে কাকাশে লীন চিন্তা কবিবে। পবে আবাব ক্রমণা হইতে এক্সরক্র
পর্যান্ত শক্ষণ্ডণযুক্ত বাহেদেবদৈবত আকাশকে হং ছৌ: ছু: ফট্ এই
মঞ্জে অহমারে লীন কবিয়া ঐ অহমারকে মহমুদ্ধে, মহমুদ্ধকে প্রকৃতিতে প্রাকৃভিকে পেই পরমুজন রামচক্রে সংহাব কবিবে।

অতঃপব ভূতগুদ্ধি কথিত হইকেছে। কিন্তি, জন, তেল, বায়ু ও আৰাণ রূপ পঞ্চ্তন্য পরীরের যে পরমত্রন্ধের সম্পক্ষে শোধন কবাহর তাহার নাম ভূতগুদ্ধি। প্রাণাপান বাযুদ্ধের গতিরোধ করিয়া জন্মাদি গুঃবপ্রদ পাপ-পুক্ষের প্রস্কৃত্যা প্রভৃতি মহাপাতক হস্তাদি পঞ্চাঙ্গ, পাতক উপাস, উপপাতক বোমরাজি এবং সে অভিতীষণ, জেনু ও ক্রফ্রর্ণ এইরূপে পাপপুক্ষকে যড়প্র অসিত বর্জুল নাভিপল্লে ভিত চিন্তা করিয়া বামনাসা হারা বায়ু পূরণ করতঃ ও বং ও এই মত্রে শোধন করিয়া জনমে নির্গত করিবে অনন্তব বহি বীজ (রং) হারা বায়ুকে ক্ষিত করিয়া ও বং ও সং এই মত্রে পাপপুক্ষকে দল্প করিবে অনন্তব ও ঠং ও এই মত্র ক্ষিত করিয়া ও বং ও সং এই মত্রে পাপপুক্ষকে দল্প করিবে অনন্তব ও ঠং ও এই মত্র ক্ষিত করিয়া ও বং ও মত্র ক্ষিত করিয়া ও বং ও মত্র সংক্ষা করিবে অনন্তব ও ঠং ও এই মত্র পাপপুক্ষকে দল্প করিবে অনন্তব ও ঠং ও এই মত্র পাণপুক্ষকে দল্প করিবে অনন্তব ও ঠং ও এই মত্র পাক্ষিত চল্ল হইতে বিনিঃস্তে অমৃত হারা বর্ধ গেই প্রাণিত করিয়া কুম্বিত করিবে।

कृर्दिक्क महत्वारक बारमार मिछि मध्यादार । भूकावारिका **७८७। ७७९। यत्वरः जावरत्य शूनः। आरवन्त्रीवाज्यवर्त्त्रकार अक्षमकः** अख्यारः । मृत्याधारताथ्या मृत्यग्रामा दर्भाषुव्यमार्थखः। ध हैं कि कि भरवगा थानः विनामा मूर्कनि। व्यवश्राद ব্ৰহ্মণো রামাৎ প্রেরকঃ পুরুষত্তথা। প্রকৃতে মহান মহত-স্ততোহ্হৎ ত্রিগুণাত্মক:। তম্মাদা এতমাদাকাশ: সংস্তঃ। আকাশাদ বায়ুঃ বায়োর্মা রমেরাপঃ অন্তাঃ পৃথিবী পৃথিব্যা अवस्यः। अवसीराज्याभ्वः, व्यवाराज्या द्वाराज्यः। न देव এষ পুরুষোধনরসময়ঃ। গ্লোমিতি পুথিবীবীজেন তৎ রসং चनजार नरम् । उँदः उँ दें जि वीरक्रनावम्रवीक तनः छर्वे । সোহং মস্ত্রেণ তাং পৃথীং নাগান্তে দিদ্ধভাবিতাং। ধ্যাত্রৈবং ত্রক্ষ্মীরন্ধেণ তত্ত্বীঙ্গকলাং অদেৎ। হৃদি হৃতং সমিধায় ভাবৎ প্রাণ-প্রতিষ্ঠয়। । ওঁ প্রাণ প্রতিষ্ঠামন্ত্রস্থ ব্রহ্ম বিফুরুত্রা ৠষয়ঃ ঋগ যজুঃ সামানি ছন্দাংসি অভিছেন্দো বা ছন্দঃ ক্রিয়াময়বপুঃ व्यानाथा। एवका व्यानव्यक्षिप्रं विनित्यानः। ७ क्रथः গংঘংঙং অং পৃথিব্যপ্তেরো বাঘাকাশাস্থনে আৎ হৃদয়ায় नम । ७ हर इर इर वर कर हरे मक्ल्भर्मक्र भक्त भक्त ত্মনে ঈং শিরদে স্বাহা। ওঁ টং ঠং ডং ঢং গং উং ভ্রোত্র হক্ চকুর্ব্বিহ্বান্তাণাত্মনে উং শিখায়ৈ বষট । 'ওঁ তং থৎ দং ধং'

এইরণে দেবের সহিত পাপপুক্ষ দগ্ধ হইলে পর সহস্রদলে অভিন প্রভ্রামকে চিন্তা করিয়া ভক্তিপ্বঃসর উপাসনাব অন্ত পুনর্কার অকীয় দেবের উৎপত্তি চিন্তা করিবে। জীবাদ্মাও মন্তের ঐক্য চিন্তা করিয়া শনীরের পরিত্রতা মন্ত্রমান করত সুলাধার হইতে উখিত কতিস্ক অবুমাপথে ও ক্ কট্ এই মন্ত্রায়া প্রাণারাম করতঃ মন্তকে বিশ্বস্ত করিবে। অপর পুণরিক্ষ সাম হইতে পুক্ষ, তাণা হইতে প্রকৃতি, প্রকৃতি হইতে সহব, মহন্ত হউতে, ं नर अर याक् भाविभावभाष्म् बाबारन खेर केवहां हर्। 'अ पर यर वर कर मर वर वक्तुवाशामगमनविम्नगानमां करन छेर दिखाखनात्र दिशेष्ट्रिं। उँ यर तर तर तर तर तर वर वर दर শং কং অং মনোবুদ্ধাহম্বার চিত্তাত্মনে ছঃ করতল পৃষ্ঠা-खार चल्लांग करें। 'उँ चार नात्वत्रधः। उँ क्रीर अनवानी-নাভি। 'ওঁ আং ছেুাং হুাং মন্তকালাহণয়হ। ভতঃ ওঁ यः प्रशाषात नमः, कि । ७ तः अर्शाषात नमः, मि गांरामा उँ लः माः माजात्म नमः, ककृति । धँ वर तमाखात्म नमः, वामार्त्न। उँ नर बन्हाजात नमः, रुपसापि लावियुशत्न। ওঁষং মজাতানে নমঃ হালয়াদি পালযুগলো। ওঁসং শুকুবার্ন नमः छत्राति कठेटतः। उँदः शानाज्ञातन नमः छत्राताराज्ञातनः। · ७ कर की वाजारन नमहा ७ इर मः की वाजारन नमः, इत्योपि नर्विदिन । ज्योगरमवर श्रेकार्यन क्र्याम्यारम् एव वर्णाः वर्षाः স্থেধিস্থপোতোল্লনদরুণদরোগাধিরত। করাথাঃ পাশং কো-**मध्यिक्** हर्वत्रथ छन प्रश्रक्ष्म शक्ष्यानान्। दिलाना स्कः शांनः विनयनमनिका शीववरकां ऋशाजा (प्रवी वालाक वर्गा ভবতি শুভকরী প্রাণশক্তিঃ পরা নঃ । হতিখ্যানং । তেঁ

জিগুণাত্মক অহমার তাহা হইতে জাকাশ, আকাশ হইতে বায়, বায় হইতে জায়, অগ্নিহইতে কল জল হইতে পৃথিবী, পৃথিবী হইতে ওমধি, ওমধি হইতে জায়, অল্ল হইতে এবং রেত হইতে এই অল্লন্সম প্রমকে আবিষ্ঠ্ ত চিল্লা করিলা মৌং এই পৃথিবী বীজ্বারা সেই গ্লকে ঘনীভূত করিলা ও হং ও এই বীজ্বারা বায়, ও লোহং মন্ত্রাগ্র পৃথিবী বীজ্বারা ক্রেক্লা প্রজ্বারা বায়, ও লোহং মন্ত্রাগ্র পৃথিবী ক্রিলা ব্রহ্মবন্ধ বারা ওল্পলা জ্ঞাস করিবে – এবং ছাল্লে হস্তার্পণ করিলা প্রাণগ্রন্থি ইন্তানি প্রাণশক্তির ধ্যান করিবে। স্থানার্থা একবর্ণ দ্যুদ্রহিত লোভে উল্লাস্য স্কল্পের্যার উপবিষ্টা, হস্ত্রশ্বনে পাণ,

बार्गी त्या वर वर जर वर मर गर वर वर मह सम बानाः, देह शानाः भूनछारनाव वीकाम्प्रकादा वाक्षमनण्डम् त्यां का खानशाना विकास का व्याव वाक्षमनण्डम् त्यां का खानशाना देशमां का कार्या कराव विकास का कार्या का कार्य का कार्या का कार्या का कार्या का कार्या का कार्या का कार्या का का कार्या का कार्या का कार्या का कार्या का कार्या का कार्या का कार्य का कार्या का कार्य का का कार्य का का कार्य का क

চন্ধারি বাক্ পরিমিতানি পদানি তানি বিহুত্র কিবা মনীধিণঃ। গুহাদীনি বিহিতাগুলয়ন্তি তুরীয়ং বাচো মমুষ্যা ক্ষন্তীতি ভূতশুদ্ধিঃ।

ভূতভদ্ধিংবিনা কর্ত্ত্বপহোমার্চনজিয়াই। ভবস্তি নিক্ষণাঃ দর্বাঃ প্রকারেণাপ্যস্থ চিতাঃ। তত্মাদ্রামাত্মকা যা বৈ উৎপদ্ধা বিশিষাত্কা। বাভিন্ন গাৎ স্বকার্যায়া স্তদ্যা ভাদঃ প্রকীর্ত্ত্তিনাগাং বিনা জপং প্রান্থনি কিলাং ভূতমান্ত্রং (মৃক্যানবং)। ন্যাসান্তদাত্মকো হি দ্যাদ্রামো ভূত্বা মনুং জপেৎ।

বামাঙ্গুর্চাদক্ষিণান্তঃ পাণ্যোরুৎপত্তিসঙ্গকঃ। সংহারো নিপ-রীতোহসৌ কনিষ্ঠান্তঃ স্থিতিপ্রদঃ।শির আরভ্য পাদান্তো দেহ-

সাধক ভূতগুদ্ধি না করিরা তজিপুরংসর জপহোমাদি কার্য্য করিবেও ফলভাগী হইতে পারেনা। মাতৃকা সকল রাম হইতে উৎপর ও অভিন বিধার রামার্কনে ভাষারখারা অবশুই স্থাস করিতে হয়। স্থাস বাতিবেকে ফণাদি করিলে ভাষার ফললাত হয় না এবং সেই অপকে আগুর অপ অভিহিত হইনাছে। ন্যাস করতঃ রাম্বর হইরা সম্মুশুপ করিবে।

ধকু, ইক্ষুবণ্ডণ, অঙ্গ, পঞ্বাণ এবং কপাল ধারণ করিয়াছেন, জিনয়না, শীনন্তন্ত্রে স্থাপাতমানা এবং প্রাতঃ কালীন ক্র্যের ক্সার অকণবর্ণা প্রাণ্শক্তি আমাদের মন্ত্রনাধন করিতেছেন। অনস্তর আং ছ্রীং ইত্যাদি মধ্যে প্রাণপ্রতিষ্ঠা এবং জ্মাদি সংখ্যর কার্যসিদ্ধার্থ বোড়শবার প্রণব পাঠ করিয়া প্রমা শক্তিকে শবণ করিবে। ইতি ভূতত্তি ।

্ষ্টিংপভিশংজকঃ। সংহারো বিপরীহতাহনের মূর্দ্ধোহতেত্তঃ বিতিনাভিগঃ। ক্তিন্যাসো গৃংস্প্য সংহারো বশিনে। বতেঃ। এক্ষচারিণ উৎপতিঃ স্তিরাঃ শূদ্রগ্য চেউদঃ। ইতি । ন্যাস নির্ণয়ঃ।

हेण्या श्वास् थानर स्रंति रिर्मिंग् क्खास । तिम्दान स्रिंग् क्रिंग विरित्त क्रिंग् शिक्ष मित्र मा श्री श्री श्री हेण्या मा जिल्ला प्राण्ट श्री प्राण्ट श्री प्राण्ट श्री प्राण्ट श्री प्राण्ट श्री श्री हेण्या मा जिल्ला श्री श्री श्री हेण्या स्राण्ट । जिल्ला स्राण्ट श्री श्री श्री हेण्य स्राण्ट मा स्राण्ट स्राण्ट श्री श्री श्री हेण्य स्राण्ट स्राण्ट हेण्य स्राण्ट । जिल्ला स्राण्ट स्राण्ट । जिल्ला स्राण्ट स्याण स्राण्ट स्राण स्राण्ट स्राण्ट स्राण्ट स्राण्ट स्राण्ट स्राण्ट स्राण स्राण स्राण्ट स्राण्ट स्र

ন্যাস ত্রিবিধ—উৎপত্তি, স্থিতি ও সংহার। বামান্স ঠ হইতে আরম্ভ করিরা দক্ষিণান্স ঠ পর্যস্ত যে ন্যাস করাহর তাহার নাম উৎপত্তি। আর ইহার বিপরীত অর্থাৎ দক্ষিণান্স ঠ হইতে বামান্স ঠ পর্যস্ত যে ন্যাস করাহর তাহার নাম সংহাব। কনিঠান্তন্যাস স্থিতিদান করে। আর মন্তক হইতে পাদপর্যান্ত যে দরীরে ন্যান্স করাহর তাহার নাম উৎপত্তি, চরণ হইতে আরম্ভ করিয়া মন্তক পর্যান্ত যে ন্যান্স করাহর তাহার নাম সংহার, নাভিগত ন্যান্ম হিতিপ্রদ এই তিবিধ ন্যানের মধ্যে গৃহত্তের হিতিন্যান। ক্রন্মচারীদিকের সংহার, স্ত্রী ও শৃত্রের উৎপত্তিন্যান কর্তব্য।

অতঃ পর ইড়া বাবা পরবর্ণে প্রাণবায়ুকে পূরিত করিরা করারাদি মপর্ব্যন্ত বর্গীর বর্ণ সকল বাবা কুন্তিত করিবে এবং য অবধি কা পরাত্ত বর্ণ সকলে পিল্লা, বারা রেচন করিরা প্নর্কার পিল্লাবারা পূরণ করত কুন্তিত করিয়া বৃজাবারা রেচন করিবে অনত্ত উত্তর বারাই পূরণ, কুন্তক ও রেচল

क्रतीत्रनीनार द्वारा चरेत्रहेककर धावनारम् । विमारम् खनवर भोनिछल्द्याः भुष्ठेद्यात्रिम । उँ कर थर गर गर पर हर जत्रुक्षीन्तार नगह। ७ देर हर हर वर यर कर नेर जन्म-ं नीच्यार नमः। 'उँ छेर हेर केर छर हर नर छेर मधामाच्यार नम8 खँबर छः धर मः धरनर क्षेर अनामिकांच्याः नमः। खँखर नर कर वर छर यर छेर क्रिकां छार नम । ७ यर तर वर वर मर मर यर हर नर कर बाह कत्रजनशृष्ठी। छार नमह। अजारनाव ষড়ঙ্গেষু যোজনীয়ানি তদ্যথা। হৃদয়ায় নৰঃ। শিরণে স্বাহা, শিখামৈ বৰট্, কবচায় হৃৎ, নেত্ৰত্তনায় বৌষট্, অজ্ঞায় ফট্। ইতিপ্রকারেণ। ইতিকেবলমাতৃকাষ্ড্রসং।

পঞ্চাশন্বৰ্ণভেদৈবিবিছিত্বদনদাঃ পাদযুক্তকিবকো---দে-শাং ভাষৎকপৰ্দাকলিতশশিক্ষা মিন্দুকুন্দাবদাতাং ! অকুম্ভচিম্ভালিখিতবরকরাং ত্রীক্ষণাং পদাদংস্থা কল্লামতুচ্ছস্তনভরজঘনাৎ ভারতীৎ তাং নমামি। কেবলমাত্রকাধ্যানং।

करिया व्यकावामि क भवास वर्गनकम बाबा मछक कहेट नामभ्यास वाशिक नामि कतिरव।

অনম্ভর মাতৃকার ধ্বাাদি ন্যাস প্রাভৃতি কথিত হইতেছে। অস্য শ্রী মাতৃকামস্ত্রপা ইত্যাদি মূলোক্ত অবিজ্ঞল পাঠ কবিয়া অব্যাদি তাস করিবে यथा नित्रति जन्नाः श्वरात नयः, पूर्वशायकी क्लार्य मयः कृति जीमाजुका जव-चरेठा प्रविकारित नमः, श्रःष्ट्र रूपाला। नीखल्डा नमः, नापद्यत चरविकः শক্তিভা নমঃ।

অনস্তঃ মাতৃকার অজন্যাস করন্যাস করিতে হয় এই সমস্ত মূলেই স্পন্ধ निविक चाह्य मुहिक्तिद्वात्व । चाकः शव शकामवर्ग एकरेनः देकानि मृत्नाका थान, यात्रा (सवीदक हिखा कविद्य। दनवीय चाकाता-पूर्व, वाब, हदन, केन्द्र ७ प्रकट्टून नक्नान्दर्भन इस ७ कुक भूरणव नाम कव्यर्ग,

অথান্ত ম'ত্কান্যাসঃ কণ্ঠহনাভি শুহুকে। পান্ধে জন-ধ্যকে পৰে যোড়প্ৰাদশজ্বদে। দশপত্তে চ ষ্ট পত্তে-চতুক্ত্তে-ছিপত্তকে। পঞ্চাশ্বৰ্ণবিন্যাসঃ পত্তসংখ্যাক্তমাদ্ভবেৎ। একৈকবৰ্ণমেকৈক পত্ৰান্তে বিশ্বস্থভন্যসেৎ। ইত্যন্তম'ড়ি-কান্যাসঃ।

অবমন্তঃ প্রবিন্য মনদাতো বহিন্যদেশ। শিরোবদনরভেশি চক্ষুঃ শ্রোজ্মগ্রং পাণ । নাদাকপোল মুগলে তথোঁঠাধরযোরপি । উর্জাধো দন্তপংকো চ মুর্জ্যান্যে ধোড়শ
স্বান্ । ক চবর্গছয়ং বাহ্বোঃ পঞ্চাব্ধিস্থলে ন্যদেশ । ট ভবর্গছয়ং পাদসন্ধ্যথেষু চ সংন্যদেশ । পবর্গৎ পার্যসুগলে পৃষ্ঠনাজ্যদবেষু চ । হুদো মূল ককুৎক্ষন্ধে হুদাদি করপদ্ ছয়ে ।
ক্রচরাননযোগৈন্চব ব্যাপকং বিনিযোজ্যেশ । গুমাদ্যন্তো ন-

काय । क्लिंदिक कात्र काय विक्र कर्णा थावन कि विदायन, व्यवक्र है र व्यक्त माना क्लिंदिक विदायन कर्ण विदायन । विव्यव्या विक्र विदायन । विव्यव्या विक्र विवाय विक्र विवाय । विव्यव्या विक्र विक्र विव्या विव्या विक्र विव्या विक्र विव्या विक्र विव्या विव्

स्पिट्रेखा वा मिनिन्युक्तिम् वर्ष्टिष्ठः। शक्षांभक्षकतामः करम्भिरं विशेष्ट्राक्षेत्रं (क्वन माज्कानामः।

खखः गविन्तु एक नारम श्रविन्हन्त्र भृविवर । मः हारक भारता (नवी मविन्दर्शः राष्ट्रकरः ।

শক্ষেত্র হরিণপোত্রমূদগুটকং বিদ্যাং করৈরবিরতং দধতীং ত্রিনেত্রাং। অর্দ্ধেন্দু মোলিমক্ষণামরবিন্দসংস্থাংবর্ণেধরীং প্রণমতন্তনভারনআং। ইতিদ্বিন্দু মাতৃকাধ্যানং।
বিন্দু বৃক্তাং মাতৃকান্ত বিন্যদেশ লোমতঃ। ইতি দ্বিন্দু মাতৃকান্যাসঃ।

স্থানেষেতেষথ পুন্ম ছিকায়াঃ কলা ন্যদেশ। অস্য কলান্যাসদ্য প্রজাপতি ঋ ষিগায়িত্রীচ্ছন্দঃ কলা সরস্থতী
দেবতা ইকার্থে বিনিয়োগঃ। অং ভ আং জ্লয়ায় নমঃ। ইং
ভ সং শির্দে স্থানে। উং ও উং শিখায়ৈ ব্যট্। অং ও এং
ক্রচায় হৃং। ভ ভ ভং নেত্রভায়ায় বৌষট্। অং ও জঃ
অস্তায় ফট্। ইতি কলাষ্ড্ ক্ন্যাসঃ। ইতঃ প্রথং রথাসং

८७ फः, छेम्द्र सः, अम्द्रवरः, क्वमृत्य तः, कक्र्रश्रात् नः, अम्यापिषिणि १८७ भः अम्यापि दासभ्द रः, अभ्यापि पियन्गाति नः, अम्यापि दासभाद रः, अभ्यापि पियन्गाति नः, अम्यापि दासभाद रः, अभ्यापि प्रेत्र कः, । এই श्राकाद वाद्य साज्य अभ्य कित्र वाद्य साज्य अभ्य कित्र वाद्य साज्य अभ्य कित्र वाद्य स्थान कित्र वाद्य सामार्थी क्याप्त कित्र वाद्य सामार्थी क्याप्त कित्र वाद्य सामार्थी क्याप्त कित्र विद्याप्त कित्र कित्

শ্বনন্তর এই সকলতানে মাতৃকার কণান্তাস করিবে। প্রিক্রেশ ও শশকাসাদি মুলেভে স্টে রহিয়াছে, করন্তাস্ত্র্প্রভাবের ন্তার। হতৈঃ পশ্বৎ রধাকং ইত্যাদি মুলোজন্যান করিরা ও আং নির্বৈত্তা নমঃ ইত্যাদি মুলোজ ক্রাস করিবে। ধ্যানার্থা শার্ষা হত সকলে পদ্মভক্ত, গুণ, মুগ,পুক্তক শুণমথ হরিণং পুস্তকং বর্ণমালাং উদ্ধং শূলং কপালং নবমন মৃতলসন্ধেমকুস্তং বহস্তীং। মুক্তাবিছাৎপয়োদক্ষটিকনবল জবাবদুরৈঃ পঞ্চবৈক্তে প্রাক্তিবলৈ কলালি-বিলাং শারণাং তাং নমামি। ইতি কলালেবলা ধ্যানং।

ঁ ওঁ, অং নিরুক্তা নমঃ। ওঁ আং প্রতিষ্ঠায়ে নমঃ। ওঁ ইৎ विमारिय नमः। ७ केः केमानारिय नमः। छ छः देखिकारिय, खँछर मीलिकारेश, खँ श्राटिकारेश, खँश्रर त्याठकारेस, ভঁ ৯ং পরারৈ, ভঁ ৯৯ং সূক্ষারৈ, ভঁ এৎ সূক্ষামৃতারৈ, ভঁ और ख्वानाञ्च होता, वें उर बान्यात्रिता, वें उर व्यानिता, ७ चर त्यामक्रभारेय, ७ वः व्यक्तिस्त, । कर व्हरिका, धर श्रीका, गः मारेजा, चः त्मशरिय, ७९ कारेखा। हर मरिका, ছৎ দূতৈত্য, कः च्हितारेश, येर च्हितारेश, এৎ मिरेका, ऐः क्या-देश, र्रुर श्रालिटेना, ७: भारेखा, एर अंशर्रेश वर त्ररेका। उः कामिकारिय, थर वतनारेय, मर जास्तानिरेना, धर श्रीरेजा, नर मीर्घारेय । शः जीक्कारेय, कः रतीक्वारेय, वः अख्यारेय, छः निजारेय, मर मरेखा। यर कूथारेय, तर टकाथिरेना, नर किया-देश, বৎ উল্কার্টিয়, শং মৃত্যবে, বং পীতাটিয়, সং খেতাটিয়, **२: ज**क्रगारेव, नर जनिकारेव कः जनसारेव। ইতি পঞ্চাশ**-**-কলান্যাসঃ (

ওঁ খং খম্ভারে নমঃ। ওঁ খাং খানন্দারে নমঃ। ওঁ ইং প্ৰায়ে নমঃ। ঈং তুটিটা। উং পুটেটা, উং রতৈয়, ঝংঋতিয়,

বর্ণ সকল, টক, কুপাণ, বাণ,এবং ক্রখা পরিপূর্ণকুত্ব ধারণ করিয়াছেন, জিনয়ন যুক্ত মুক্তা, বিছাৎ মেয় ক্ষটিক ও জবার সমবর্ণ পঞ্চবদ্ধে বিয়াল সানা পূর্ণচন্দ্র নদুলী এবং তাল ভারে নত্রা।

(बरेंद्रा) स्र भनिरेना, ३१ हिंद्यकारेत, ३३६ कार्रेखा, अर्थ . त्कांदश्चरित्र, थेर . खिरेत्र, थर खीरेला, थेर पक्रगरित, पर পূর্ণারে, অংপ্রায়ভারে ননঃ। ইড্যেডাঃ সরস্থানে সংপ্রা ं श्रुखवाः। कर धर छिन्दा, धर वर छानित्म, गर कर भूखारेत्र । घर भर मजीरेका । ७९व९ सामिरेना । वर ४९ ऋरेका, हर पर छ्यु चारित,। जर बर दिशानगरित, अर छर विचारित we et caiिसरेना । हेर हर शांत्रिरेना, हर छर कमारेश, यर थुआर्कित्य । तर जेशार्रेंग, लर क्वांनिरेना । वरक्वांनामानिरेना भर विक निर्दिता। यर इतिदेश, मर यज्ञभारेश, हर कभिनारेश। এতা হস্ত পাদযুগলমাসিদু ন্যস্তব্যাঃ। লং হব্যবাহনায়ে नमः देखि मछद्य। कः क्यानाह्नादेश नम देखि वार्शिकः। ইত্যন্ত ত্রিংশৎ কলান্যাসঃ।

মায়ালৈয়ঃ পুটিতান বর্ণান কেশবাদীংস্তথা পরান্। সশ-ক্তিকান্ ন্যদেদ্যক্লাৎ মন্তকাদিক্রমেণ তু। তথাছি কেশবাদি-মাতৃকান্যাসদ্য প্রদাধ্যনারায়ণ ঝ্রিগায়তীচ্ছন্দো লক্ষী-नाताम्रानी त्मवरक खत्राः मक्त्राः देखीर्थ विनित्यानः । उँ औँ ও নমো নারায়ণায় হংগঃ সোহৎ অং কং থংগং ঘং গ্রংআং हीँ ६९मः त्माहर ७ नत्मा नात्रायमाय कुष्कान्त्राय जाहा। জ্রী পেবৈর ছালয়ায় নমঃ। দর্বত্তে ওঁনমো নারায়ণায়েত্যসুসন ঞ্জনীয়ং। এবং মহোক্ষায় স্বাহা 🕮ং পতিন্যে শিরসে স্বাহা ৰীরোক্ষার স্বাহা শ্রেং বিষ্পুপজ্য শিখায়ৈ বষট্। হ্যক্ষায়সাহা লৈং বরণায়ৈ কবচায় ছুং। সহস্রোক্ষায় স্বাহা শ্রেণংকমলা-ऋभारिय त्नजान्तार त्वीषष्ट्रा. यनत्त्वाकाय वाहा यः म्लिरेनाः অস্তায় ফট্। ইতি কেশবাদি মাতৃকাষড়ঙ্গন্যাসঃ । বিদ্যার:

विकार क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त को प्रमाण के प्रमाण के विकास के वितास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विकास के विका

खँ हीँ बीँ को बाँ काँ काँ काँ काँ खँ दक मना कि की खंदन नम 8 ं ইতি সর্বত্তে সম্পুটঃ। আৎ নারায়ণাদিকাক্ত্যৈ নগঃ। ইৎ यांथवात्र कृटेकेंद्र नमः। त्रेश शाविन्नात्र शूटेकेंद्र नमः। छेश विक-८व श्रेडा नमः छेर मश्रूक्तनात्र भारिखा नमः। श्रर खिविक-माञ्च कियादेश नमः। अृ९ वामनात्र मशादेश नमः। ৯९ अधिका-अ (स्थिति नमः । ৯৯९ ह्यी कि नात्र ह्या देश नमः । ७९ भग-नाजाय व्यक्तिरेश नमः। वेश नारमानताय नज्जारेय नमः। **७ वाञ्चर करोका । निकार नमः । ७ महर्षका महत्र्वरेखा नमः ।**  পং প্রচার প্রীত্যৈ নমঃ। খঃ অনিরুদ্ধার রত্যৈ নমঃ। कर ठक्कित कशारित नमह थर गिमत्म कुर्गारित नमह। गर শাঙ্গিণে প্রভারে নমঃ। ঘৎ খড্গিনে সত্যারৈ নমঃ। ঙৎ मिश्चादन क्थारेय नमः। ह९ इ९ मिरन वार्टेगा नमः। ছ९ मृत्रलि-নে বিলাদিনৈর নমঃ। জং শূলিনে বিজয়ায়ে নমঃ। ঝং পা-भित्न वित्रकार्देश नमः। ७९ अङ्गुनित्न विश्वादेश नमः। हे९ मुकुम्माय विनयादित्र नयः। ४९ नम्बजीय ञ्चनमादित्र नयः। ७९

धनत्र म्राणक षहे विश्व कात जान कतिया मछकापि कार माशिष (ही: बी: हो:) ने कवार मृष्टिं व्यवः मिक्स्क दक्नवाष्ट्र जान कित्र । म्याक ध्वाप्तिक हे जान कित्र । म्याक ध्वाप्तिक हे जानि धान कित्र । भागाधी—किनातात्र क्षाप्तिक कित्र । भागाधी—किनातात्र विश्व कित्र कित्र । भागाधी—किनातात्र क्षाप्तिक विश्व कित्र कित्र कित्र क्षाप्तिक विश्व कित्र क्षाप्तिक कित्र क्षाप्तिक कित्र क्षाप्तिक कित्र क्षाप्तिक कित्र क्षाप्तिक कित्र कित

मन्पित पूर्वेषा नमः । घर नजीव श्रीका नमः । नर मनकविद्य भश्चरेका नमः । ७९ वश्वरत छरेका नमः । ४९ क्रकांत्र बूरेकामनः দৎ সত্যায় ভূক্তিয় নমঃ। ধং সাত্মতায় মতৈয় নমঃ। নং ्रभौतरत क्रमार्टम स्मार । अर मृतात त्रमारेत समा । यर क्रमा-र्मनात्र छेमारेश नमश । वर कृषतात्र द्विनिरेख नमः। छर विश्वमूर्खिए क्रियारिय नमः। मर देवक्षीय वस्त्रारिय नमः। ষং দ্বগাত্মনে পুৰুষোত্তমায় বহুধায়ৈ নমঃ। রং অস্থাত্মনে ৰারাহৈয় নমঃ। লং মাংদাজুনে বলাফুজার পরারণারে নমঃ। वर स्माज्ञास वलाय मुक्तारिय नमः। मः अव्याज्ञास व्यवाय नकारिय नमः। यः मञ्चाजात्न त्र्याय शब्दारिय नमः। मर শুক্রাম্বনে হং সায় প্রভাগ্নে নম:। হৎ প্রাণাম্বনে বরাহায় विभारेत नमध । तः क्रियां भक्तां ज्ञान विमनात करमाचारेत बगः। अँ हो क्याँ को हो कर की खीर containen नृतिर-श्रम विद्युक्तिय नमः । दक्षणविश्विष्यः छोटमः। छानमाद्विष দেহিনাং। অচ্যুতত্বং দদাত্যের সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ। ইতি কেশবাদিমাতৃকান্তানঃ।

वाक्ष्याञ्चामानिकान् वर्गान् माण्काञ्चाः ममक्किकान्। **একি গাদীনথেশান্তান্ন্যদেৎ স্থানে**মু তেযু হি। দিন্যাসস্য অম্বরীশ ঋষিরসুষ্টুপ্ছন্দঃ অর্জনারীখরো দেবতা ह्रा वीकानि अताः भक्तमः कानविकानार्थ विनिरमागः।

ৰয়ত বিয়ালমান । ভাসের প্রণাণী যথা মন্তকে ওঁ হ্রা 🔊 🞳 🖦 हीं औं क्री व दक्षवानिकीर्दर्श नमः, मृत्य के ही और क्री कार है। वि क्री दे: थे माताबनाविकादेखा समः देखावि माकुकाछात्मत निधि है चानमकरन ककावादिवर्गासूत्रास्त ज्ञान कविरव। धरे कमनादि जान सामकताम । छ है नाथकविशतक ८ कंपेरच स्रशांत करते ।

আনন্তর প্রী কঠাদি ভাগ কথিত চইতেছে। ইচাতে ও ললাটাদি সাত্ৰাজানাক স্থানসকলে অকানাদি প্রভাক নাত্কাবর্ণের পূর্বে ঐ ব্রা প্রী এই বীল্লেন্ড্রক করিরা শক্তিব সচিত প্রীকঠাদির ভাগ করিবে। স্থানিদিট প্রীকঠাদিরভাগত অক্ষীল ধানিং ইত্যাদি ধানিছেন্দ পাঠ করিবা প্রিটি প্রী অং কং পং গং ঘং ওং আং অক্টাভ্যাং নম ইত্যাদি ক্রমে ম্লোক্ত করভাগ ও এই রীত্যাহ্সারে হৃদ্যাদি বড়কভাগ করিবে। অতঃ পর সিন্দ্রকাঞ্চনসম ইত্যাদি ম্লোক্ত ব্যান বারা ধানে করিয়া মন্তকে আ দ্রী প্রী অং প্রকর্পেপ্রোদ্যাহিতাং নতঃ ইত্যাদি মূলে দৃষ্টিপূর্বক প্রোক্তিনিরমে ভাগ করিবে। বেবভার আকার অর্থনারী অর্থক্তম্বর্ণানী শ্রম ইত্যান বামার্ক নিক্তরণ দক্ষিণার্ক ম্বর্ণ বর্ণ, হত্যসকলে পাল, অতম অক্যান্ত্রের গ্রহ ইয়াছে।

चर्यका में विष्ठींनत्नानाकीछार नमः। छर समरतः सद्वर्श्व नाकीकार नमः। उ वनीवीं मनीव लाहनाकार ৰমঃ। খাঁ ভাবভূতীশদীৰ্ঘ মুখীভাগং নমঃ। খাঁ তিথীশ Cनामूकी छार नमः। ३९ ऋषी भनी च किञ्चा छाः नमः। ৯৯ং হরেশকুণোদরীভাাং নমঃ ৷ এং ঝিণ্টাশোর্ধকেশীভাাং मगः धेः ভৌতিকেশবিকৃত্মুখী छा । नगः। ७ माना-জাতেশ জালামুখীভাাং নমঃ। ঔ অমুগ্রহেশোকামুখীভাাং নমঃ৷ অং অকূরেণ এমুখীভাং নমঃ৷ অঃ মহাসেনেশ বিদ্যামুখীভ্যাং নমঃ৷ কং ক্রোধীশ সহাকালীভ্যাং নমঃ৷ খং চল্লেশ সরস্বতীভ্যৎ নম: ৷ গং পঞ্চান্তকেশগোরী-क्यार नमः । घर भिर्ताहरम् दिवानाकाविनाकारः नमः । ६९ একরুদ্রেশমন্ত্রশক্তিভাগে নমঃ চং কূর্ম্মেশাক্সশক্তিভাগে নমঃ। ছং একনেত্রেশ ভূতমাতৃত্যাৎ নমঃ ৷ জৎ চতুরাননেশ লক্ষো-দরীভাং নমঃ। বং অজেশদ্রাবিণীভাং নমঃ। এং সর্বেশ নগরাভ্যাং নমঃ। টং সোমেশথেচরীভ্যাৎ নমঃ। ঠৎ লাঙ্কীশ মঞ্রীভ্যাৎ নমঃ। ডং দারুণেশ রূপিণীভ্যাং नगः । एर व्यक्तातीमभातीतिनीकार नगः। नर छेगाकारक्रभ কোটরীভ্যাৎ নমঃ। তং আষাঢ়ীশ পৃতনাভ্যাৎ নমঃ। थर पढ़ीमञ्ज्ञकानीञार नमः। पः अजीभरगिनीञार नमः। १९ मीरनणणियानीच्याः नमः। नः (मर्थणभिक्रिनी-**खार नगः। १९ लाहिएजभकानता**खिलाः नगः। कर गित्रिष्ठभवर्षिनोन्धार नमः। वर इग्रतमक्रशक्तिनेन्धाः नमः। ७९ वित्र एथम कत्रां छा १ नमः। मर महाकार नभ-विक्रमान्त्रार नगः। यर वृशाक्षजाः वागेणस्यूर्यभद्रीनार নমঃ ৷ রং অফগাত্মভ্যাং ভুজকেশরেবভীভ্যাৎ নমঃ ৷ লং

মার্শালাভ্যাং শিনাকীশ মাধ্যীভ্যাং দমঃ। বং মেনাম্মভ্যাং
বড়গীশ বারুণীভ্যাং নমঃ। শং অস্থ্যাম্মভ্যাং বকেশ বারুবীভ্যাং নমঃ। ষং সজ্জাম্মভ্যাং শেতেশবিদারিণীভ্যাং
নমঃ। সং শুক্রাম্মভ্যাং ভূমীশ সহজাভ্যাং নমঃ। হং প্রাণাম্মভ্যাং নমঃ। লং ক্রিয়াশক্ত্যাম্মভ্যাং
শিবেশব্যাপিনীভ্যাং নমঃ। কং পরশক্ত্যাম্মভ্যাং সম্বর্ডকেশমহামায়াভ্যাং নমঃ ইতি শ্রীকণ্ঠানি ন্যাসঃ।

শুদ্ধা সবিন্দুকা যুক্তা কলাভিঃ কেশবাদিভিঃ। প্রীক্ঠ-মাতৃকা চাত্র স্থাসাঙ্গে পঞ্মী স্মৃতা। ক্লডৈর্যুক্তাং কেবলাং বা মন্নাং কর্মারস্তে মাতৃকাং বিস্থাসেদ্যঃ। মন্ত্রাঃ সদ্যঃ কুর্বতে তদ্য দিদ্ধিংদাধৈঃ দাদ্ধং যাতি নাশংজরা চ। অথংতবং প্রক্রামি তত্ত্বসাদং তদর্থিনাং। যত্ত্বন্যাসমাত্রেণ তত্ত্বমেব প্রক্রায়ে তত্ত্বসাদং তদর্থিনাং। যত্ত্বন্যাসমাত্রেণ তত্ত্বমেব প্রক্রায় প্রাণাত্মনে নমঃ। এতদ্বিতয়ং দর্বাক্তো। ওঁ মঁ নমঃ পরায় জীবাত্মনে নমঃ। ওতদ্বিতয়ং দর্বাক্তো। ওঁ ভং নমঃ পরায় প্রাণাত্মনে নমঃ। এতদ্বিতয়ং দর্বাক্তো। বং নমঃ পরায় বছরারা-ত্রান নমঃ। পং নমঃ পরায় নম আত্মনে নমঃ এতক্তিতয়ং ছদি। লং নমঃ পরায় শব্দাত্মনে মৃদ্ধি। বং নমঃ পরায় স্পাত্মনে ইতি লিক্ষো। তং নমঃ পরায় দৃগাত্মনে ইতি চক্ষুধোঃ। ঠং নমঃ পরায় জিহ্বাত্মনে ইতি জিহ্বায়াং। টং নমঃ পরায় ত্রাণাত্মনে ইতি ত্রাণে। ঞং নমঃ পরায় রাগাত্মনে ইতি বাচি। বং নমঃ পরায় প্রাণাত্মনে ইতি পাণ্যোঃ। তাং

সংগ্রাভি মাতৃক। ন্যাদের ফলজার্নিত হইতেছে। যে সাধক কার্যারভে 'শিবাদিযুক্ত অথবা কেবল অকারাদি বর্ণবারা মাতৃকালাস কর্মেন, তৎক্র-শেই বন্ধ তাহার অলাই ফলগ্রন হয় এবং দোষবাল ও আভা বিদট হয়।

श्रेमः भ्रतिय भागाञ्चरन देखि भागरमाः। हर नगः भ्रतिय পাঠান্ত্রনে ইতি পারি। চৎ নমঃ পরায় উপস্থান্সনে ইর্জি - छे परिष्ट । ७: नर्गः भवाय जाका माञ्चात है कि मुर्कात । घर नराः পরায় বাঢ়াত্মনে, মুথে। গংনমঃ পরায় তেজদাত্মনে, श्रुति । अरे नगः भक्षाश कला श्रुत्न, लिएक । कः नगः भक्षाश পৃথ্যাত্মনে, পাদযোঃ। শং নমং পরায় পুওরীকাত্মনে নমঃ। হং নমঃ পরায় সোমম গুলালানে নোড়শ কলালানে নমঃ। ওঁ সং নমঃ পরায় সুব্যন্তলাত্মনে দাদশতলাত্মনে ননঃ। र्खं तर नमः श्वास विक्रम एना ज्ञात्न नमः । এटक क्रिसः क्षि। 'डें धर नमः भवां भवत्मछेताचान वाक्यापवांत हेलि मुर्काम । ঘং নদঃ পরায় পুরুষালনে সঙ্করণায়, মুখে ৷ বং নদঃ পরায় বিশ্বাত্মনে প্রভাগের থাদে। লং নমঃ পরায় নিযুত্যাত্মনে অনিকৃদ্ধায় নমঃ ইতি ওচ্চো। কং নমঃ পরায় স্বাত্তান नाताग्रगाय नगः, পानरयाश । ७ (को॰ नगः भवाग्र (काशा-ল্পনে নৃদিংহায় নমঃ ব্যাপক্ষিতি। অতত্ত্বসাস্থ রূপস্য তৎপ্রাপ্তেং ভুনা পুনঃ ৷ ভর্কাদ্মিতিপ্রাছ্ অনিতর্-निर्मा वृक्षाः । यः कूर्यग्रारुद्धनिभागः म शूर्ता छवि अवर र কণাত্মনামুপ্রবিশ্য ভগবানিহ তিষ্ঠতি। ইতি তলুন্যাপঃ।

তন্ম ব্রিপঞ্জরন্তাদং কথয়িষ্যে হধুনা পরং। যন্ত্রাৎ কলান্তর নান্তি পুংসন্তন্মূর্তি সিদ্ধায়। 'ওঁ অং রাং কেশবায়

अनवन कवाकिनामी भिराद उद कन अप उप्रांग अधिकि व्हेर्छ ह म्रात्तरे खूम्भडे छेननिक रुवेदन मृष्टि कश्टितन। गिनि ज्ञानविर्क्षिक अवः क्षर्भार्य कथाना, मुनिशन बहे उद्गारक छै।शत वाशित स्वाप विणशास्त्रता या वाकि उद्यान करत ति निकारे भविता स्त्र जवर अन्तीचेत्र कान्त्रात्न 'कांशाटक अवस्थिति करतन ।

ধাত্রে নমঃ, ললাটে। ওঁ আং লং বাং নারায়ণীয় অধ্যমে নমঃ,নাটো। ওঁ ইং মোং মাং মাধবায় মিত্রায় নমঃ, ছাল। ওঁ ঈং ভং বং গোবিন্দায় বরুণায় নমঃ, কঠে। ওঁ উং গং লং বিশুবে অংশবে নমঃ, দক্ষিণাখা । ওঁ উং বং মং মধুনুদনায় ভগায় নমঃ, দক্ষিণাখাে। ওঁ এং বাং ত্রিবিক্রমায় বিবস্থতে নমঃ ইতি দক্ষিণকস্করে। ওঁ এং বাং বামনায় ইন্দ্রায় নমঃ ইতি বামপার্থে। ওঁ ওং মাং প্রীধরায় পৃষ্ণে নমঃ ইতি বামাংশে। ওঁ ওং দেং যং হ্ববী কেশায় পর্জ্ঞে নমঃ ইতি বামক্ষরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায়্ট্র নমঃ ইতি বামক্ষরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায়্ট্র নমঃ ইতি বামক্ষরে। ওঁ অং বাং নং পদ্মনাভায় স্থায়্ট্র নমঃ ইতি ক্রুদি। ওঁ নমো ভগবতে বাস্থায় বিষ্ণবে নমঃ ইতি ক্রুদি। ওঁ নমো ভগবতে বাস্থায়ের বিষ্ণবে নমঃ ইতি ক্রুদি। ওঁ নমো ভগবতে বাস্থায়ের ইতি মৃর্দ্ধিন ন্যামেণ। ইতি। তল্ম বিপঞ্জরন্যাসো-ছভিছিতঃ পরমেন্তিনা। সকুয়াসাদ্রবেশ্বালী রামমূর্তিরস্ক্রনা ইতি মূর্ত্তিপঞ্জরন্যাসঃ।

বক্ষে হ্ ম ক্রিনা দি মি ক্রিয়াণাং বিশুদ্ধ য়ে। যা সং-প্রাপ্ত রামো দেশিকেন্দ্রেণ ধীমতা। ওঁ দিগ্ভ্যে। নমঃ ইতি প্রোত্রোঃ। বায়বে নম ইতি প্রতি। ওঁ আদিত্যায় নম ইতি চক্ষু যোঃ। বক্ষণায় নম ইতি ক্রিয়াং। অধিনী ভ্যাং

জভ:পব মৃত্তিপল্লবগাগধাদশিত হইতেছে এইটি ভগবদারা-ধনার অধিতীর উপায়। তাসপ্রণালী মৃলেই স্কুপিট রহিয়াছে। এই মৃত্তিপল্লবল্লাস চত্রানাকর্তি নির্দিষ্ট ইইয়াছে, সাধক একবার লাস করিলেই রামমৃত্তি প্রাপ্ত হটতে পারেন।

সাধকণণ ইজির ওদি দারা প্রভ্রামকে লাভ করির। থাকেন অতথব অনস্কর ইজিরসকলের পবিওদার্থ ইজিরভাস অভিথিত হইভেছে। ১ ওঁ বিগ্ডো! নম ইত্যাদি স্বে ফটবা।

नम हें जिल्ला मार्या नम हे जिल्ला है सिमास नम रैंडि शार्याः। विकास मय हेडि शानरवाः। मिलाय सम ইতি পায়ো। প্রজাপতয়ে নম ইতি উপস্থে। চক্রমদে নম ইতি মনদি। ত্রহ্মণে নম ইতি বুরো। রুদ্রোয় নস ইতি ব্দহকারে। ক্ষেত্রায় নম ইতি চিত্রে। ঈশ্বরায় নম ইতি মনসি। ইল্ডিয়নাসঃ।

অথ কিরীটন্যাদঃ। তুঁ কিরীটকেযুরহারমকরকুওল শখ্চক্রগদান্তোজহন্ত পীত পীতান্তরধর ঐশ্রীৰিৎসান্ধিত-দিতাতেজনে নম ইতি শরীরে প্রমতেজোব্যাপ্তিং শ্বরন কিরীটমুক্রযা মুর্দ্ধি বিন্যবেৎ। ইতি কিনীটন্যাসঃ।

न्यानम्य अवक्यामि मत्नाक्ष मर्द्वकल्थारः । न्यानर বিনা জপং প্রাহর হৈরং নিক্ষলং বুধার। খ্রমিত্র ক্ষাস্ত মন্ত্রদ্য গায়ত্রী ছন্দ উচ্যতে। রামাখ্যং বৈষ্ণবং ধাম দেবতা পরিকীর্ত্তিতা আদ্যবীজংনতিঃ শক্তীরানামেতি চ কীলকং। ঋষিগু রুত্বাৎ শির্দেব ধার্য্যশ্চলো রসহাদ্রসনাগতং স্যাৎ।

चाल श्रद किती है जान करिए + हम । वे किता है एक नृत करा । मुर्गा क মুদ্রোজ্যারণ করত শরীবমুধ্যে একটি প্রধান কেন্দ্র প্রবিষ্ট হট্ল এইক্লপ চিন্তা করিবা কিরীট মুন, খারা মস্তকে ভাস কবিবে ৷

অভঃপর অভীপ্রদ্মনুভাস ক্থিত হইতেছে। প্রিভগণ স্থান वाखिदारक कुछ खनरक चाछ्र । निक्त विनिया नारकन । এই मध्य ঋৰি ব্ৰহ্মা, ছন্দ গায়তী, প্ৰভুৱান দেবতা হাং বীজ, ননঃ শক্তি এবং রামার এই কীলক। অস্ত জীরামনরস্থ একা গবি গাণ্ডী চ্ন-দঃ পরশালা खिदारमा रचन्छ। ताः वीकः नयः निकः तामात्र कीनकः एक्सर्ग निकार्ष विभिन्दांत: हेजाकांत सहिष्क्रम गार्ठ करिया नाम करिएय । भवि खर विविध काशांक मकरक मार्गि कविरत वार्गाए मित्रि अभरत सम्दर्भ ममः देशां-

শিয়াবগন্তব্যতয়া দদৈব হৃদি প্রতিষ্ঠা মসুদেবভারা: । বীজাং হুত্তহং ভবতীতি গুয়ে নতিঃ পদোর্মাধবদংশ্রিভ হাং। অথবা বীজশক্তীস্তঃ স্তনগ্রাহ্মদি কীলকং। অস্যায়মর্ধঃ। খাষ্টে নম ইতি শির্দা। গায়ক্তীচ্ছন্দদে নম ইতি মুখে। শীরামায় পর্মাত্মনে নম ইতি হৃদি। বীজাত্মনে নম ইতি গুয়ো শক্তায়ে নম ইতি পাদ্যোঃ। ইতি প্রায়াদিন্যাসঃ।

ওঁ রাং অঙ্গুছাডাং নম। ওঁ রীং তর্জ্জনীভ্যাং নমঃ। ওঁ রেং মধ্যমাভ্যাং নমঃ। ওঁ রেং অনামিকাভ্যাং নমঃ। ওঁ রৌং কনিষ্ঠাভ্যাং নমঃ। ওঁ রঃ করতলষ্ঠাভ্যাং নমঃ। ইত্যসুলীন্যাসঃ।

ওঁরাং হৃদয়ায় নমঃ। ওঁরীং শিরদে স্বাহা। ওঁরেং শিখায়ৈ বষট্। ওঁরেং কবচায় হৃং! ওঁরোং নেতাে-ভ্যাং বােষট্। ওঁরঃ অস্থায় ফট্। ইতি হৃদয়াদি ন্যাসঃ।

শিরোজমধ্যগুদয়নাভিগুহ্যপদস্থলে। মূলমন্ত্রাকর-ন্যাসস্ত করন্যাস উচ্যতে।

রাং নমঃ ইতি শির্দা। রা নম ইতি ক্রবোম ধ্যে।
মা নম ইতি হুদি। য় নমঃ ইতি নাজে। ন নমঃ ইতি
লিঙ্গে।মঃ নমঃ ইতি পাদয়োঃ।মণ্ডুকায় নম ইতি আধারেঃ।
কালাগ্রিক্র রায় নম ইতি স্থাধিষ্ঠানে। কচ্ছপায় নম ইতি
নাজে। আধারশক্তয়ে নমঃ।রজ্বীপায় নমঃ।রজ্মগুপায়
নমঃ।কল্লরক্রেভা। নমঃ।রজ্বীপায় নমঃ।রজ্মগুপায়
নমঃ।কল্লরক্রেভা। নমঃ।রজ্বীপায় নম ইতি হুদ্রে।
ধর্মায় নম ইতি দক্ষিণক্রেজে। জ্ঞানায় নম ইতি হামক্রেজে।
কার করিবে। এবং চল রসময় অভএব রসনাতে নাাস করিবে বর্গা
ক্রেপি গায়নী হৃদ্রে নমঃ। আর ময় ও দেবড়া বুজিগাছ ধণিয়া হৃদ্রে,
বাল ক্রি গুল্ সুলাং গ্রুপ্রের ন্সগ্র চরণে বিধের বিলা বিভিনারন

रेषत्रानाश नम देखि वामनापण्टन । अंथर्याय नम देखि मक्तिनभाषपूरम । अथनीत नग हेि व्यक्त । अख्यानात নম ইতি বামপার্থে। অবৈরাগ্যায় নম ইতি নাভো। অনৈশ্রনায় নম ইতি দক্ষিণপার্বে। সপ্ততিবলয়োপেডায় महञ्ज्ञक्रांत्र व्यवस्थात्र नम देखि क्षायकमलग्राक्ष मारम्य। जनात्या कर्षां शिव जानककनाय नमश् मः विकासय नमश्। সর্ববিত্বাস্থাককমলায় নমঃ। প্রকৃতিপত্তেল্যো বিকারময়কেশবেভাগ নমঃ। পঞ্চাশদীজাত্যকর্ণিকাথৈ मनः। यर वक्रमेशनाय द्यानकनात्राम मनशा छेर रिश्तम छलाय रश्कां कलाजारन नमह । मः महाय अरवाधा-জুনে নমঃ। রং রজদে পৃথিব্যায়নে নমঃ। তৎ ভমদে মোহালুকায় নমঃ। আং আত্মনে নমঃ। ইতি তদ্য দকিণে। অং অন্তরাত্মনে নম। ইতি উত্তরে।। 🛍 জ্ঞানাত্মনে নম ইতি পর্বে। মায়াতভায় নমঃ। কামতভায় নমঃ, কাল-তত্ত্বাধ নমঃ। বিদ্যাত্ত্বাধ নমঃ। প্ৰতিভ্ৰাধ নমঃ। ইত্যেকোপবি। প্রণবাদিদর্কমন্ত্রান্ সংন্যুদ্য প্রাণাদি-पटलम् मरभा ठ नवनकौर्नारमः। जथाहि-विमलारेम्। छे १ वर्षिता । आनारिय । कियारिय । त्यात्रारिय । अरेग । পত্যাথৈ। সশানাথে অমুগ্রহাথৈ। নমঃ। ও নমো छगनट विकाद मर्कपृठाचान वाश्वरतवाम मर्काष्म्ररः বোণবোগপীঠাল্লনে নমঃ। ইতি মধ্যে। ভশ্মিন্ পীঠে সহস্রাদিত্যসংকাশং মুন্ত্রং ধ্যাত্বা খাসমার্গেণাঞ্জলাবানীয় वारिकः नारमः। इंकि वारिकनामः।

लक्ष्यात्र, श्रीक्षमाञ्च छटन ध्वर कीमटक्य क्षप्रात्त नाम करिया । यथा क्षप्राय कीतायाद नम केछानि ।

'এবং বিনাস্য বিধিবৎ সাক্ষারায়ণো ভবেৎ। ভ্র-রোগভিচারাদ্যাঃ প্রসরং যান্তি মান্যথা। ভূতপ্রেডপি-শাচাশ্চ তথৈব প্রক্ষারাক্ষসাঃ। কৃষ্মাণ্ডাইশ্চব ডাকিন্যো নৈব দ্রুষ্ট্রমপি ক্ষমঃ। য এবং বিনাদেদ্বীমান্ রামঃ সাক্ষাৎ স্বরং ভবেৎ। নাতঃ পরতরং কিঞ্ছিৎ পাবনং পুণ্যসন্তি হি।

ইতি শ্রীমৎ পরস হংস পরিব্রাজকাচার্য্য শ্রীমন্মুকুন্দবন-শ্রীচরণশিষ্যানন্দবনবিরচিতায়াৎ শ্রীরামার্চনচন্দ্রিকায়াং বিতীয়ঃ পটলঃ। । ওঁ।

অথধ্যানং—। অযোধ্যানগরে রম্যে রত্মগুপমধ্যগং।
ধ্যায়েৎ কল্পতরোম্লে রত্মগংহাসনং শুভং। তন্মধ্যেহস্তদলং পদ্মং নানারত্বপ্রেষ্টিভং। তক্র জীরামচন্দ্রাখ্যং ধ্যায়েতেজঃ পরাৎ পরং। প্রকৃত্যা সীতয়াসার্দ্ধং স্থিত্যুৎপত্তিলয়োদহং। দেবাহ্রর্থনীলৈশ্চ যোগস্বাক্ষণ দেবিতং। চতুর্ভুজং শশুচক্রগদাপকলধারিণং।
কিরীটহারকেযুররত্বকুগুলশোভিতং। দেবতাগুরুমন্ত্রাণাং
ভাবয়েদৈক্যমাত্মনা। গদাদি শশু চক্রাজ্ঞ ধরং ভবারিং যো

জনত্বর অক্টান্ডাদি কবিয়া মুলোক্ত স্থাস সকল করিবে। এই প্রকাব বিধিমত স্থাসের অঞ্চান কবিয়া লাখক সাক্ষাৎ নারায়ণ হন। জ্বাদি রোগ সকল বিনষ্ট হয়। এইরূপ স্থাসকারীকে ভূত, প্রেড, পিশাচ ব্রহ্ম রাক্ষ্য ক্যাও গণ ও ডাকিনীপ্রভৃতি দর্শন করিতে ও সমর্থ হয়ন। ইহা হইতে প্রিক্ষারক ও পুণাক্ষনক আর নাই। ইতি বিতীয় পটল সমাধা।

ধানার্থ। মনোহর অবোধানগরে রত্তমণ্ডপত্ত করবৃক্ষের খুলে রত্তানিত্বিত বিংহানন, ভন্মধাত্ত নানারত্বে স্থানোভিত অইবলগরে প্রকৃতি নীভার সহিত স্টেডিডি প্রলয়কারী তেলোমর প্রভু জীরাম বিরাক্ষ করিতে। ছেন। ইইন্ডে লেব, দানব, স্নীক্ত রোগীক্ত স্কৃত্বে আরাধিতেছেন। ইনি

খায়ে খোকনাথোতি ইতি জাতিঃ। ইতি ধাছা কপেছান্তং ষট্সহত্রং দিনে দিনে। বাচঃ জ্রিয়ঃ পতিভূছা কবির্ভবিতি-বৎসরাং। ঐহিকানবিলান্ ভোগান্ ভূক্ত্বা চাত্তে পরং ক্রিছে।

মত্বা (ধ্যায়েৎ) সিংহাদনে তশ্মিন বীরাদনদমাজিতং।
সম্যুজ্ঞানময়ীং মুদ্রাং দধানং দক্ষিণে করে। তেজঃপ্রকাশনং
বামজামুর্দ্ধনি চাপকং। জানকীবল্লভং দেবমিন্দ্রনীলমণিপ্রভং। ব্যাখ্যাননিরতং দেবং দ্বিভুক্তং রঘুনন্দনং। বলিষ্ঠবামদেবাদিমুনিভিঃ পরিদেবিতং। বামভাগে সমাদীনাং
সীতাংকাঞ্চনদমিভাং। ভজতাং কামদাং নিতাং রজেংধপলকরামুদ্ধাং। লক্ষ্মণং পশ্চিমে ভাগে ধৃতছ্তেৎসচামরং।

ভূমচভূইরে শম্প, চক্র, গদ। ও গল ধাবণ করিয়াছেন অবং মুকুট হার কেযুর ও বন্ধ নির্মিত কুগুলমাভূজিতে অভিশয় শোভিত হইয়াছেন।

আ্যার সহিত দেবতা গুরু ও মত্তের ঐক্য চিস্তা করিবে। শ্রুভিতে কথিত আছে, যে যে বাজি শহা চক্র গদা পদা ধাবী সংসাবের অবি অগদীশকে ধানে করে সে সুক্তিপ্রাপ্ত হয়। অত এব পূক্ষোক্ত ধ্যান করত প্রতিদিন জয় হাসীর অপ করিবে তবেই সবস্থতী ও লক্ষীর অধীখন হইনা বংসরমধ্যে প্রধান করিত্ব গাত করিয়া সমস্ত ঐতিহ স্থতোগ করিবে এবং অত্তেতে পরমেশ্বরে সৃত্তে হর্থবে।

ধানাম্বর কণিত চইতেছে। রঘুনন্দন, প্রসিদ্ধ বজু নিশ্মিত সিংহাসনে বারামনান্দ্রারে উপবিষ্ট, দক্ষিণতে স্থাক জ্ঞাননরী মুদ্রাধ্যের করিবাছেন, বানজাম্বর উপরিভাগে শরামন স্থাপিত করিয়াছেন, ভেজোন্মন, জ্ঞানকী-প্রিম্বতম, ইজ্ঞাল সমবর্ণ, সর্বাদ্যা বার্থান নির্ভ এবং হিত্র । ধশিষ্ঠ বাম-দেব অভৃতি মুনিগণ কর্ত্ব সেবিভ। ইইার বামভাগে স্থাবর্ণ সেবকগণের মনোভীই প্রদা সাহাদেবী করপক্ষকে রক্তাভ্রশারণ করত বিরাজ করিভেছেন এবং পশ্চিমভাগে পশ্মণ চামর ও ছ্রা ধারণ করত দ্ওান্মান, পার্থদেশে ভর্জ ও শক্রম্ম ভালবৃত্ব স্কালন ক্ষিডেছেন্। যে বাজি রঘুন্সন্মক্ষে এইর্স খ্যান

পার্বে ভরতশত্ত্ব হো তালবৃত্তকরাবৃত্তো। এবং ব্যাদ্বা মর্পে-गातुः खीनगरक्ताा मर्शकनः। क्रमजार मंत्रिगरमनः शान-द्यारणन शैमजार। পুরশ্চরণকুত্যেন বিনাপি ফলদো ससूह। वकामार्ग महाँठ छिं कर्निकांग्राः नित्रक्षनः। मर्द्यः म वर्गान সকলং সচিচদানন্দবিগ্রাহং। চতুম্পাদ ব্রহ্মণো রূপং রাম-শ্যান্তত কর্মণঃ। দেবস্তে যোগিনো নিত্যং সোহহং ভাবেন ভদ্মিরঃ। তথাচ শ্রুতিঃ তথৈতে শ্লোকাভবন্তি। অকারাক্সর-শংস্তঃ সৌমিত্রিবিশ্বদ্ধন:। উকারাকর্মস্কৃতঃ শত্রুত্ব প্রজ্ঞাত্মকস্ত্র ত্তেজপাত্তকঃ । ভরতো মকারাকরসম্ভবঃ ৷ অর্দ্ধনাতাত্মকো রামো ত্রন্ধানলৈক বিগ্রহঃ। প্রীরাম সামিধ্য-উৎপত্তিব্যিতিসং হার্বারিণী বশাঙ্ভগদানন্দকারিণী। সর্বদেছিনাং। সা সীতা ভগবতী জ্ঞেয়া মূলপ্রকৃতিসজ্ঞিতা। প্রবাহ প্রকৃতিরিতি বদন্তি ত্রহ্মবাদিনঃ। ওঁ ইত্যেত্রদ-ক্ষর মিদং সর্বাৎ তদ্যোপব্যাখ্যানং ভূতং ভব্যং ভবিষ্যদিতি সর্বমোস্কার এব যচ্চান্সত্রিকালাভীতং তদপ্যোক্ষার এব

করিয়া তদীয় মত্রপ্কবে সে জ্ঞান ও প্রীকে লাভ কবিয়া থাকে। বাঁহারা এইরপ্রান করত অপকরেন তাহাঁদিগেব বিনা প্রশুরণে ও ময় ননোতীট-প্রদুহইরা থাকে বিনাগাণ সোহং ইত্যাকার জ্ঞানে মহাচক্রত কর্ণিবাতে নিবশ্বন সচিদানক্রমর চতুপাদে পরম ব্রদ্ধ অঙু ত্রাবাকাবী প্রভু প্রীরামচন্দ্রের
জ্ঞানা কবেন। শুভি বলিয়াছেন। অকার হইতে লক্ষণ, উকার হইতে তেলো
ময় শত্রু এবং মকার হইতে প্রজায়্মক ভরত সমৃত্যুত হইয়াছেন, আনক্রময়
পূর্ব ব্রদ্ধামা অর্থমাত্রা (ব্রহ্মন) রূপী। মৃগ প্রকৃতি ভগবতী সীতা প্রীরামের
মহবোগে অগতের স্প্রতিতি প্রশার করিতেছেন। ব্রদ্ধাদীগণ ও কার হইত্তেই জগতের স্প্রতি বলেন ও কার ই পরমব্রদ্ধ ভ্রতবিষ্যাৎ বর্তমান এই ক্রিয়া
গাতীত পদার্থিও ও কারকেইজানিবে এবং স্থাক্র ইনিবিলিভ বৃধন, বার্ক্ত

হেডদ্রকা অনুমাতা ত্রকা সোহ্যমাতা চতু भ्याच्यार्गत्र ब्रह्माता विष्ट्र थख्दः मश्राष्ट्र धारकानविष् শতিমুধঃ। স্থলভূগ্ বৈশ্বানবঃ 'প্রথমঃ পাদঃ।' স্বপ্ন একোনবিংশতিমুখঃ স্থানোহন্তঃ প্রক্রঃ म श्राङ প্রবিবিক্তভুটে ক্রছসো খিতীয়ঃ পানঃ। যত্র স্বপ্তোন কঞ্দন কামৎ কাময়তে নককনম্বর্থ পগতি তৎ গুমুগুৎ হুমুগু-স্থান একত্রীভূতঃ প্রস্তানখন এবানন্দময়ো হ্যানন্দভূক চেতো-মুখঃ প্রজ্ঞ তু शैवঃ পাদঃ । এষ দর্শেশর এষ দর্বজ্ঞঃ এষে। হ-স্তর্যাম্যের যোগিঃ সর্ববিদ্য ভবাত্যায়ো হি ভূতানাং নাস্তঃ প্রস্তরং নোভ্যপ্রজানপ্রজাং নাগ্রজাং ন গ্রজ্ঞানঘনং ন ঘনপ্রজাং আদৃ केंब गुनहार्ग र श्राह्मभलकन्मिक छात्रवालातम्मारमका वा-अछारा-मातः धनरकानम्ययदेवजः ठङ्गः मगरः । म जाजा विख्याः मानाब्द्रता विन्ता ७९ कोश्हीनः आज्ञवस्ति हे । भवा হৈতরহিতঃ সানন্দরূপঃ সর্বাধিষ্ঠানঃ সন্মাত্রো নিরস্তাবিদ্যা-ज्यास्मारहारहरमरविक मञ्चारवार्वहिमरकार ७९ मर यर পরং ব্রহ্ম রান্নদ্রদিদায়কঃ সোহহমোৎ তদ্রামভদ্রঃ পরৎ Cकारिकीत:मारुहः देखाञ्चानमानात्र मनमा खचारेनकी कूर्याए। সদা রামোহ্ছামত্যেত উত্তঃ প্রবদ্যি যে। ন তে সংসারি-ণো অন্নৎ রাম এব ন সংশয়ঃ। ইত্যুপনিষ্ধ য এবং বেদ সমু-

আবৃথিক জানময় এবং সুলপদার্থেব দাহকারী বৈশানর ও ওঁকাংকে জানিবেন। ইনিই অন্তর্থানার সকলের উপার, সকল অবগত চইতেছেন সকলের উৎপত্তিস্থানা, সকলের সুক্তি পাল, এবং অচিপ্তা লাল্যা অবাবহার্যা অপ্রায়, প্রবাপদেশ্যা, অভিনক্তানের বিবয়ীভূত, ভেল্জানের নিবারক ওঅবৈদ্ধা আমিই বেই পারস প্রমা আমি জানিই বেই পারস প্রমা আমি ক্রিয়ে পার্যা ক্রিয়ের সহিত্য ক্রিয়ের প্রায়ের বিশ্বিত প্রায়ের বিশ্বের সেইং

জো তবভীতি যাজ্যবন্ধ্য: । এতদেব পরং ধ্যানমেত দেব পর্ তপঃ। এতদেব পরং রামপূজনং তবকুন্তনং। অখ-মেধসহস্রাণি বাজপেয়শতানি চ। একস্য ধ্যানযোগস্য কলাং নাহ জি যোড়শীং। ইতি ধ্যানং।

ততঃ সামান্যার্ল্যাদকেন চত্রন্সং ষট্কোণং মণ্ডলং
কৃষা শন্ত্যন্ত্রাবৃত্ত পুল্পাক্তিরায়েয়নৈথতবায়বৈগশানেষ্ হ্লয়শিরঃশিথাকবচানি মধ্যে নেত্রং পূর্বাদিদিক্ষ্ চান্ত্রং সংপৃষ্ঠ আধারণ ফুলমন্ত্রেণ প্রফাল্য মং বহিং
মণ্ডলায় দশকলাজনে শ্রীরামার্যপাত্রাসনায় নমং ইত্যাধারৎ
প্রতিষ্ঠাপ্য পূর্বাদ্যকদিক্ষ্ উপর্যধন্ত অয়ের্দ্রণ কলাঃ পূজয়েহ
তথাহি যং পূত্রায়ে । রং নীলরক্তায়ে । লং কপিলায়ে । বং
বিক্ষুলিসিন্যে । শং ছালিজৈ । ষণ পত্রিকায়ে । সং হব্যবাহিক্যে । লং ঝৌলো । কং সংহারিল্যে । এবং সর্বত্রাধারো
পরি এতাঃ কলাং সম্পৃদ্য ততঃ শন্তং মন্ত্রেণ সংশোধ্য অং
সূর্যামগুলায় দ্বাদশকলাজনে শ্রামার্যপাত্যায় নমঃ ইতি পাত্রং

ইত্যাকাৰ শন্তে প্ৰভেদ জ্ঞান কৰে ভাহার সংশারভোগ হয়না নিশ্চরট বাম্মর হব। এই বাজ্যাবজ্যোপনিষং অবগত হটলে সুক্তি লাভ হয় এই মাত্রই প্ৰস্থানে, প্ৰমত্ত্ৰ,রামার্চনের প্রধান সাধন ও সংসাব নাশক এইরূপ একবার ধ্যানে যে ফলহয় ভাহার যোড়েশ ভালৈক ভাগ ও অখনেধ সহস্থে অথবা বাজ্যেয় সহস্থে হয়না।

অনন্তর সামান্তাখ্যপাত্রত অস্বারা বামভাগে চতুছোৰ মণ্ডল করত তথ্যবো বটকোণমণ্ডল করিয়া শহ্ম মৃদ্যারারা আছোদন করিবে। অনন্তর গরুপুতাত্রহণকবিয়া অভিকোশে এতেগরপুতা ওঁ হৃদ্যার নমঃ, এবং নৈবত কোনে ওঁ শিরসে নমঃ। বায়ু কোণে ওঁ শিখারৈ নমঃ, ঈশান কোণে ওঁ ক্রচার নমঃ। মধ্যে ওঁ নেত্রাভ্যাং নমঃ, পূর্বাদিকে ওঁ অল্লার নমঃ। এই প্রসার বড়ল পূলনান্তে মৃল মন্তবারা অকানিত, অর্থা পাত্রকে মং বহিষ্ঠালন্তে

নদাধারে নিকিপা। কংজং তপিতি । খং বং তাপিতি । গং কং সন্ধিলৈ তিং নং কামিলৈ । চং ধং শোধিনা । ছং দং বরে । গায়ৈ । কং খং আকর্ষিণা । ঝং তং বৈফালো । এং বং বিফুবিদ্যায়ৈ । তং তং জোহসায়ে । ১ং তং হিরণ্যায়ে ! এতাঃ সম্পূজ্য মাত্কাং প্রাতিলোম্যেন উচ্চরন্ শুদোদকেন তং শহং সম্পূর্যা তিং সোমমগুলায় ষোজ্শকলাত্মনে শ্রীরামাঘাপাত্রাম্ভায় নমঃ ইতি সংপূজ্য তাত্রব চক্রমসঃ বোড্শ কলাঃ পুজ্যেং।

ज्थाहि। जः अमृजिति । जाः जाननारे । हेर जूरेके । केर भूरिके । जेर श्रीरेका । जेर बरेका । थाः नज्यारे । शाः श्रीरे केर कर व्यारे । केर श्रीरेका । जा क्यारे । जाः अमारे । जा क्यारे । जेर श्रीरेका । या वामारे । जाः अमारे । मर्ने क जिले । जो निमी क्यारे । म्यारे । क्यारे व्यारे । क्यारे । क्यार

मन्कलाश्चान श्रीवाम। या भाजामन। श्र नमः श्रीव विश्वा करेना करे अध्यापास श्रामन किवा छा भाग प्रश्नाम करिया करे हिएना, स्टिक्ष्म अस्ता करे कर्म भूष्ण लहेवा खाल शक्स भूष्ण य प्रमारित है कार्षि कर मार्गादिया नमः वेश स्मार्गास प्रमारित है कार्षि कर मार्गादिया नमः वेश स्मार्गास प्रमारित करिया म्यार्ग करिया मार्गास कर्म स्मार्गास हो मार्ग करिया करिया मार्ग करिया मार्ग करिया मार्ग करिया करिया करिया करिया करिया करिया मार्ग करिया मार्ग करिया क

ব চ। সূর্ব্যস্থ স্থাসংখ্যাতা: কলাঃ প্রোক্তান্ত সূরিভিঃ।

অমৃতা মানদী তৃষ্টি: পৃষ্টি: প্রতির্তিভ্রিঃ। জীঃ স্থা

চ তথা ধাত্রী ছায়া জোংসা সরস্বতী। পূরণী চ তথা বামা

অমা চন্দ্রস্য বৈ কলাঃ। ইতি বশিষ্ঠসংহিতায়াং কলাসং
অমাং:।

ততন্ত্রিন্শৠজলেগকে চ মন্ত্র্করন্। তীর্থাবান হয়েচ্ছু দং গদ্ধালৈরেচ্চ হৈত্ত হা । শাসং পাণিতলং কৈহা জপেমন্ত্রং বড়াদরাও। চিন্নাং চিন্তু য়েনীর্থমানীয়াজু শা-মুদ্রধা। ব্রহ্মাণ্ডোদরতীর্থেডো। দেলু মুদ্রাং প্রদর্শ্য চ শংঅ-মুদ্রাং চক্রমুদ্রাং গরুড়াখ্যাঞ্চ দর্শরন্। পর্মীকৃত্য যজেন পাবনং তদ্বিচিন্ত য়েং। করাবেক্ত্র সংযোভ্যাবারাত্রিক-মিধ প্রিয়ে। পর্মীকরণং নাম মুদ্রেং দর্শকামদা। দেবস্য মুদ্ধি চাদিঞ্জে পুজাদ্রে স্বান্ত্রানঃ। অভ্যক্ষাং প্রোক্ষণঞ্

মাধ্বায় ব্যক্তিক লাছানে জানাম গ্ৰেণা এন্দু গ্ৰহ্ম নম্ভ এই বলিয়া শাটনাকৰক জিল্পৰি চ্ছেৰ ব্যক্তিৰ কলাৰ ক্ষানা ক্ষানা কলাৰে হ'বলৈ যথা এটো গাম্পা কৰাৰ জ্যানা কৰিবলৈ কৰিবলৈ অনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ অনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ অনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ আনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ কৰিবলৈ আনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ আনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ আনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ কৰিবলৈ আনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ আনুষ্ঠাৰ কৰিবলৈ কৰি

অ চঃগ্ৰ শক্ষ্য লগে ওঁ গ্লেষ্ট্ৰনে হৈছ গোলাবলি নবলাও। নামানে
নিজুকাবেরি অলোই খনে স্বিনিং ক্ষ এইন আই তালাবইন করিয়া পদ্ধ পুলালি
লইয়া এতে গদ্ধপুলো ওঁ জলায় নমঃ এই বানহা আহন। কার্যা শক্ষের
উপরে হস্ত রাপিয়া লশ বাব ম্নান্ত অপ করিবে। অনস্তব অক্ষ মুদ্রাদ্বারা
বক্ষাণ্ডের ভীপ ইইতে ভীপাক্ষণ করিয়া ধেরুম্দ্রা, শক্ষ্য মৃদ্রা, চক্রমুদ্রা এবং
গদ্ধপুদ্রা লশন করাইয়া প্রমীক্রণ মৃদ্রাতে প্রমীক্ষণ করিয়া শক্ষ্য পাত্রেছ অলকে অভিপ্রিত ভিয়া ক্ষিবে। সংপ্রতি প্রমীক্ষণ মৃদ্রা ভ্রিত হ ইইটেছে। আর্তি ক্রার স্বাহ ক্ষ্তিব্রেক স্ব্রভাবে অধ্যামুণ ক্রিয়া ৰীক্ষণং তাড়নং তথা। অৰ্চ নকৈৰ সৰ্বেষাং পাবনছংপ্ৰক-মান্ত্ৰে। ইতি শৰপ্ৰতিষ্ঠা।

পাত্রাণি নাম ছেমাদিনির্মিতানি বিশেষতঃ। প্রশতরানি বিচিত্রাণি ভবান্ত ছহ পাণিষু। মর্ঘাপাদ্যপ্রদানার্থং মধ্
পর্কার্থমপরিছে। তথৈবাচমনার্থক নাদেং পাত্রচতৃষ্টরং।
আত্মনঃ পুরতঃ শহুং বামতঃ সাধরেন্ততঃ। অর্ঘাণাত্রে
পাদ্যাদিপাত্রেয় সংপ্র্যা সলিলং শুনং। তত্রাম্বাপাত্রে
দাতবাং গন্ধপুল্পজলাক্ষতং। কুশাগ্রতিলদূর্বান্ত সর্মপান্তবাং গন্ধপান্তবাং গন্ধপুল্পজলাক্ষতং। কুশাগ্রতিলদূর্বান্ত সর্মপান্তবাং আবৃত্তবাং কার্মান্তবাং দ্বাপত্রং মনোন্তবাং আবৃত্তবাং কার্মান্তবাং মধ্পান্তবাং শন্তমাচমনীয়কং। দল্লা চ মধ্দপ্রিতাং মধ্পান্তবালং শন্তমাচমনীয়কং। দল্লান্তবালি পাত্রে পাদ্যার্ঘাদীনি কল্লয়েং। সর্বোপ্রান্তবাল্যান্তবাল ভাবনৈ হি নির্মান্তবালকেনৈর পূর্ণতেত্যাহ নারদ্রা ইতি পাত্রাসাদনং।

পরস্পাধ মিলিত কবার স্থায় প্রমী করণমূদা এই মুদ্রা স্বাভীও গাদান কৰে।

অতঃপর অধা পাত্রের জল হাবা দেবতাটেত ও প্রার স্বাংশিদকলে

এবং আল্ল শ্বীবে অভ্যাক্ষণ কবত উপরবেশাদি ধ্বনাকলে বীক্ষণ
ভাত্তন ও অর্জন করিলে সমস্ত পাবিজ কবিবে। ইতি শ্রাহাশিকা

পারাসাদন কথিত হইতেতে। পুরার্থ খণাদিখার নির্দিত পাত্রট বিশেষ প্রশক্ত, অঘ্য, পাদ্য আচমনীয় ও মধুপার্ক র অন্ত পাত্রচ হুইর সাথিবে ভ্রমধ্যে অহ্যার্থ শঙ্কা পাত্র প্রশক্ত জানিবে নিজেব সন্থান বানভাগে অব্যাহ-দির পাত্র সকল রাবিয়া জলধারা পূর্ব করিয়া অহ্যাপাত্রে দ্বা প্রভা হতুগ ভিল কুল ও সর্বপ বিভল্প করিবে। পাদ্যপাত্রেতে দ্বা ও প্রাপুত্র দিয়া সাধিবে প্রশং আচমনীয়পাত্রে আতীফল, লবক্ষ ও ক্ষোত (কলবিশেষ) মধুপক্ষপিত্র দ্বি, মুক্ত ও মধুবিস্তুক্ত করিবে। বহুপাত্রের সংগ্রেক অন্ত

পাত্রাণি চৈবমাসাণ্য তত্যাহস্তহাগমারতে । তথা হি—
ত্রহ্মকন্দসমূদ্র জাননালং হলোজনং। ঐথব্যাইনলং
পদ্মং পরং বৈরাগ্যকর্ণিকং। তত্মিন্ পীঠে চিদাত্মানং
রাঘবং ক্ষছর পিণং। ধ্যাত্ম। যদ্মেচন্দনালৈ দ্র্মানিসৈর্পদীপকৈঃ। ভোজনাবসরে কিঞ্ছিং জপং কৃত্রা নিবেদয়েং।
গুহাতিগুহু গোপ্তা বং গৃহাণাশ্মংকৃতং জপং। সিদ্ধিভবতু মে দেব ত্বপ্রসাদাত্মি স্থিতা। ইতি।

সাধিষ্ঠানগতে কুতে ত্রিকোণে বহ্নিমুজ্বলে । চি-জনপং প্রণবেনাথ ত্রাত্মানং স্বয়ং হুনে । পূজাহোমা-দিকং দেব কুতং যত্ত্বপুত্রহা । তেন প্রীতো ভব দ্বং ভো শুদ্ধং মে মানসং কুরু। নমো রামায় শান্তায় সদ্গুণায়াদি-হেতবে। নিবেদয়ামি চাত্মানং ত্বং গতিঃ পরমেশ্বর। শ্বাস-

হট্লে এক পাত্র দাবাই পরস্পর কার্য্য চালাইবে। সকল উপকবণের অভাগ হইলে নিশ্বল জলেই সমস্ত বস্তব ভাগনা কবিয়া তদুবাবা অর্চনা কথিবে।

দ্রবাদির সংগ্রু করিয়া মানসিক অর্চনার অস্টান করিবে। ব্রহ্মকণ সূল হইতে উথিত যে জ্ঞানকপ মৃণাল স্তুপবি অংশাভমান, বৈরাণাকপ কর্নিকাযুক্ত এবং ঐপগ্যাত্মক অষ্টদলপত্মতে নির্মালকরী জ্ঞাননয় শ্রীবামচন্ত্রুকে ধ্যান ক্বিয়া মন:ক্ষিত গন্ধপূষ্প গুপ দীপ নৈবেদ্য প্রাণ্ডতি উপচাব্যাবা অর্চনা ক্বিয়া ম্থাশক্তি জ্পাত্তে গুড়াতিশ্রুক গোপ্তা ত্বং ইত্যাদি মুগোক্তমন্ত্রপাঠ করত জ্পসমর্পণ ক্রিবে।

অনস্তব মানসিক হোম প্রণালী প্রদর্শিত হইতেছে। বিকোণ সাধিচান(লিজমূল)
স্থিত কুণ্ডে চিন্মান অগ্রিজালিয়া ভালতে আত্মার হোম করিবে। হে প্রডে। ।
আমি এই পুলাহোমাদি বাহা কিছু করিলাম, ভূমি ইহাতে অনুগ্রহ প্রকাশ
করিয়া ভৃতিলাভ করিয়া আমার চিন্তকে নিম্মাণ কর। হে প্রডে। ভূমি জগভের আদিকারণ নান্ত, সদ্গুণশালী ও একমান গতি আমি প্রণাম করন্ধ
ভোমাতে জারসমর্পণ করিলাম এই বলিয়া সাদ পথে গৃহীত তেল প্রদান

আর্গে গতং তেজ ইত্যক্তবাত্মানমর্পয়েৎ। তন্ময়: শচ্চিদানন্দা ভুৱা তিঠেৎ কিয়ৎ কণং। ইত্যন্তর্যাগঃ।

মানদৈঃ কুন্থনৈরর্জ। সাত্রিকী সা শুভা মতা। অনিমনিল্যা পরা শুদ্ধা মোক্ষণা সিদ্ধিদা শুভা। তত্মাৎ সর্বপ্রথন্ত্রেন মানসং যজনং স্মৃতং। মাদে চৈবং প্রকর্ত্তব্যং পশ্চাদ্বৈতঃ শুবিস্তবিঃ। ও আত্মতত্ত্বায় নমঃ। ও বিদ্যাতত্ত্বায় নমঃ। ও জ্ঞারাম ভত্ত্বায় নমঃ ইত্যুক্তার্য্যাচম্য বহির্যাগৎ কুর্যাৎ।

আদে লিখেদ্যন্ত্রাজং রঘুনন্দনবিগ্রহং। কামক্রোধাদিদোনোত্থ—দীর্ঘত্তথনিযন্ত্রণাৎ। যন্ত্রমিত্যাভ্রেতশ্মিন্ রামঃ
প্রীণাতি প্রিতঃ। যন্ত্রং মন্ত্রময়ং প্রোক্তং মন্ত্রাল্পা দেবতেতি
চ। দেহাল্পনোর্যধাভেদো মন্ত্রদেবতয়োত্তথা। তন্মাৎ
পীঠে যন্ত্ররাজং লিখিছা তক্ত পূজ্যেৎ। বিনা যন্ত্রেণ চেৎ
পূজা দেবতান প্রাণিতি। জীরামঃ পূজিতো যন্ত্রে দীত্য়া

কবিবে।অনস্কৰ আন্মাকে সভিদানক বিশ্বহ তন্ময় চিছা কবিয়া কিঞ্ছিৎ কাল অবস্থিতি করিবে।

মানসকলিত পূলাদিখাবাট সাথিকী পূজা হট্য। থাকে, এই রূপ অর্চনাত্তে সাধকের মনস্থামনা পূর্ণ ও সর্বাথা নঙ্গল হয়, আভিয় পূর্বক ইহার অনুষ্ঠান কবিবে, মানসিকপূজা সমাপন হইলে জ্ব্যাদি দারা অর্চনা কর্ত্বা। অর্থাত ওঁ আয়া তথায় খাহ। ইত্যাদি - স্ক্রমে তিন্বাব জ্লপান করিয়া আহমন কবত বহু পূজাবস্ত করিবে।

ৰাষ্পুলাতে প্ৰথমত রখুনাপের মূর্ত্তিধরণ তদীয় যন্তরাল লিথিয়া
লটবে। কান কোধ লোভ মোহ প্রভৃতি দোবেতে উৎপন্ন যন্ত্রাল লিথিয়া
নিবাবক বলিয়া ইহাকে যন্ত্র বলা হইনাছে, রামচন্দ্র যন্ত্রেতে পুলিত
হইলে নিশ্চর ক্রীতিলাভ করেন। বন্ধ মন্ত্র শ্বন্ধ, এবং মন্ত্রশ্বন্ধ দেবতা,
দেহ আয়ার অভেদেব ভার মন্ত্র দেবতার অভেদ জানিবে। পীঠোপরি বন্ত্রজার লিথিয়া পুলা করিবে বন্ধ বাতিরেকে পূকা করিলে জীরামচন্তর প্রস্ত্র

সহ মক্তিতঃ। যদিষ্টৎ তৎ করোতের নাজ কার্য্য বিষ্ণারণা। উচাতে কামদং নুণাং মোক্ষদং ধারণাদলি। ত্রিরেখাপুট-মালিপ্য মধ্যে তার্ত্তরং লিখেৎ 1 তথাধ্যে বীজমালিখা जनभः नः धार्मानित्थे दिजीयास्य जत्मार्द्धं मर्छ। स्वर्भान धकर ज्या । कूत्रचग्रक जर्लार्य लिथबीकास्तरत त्रभार । তৎ সর্বং প্রণনভাঞে বেউয়েচছু জবু জিমান্। দীর্ভাঞি ষড়ব্রেষ্ লিথেদীজৎ হৃনাদি'ভঃ। কোণপার্বে রমামায়ে তদবেহ্নসমালিখেৎ। ক্রোধং কোণাগ্রান্তরেমু লিখিতা চাভিতে। গিবং । রত্ত্রয়ং চাষ্টপত্তং সরোজং বিলিখেৎ স্বরান্। কেশরেম্কীপত্তেষু বর্গাইকমথালিখেৎ। তেষু मालामत्नार्त्तर्गान विलिय्यक्टिम्थागा । ज्या शकाकता-হন না, নথ্রে:৬ সাভার মাণ্ড পুলিভ শ্রীগামচন্দ্র নিশ্চয়ত মনোবধ পূর্ণ करवा । यञ्जभादन कविटन मूर्कि । कामनामिकि छे छवरे इस । यन श्रीमार्निड চইতে চিন্টি বেপাধারা একটি নিকোণ কোনা করিনা চাত্রি উপরি অপর একটি তেকোণ বিভিয়া ষ্ট্রণণ কেত্র হুইলে তাহার মধ্যে ও বাং ওঁ এট বাছত্ত্ব লিখিবে। পৰে এট লিখিত মধ্বে নিম্নে সাধ্য অর্থাং পুজাर सम्भ मञ्ज कविरत विशेषात (एवडाव नाम ( श्रीवामः ) वश्रीकवनाम कुल बक्तानित नाम विशेषातिक लगा कतियां (क्रथकाखः) ध्वः डेविथिक মাত্ত্ব উর্দ্ধ ভাগে বজীবিভক্তি হারা সাধিত সাধকেব নাম ভোরালাসর দেবৰ্মণঃ) তুই পাৰ্যে কুক কুক এট বৰ্ণ চস্টুৰ লিখিয়া নিম্ন লিখিঙ ৰীৰের উর্দ্ধানে শ্রীং এই বীল লিখিবে। এট লিপিত সমস্তবর্ণ পুর্বোক্ত खँकात वृत्रति वाता (बष्टित कविरत । आव उति वित विहे तामा कार्य ७ (कारणटा बार क्षमतीय नगः, बीर निवरम चाहा, सर निवारेस वहारे, देवर कव-हात्र हूँ, त्वीर त्मकाख्यार त्वीवर्, तः बद्धात्र करें ् वहे वहत्रवान यक्ष निविद्याः কোণ গণ্ডসকলে রয়া বীল ( জীং ) সারা বীল ব্রাং কোণাগ্র স্থানে ক্ষেণীক (क्रीर) ब टकाव बीच हर, चार्व द्यानावदत है जिब्दि शद छक क्षे कार्य. ক্ষেত্ৰের উপৰিভাবে বুভবৰ অভিন্ন কৰিয়া কেশকের সহিত কাইবন পঞ্

## वाभार्कके सिमा १

শোবং পুনরক্ষণ লিখেছ। তেমু নারায়ণান্তাশং লিখেছেৎ
কিশরে রমাং। তমহিদানদলং বিলিখেদানদাং।
তথাং নমা ভগবতে বাহুদেনায় ইতায়ং। আদিকান্তান্
কেশরেয়ু রুতাকারেণ সংলিখেছ। তমহিঃ মোড়শণলং
লিখেতে কেশরে প্রিয়ার বিলিখেছ । তমহিঃ মোড়শণলং
লিখেতে কেশরে প্রিয়ার বিলিখেছ নিংলু হাদশাকরং। তৎসন্ধিলির জাদীনাং মন্ত্রামন্ত্রী সমালিখেছ। ত্রী
সং ভং রং শৃং শৃং জ্ঞ লিখেছ সম্যক্ত ততো বহিঃ।
দাত্রিংশারং মহাপদ্মং নাদ্বিক্সন্মাযুতং। বিলিখেনান্ত্ররাজাণিন তেমুপ্রেমু যুক্তঃ। ধ্যামেদ্টবস্থনে কাদশক্ষাণ্ডে
তত্ত্ব বৈ। দাদশেনাংশ্চ ধাতারং ব্রট্কারঞ্জ ত্বহিঃ। ভূগৃহং
বক্ত্রশ্লাত্যং রেখাত্রয়ন্মন্থিতং। দ্বাবোপ্তঞ্জ রাশ্যাদি-

এবং প্রের উপরিভাগে অপর একটি বৃত্ত লিখিবে। অনম্বর লিখিক অইকে नात का बा है के हे जानि कारम शहें है है है कि कि विशा खत्रवर्ग शक्त, आहे शब माश्रा क्रमायाय क. इ. हे छ- श-य- इ. व ७ इ इहेराई विक्रक कर्का-द्रापि वर्ग ममञ्ज अवः अँ नत्मा अगवत् वयुनन्यनाय वत्कात्र विग्याय अभूद-প্রাণরব্দনায় অমিততেজ্বে বলায় রামায় বিফ্রে ননঃ এই মালাময়ের ৬টি ৬টি করিয়া সপ্তপত্তে লিবিয়া অবশিষ্ট পত্তে অবশিষ্ট মঞ্জের পঞ্চাক্ষর निबिद्य । अनुस्रुव भावत स्रेभित वृह्ता निविधा भूनर्सात अक्षेतन भग्न ध्वरः चाहे भक्तमारहा उँ नत्मा नावायगात कहे कहाकत करें। क विशादिकरह কবিবে। ইহার কেশরে আঁ এইবীজ লিখিবে অপর ঘাদশদল জাহত করিয়া ওঁ নমো ভগবতে বাস্থদেবার এই ছাদশাক্ষর একটিং করিয়া প্রতি পত্তে লিখিয়া কেশ্রন্থানে বুত্তাকারে অকারাদি ককারাস্ত বর্ণ দকল ৪টা ৪টা कविशा निश्चित व्यविनिष्टे शत्क व्यविनिष्टे मश्चाकत निश्चित ध्वर ध्वे बामनम-লের বৃহিষ্ঠারে যোড়শদল পদ্ম অভিত করিয়া ভাহাব কেশর সকলে খ্রীং, ব भवारता हर करे नमः अ नत्मा जनवरक वास्तावात्र अहे त्वाज्य वर्तत अकि धक्षि निविद्या भछ 'मकरनव मिस्यारन आवतरायक श्रमान् अञ्चि (बाइन रमेक्डोब मारमत माना माना वर्णत महिल सकान युक्त कविवा ( मर्शक्क्रमारतत

ভূষিতং ফণিসংযুতং। অনস্তো বাহ্যকিলৈর তক্ষঃ ককে ছিলপানে । মহাপদ্মন্তথা শহ্যঃ কুলিরোহুকৌ কুলাণি চ। অনস্তক্লিয়ো বিপ্রো বহ্নিবাদ্দাহতো। প্রত্যেকস্ত সহত্রেণ কণানাং সমলস্কৃত্রো। বাহ্যকিঃ শহ্যপাণিল্ট করিয়ো পীতবর্ণকো। প্রত্যেকস্ত ফণাঃ সপ্তণতসংখ্যাবিরাজিতো। তক্ষকদ্দ মহাপদ্মো বৈশ্যাবেতো মহা স্মৃতো। নীলবণো ফণাঃ পঞ্চশতমুক্তোভমাঙ্গকো। পল্লক্ষেটিকো শৃত্রো ফণাত্রিংশতকো সিতো। এবং মণ্ডলমালিখ্য তস্য দিক্ষু বিদিক্ষু চ। নারসিংহঞ্চ বারাহং লিখেন্সন্তব্যঃ তথা। ইদং সন্বাজ্যকং যন্ত্রং প্রাক্তক্ত্যিবিতং ।ইদং রহস্যৎ প্রম্নীশ্রেণাপি ভূগিছা। এবং বস্ত্রং সমাখ্যাতং ন দেয়ং প্রাকৃতে জনে। গুরুদার্শত-

काँ हे आहि ) (बाड्मबीस व्यर कि स्ट इर तृ नृ र मृ छ द वह अश्रवीक पृथेर पृथंक कर्त्य निविधा प्रत्यवित तृष्क व्यर का जिस्मार भव भग आहे क किया भव सर्था छ धर वीतर हे छ हिन बाद महर्थ अतिमर कार विक्टू क किया व्यर चय, स्वय, त्याम व्याग व्यत्मि, व्यत्मा, व्याग्ना, व्याग्ना,

অন্তব মণ্ডলেব বহিচাণে ভূপুরে চতুবলক্ষণে রেখা,এর অন্তি করিয় ভাষাব দিক্সকলে বন্ধ ও গুড়িদিকে শূলাক্ষতী নিধিয়া চতুদ্ধিকে দ্বার দাদশ রাশি এবং অনুভাগি অস্তনাগ লিখিবে। অন্ত ও কুলীর প্রায়ণ জাতীয়, ক্ষরবর্ণ এবং সহল ফলাযুক্ত। বাহ্যকি আর শংখ্য গীত্বর্ণ, ক্ষরিয় জাতী এবং সাতশভ ফলাতে বিভূষিত। ভূক্ক এবং মহাপন্ন বৈচ্চ জাতী। সীলবর্ণ, পাঁচশত ফলা ধারণ করিয়াছেন। পদ্ম আর ক্ষেঠিক শ্তা, ওল্ল বর্ধ এবং ক্রিশ্রেশতফ্ব। ধারী। সন্তর দিগবিদিগে ক্ষেণ্ট এই বীক্ষর

भारती खतूका रेनव मः निरंबर । अर्क्यूकाः कियाः प्रदेशः নিক্ষলাঃ স্থার্থাতো ধ্রুবং। রামপূর্বভাপনীয়টীকায়াৎ যন্ত্র-নায়কঃ। প্রপঞ্চিতো গথাস্মাভিদ্র উবাঃ সিদ্ধিকাঙ্কি ভিঃ। ইতি পূর্ববামতাপনীয়োপনিষত্তোহয় যন্ত্র গলোদ্ধার:।

অস্মিন পূজা মহাচক্তে রাবণস্যাধুনোচ্যতে। भौर्रः मरशृक्रदश्वनादनी म अन क्रम छेहारछ। खराम-ভাগে शिक्षकराजा नगः। এবং পরমঞ্জুভো নমং। পর্মেটিগুরুভ্যো নমঃ। পরাংপরগুকভ্যো প্রাপরগুরুভো। নমঃ। ইতাভার্চ্চা অদক্ষিণভাগে গং গণ-भक्रा नमश्च । मरमब्रहरेडा नमश्च छ॰ छुर्शरिय नमः। (कर (क ब्राभाव नमहा हेडाकाल। वांगग्रहमस्या डॅ বাস্ত্রপুরুষায় নমঃ। পীঠমধ্যে ও মতৃকায় নমঃ। ও কালাগ্রিক্দায় নমঃ। ওঁ কুর্মান নমঃ। ওঁ খাধার-मल्हारा नगर। देजुलियु लियु लियु लियु हार्का 🐔 त्रद्रधीलारा नमः। 'खँ कङ्गतुरक्करञ्जा' नमः। ५ तङ्गतिकारेश नमः। 'ওঁ রত্নসিংহাদনায় নমঃ। ইত্যভ্যর্ড্য আগ্রেয়াদিশীর্চ-भारतमु धर्माभी १ म्हजुरता यरज्ञ १ भोठेशांद्रम् श्रन्वानि व्यस-শি:খবে। ইত্যাহার যন্ত্র খনিগণ কড়ক কথিত ও অনুষ্ঠিত চইয়াছে ইছা: चिडिश्र माभायत्व निकेष भ्रष्टकाश्च अनव जेलामबाद्धभारत्व विविधित স্বীয় বৃদ্ধিদ্বাবা বিবেডিয়া স্বাহ্মিত কবিবে না, যে হেতুক গুক ক্ষয়প-विष्ठे कार्या मकन कदिला कृतनाम स्यामा । এই ग्रुपाम श्रीतानात्रा श्रमियान वार्षाट्ड वित्वच वित्रुष्ठ इडेट्ड । সংগতি এই মহাচক্তে रचुनारथव অর্চনার প্রণাণী প্রদর্শিত হটতেছে। প্রথমত শীঠ পূজার অর্থান কবিবে हैश भूटल है क्ष्मले लका हहेट युकालनाट व धर्मा म (मर्गा ठ कुंद्रेट मर्ग कर् बहेरन पदा भीठेशास्त्रक भूकी विकास व्यवस्थानित भूका कविना कर्विकारक छ व्यानम् कन्याय नमः अ नीवमद्याकश्य नमः, भाकाः छ। न्यः, ८६ मद्द्रद्धाः

প্রাণীং স্থাবি চ। কর্ণিকারাং তথানন্দকলনীলং স্রোক্সহং।
পত্রাণি কেলরাংলৈচব কর্ণিকাঞ্চ তথা বজেৎ। সূর্ব্যেশ্বমার্ণপ্র্বিমক্রিমীন্দু ত্রিমণ্ডলং। গুণক্রমঞ্চ সহালি তভল্চাস্মচতুষ্টয়ং! মায়াভত্বং কলাভত্বং বিদ্যাভত্বং পরং তথা।
একৈকোপরি সংপ্রজ্য ততঃ শক্তাইজেররঃ। বিমলোৎকর্ষিণী জ্ঞানা ক্রিয়া যোগা চ পঞ্চমী। প্রজ্যা সভ্যা।
তথেশাণাসূত্রহা নবমী পরা। পূর্বোদ্যক্তই পত্রেষু কর্ণি
কারাং যজেৎ ক্রমাৎ। চতুর্থ্যা নমনা মুক্তেঃ সৈঃ স্বৈরেব চ নামভিঃ। কর্ণিকারাং যজেৎ পশ্চাৎ পীঠমস্ত্রেণ
মন্ত্রবিৎ। প্রণবং পূর্বিমচ্চার্য্য নমঃ শব্দং ততো বদেং।
ভগবৎপদমাভাষ্য বিষ্ণবে ইতি বৈ বদেং। স্বিভ্রতাস্থানে চেতি বাহুদেবায় ইত্যাপ। স্বিাক্সমংযোগ যোগগীঠাজনে নম স্ততঃ। মূলমন্ত্রেণ চানেন দদ্যাৎ পূজাাপ্রলিং পুরঃ। ইতি সংপ্রভাতে পীঠে দেবমাবাহ্য

नमः, कर्निकारेय नमः मः निषम् अनाग्र तमकनाञ्चात नमः, यः स्वाम् अनाम् वानम कनामात् नमः, यः ठिल्यम् अनाग्र त्याप् कनाग्र त्यापः नमः, यः प्रवाम् नमः दः द्रवार नमः, यः व्याप्त नमः, यः वाञ्चात् नमः यः व्याप्त नमः, यः वाञ्चात् नमः यः वाञ्चात् नमः वाञ्चात् नमः वाञ्चात् नमः । याः माद्राव्याप्त नमः, कः कनाण्याप्त नमः । विम्नारेय नमः, अञ्चारेय वमः, व्याप्त विम्नारेय नमः । व्यव्यव्यव्याप्त नमः । विम्नारेय नमः, व्यव्यव्याप्त नमः । विम्नापित नमः । व्यव्यव्याप्त नमः । विम्नापित नमः । व्यव्यव्याप्त वमः विम्नापित नमः । विम्नापित नमः विम्नापित नमः । विम्नापित विम्नापित नमः । विम्नापित विम्नापित । विम्नापित विम्नारेय । विष्नारेय । विष्यय । विष्यय । विष्यय । विष्यय । व

भुजात्व । नामचारम विरम्बन्ध लक्षेत्रः भौठेनुक्रांन । ইতি পাঠপুৰা।

চৈতস্ববিগ্ৰহৎ রামং স্থিতং জ্বরণক্ষরে ৷ খাস-\* মার্গেণাগতৎ তৎ চিস্তয়েৎ কুহুমাগুলো । পাছকানুদ্রয়ানীয় मूर्की नश्राक्षरमित्रा। मूखाः अन्मर्यस्म होताह-नामिकाः । उथानाशसाः । आवादनी मनिशी साभनी कत्रनी-তথা। সমিরোধিনী মুদ্রাচ সংমুখীকরণী তথা। সকলী করণীচৈব মহামুদ্রা তথৈব চ। শহাচক্রগদাপমধেত-कष्ट्रभगोक्रफ़ांश। श्रीवरम वनमाना ह त्यानियुक्ता ह मर्भारार। এতাভিঃ সপ্তভিশ্চৈর দশভিশ্চ বিচক্ষণঃ। যোরামমর্চয়ে-मिछाः त्यानरम् म स्रामंतर्। त्यांवरमानि विरामस छछः পাৰ্থিতমাপুয়াৎ !

হস্তাভ্যামঞ্জণিৎ বদ্ধা নামিকাগুলপর্ব্যগেঃ। অসুষ্ঠেন নিঃক্ষিপেৎ দেয়ৎ মুদ্রা ছাবাহনী স্মৃতা। এবৈবাধো-

जनश्रव व नत्मा जगराज विकास नर्ताज्ञाश्राम वाश्वाम नर्ताश्र সংযোগ বোগপীঠাত্মনে নমঃ এট মল্লে পূলাঞ্চলি তাদান করিয়া মূল দেখ-ভাব আবাছনাদি কবিয়া পুঞ্জ। করিবে পাঁঠ পুঞ্জায় বিশেষ ন্যাস প্রশানীতে জ্ঞাৰা। ইতিপীঠ পূজা।

পাতৃকা মুদ্র। খারা জুদরস্থিত হৈ তক্তরুপী প্রীরামচন্ত্রকে খাসমার্নে পূলাঞ্চলিতে আনীয়া প্রতিমাতে বিশ্বত করিয়া আবাহনাদি সপ্তদশ মুদ্রা প্রদর্শন করা-हेटव । आवाहनामि मूळा वर्षा ।--आवाहनी, खाननी, निवधीकत्री, निव (दाधिती, मश्मूबीक्त्री, मक्तीक्त्री, मश्मूखा, मक्ष, ठळ, शना, भन्न, ८४म कब्दन, शक्फ, क्षेत्रन, वनमाना ७ व्यानिमुखा। व्यानाक बहे मर्वाम भूम। धार्मन कतारेवा जीतारमत शृंका करत तम धामुरक पृथिनाण कता-ইরা থাকে, শত্রুপক্ত পরাভূত করে এবং ভাষার মনোহভীট সিদ্ধি হয়।

মুখী মুদ্রা স্থাপনী শস্তে বুধৈঃ! উন্তাস্ত্রধার্মে মৃত্তীকৃতকরদ্বয়া। সমিধীকরণী নাম মুদ্রা দেবার্চ্চনে विदर्भ। अत्रृष्ठंगर्ज्जिनी देवव मूला मंत्रां मर्शनद्वाधिनी ! উত্তানমৃষ্টিযুগলা সংমুগীকরণী মতা। অকৈরেবাঙ্গবি-ন্সাদঃ দকলীকরণী ভবেৎ। অকোহসাঙ্গুর্গুদংলয়। বিস্তারিতকরদ্বধা। মহামুদ্রেয়মাথ্যাতা নূনোধিকসমা~ পনী। কনিষ্ঠানামিকা মধ্যাতথাঙ্গুষ্ঠান্তরেহগ্রভঃ। গো-পিতালু ঠম্লেন সমতা মুক্লীকৃত।। করছয়েন মুদ্রা স্যাৎ শহাথ্যেয়ং হুরাচ্চনে ৷ অফোন্সাভিমুখস্পশ্ব্যত্য-য়েন ছু বেইটেরে । অঙ্গুলীভিঃ প্রযম্ভেন মঙলীকরণং মুনে ৷ চক্রমৃদ্রেয়মাখ্যাতা গদাপদ্মৌ তভঃ অন্যোহ্যাভিমুধলিটাঙ্গুলী প্রোন্নতমধ্যমা। অঙ্গুর্ছবিতয়ং মধ্যে দছাপি পরিতঃ করে। মগুলীকরণং সম্যাসঙ্গী-

মুদ্রা লকণ অভিচিত ইইতেতে। এই চতা স্বস কৰিয়া অভুষ্ঠ দ্য अनामिका अञ्चलीयत्यत भृत्य गठ करात नाम आवाहनी मुना। এই মুদ্রতে অধোম্থী করিলে ভাপনী মুদ্র। হয় । এই হাত মুঠ্ট করিয়া অভুঠব্র-উন্ত করার নাম স্বিধীকবণা। অনুষ্ঠরণ মধ্যে রাণিয়া মৃষ্টি করাব নাম मः निर्दाधिनी । इट्रेफ मुट्टे क्द्रिमा छारारक छेखानी क्व ब्राधित मध्यूयी করণী মূলা হয়। দেবভাব হাদ্যাদি বড়কে হাদ্যাদি বড়কেব জ্ঞাসু করার নাম मक्नोक्द्रशी। अनुश्रंदात्रव नवन्नत्र मः स्यान कतिवा रुख्यस्य व विज्ञाव कवि: न महायुष्ठा हव । এই महायुष्ठा कतिदन कार्यात नानाधिकछा (मात्र विनष्ट इस । क्रिकेश व्यनामिका ও मधामा वाक् नीवाता मृष्टि करिया एक्किनीएक महत्व দ্বাবিদা ভাষার মূলে বৃদ্ধাল লীব অগ্রভাগ গোপিত কবিলে শৃথ্যা ह्य। ह्हेर्छ ने पहे भूषा हहेट शादा। व्यापाम्यविक नाम इट्डिद छेन्द्रि छेखामीक्छ पक्नि इष्ट दाविया अञ्ली नक्टन्द नदस्नद व्यक्तिमूत्र व्यर्ग कविरण ठक्क पृक्ष दय। व्यक्ती मकत नदम्बद मञ्जूतीस्कः মাধ্ তপোধন। পদ্মমা ভবেদেষা ধেনুমুন্তা ততঃ পরং।

অনামিকে কনিষ্ঠান্তাং তর্জনীভ্যাঞ্চ মধ্যমে। অভোধ্যাভিমুথলিটে ততঃ কোন্তন্তসঙ্গিতা। কনিটেইব্যাহ্যসংলগে

ইভিমুখে চ পরস্পারং। বামদ্য তর্জনীমধ্য দ্ব্যানামিকরোরপি। বামানামিকসংস্পৃতী—ভর্জনীমধ্যশোভিতা।
পর্যায়েণ ততাল প্রষ্ঠা কোন্তন্তলকণা। কনিষ্ঠান্তোহ্স্তসংলগ্না বিপরীতবিয়োজিতা। অধ্তাহ প্রাপিতাঙ্গ্রুতা
মুদ্রা গারুড়দংজ্ঞকা। তর্জন্যস্কুষ্ঠমধ্যমা মধ্যমানামিকাদ্ব্যা। কনিষ্ঠা নামিকা মধ্যা তর্জন্যকরন্ধ্রী। মুনে
শ্রীবংগমুদ্রেরং বনমালা ভবেত্তঃ। কনিষ্ঠা নামিকা
মধ্যা মৃষ্টিকতানতর্জনী। পরিভ্রান্তা শির্ত্যুটেডস্তর্জনীভ্যাং দিনৌকসঃ। মুদ্রা যোনিঃ স্মাধ্যাতা সংকোচিত্তকরন্ধী। ভঙ্জানোলা ভাগেনিঃ স্মাধ্যাতা সংকোচিত্তকরন্ধী। ভজ্পিনাল্যাভাগ্রিভানামিক্যুণ্যি-

সংলগ্ন কৰত মধানাজুলীকে উন্নত কৰাৰ নাম গদামুলা। অজুঠুদ্ব মধ্যে বাপিনা চতুদ্দিগে অপৰ অজ নীকৰ ধাৰা মঞ্জাকাৰ বৰিলে গদা মুদ্বা হয়। অনামিকাৰ্ম কনিঠাছনে গতিত এবং মধানাজুলীব্যু ভজ্জনীব্ৰের মতিত অগ আন্মিকাৰ্ম কনিঠাছনে গতিত এবং মধানাজুলীব্যু ভজ্জনীব্ৰের মতিত অগ অগ ভাগে সংলগ্ন কৰাৰ নাম ধ্যেমুদ্ধা। কনিঠা অজুলীঘ্ৰু প্ৰশানা ও অনানানাতে গুলু কৰত ৰামহন্তেৰ জ্লানিকাতে হজ্জনীম্বা রাখিনা পর্যায় ক্রমেছে অজুঠুদ্ব বিস্তাব কৰিলে কোন্তে মুদ্বা হয়। হলুভ্ৰু বিপৰীত প্রকাৰে বাগিয়া কনিঠা অজুলী গঙ্গুম্পৰ সংগ্রু হয়। হলুভ্ৰু মধ্যস্থানে মধ্যমা ও অনামিকাজুলীকে রাখিয়া কনিঠা ও অনামিকার মধ্যে ভজ্জনী বিশ্বত করিলে জীবংল স্থা হয়। কনিঠা অজুলীকে অনামিকার মধ্যে বাধিয়া হজ্জনী বিশ্বত করিলে জীবংল স্থা হয়। কনিঠা অজুলীকে অনামিকার মধ্যে বাধিয়া হজ্জদের মৃতি করিয়া উজ্ঞানীক্রত জ্জুলীধ্য দেব্তার মৃত্যু-কোণ্ডি অম্ব করাইলে বন্যালা সূলা হয়। তর্জ্জনীধ্য দেব্তার মৃত্যু-কোণ্ডি অম্ব করাইলে বন্যালা সূলা হয়। তর্জ্জনীব্যু স্থাইলে অমা-

का। मधाम्नचिडाके हो। त्महर भछाँकेत्न मूर्तन हैिछ। मृजानकनर।

শালতামে স্থাবরে চ নাবাহনবিসক্তন। শালতাম-শিলাদৌ হি নিভাং সমিহিতো হরিঃ। যুলমুচ্চার্য্য রামগায়-ঁ ত্রীঞ্চ সায়ুশায় সবাহনায় সপরিবারায় সণক্তিকায় পুষ্পাঞ্জলং कझमामि नम हेकि পুঞ्लाञ्जलिर পाम्यानिध्ननारनमू শৰ্কত দণ্যাৎ। আদে পুষ্পাঞ্জলিৎ দক্তা পাদাৰ্চনম্তঃ-পাদ্যমর্ঘ্যমাচমনং মধুপর্কং যথোচিতং। \_ অভ্য-কৈষিৰ্জনে কৃষা মহামানং সমাচরেৎ। অভিষেকাঙ্গ-বজ্ৰঞ্চ দত্তা নীরাজ্যেদ্ধরিং। স্নানং পুরুষসূত্তেন ভিদ্ধ-भाषानरकन **छ। क्षीतनशाकामधू** छिः थालन छ प्रथक् পৃথক্। নারিকেলোদকেনাপি তথাতাল ফলাস্না। গন্ধতিব্যশ্চ বহুভিন্তথা গম্বোদকেন চা ঐক্ষবেণোদকেনাপি কপূ-ব্লাদিহুগদ্ধিনা। কদলীপনসাত্যোত্মজলেনাপি হুগদ্ধিনা। **শতং महत्यमगुउ९ শক্ত্যা চাপ্যভিষেচয়ে**९। পূৰ্ব্য ভেনৈব সপুজেশণ রঘূত্তমং। সক্ষাগুরুধূপেন

মিকাশয় অবেরং সংলগ করত মধ্যমালুলীখংসব মৃলে অসুষ্ঠরর সংলগ করিলে যোনি মৃত। তইবে।

শালগ্রাম শিলাদিতে অর্চনা করিতে হইলে আবাহন ও বিসর্জন করিব বে না যে হেতু ইহাতে দেবতার নিত্য অধিচান এইয়াছে। অনস্তর শ্রীরা-মের মন্ত্র গাগতী উচ্চারণ করিয়া সাম্থার সবাহনার সপরিবাবার সশক্তিকার পূলাঞ্জলিং কণ্পরামি নম এই বলিয়া পূলাঞ্জলি প্রদান করিয়া পাদ্যাদি অর্পণ করিবে। সমস্ত উপচারেরই পূর্বে পূর্বের পূলাঞ্জলি দিতে হয়। পাদ্য, অর্থা, আচমনীর, মধুপক্ত ও তৈল হরিতাদি অভিশেকের হল্ল প্রামান এ নীরাজনা ক্ষিয়া প্রক্রত্ত পাঠ করত লক্ষ্ম পরিত্র জল ও করি, ইয়, ইউ, সম্পু, চিনা, নারিকেল অব্য তালের কর্য, ইস্ক্রেয়, কর্মাই, ক্ষেত্রাক

আন গ্রন্থ কি বৃক্ষসম্পূক্ত কল, ন'নং গণ্ধ দ্বা ও নানাবিধ প্রবাদিত এলখাবা মহাসান সমাপন কবিবে। প্রানেব সংখ্যা প্রত, সংগ্রন্থ স্থাপুত সাধকের প্রপারে কত্বা। জনস্তব প্রপার সাভত স্বাদিত কলাবা শ্মপাত্র পূবিত কবিয়া কলাগুক্রপো সন্থাপায়। প্রভাব প্রতিবর্ধন কবিবে। পরে একাগ্রাচিত্রে নিমাল এলখাবা প্রিয়ামকে সান করাইবে। বাজ্যাখী বাক্তি প্রবাদেব অভিবেক করিলে বাজ্যলাভ করিয়া রাজ্যাভ সক্ষদা আনান্দিত হুবে। জনস্তব আচমনীয়, বস্ত্র, প্রাচ্মনায় উত্তরীর ও যজোলভ হুবে। জনস্তব আচমনীয়, বস্ত্র, প্রাচ্মনায় উত্তরীর ও যজোলভ হুবে। জনস্তব আচমনীয়, বস্ত্র, প্রাচ্মনায় উত্তরীর ও যজোলভ হুবে। করিয়া পাছকা মুজাগাবা সীঠোপনি প্রভূবে স্থালিভ কর্ত মানাবিধ যথাবোগ্য অলক্ষার ও তুলসা প্রবাধা অলক্ষ্ত করিবে। করে মুল্মারে অল্ল এবং ৮ বাব প্রভালি প্রদান করিয়া প্রী সীতারৈ নমঃ আই ব্রুক্তে ক্ষাপ্রিছতা সীতাদেবীর পূঞ্চ, দক্ষিণকোশাত্রে লং লক্ষ্যাল নমঃ, আই ক্ষেত্র ক্ষাপ্রের পূঞ্চ। ধবিবে। জনস্তর ক্রিকোণের বান প্রাক্তি শংখান

**७** तार क्षमग्राग्न नमश । ७ तीर भित्रामं श्वाहा । ७ तार শিখায়ে বষট্। ওঁরৈৎ কবচায় হুং। ওঁরৈাৎ নেত্রা-ভ্যাৎ বৌষট্। ওঁ রঃ অস্ত্রায় ফট**্। আ**গ্রেষ্যাণ হৃদয়ং পূজ্যং শিরঈশান কোণকে। শিখাং নিখাভিদি-গভাগে বায়ব্যাং কবচং যজেৎ। নেত্রঞ্ব পূর্ববতঃ পূজ্যমন্ত্রং দিকু সমর্চায়েৎ। ততো হন্তো প্রকাল্যা-চম্য রামায় গন্ধং দভা পুজ্পাঞ্জলিং দক্ষিণহস্তাঙ্গুতজ্জনী-यस्याञ्ज्ली ভिগ्रही इ। यरिस्र भरकातकक नन्तार । जाहि मर-সারদর্শালাং শরণ্য শরণার্থিনাং। ভক্ত্যা সমচ্চিরাম্যদ্য প্রথমাবরণার্চনং। ইত্যুক্তার্য্য তজ্জনং ত্যক্ত্রা পুষ্পা-अनिভित्रर्फरायः । भषानिमुद्धानर्भनः इस्रयोक्ताननानि-কঞ্চ প্রথমাবরণাদি দশমাবরণাচ্চনিপ্রযুদ্ধং প্রত্যাবরণং क्र्यार । विजीशायत्रभार्कनः । ज्जीशायत्रभार्कनर । ठजूर्या-वत्रवाक्तं । পश्चभावत्रवाक्तं नर । यर्कावत्रवाकृ नर । म-श्वमावत्रवाक्त नः। अकेमावत्रवाक्त नर्। नवमावत्रवाक्त नर्। দশমাবরণার্চন্মিতি। ইতি প্রথমাবরণং।

ক্ষা নম: এই ছই পূলা ক্ষিয়া অনুজ্ঞাপ্তাপ্ত হুটা অক্ষাদিব পূজা তে প্ৰথক্ত হুট্টে । যথা অধিকোণে ওঁ বাং কদয়ায় নম:, কিশানকোণে রীং শিবসে আহা। নৈকত কোণে ওঁ কং শিবারৈ বষট্। বায়ুকোণে ওঁ বৈং কনচায় লঁ, সমুবে ওঁ নেহাভ্যাং বৌষট্। চহুর্দিগে ওঁ অস্তান ফট এই সকল মন্তে ষড়ক পূজা সমাপিয়া হন্ত প্রকালন পূর্বক আচমন ক্ষিয়া দক্ষিণহন্তের অক্ষৃত হর্জনী ও মধ্যমাকুলা ছারা সচন্দন পূপা ও শংখাদক লইলা ত্রাহি সংসারস্পালাং ইত্যাদি মন্ত্রপাঠ করত শভ্য জল প্রিভ্যাগ ক্ষিয়া গৃহীত পূপাঞ্জলি জীলামকে প্রদান ক্রিবে। শখ্যাদি মুদ্রা প্রদর্শন ক্রান হন্ত প্রকালন, আচমন ও পূপাঞ্জলি জালান প্রথমাবরণ হন্ত দেশদাবরণ প্রাক্ত প্রভোষাবরণে ক্রিতে হুইবো

ওঁ আং আস্থানে নমঃ। ওঁ নিং নির্ক্তির নমঃ। ওঁ অং অন্তর্গান্ধনে নমঃ। ওঁ প্রং প্রতিষ্ঠারে নমঃ। ওঁ পং পরমান্ননে নমঃ। ওঁ বিং বিদ্যারি নমঃ। ওঁ জ্ঞাং জ্ঞানান্ধনে
নমঃ। ওঁ শাং শাইন্তর নমঃ। বিতীয়ান্ধাদিকৈ দেঁ বৈরফীজমূলকে তথা। যথা রামন্তথিবৈতে শক্রুণ্ট করামুজাঃ।
ইতি বিতীয়াবরণং। ওঁ বাং বা প্রদেশায় নমঃ। ওঁ জ্ঞাং
ভৌরৈ নমঃ। ওঁ সং সকর্ষণায় নমঃ। ওঁ শাং শাইন্তর নমঃ
ওঁ অনিক্রায় নমঃ। ওঁ বং রত্যে নমঃ। তৃতীয়া বাহ্দেবালৈর রউপত্রে তথৈব চ। চাপশরধরস্তাদ্যঃ পরঃ শশিধরঃ
স্মৃতঃ। প্রচামঃ পঞ্চশরবাননিক্রন্দ চচাপবান্। দক্ষিণাণঃ
করা জ্যোঃ ক্রমাদ্দেশঃ করামুজাঃ। ক্রাটিকস্বর্ণ দর্কেন্দুনীলাভাক্রিদ্পাঃ ক্রমাং। স্বর্ণাক্রপ্রাকিঞ্জক্ষণ্যামলাস্ত্র প্রিয়ঃ
স্মৃতাঃ। ইতি তৃতীয়ং।

ওঁ হং হ্মুমতে নমঃ। ওঁ স্থং স্থানার নমঃ। ওঁ ভং ভরতার নমঃ। ওঁ বিং বিভীলনায় নমঃ। ওঁ লং লক্ষানার নমঃ। ওঁ লং লক্ষানার নমঃ। ওঁ লং শক্রেলার নমঃ। ওঁ জং জাষবতে নমঃ। চৃত্থী বায়ুপুত্রালৈয় পত্রাথ্যে পুর্বভঃ ক্রমাৎ। দেনাথে স্বায় চাপাথে প্রাটাচোকা নিচক্ষণৈঃ। স্বাভো শামলঃ কুষঃ স্বাভো নালতঃ ক্রমাৎ। বাচয়তং হ্নুমন্তং দেবস্যাথে স্বপুত্তকং। রম্যো ভরতশক্রেমা পার্যার্গ্ত-

আঁনশ্বর ও আশ্বনে নমঃ ইত্যাদি মূলোকে পুজা সকল অইদলের মূলে কবিতে হয় এই দিনীবাববগান্তর্গিত শক্তি সকলেৰ ২০ত গ্লা রচিয়াছে এই প্রকার ধ্যান কবিবে।

ভূতীয়ার বলে — গদ্ধ পূজা কইব। এতে গদ্ধ পূজা ও বাহদেবার নথঃ ইত্যাদি ক্রমে অইদলে প্রশার মূলোক্ত দেবতা সক্ষেব পূলা করিতে হয়।

চামরো। ধ্রাতপ্তং সৌমিতিং ক্তাঞ্জলিপুটান্ পরান্। শিয়ত্বাৎ পুনল ক্ষণ গ্রহণং। ইতি চতুর্থং।

ওঁ স্ফারে নমঃ। ওঁ জং জয়ন্তায় নমঃ। ওঁ বিং বিজয়ায় নমঃ। ওঁ সোং সোরাষ্ট্রায় নমঃ। ওঁ জকোপায় নমঃ।
ওঁ ধং ধর্মপালায় নমঃ। ওঁ হুং হুমন্ত্রান নমঃ। স্ফারিদি
মন্ত্রিণঃ পূর্ববিদিক্রমেণ কুভাঞ্জনীন্। আধিক্রিকীং মন্ত্রমভো
দিতীয়াকদলে ২চচয়েং। ইতি পঞ্চমং।

ওঁনাং নারদায় নমঃ। ওঁবং বশিষ্ঠায় নমঃ। ওঁজাং জাবালয়ে নমঃ। ওঁগৌং গৌতমায় নমঃ। ওঁভং ভর-ছাজায় নমঃ। ওঁবাং বাল্মিক্ষে নমঃ। ওঁসনকায় নমঃ। ওঁসং সনকায় নমঃ। ওঁসং সনংকুমারায় নমঃ। কমগুলু-ধরান্ স্বান্ মন্ত্রমুচ্চবতো মুনীন্। হাদশারেহ্চ্যেৎ পূর্ব-দিক্কুমেণ্চ তৎ প্রান্। ইতি ষ্ঠং।

ওঁ নীং নীলার নমঃ। ওঁ নং নলায় নমঃ। ওঁ নুং হুষেণায় নমঃ। ওঁ নৈং মৈন্দায় নমঃ। ওঁ সং সরভাগ নমঃ ওঁ বিং ছিবিদায় নমঃ। ওঁ চং চন্দনায় নমঃ। ওঁ গং গবে-ক্ষায় নমঃ। ওঁ কিং কিরীটায় নমঃ। ওঁ কুং কুগুলায় নমঃ। ওঁ ঞ্জীবংসায় নমঃ। ওঁকোংকোস্কভায় নমঃ। ওঁ শং শ-

मनभावन नगास क्रमान्य म्लाक्ष्मात शृक्ष कित्त । (मवल क्रमान्य स्वाक्ष्मात शृक्ष कित्र । एवल क्रमान्य स्वाक्ष्मात शृक्ष कित्र क्षांत्र । एक्ष्मान्य स्वाक्ष्मात शृक्ष कित्र क्षांत्र । एक्ष्मान्य व्यवस्थ क्ष्मात क्ष्म

श्वाम नमः । ७ हर हजाम नमः । ७ तर नमारेम नमः । ७ तर भणाम नमः । तमाज्ञात्वर्कत्त्र शृद्धिक कृत्यन कृताक्षणीन् । इंडि मश्चमर ।

ওঁ এং এ বায় নমঃ। ৬ ধং ধবায় নমঃ। ও গোং দোমায় নম:। ওঁ আং আপায় নম:। ওঁ অং অনিলায় নম: ওঁ অনশায় নমঃ। ওঁ প্রং প্রভাষায় নমঃ। ওঁ প্রং প্রভা-ষাত্রমঃ। ওঁবীং বীরভদোয় নমঃ। ওঁশং শস্তুবে নসঃ। र्खं निर निति गांत्र नमः। उँ वर व्यक्षिक निरम नमः। उँ वर অহিত্রধায় নমঃ। ওঁ পিং পিণাকিনে নমঃ। 'ওঁ ভুং ভুব-নাধীখরায় নমঃ। ওঁকং কপালিনে নমঃ। ওঁ দিং দি্ক-পালায় নমঃ । ওঁ স্থাৎ স্থানবৈ নমঃ ৷ ও ভং ভগায় নম: ৷ र्खं वर वक्रगांत्र नमः। 'छ मृ र ऋशांत्र नमः। 'खं Cवर Cवना-ঙ্গায় নমঃ। ওঁভাং ভানবে নমঃ। ওঁইং ইন্দ্রায় নমঃ। खँ तर त्रवरत्र नमः । खँ गः शक्खित्न नमः । खँ यः गमात्र नमः उँ हिः हित्रगादत खरम नमः। उँ निथ नियोक तांत्र नमः। उँ মিৎ মিতায় নমঃ। ওঁ বিং বিষ্ণবে নমঃ। জ্বালার উমারতি-र्चाजिर्मनक्ष्रवादक। क्षार्वा भवक त्रामक वार्शिक्वानि-শোহনলঃ। প্রভাষশ্চ প্রভাষশ্চ বদবোহকৌ প্রকীর্ত্তিতাঃ। শূলং থড়গং তথা চক্রং পট্টশং কবচং ছুনীং। কোদততং म्लातरेकव वम्नामास्थर क्यार। वीतञ्कर मह्यू मह नितीममह মহাযশাঃ। অলৈকপাদহিত্ত গ্লন্থ পিণাকী চাপরাজিতঃ। ज्नारीयवरेक्टव कथाली ह निमार अखिर। सात्र्र्डगम्ह ভগবান্ ऋक्षारेन्ठकामण श्रृष्ठा । नन्मकर यूक्तर गृलर गिथतर यगमः द्वेकः । कृषादिकर शिनाकक जात्वात्रोद्वेर छथाकूमः । খট্টাদঞ্চ স্থাসুপরং শক্তিহেভিধরান্তথা। রুদ্রায়ধানি চৈতানি

প্রোক্তবান ক্রমতঃ শিবঃ। বরুণঃ সূর্য্বেদার্কো ভামুরিক্রো
রবিন্তথা। গভন্তিন্ত যমঃ স্বর্ণরেতাশ্চাথ দিবাকরঃ। মিত্রো
বিফুরিতি প্রোক্তো আদিত্যা আদিতঃ ক্রমাৎ। পাশন্ত মুদারং
শন্তং শল্যং শৃঙ্গং কৃপানকং। কাদাং দত্তং চক্রমজ্ঞং তথা
সর্পং স্বদর্শনং। আদিত্যানাং ঘাদশানা মারুধানি বিহুঃ ক্রমাৎ।
ইত্যক্তমং। ওঁ লং ইন্দ্রায় স্বরাধিপতয়ে সায়ুধায় সবাহনায়
সপরিবারায় সশক্তিকায় রাম পার্মায় নমঃ। ওঁ অং অয়য়য়
পের্বারায় সশক্তিকায় রাম পার্মায় নমঃ। ওঁ অং অয়য়য়
পেরবারায় সশক্তিকায় রাম পার্মায় নমঃ। ওঁ অং অয়য়য়
পেরতাধিপতয়ে ইত্যাদি। ওঁ কং নিশ্বতয়ে রক্ষোধিপতয়ে,
ওঁ বং বরুণায় জলাধিপতয়ে, ওঁ বং বায়বে প্রাণাধিপতয়ে,
ওঁ পোং দোমায় নক্ষত্রাধিপতয়ে। ওঁ হৌং ঈশানায়
বিদ্যাধিপতয়ে ইতি পূর্বাদ্যক্তদিকু। ওঁ আং ব্রহ্মণে লোকাধিপতয়ে ইতি পুর্বোদ্যক্তদিকু। ওঁ আং ব্রহ্মণে ভূতাধিপতয়ে ইতি নৈশ্বতপাদ্চময়োম ধ্যে। ওঁ ব্রা বিফ্রেন ভূতাধিপতয়ে ইতি নৈশ্বতপাদ্চময়োম ধ্যে ইন্দ্রান্যভূপ্ছে

ওঁ থড়গার নমঃ। ওঁ পাশার নমঃ। ওঁ থকার নমঃ।
ওঁ গদারৈ নমঃ ওঁ ত্রিশ্লার নমঃ। ওঁ অঙ্গার নমঃ।
ওঁ চক্রার নমঃ। বিতীরে ভুগৃহেহর্চয়ের। ইতি দশমাবরণং।
তভঃ সমর্পয়েদ্ধুপং ঘন্টাবাল্যজয়য়নৈঃ। ধুপস্থানং
সমভার্চ্য ভল্জন্যাসূষ্ঠয়া হরেঃ। বনস্পতিরসোৎপম্মে
গদ্ধান্যো গদ্ধউত্তমঃ। আন্তেয়ঃ সর্বদেবানাং ধুপোহয়ং
প্রতিগৃহতাং। সংকল্পোবং তভঃ পুস্পাঞ্জলিং দ্বা যশঃ পঠেং।
তথাচ বহর্চ পরিলিক্টে —ধুপক্ত ব্যজনেচৈব ধুপেনাস্থিন
ধুপনে। নীয়াজনের সর্বেষ্ বিকোন্সানি কীউয়েং। জয়

ওঁ বস্তায় নমঃ। ওঁশক্ষে নমঃ। ওঁদঙায় নমঃ।

বোষ্থ প্রকৃষীত কারুণ্যকাতিকীর্ত্তরে । তথাসঙ্গলবোষ্ক জগরীজন্য চ স্তুতিমিতি।

বামে কোদওদওং নিজকরকমলে দক্ষিণে বাণমেকং পশ্চান্তাগে চ নিত্যং দধতমভিমতং সাধিতৃণীরভারং।বামে-হ্বামে বসন্ত্যাং সহমিলিততকুং জানকীলক্ষণাভ্যাং শ্যামং গামং ন্যামি প্রণতজন্মনঃ খেদবিচ্ছেদদক্ষং।

য়তাক্তং গুল্লবং যস্তুরাঘবায় নিবেদয়ে । ন ভয়ৎ বিদ্যতে তথা জনামৃত্যুজড়াদিকং । ইতি ধূপঃ। আরাত্রিকঞ্চ বিদমবহুবর্তিদমিরতং । অভ্যক্তর্য রামচন্দ্রায় বামমধ্যময়া-পয়ে । অধ্বকাশো মহাদীপঃ সব্বতন্তিমিরাপহঃ। স্বাহ্যাভারত্রেরাভিদীপোহয়ং প্রতিগৃহতাং। নমো দীনেশ্রা-মেতি দ্বাদ্য পুজ্পাঞ্জালং ভতঃ। অবধ্প্যাক্তর্য দ্বাদ্যৈ মু-

অটদণে পূজা করিতে হয়। সাযুবায় স্বাহনায় সপ্রিবারায় সশ**ক্তিকায়** রাম প্রাণায় নন এই মল স্মস্ত মস্তেব ''অধিপত্তিয়' ইহাব প্র যুক্ত ক্রিয়া পূজা ক্রিবে। ওঁ বজ্ঞায় নম ইত্যাদি ছাবা দ্বিতীয় ভূপুবে পূজিবে।

অনধর ধ্ণপাত্রে জ্ঞানা করিয়া ঘটাবাদা করত বনপতি ইতাদি
মন্ত্র পাঠ পূর্বক ভ্জানী ও অঙ্গুঠ ধারা ধূপণাত্র লইয়া যথোজমন্ত্রে নিবেদিরা পূপাঞ্জনি প্রদানপূর্বক তব পাঠ করিবে। বহুব্চ পরিনিটে লিখিড
আছে—পূপানিবাবা নাবাজনা (আরতি) কবাব সমরে দেবতার নাম
কীর্ত্রন, জ্মধ্বনি কারণা সন্ধার্ত্রন, মঙ্গল ধ্বনি ও তাব পাঠ কবিবে। নম্বার
মন্ত্রাই বিনি বামকরে, শরাসন, দক্ষিণ করে শর এবং পৃষ্ঠদেশে অসির সহিত ভূণীর
ধাবণ করিয়াছেন, বিনি বামভাগহিতা জনকনলিনী ও দক্ষিণভাগহিত্তলক্ষণ
কর্ত্তক আলিজিত এবং বিনি ভক্তজনের মান্সিক কট নিবাবণ করেন সেই
ভাষাস্থ্য প্রিরাম্চক্রকে প্রশাম করি। বে ভক্ত ভ্তমিশ্রিড প্রগ্রুত্বল
শ্রীরাম্চক্র তর্বহি নিবেদন করে ভাহার জন্মধারণ জাভ্য প্রভৃতি ভন্ন করেণ
সক্ল সন্তর্বিত হন্ন না। ভাতঃশির বাম হত্তের মধ্যমন্ত্রণী ঘারা পর্ণ করত

র্ক্তিনীরাজ্যেৎ প্রভুং। ধ্যায়েদাজামুবাছং ধ্রতশরধমুইং বদ্ধপদ্মাদনস্থং পীতংবাদো বদানং নবক্ষলদলম্পর্দ্ধিনেতাং প্রদান বামাঙ্গার দুদী ভাষুধক্ষলমিলজ্লোচনং মীরদাভং নানাল্ডারদী প্রং দ্বত্যুক্ত জটাম গুনং রামভদ্রং। প্রীরাম জ্বের-ত্যাদি পঠেছ। ইতি দীপঃ।

হৈরণ্যং রাজতং তাত্রং কাংশ্যপালাশপত্রকং। নৈবে
দ্যায়াজপত্রং বা পাত্রং বিফোরতি প্রিয়ং। ভক্ষাং ভোজ্যং
লেহুপেয়ং চোষ্যমন্তং গুণাঘিতং। দদ্যাৎ শ্রীহরয়ে নিত্যং
লভেৎ পুণ্যমনন্তকং। প্রক্ষিপ্য ভূলসীং প্রোক্ষ্য সপ্তক্ষভোধভিমন্ত্রয়েৎ। প্রদর্শ্য বিষ্কৃতকান্ত্রং বামাঙ্গুঠন সংস্পৃশেৎ।
পাণীয়ঞ্গায়তীকৃত্য পরেশায় নিবেদয়ে২। শালীভক্তং স্মভক্তং
শনিকরসিভক্কক পায়সাপৃপসূপং লেহুং পেয়ং স্টোষ্যং
সিত্রময়্ত্রকাং ফীরকাদ্যং স্থাদ্যং। আজ্যৎ প্রাজ্যং

আনুগানতি (শল্ভা) গৃক্ত পঞ্জদীপাদি উৎসৰ্গ করিয়া স্প্রকাশো মহালাপ ইতাদি মন্ত্র পাঠ করিয়া পুলাঞ্জলি প্রদান করত দুসাপত্র প্রভাৱ দাবা মন্তকাদি স্থানে নীবাজনা করিয়া ধ্যায়েদাজাপুবাহং ইত্যাদি স্তব পাঠ কবিবে। স্তবার্থ— আজাস্থ লম্বিত ভূজ ধন্ধাবী কমলানন প্রীবাসচক্র, পীত্রবন্ত্র পরিধান করিয়া পল্লাসনে উপবেশন করত বাম পার্বস্থিত। সাঁচাদেবীর বৃদ্ধতি নিজ নয়ন মিলিত কবিভেছেন ইনি মেঘ্বর্ণ ও নানাভ্রণে বিভূষিত এবং বিশাল জটাজুট ধারী আমাদের চিন্তনীয়।

অনস্তর নৈবেদ্য নিবেদন কবিবে। খণ, রজত, তাম ও কাংখানিশ্বিত পাল এবং পলাশপল ও পদাপল এই সমস্ত নৈবেদ্য পাল বিক্ষুর অধিক প্রের। ভক্ষাভোজ্যাদি চতুর্বিধ সামগ্রী বিক্ষুকে প্রদান করিলে অসীম পুণা হয়। নৈবেদ্যে তৃলসী পল বিনাপ্ত করিয়া অভ্যক্ষণ ও সাতবাব অভিমন্ত্রিত করিখে পরে বেহু, চক্র অস্ত্রমুদ্রা প্রদর্শন করাইয়া বামাল ঠ বারা স্পর্শপুর্ক স্ক্রণ। নৈবেদ্য নিবেদন করিয়া শাণীক্ষকং ইত্যাদি প্রাথনামন্ত্র সকল পাল্পিক্ত

সধান্তাং নর্নক্রিকরং জাতিকৈলামরীচং আদীরঃ শাক্ রাজীপরিকরময়তাহারজোষং জুরস্ব। নিবেদন মন্ত্রঃ। প্রক্ষেন্ শালৈঃ পরির্ত উক্তিঃ সূপবিকৈঃ দ্যেতো লক্ষ্যা সিঞ্জন্মর-করয়া সাদরং বীজামানঃ। নর্মক্রীড়া প্রহ্সনমুবৈর্হাসয়ন্ পংক্তিভাক্ত্র ভুঙ্কে পাত্রে পবিত্রে কনকন্ত্রঘটিতে ষ্ড.-সংশ্রীরমেশঃ। ইতি ভোক্ষনমন্ত্রঃ।

যশ্চিন্তারত্বকামজন বিভবভূবাং মগুনং মগুনানাং স্থাসাং
সম্পদাং যন্ত্রিজগতি জগতাং মঙ্গলং মঙ্গলানাং। সংপাত্রত্য
ন্তন্ত্রা দণিমধূলবিশ্বি প্রিমুভার্য চার্য্যে নীরাজ্যা রামচন্দো
দিনকরকরজি দ্রন্থাপাবলীভিঃ। লক্ষ্মীনারায়ণেতি পঠেং।
পশ্চাং যথাশক্তি জপং বিধায় গুস্থাতিমক্ত্রেণ হরষে
নিবেদ্য। কুণ্ডে যথাবদিহিতে স্থয়ন্টে সংস্থাপ্য বহিং
লুভ্যাদবশ্যং ইতি নৈবেদ্যান্তোপচারঃঃ।

বিধিবছিতে কৃত্তে শৃতিলে চতুবল্রকে। আছ্বনীয়ং গৃহং বা লোকিকং বাগ্নিমুকজ্বলং। আনীয়াস্ত্রেণ নৈখাত্যে জ্বন্যাদাংশং পরিত্যজেৎ। দেবাংশং মূলমন্ত্রেণ স্থাপয়েৎ প্রতঃ স্থীঃ। অগ্নাধানাভিধং কর্মানিত্যছোমে ন বিদ্যতে। ৰীক্ষণং মূলমন্ত্রেণ শরেণ প্রোক্ষণং মতং। তেনৈব ভাড়নং

অনন্তৰ বন্ধনৰ ধাদীপৰাজি ধাৰা নীৰাজন। কৰিয়া কৰা লগানিবাৰণ ইত্যাদি পাঠ কৰিয়া শকাছ্দাৰে মূলমন্ত্ৰ ভপকৰিয়া, গুঞাতিশুহ গোপ্তা- বং সুহাণাত্ম কতং জপং। সিদ্ধিতিৰতু মে দেব অংপ্ৰসাদাত্মি প্তিচা। এই ৰজে লগ মুম্পণ কৰিবে। অভঃপৰ, বিধি অভ্সাতে নিৰ্দ্দিত কুণ্ডে অথবা, চ্ছু অভ্যেতিলে আহ্বনীয়, গাহপত্য অথবা গৌকিক অগি আনিয়া ফট্

मर्देई स्वर्मनाष्ट्राकनर चुछर। जवाशायाय अर्युका निवसीका यथाविषि । প্রাণানাযম্য লক্ষীলং সাক্ষং সাযুধমব্যরং। সিদ্ধা-মদ্রতভাষালৈরিতি সংকল্প বাগ্যতঃ। স্থাসং কৃষা প্রণীতা ্ষু প্রোক্ষণ্যাদায় তব্ছলৈ:। যজ্ঞগাধনসংভারং প্রোক্ষরে-মা লমস্ত্রতঃ। পবিত্রোৎ পবনাস্তন্ত কুর্ব্যাৎ কর্ম স্বগৃহ্নতঃ। সহ-व्यार्कित इत्याय नयः। यश्चिश्रीय भित्रत याहा। ভ ভিঠপুরুষায় শিখায়ৈ বষট্। ধুমব্যাপিনে কবচায় হং। সপ্তজিহ্বায় নেত্রত্রায় বৌষ্ট। ধ্রুর্রায় অস্ত্রায় ফট্। ও নমো বৈশ্বানর জাতবেদ ইহাবহ লোহিতাক সর্ববিদ্যাণি সাধ্য স্বাহা। এবমাবাহ্য সমিধং ক্ষিপ্তাগ্লিং দীপয়েৰিভুং। ওঁ চিৎপিঙ্গল হুতবহ সর্বাজ্ঞা জ্ঞাপর স্বাহা। ওঁ আগ্নিৎ প্রজ্ব-लिज ९ वटन का करवमम्बिक छ । हित्रग्रवर्गमन ममूकः সর্বতোমুখং। জগৎকারকবহ্নেস্ত গর্ত্তাধানাদিকাঃ জিয়াঃ। সম্পাদ্য বিধিবতেন স্বাহান্তেন হুনে ভতঃ। মণিবন্ধে সমৌকুত্বা করোপ্রবিতভাঙ্গুলী। সধ্যমে মিলিতে কুত্রা তন্মধ্যেংসুষ্ঠকৌ

ভাগিত কবিবে। নিতা কোমন্থলে অগ্নাধানাদি করিতে ইয় না। অনস্তর মূলমন্ত্র বাঁকণ, ফট্ এই মত্তে প্রোক্ষণ ও দর্ভবারা তাডন করিয়া ও এই মত্তে প্রোক্ষণ ও দর্ভবারা তাডন করিয়া ও এই মত্তে অভ্যাধানাদি আগ্ন পর্যাক্ষণ ও পরিস্তবণ করিয়া প্রাণাগ্রাম কবিবে এবং সিদ্ধাগ্লাদিবাবা অল ও আগ্র্ধেব সহিত লক্ষ্মীকাল্যের অর্চনা করিয়া, বাগ্যত হুট্যা, প্রাণাগ্র্টান কবিষা, প্রণীতাপাত্তে অগ্ন গোক্ষণীপাত্তে আনিয়া সেই অলগ্নায় মূলমত্তে যজ্ঞীয় উপকরণ সমস্ত কোলিত করিয়া অল্য গৃহ্যাসুসার প্রিজ্ঞোপ্রনাম্ভ করিয়া সমাপিয়া, সহ্পান্চিবে ক্ষ্মান নম ইত্যাদি মূলোক্ত অক্সান কর্ত্তাস ও ধ্যান পূর্কক আবাহ্নান্তে ও নমো বৈখানর কাতবেদ ইত্যাদি মত্তে অগ্নির অর্চন করিয়া প্রাণাশ প্রথাণ স্থানি স্থাকি প্রিয়া অগ্নির স্থানাদি ক্রিয়ার হোম করিবে অনুষ্ট ভিৎপিশ্ল ইত্যাদি মত্ত্রপাঠ করিয়া অগ্নির স্থাধানাদি ক্রিয়ার হোম করিবে

किल्लेट । मृत्क्रियर मश्किक्षांथा पर्णत कांखरनरम । रिवनां भगना तका कृष्णभी ठा श्रका मिछा । मर्किमिक श्रमांभूनां किक्षाः मश्च विकारमाः । भीर्क कम्मणेखः श्रानेक कम् विकारमाः । भीर्क कम्मणेखः श्रानेक कम् विकारमाः मश्चिम् विकार दिवाध दिवाध दिवाध दिवाध विकार श्रानेक मर्थक मर्थनाः मश्चिम् विकार दिवाध विकार विवास महिला मश्चिम विकार विश्व वि

এই সম্বন্ধে পূৰ্বেও লিখিত আছে। সংগতি স্থাজহ্ব। মূলাগদৰ্শিত হ ই তেতে স্থিবিজয়ৰ সমভাব বা পথা হওৱংশ্ব আৰু লি সকলে বিস্তৃত করিয়া মধ্যমা অন্ধ্যাবা প্ৰশাস মিলিভ কাবলে উক্ত মূলা হয় এই মূলা প্ৰদশন ক্ৰাইবে। (হৰ্ণা), পানা, রকা, কৃত্য, পীতা, প্ৰভা, সিভা ও স্বাদিক প্ৰদা এই সাভটী অগ্নির জিহ্বা জানিবে।

অনপ্তর বহিল্পীঠে সৃথ্যা উদ্যায় নম ইতাদি বজ্জের পুঞা কবিখা পুর্বাদি অইদিগে ওঁ অধ্যে আত্তেষ্প নমঃ, ওঁ অধ্যে সপ্তা কিহ্বায় নমঃ, ওঁ অধ্যে হ্বাবাহনায় নমঃ, ওঁ অধ্যে অস্থোদবজায় নমঃ ওঁ অধ্যে বৈশানরায় নমঃ, ওঁ অধ্যে তেমাবিকেজলগে নমঃ, ওঁ অধ্যে বিশম্ব পায় নমঃ ওঁ অধ্যে দেবনুধায় নমঃ এই ময়ে অধ্যির অইমুদ্রি পূজা করিবেঃ অভঃপর অধিয়ায়ে অবিহন করিয়া অভুবে আ্নিয়া সম্ভাসাদি সুম্ভা ও স শক্তিবীজং মস্ক্রেশং লপ্ত। স্বাহাং বদেওতঃ। স্ক্রাপ্ত আহতিকেপন্ত্যাগঃ সর্বাহৃতিদ্বিশ। যোড়শাহৃতিভির্দেবং যদেবাদা সশক্তিকং। দ্বারপীঠাঙ্গদেবেতা একৈকামান্ত্রিং ততঃ। গণেশাদি দ্বাত্রিংশস্কবন্তি দ্বারদেবতাঃ। অইচত্বারিংশহ পীঠদেবতা মন্ত্রাদয়ঃ। অইচত্বারিংশহ পীঠদেবতা মন্ত্রাদয়ঃ। অইচত্বারিংশহ পালয়ঃ। সর্বেষ্ নবত্যধিকং শতং দেবাঃ প্রকীর্ত্তিরাঃ। গণেশায় সবিত্রে চ মহেশায় হিয়ে তথা। চতত্র আহতীর্দ্ধয়া ততো ব্রহ্বাপনিহতিঃ। ইতঃ পূর্বাং প্রাণবুদ্ধিদেহধন্মাধিকানতে । জাগ্রহ স্বাহ্রস্থাবস্থান্ত মনসা বাচা কর্মণা হস্তাত্যাৎ পদ্ধামুদ্রেণ শিচু। বংকুতং যহস্তুহ যহস্তেং তৎসর্বাং ব্রহ্বাপনিং ভবতু ও ভূর্ত্বং স্বঃম্বাহা ইদং ব্রহ্মণে নমঃ। মূল্মস্ক্রম্বার্য সাক্ষায় সায়ুধায় স্বাহ্নায় রাঘ্বায় সাবরণায় সশক্তিকায় শ্রীতাপতয়ে স্বাহা। শ্রীরামায় ইদং নমঃ।

পূর্ববং মুদ্রাসকল করিয়া পঞ্চোপচারে অঘি ও পরিবারগণেব সাহল জীরা-মের পুজা করিবে। জ্ঞানাতার হুটলে মৃরামূল্যতে হোম করিবে। অথবা নাগণতার পত্তে জ্ঞাচ করিয়া ডাহার মধ্যে তুলসীপতা বাখিয়া তাহাদ্বার হোমাসুষ্ঠান করিবে। ফ্রাচদারা সূত লইয়া কং এইমজে অবস্তৃতি কট এই মজে পরিরক্ষিত মুশ্মত্যে প্রিক্ষিত ও অভিমন্ত্রিত করিয়া তৃইবার অধিতে মৃত ধারা প্রদান করিবে।

অনস্থর সীতামর ও রামমন্ত্রবাজের অন্তেতে স্থাহা উচ্চারণ করিয়া বোড়শ্বার করিয়া উভয়েব আচতি ও প্রত্যাহতি কেপণ করিয়া পুরোজে অঙ্গ দেবতা, পীঠ দেবতা ও দার দেবতাব প্রক্ষোকের একটা একটা আহুভি ও প্রত্যাহতি দিবে। পরে ও গণেশার স্থাহা ও সবিজে স্থাহা ও মহেশার স্থাহা ও জিরে স্থাহা এই সকল মত্রে ৪ বাব হোম করিয়া ইভঃ পূর্বং ইক্যাদি মন্ত্রি প্রদার্শণ হোম এবং ইদং প্রস্কবে নম ইহাবারা প্রত্যাহাত দিয়া মুলমন্ত্র উচ্চারণ করিয়া সালার সাম্ধার ইত্যাদি বারা পূর্বহোম দিবে। সভঃ

इति पूर्वाङ्खिर कवा कवा अतिमम्हमर। खाङ्ग्रर कमगराकः मरखन छन्म धातरम् । शूर्नभावः श्र्वा रखारेमः मञ्जूरकार-**ভিমন্ত্রিতঃ। আত্মানমভিধিকেচ সদূর্বৈস্তর্লগীদলৈঃ।** বিকীৰ্য্য পুষ্পাঞ্জলি মিদ্ধভাবঃ কুৰ্ব্যাৎ প্ৰণামৎ হুতভুগ্মুখায়। छेवान्त विक्तिनभाषिरभभः विनर हरत्ररेष्ठतवरयांशिनीचाः। ইভি নিতাহোমঃ।

জপস্যাথ দশাংশেন হুনেদাজ্যং সভক্তিকঃ। তদ্ধংশাং-टमन य्रामन शक्ष श्रुष्णाक रेज क्वेटिनः । मात्र दायर जिल्लामीः ত্যেবং সম্বর্পয়ে বিভূৎ। তদ্দংশাশেন তত্যেবিঃ সপ্তকুছোই-ভিমন্ত্রিতৈঃ। আত্মান মভিষিঞ্চেৎ কেদদূর্বৈস্তলদীদলৈঃ। ইতি তর্পণাভিষেকো। ধ্যাত্বানীয় চ দেবন্তং শ্রীরামং পীঠ-भागकः। गुगानीमानजः পাতादिस्तनग्रामः मसाहरतः। मर्क-দেব স্বরূপায় পরায় পরমেষ্ঠিনে। এরমাসনযুক্তায় বিষক্ त्मनाय (ज नमः। वामराज वामहत्समा अनक्तिः मुमर्गरय । भाकारभार वा म**र**खारभा अन्यादी निकासर खत्र। शर्मामा

পৰ পৰিগমূহনাদি করিয়া ও কশুপশু জ্যাসুষং ও ব্যদ্পেক্সাসুষং ও বদ্দেৰানাং का।गृदः उँ ७ त्वाव्य का।गृदः धहे मक्न मृद्ध छत्यकाता जिनक भावन कविता পূर्वकृष्ण क्ष मृत्रमाख माठवाद অভিমঞ্জিত করিয়া অশরীরে অভিষেক করিয়া দুর্বা ও তুলসীপত্তেব সহিত পুলাঞ্জলি প্রদানপূর্বক অগিকে व्यागम कदिता अधि विमर्क्यन ६ क्षेत्रव (यातिनीमिश्तत वनि व्यामान করিবে। ইভি নিভাহোম বিধি।

त्य मः भाक कम बहेदव जाहात हनाः न दहाम, दहारमत हनाः न गर्मण्य व्यक्त क्षणवाता मूनमञ्ज केळात्र शृक्षक मान्य त्रामः कर्मदामि नम बहेमस्य তর্পন করিয়া তর্পণের দশাংশ মূলমন্ত্রে সাতবার অভিমন্ত্রিত কল বারা অভি-दुष्ठ कृतिया। अञ्चलक्र केलान क्लाल्डिक किस्किर देनद्वशा नरेका समयूक्त

वक कुलात्र मृर्या क्लार भटनर्भारत । भक्तां कृष्टि कालाटेना. भिटन क्रांचात्र ह। केलि विनासर ।

মহাপ্রদাদ ইত্যুক্তবা প্রাহ্যমঞ্জলিনা বুধৈঃ। পাদোদকঞ্চ নির্দাল্যং নৈবেদ্যঞ্চ বিশেষতঃ। উৎস্ফায়্তসেবকান্ জয়-জয় স্বামিন্ সমালোকয়েত্যোৎস্ক্রাম্নিতরাং স্বয়ং প্রহায়ে ভ্রান্ পুরোহবন্তিলান্। বিশ্বক্সেনমুখান্ প্রহ্যা পরম-প্রীত্যা মুদালোকয়ন্ বন্দে পক্ষক্র বিকিলিনয়নং জ্রীরামচন্দ্রং পরং। বহন্চ পরিশিষ্টে ।—পবিত্রং বিষ্ণুনৈবেদ্যং স্বর্গিদ্ধানিতঃ স্মৃতং। মন্দেবস্য নৈবেদ্যং ভুক্তবা চান্দ্রায়ণকরেং। অপ্রাহ্ণং শিবনির্মাল্যং পত্রং পুষ্পং ফলং জলং। শাল্প্রাম-শিলাগোগাৎ সর্বং যাতি পবিত্রতাং। ইতি প্রসাদ্ধীকারঃ।

গাভূষিকং জলং দত্তা দণ্যাদাচমনং ততঃ। হস্তণাদং সকপুরিং মুকুটং ভূষণানিচ। কুগুলাদীনি শন্তাদি দশমুদ্রাঃ প্রদর্শয়েং। ধলুকাণো তথাবামকরাগ্রাংশার্গিভং ধমুঃ।

কৰিয়া সৰ্বাদেৰ অৱশাৰ ইত্যাদি ময়ে প্ৰীৰাষ্ট্ৰের বাষ্টাগে বলিপ্ৰদান করিবে। বলির প্রমাণ নৈবেদার প্তভাগ অথবা সহস্র ভাগ বাইবে, ইছার অন্তথা হইলে নিফল ছইবে। গণেশেব পূজাতে ওঁ বক্ততৃভায় নম, স্থোব পূজাতে ওঁ চণ্ডাং শবে নমঃ, শক্তি পূজাতে ওঁ কি চ্ইচাণ্ডালো নমঃ এবং শিবের পূজাতে ওঁ চণ্ডোখরায় নমঃ এই বলিয়া বলিপ্রদান করিবে।

অতন্তর উৎস্টাম্ভদেবকান ইত্যাদি পাঠ করত মহাপ্রসাদ বলিয়া নৈবেদা এবং নির্মাণ্য ও পাদোদক গ্রহণ করিবে। বহুচ পরিশিষ্টে লিখিড আছে যে, দেবগণ প্রভৃতি বিষ্ণু নৈবেদাকে অভি পবিত্র বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন অভএব ভাহা গ্রাহ্য, অন্ত দেবভার প্রসাদ ভোজন করিবে ভোজাকে চান্ত্রায়ণ ব্রস্ত করিতে হয় এবং শিব নির্মাণ্যও অগ্রান্থ ভবে পাশ্রাম্ শৃশ্যক্ষে স্ক্লই পরিত্র হইবে।

थर्मार्या मक्तिर्वाञ्चेष्ठज्य न्यावानमृष्यनः। नवस्रवेरिज ককোল চূর্ণৎ জ্রমুক খাদিরং। কপূরং ভুলদীপত্তং ভাষালং माञ्गक्रकः। चानर्गस्य ख्यानर्गरं कल्लास्ट्वहामस्य। दैव-দিকং মন্ত্রমূচ্চার্য্যদন্যাৎ পুষ্পাঞ্চলিৎ ততঃ। রাজনৎ শ্রীমন্মঙ্গলেশায় কল্লয়েৎ।জপল্লেবৎ নমস্কুর্ব্যাৎ প্রাদীদ ভগবন্ধিতি। ধােয়ং সদা পরিভবন্ধমভীফলাভং ভীর্ধাস্পদং শিববিরিঞ্চি মুতৎ শরণ্যং | ভৃত্যার্ত্তিহং প্রণতপালভবান্ধিদেতুৎ বন্দে মহাপুরুষ তে 'চরণারবিন্দং। ত্যক্ত্র অনুস্তুত্ত জহুরে-পিতরাজ্যলক্ষীৎ ধর্মিষ্ঠ আর্য্যবচনা যদগ্রিব্যা নায়া-মুগং দয়িতয়েপিল ভমল্বধাবদদে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দং। শ্রীরামচন্দ্রর পুঙ্গব রাজবর্য্য রাজেন্দ্ররাম রঘুনায়ক রাঘবেশ। রাজর্মধরাজ রঘুনন্দন রামচন্দ্র দাসোৎহমদ্য ভবতঃ শরণং গতোংস্মি। যদ্যামনং নৃপদদঃ হ্যশোংধুনাপি গায়স্ত্য-যম্মধয়ো দিগিভেন্দ্রপট্রং। ভন্নাকপালবন্ত্রপালকিরীটজ উং পাদাঘুজং রঘুপতেঃ শরণং প্রপদ্যে নমো জ্রহ্মণ্য দেবায় রামায়াকুণ্ঠমেধদে। উত্তমশ্লেকেধূর্য্যায় ন্যন্তদভার্পিতা-জ্বারে। ইন্দীবরদলশ্যামো রামোরাজীবলোচনঃ। বর্ততে মানদে যদ্যাস্থাৎ শীতাৎ প্রণমাম্যহং। দোর্ভ্যাৎ পদ্ত্যাঞ্চ

অভঃপৰ গড়ৰ পৰিষ্ট অণ বারা আচননীর প্রদান করিয়া ক্প্রিদি স্বানিত বস্তু সকল এব কুগুল মুক্টাদি অলকাৰ নিবেদিয়া প্রবিৎ শঞ্চাদি দশ মুদ্রা দশন করাইবে এবং বামহত্তে বহু দক্ষিণাস্ঠ ও তর্জনীযুক্ত করিয়া বাণ অর্পন করিয়া লবক প্রভৃতি মুলোকে জ্বাসকলসমেত ভাষ্ণ ও আদর্শ প্রভৃতি নিবেদ্ধ করিয়া বৈদিক মত্তে পূপাঞ্জলি প্রদান করিবে। অনশুস্ব প্রধান আরতি করিয়া ধ্যেয়ং সদা ইত্যাদি মুলোকে তবু পাঠ করিয়া প্রায়া চন্দ্রেয় প্রশাম এবং ইন্দীবর দলভাম ইত্যাদি মুলোক অব্পাম প্রবিধা করিবে।

कार्ने छ। मूत्रमा मित्रमा मुना । यसमा वहमा टहिंड खगरेमा रहे । क्रिका मकायुक्ताः नित्रमा वहमा पित्रा । श्रका क्रिका था था । श्रका क्रिका था था । श्रका क्रिका था था । श्रका व्यवदाविष्टमी । हे छि खगमः ।

उठः अविकार क्यां साववमा अवस्थितः। मश्रवीभवता-नानभूगार उद्ध भाग भाग । अविकादार क्यां बादार्डकाः। नमस्जः। इरमयुक्तविमात्मन विक्रां लाकर म शब्हि । कक-रुख्यनामन्द्र कर वाभि अविकार। धकारम पर्मनर विरक्षाः र्शि भूगार भूताकृष्ठर । देखि अविकार।

ত সংস্তৃতীত শ্রীবামং চামরণ্যজনাদিভিঃ। স্তুতে শিস্তা মহামন্ত্রাঃ শ্রুত্যকা অমৃত প্রদাঃ।

অথ হৈনং ভরদ্বাজো যাজ্ঞবক্ষ্যমুবাচ হ। অথ কৈম দ্বৈত্ত স্তুতঃ প্রীরামঃ প্রীতোভবতি আত্মানং দর্শয়তি তলো ত্রুহি ভগবলিতি। সহোবাচ যাজ্ঞ্যবক্ষ্যঃ। শ্রীরামেণেবং শিক্ষিতো জ্রন্মা পুনরেতয়া গাথয়া নমক্ষরোতি। ১। বিশ্বাধারং মহা-বিস্থুং নারায়ণমনাময়ং। পূর্ণানন্দৈক বিজ্ঞানং পরং জ্যোতিঃ শ্বরূপিণং। মনসা সংশারন্ ভ্রন্মা তুষ্টাব পরমেশ্বরং। ২।

ভূপদর, চরণদর ভাত্দর বক্ষ, মন্তক ও নেত্র ভূমিতে সংলগ্ন কবিছা বাক্য ও চিত্তে যে প্রশাস করা হর ভাতাকে অত্তাক্ষ প্রশাস বলে। বাত্দর ভাত্দর, মত্ত্ব, বাক্য ও চিত্তদারা যে প্রশাস ভাতাকে প্রশাস প্রশাস কবিত হইরাছে এই বিবিধ প্রশাসই পূজাদিতে শ্রেষ্ঠ।

व्यवस्थान कर्य क्षित्रास्त्र क्षम् कि कि कि स्व कि

🗳 যে৷ বৈ জীরামঃ দ ভগবানদৈতপরমানন্দান্তা যঃ পরং জন্ম ভূর্ব: শ্বস্তামে নৈ নমে নমঃ। ৩। ওঁ যো নৈ জীরাম্-চল্রঃ স ভগবান্ বশ্চাথতৈ করসাত্মা ভূর্ত্বঃ স্ব তেস্মৈ বৈ নমে! নমঃ ৷ ৪ ৷ ওঁ যে৷ বৈ জীরামঃ সভগবান্ যশ্চত্রহ্মানন্দায়তং ष्ट्रकृतिः श्रस्तरेता देव नत्म नमः। ८.। ७ त्या देव श्रीत्रामः म-ভগবান্ যশ্চ তারকং ভ্রন্ধ ভূতুরিঃ স্বস্তুর্বৈর বি নমো নমঃ। ৬। ওঁ ষো বৈ জীরামঃ সভগণান্ যশ্চ ব্রহ্মা বিফুরীশ্রো যঃ সর্ব-বেদালা ভূর্বস্বঃ স্তাস্মৈ বৈ নমো নমঃ। ৭। ওঁ যো বৈ জীরামঃ স ভগবান যে চ সর্বের বেদাঃ সাঙ্গাঃ সশাখাঃ সপু-त्रांगा जुर्जूनः वे खरेना देन नत्या नमः। छ। उ त्या देन खीतामः স ভগৰান্ যোজীৰাল্পা ভূতুৰিঃ স্বস্ত স্মৈ বৈ নমো নমঃ। ৯। ওঁ নো বৈ আঁরামঃ সভগবান্ যশ্চ সকাভূতাওরাত্রা ভূর্বঃ श्व छेट्या देव नत्मा नभः। >०। ७ त्या देव 🕮 बामः म छ गवान् বে দেবান্তরসমুষাদিভাবা ভুভুবিঃ স্বস্তব্যৈ বৈ নমো নমঃ ১১১ ওঁ যো বৈ প্রীবামঃ দভগবান্ যাচ মৎসাকৃশ্মাদাবভারঃ ভূভূ तः चछरेषा देव नत्या नमः। ५२१ ७ त्या देव 🖷 बामः म छ-গৰান্যণচ প্ৰাণো ভূভুবিঃ স্বস্তব্যা বৈ নমো নমঃ। ১৩ । ওঁবো বৈ ছীরামঃ স ভগবান্ যশ্চান্তঃকরণচক্টয়াত্মা पृष्ट्रितः श्रेष्ठारेया देव नरमा नमः। >९। ७ रगा देव धीतामः म खननाम् यण्डः नदभा कृष्ट्रां श्रेष्ठिया देन नदमा नमः। ১৫ 1 ওঁ যো নৈ মীরামঃ স ভগবান ্যশ্চান্তকো ভূভুবিঃ স্তুব্রি স্তুবি नरमा नमः। ১৬। ७ त्या देव खीतामः म खननान् यन्त प्रवृश ্ভূভুবিঃ স্বস্তাম্মে বৈ নমো নমঃ। ১৭। ওঁ যো বৈ জীরামঃ न जननान् यन्हायुज्य क्र्यून्य अकरेत्रा देव नत्मा नयः। ३৮।

ওঁ যো বৈ জীৱানঃ সভগবান্ যানি চ পঞ্মহাভূতানি ভূভ বিট अखरिय देव नर्मा नमः। ३৯। 🤏 द्या देव खीतामः न छनवीन यम्बावत्रक्रमाञ्चरका पृष्ठ् वः चल्ठरेमा देव नरमा नगः । २०। ওঁলো বৈ শ্রীরামঃ সভগবান্যে চ পঞ্চার্য়ে। ভূভূবিঃ স্প্তৈর বৈ নমোনমঃ १২১। 🤏 যো বৈ শ্রীরাম: সভগবান্ যশ্চ সপ্তব্যাহ্বতথাে ভূভূবিঃ স্বস্ত শৈয় বৈ নমো নমঃ। ২২। ওঁ যাে। বৈ শ্রীরাসঃ স ভগবান্যা বিদ্যা ভূর্বঃ স্বস্ত স্মৈ বৈ নমে। নমঃ । ২৩। ওঁ যো বৈ জীরামঃ দ ভগবান্যাচ সরস্তী ভূর্বঃ স্বস্ত সৈ বৈ নসোনম: 1 ২৪। ওঁ যো বৈ জীরাম: সভগবান্ যাচলক্ষী ভূৰিঃ স্বস্ত দৈয় বৈ নমোনম:। ২৮ । ওঁযো বৈ রাম: দ ভগনান্ যা চ গৌরী ভূর্ব: স্তুক্মে বৈ নমো নমঃ । ২৬। ওঁ যো বৈ জীরামঃ দ ভগবান্যাচ জানকী ভূভুবিঃ च खरेचा देव नरमा नमः। २१। ७ द्या देव 🗐 व्रामः म छ गवान् ষচ্চ ত্রৈলোক্যৎ ভূর্তঃ স্বস্তব্য়ে বৈ নমো নমঃ ১৮। ওঁ যো বৈ জীরামঃ দ ভগবান্যণ্চ সূর্ব্যে ভূভুবিঃ অস্ত্রে নমো নমঃ । ২৯। ওঁ যো বৈ এরামঃ সভগবান্ যক সোমো ভূ-ৰ্বঃ স্বস্ত স্মৈ বৈ নমো নমঃ। ৩০ 1ওঁ যো বৈ জীৱামঃ দ ভ-গ্ৰান্ যানি চ নক্জাণি ভূভূ বিঃ স্বস্ত সৈ বৈ নমো নমঃ।৬১। ও যো বৈ জ্ঞারামঃ দ ভগবান্যে চ নবগ্রহা ভূভূ 🕾 স্বস্তামা বৈ নমে নম: 1 ৩২। ওঁয়ো বৈ জীরাম: সভগবান্যে চাফৌ বদৰো ভূর্ত্বঃ স্বস্তব্মে বৈ নমো নমঃ। ৩০। ও যো देव जीतामः म जगवान (य हाटकी लाकशानाखरेख देव नत्मा नमः । ७८ । ७ त्या रेव श्रीतांमः म छ्रावान् त्य टेव्कामभक्त-खोखिट्य देव नत्या नमः। ७०। ७ त्या देव श्रीवामः म छनवान्

ट्य व चाममानिज्याखरेण देव नत्था समः । ७७ । ७ त्या देव জীরামঃ স ভগবান্যচ্ত ভূতৎ ভব্যৎ ভবিষ্যৎ ভূভূবিঃ স্তুক্তি তে বৈ নমো নমঃ । ৩৭। ওঁ যো বৈ জীরামঃ স ভগবান্ ষশ্চ ব্ৰহ্মাণ্ড কৰি বৰ্তাপ্নোভি বিনাট ভূৰ্ব: স্বস্তব্য বৈ নমোনমঃ। ৩৮। ও বো বৈ এরামঃ সভগবান্ যশ্চ ছিরণ্যার্ট্রো ভূজুবিঃ স্বস্ত সৈয় বৈ নমো নমঃ ১ ৩৯ । ওঁ যো ় বৈ শীরামঃ সভগবান্যাচ প্রকৃতিভূ ভূবিঃ স্বস্ত সৈ তে বৈ নমো নমঃ ।৪০। ভ বৈ। বৈ জীরামঃ স ভগবান্ যশ্চোক্ষারো ভূ জু বং সপ্ত সৈ তে বৈ নমো নমঃ। ৪১। ওঁ যো বৈ জীরামঃ সভগবান্ যাশ্চ চভত্রোহর্দ্মাত্র। ভুতু বিঃ স্বস্ত সৈয় তে বৈ নমে। নমঃ। ৪২ । ওঁযো বৈ জীরামঃ স ভগবান্য শচ পরমপুরু-বে। ভূর্বঃ স্বস্তব্যে তে বৈ নমে। নম৪। ৪৩। ওঁ যো বৈ ≗ারামঃ স ভগবান্ যশ্চ মহেশ্বরো ভূ ছু´বঃ স্বস্ত সৈয়ে তে বৈ নমোনমঃ। ৪৪। ওঁযো বৈ জীরাম: স ভগবান্ যশ্ত মহা-दमर वा क्रुंबः ख छरेचा रङ देव नरमा नमश । 8€ । ७ ँ रमा देव জ্রীরামঃ দভগবান, যশ্চোৎনমো ভগবতে বাস্ত্রেয় মহা-বিষ্ণু ভূতিঃ স্বস্ত বৈয়া তে নমোনমঃ। ৪৬। ওঁ যো বৈ শ্রীবামঃ দ ভগবান্ যশ্চপরমান্বা ভূর্ণঃ স্তুশ্যে তে নমো নমঃ ৷ ৪৭ ৷ ও হোবৈ জীরামঃ সভগবান্যণচ জ্ঞানাত্রা जुर्द्र अन्तरेशा रेन नरमा नमह। ८৮। ७ँ रहा रें बीजामः স্ভগশান্ গণ্চ সজিনন্দ। বৈতি কর বাসা ভূভুবিঃ স্তেইয়া তে বৈ নংযা নমঃ । ৯১। এতান্ অক্ষবিৎ স্প্তচয়ারিং শ্ময়িস্-মিত্যং দেশং স্তুষন্ ভতো দেবঃ প্রীতো ভবতি তমাদ্যএতৈ-মন্ত্রৈ নিভাং দেবৎ স্তোভি দ দেবৎ পতাভি সোহয়তত্বক

গছতি সোংয়তত্বক গছতে। ইতি রামোন্তরতাপনীরে মন্ত্র-স্তুতিঃ সমাপ্তা।

যদা হসুমতা প্রোক্তং মন্ত্রাচাত্মকং তবং। সংপ্রদায় প্রদীপো যন্তবেত্তেন রম্ভনং। হতুমাত্রবাচ। ভিরশ্চামপি द्रांटकि नमवायं मभीयूयार। यथा ऋ धीवमुशानार यस्त्रम्थर नमामादः । मकूरप्य व्यमनाग्न विभिक्तेरियय यः विश्वर । विखी-ৰণায়াকিতটে যক্তং বীরং নমাম্ছেছ। যৌ মধান পুজিতো ব্যাপী মহাকো: করুণায়ত:। শ্রুতং যেন জটায়োশ্চ মহা-বিষ্ণুং নমাম্যহং। তেজদা ব্যাপিতা যদ্য জ্বলতি জ্বলনাদয়ঃ। প্রকাশতে যঃ স্বতন্ত্রো যন্ত জলস্তং নমাম্যহং। সর্বাতো মুখতা त्यन लीलग्ना पर्मिका वतन । त करमञ्जल्याधानार कर वरक সর্বতোমুখং ৷ নৃভাবং যঃ প্রপশ্লানাৎ হিনন্তি চ যথা নৃষু ৷ मिरु मरङ्खिरवाद कृष्ठेखः नृमिर्शः नयामारू:। यशादि-ভাতি বাতাক জ্লনেন্দ্ৰাঃ সমূত্যবঃ। ভিয়ৎ তনোতি পাপানাৎ ভীমণং তং নমাম্যতং। প্রস্য যোগ্যভাপেকা রহিতো নিত্যমঙ্গলং। দদাত্যের নিজেদার্যাদ যন্তৎ ভত্তং নমাম্যহং। যো গুড়াং নিজদাসানং মারম্ভ্যথিলেউদঃ। ততোদাহতলো বভে । মৃত্যুত্থে নমাম্যহং । যথ পাদপত্ প্রণতো ভবত্যভ্রসপৃক্ষঃ। তমঙ্গৎ সর্বাদেধানাং নমনীয়ৎ নমাম্যহং। অহন্তাবং সমুৎক্ষিপ্য দাস্যেনৈব রঘুত্তমং। ভ-জেহৎ প্রত্যহৎ রামং স্মীতং স্ক্লকণং। নিত্যং জ্রীরাম ভক্তস্য কিন্ধরা যমকিন্ধরাঃ ৷ শিবময্যো দিশস্ত্রস্য সিদ্ধয়স্তস্য দাসিকাঃ। ইমং হসুমতা প্রোক্তং মন্ত্রবাজাত্মকৎ স্তবং। পঠেদকুদিনং যন্ত স রামে ভক্তিমান্ ভবেৎ। ইতি জীহনু-

## मडा ८ शायार मजनावाचा कर ८ खावर ममाथर ।

र्ज श्रीमोडादेश नमः। नीननीतकपनाश्रत्यक्षार मकाश अञ्चनावनकागाः। श्रीक्षिक्षकरत अपिरनजीर छावरम মনসি রামবলভাং ৷ অভিন্যন্তিভদৃশং কুশাঙ্গিকা মঞ্কান্তি পরিভূতহাটকাং। ভাতকারিপরুষোক্তিবিরুবাং ভাষয়ে মনসি ताम बझ छ। । क्छ ला क्लक एशाल मानन १ त्राञ्च छन्। १ শুস্তুয়তিং ৷ বাসদা পিদধতীং হিয়া কুসাং ভাবয়ে মনদি রাম-বল্লভাং। কায়বাঙ্মনসগাং যদিব্যথাং স্বপ্নজাগুতিষু রাষ্বে-ভবং। তদ্মহান্সমিতিপাবকং যতীং ভাবয়ে মনসি রামবল্লভাং। বানপাদযুগলং কলয়স্ত্রীং চেতদ। শ্রুতাধুনীহতপাপাৎ। অস্মীৰ পুৰুষে হনলে ছিরাং ভাবয়ে মনসি রামবলভাং। हेक्क क्रम्यन नाष्ट्र भारति । भूका बर्दभयूत्ररञ्जनौधार ভानता मनति तामनद्वरार। कानिः মানমনলে নির্দ্য সন্ধাম বাষতকুনিজ্জিতহেমাং। ফুল্লনী-वर्कान जोर ववाननार जावत्य मनीम वामवल गए। मक्टेबर्फि বিষদাং বিমানগৈর্বিসমাকুলমনোভিরাকিতাং। তেজসাপি पश्जीर मनाज्यर जायरा मननि श्रामनल्यार। अखनकेकमनि-केंद्रानिकृष्यः পঠেषथ भूरणाज्यस्य (थ । अखतात्र त्रिजास

অনন্তব চামৰ বাজন কৰিয়া অথবৈনং ভরদান ইত্যাদি মুক্তিপ্ৰদ্ ক্ৰত্যক তাব পঠে কৰিবে। অথবা হছমং কৰ্ত্ক বে, হছমাছবাচ। তিওশা-মলি বাজেতি ইত্যাদি মন্তবাজাত্মক ভোৱা অভিহিত হটমাছে ভাষা পাঠ ক্ৰিয়া প্ৰভূব প্ৰতিবন্ধন কৰিবে। অভংগৰ নীলনীবলাৰ ইত্যাদি সীভাদে-নীৰ ক্তিখিটি কৰিতে হয়। উল্পিত ভোৱা পাঠ সমাপন হলৈ নৃত্যুপী-ভাদি কৰতঃ প্ৰভূব সভোৱা জ্লাইবে। আগতিক্ত, ভাদক এবং বীণাবাদনে নৈথিনী তদ্য ভূতিমতুলাং প্রবছতি। ইতি রামবলভাজে-অং সমাপ্তং

স্তাদি ক্র্তি বিদ্ধানায়িত্তমে। বীণাবাদনতত্ত্তঃ
ক্রাদি ক্র্তি বিদ্ধানায়িত্তমে। বীণাবাদনতত্ত্তঃ
ক্রেভিলাভিবিশারদঃ। তালজ্ঞলাপ্রয়াদেন মোক্র্মার্গং
স গছভি। ইতি সংগীতশাস্তাং। কেশবাগ্রে নৃত্যগীতং
ন করোতি হরেদিনে। বহ্নি কিং ন দ্যোহসৌ গতঃ
কিংন রসাতলং। ইতি পুরাণং।ভারতে। নৃত্য গীতে তু যঃ
ক্রাং বিপ্রঃ স্বাভাবিকেহলি বা। স্বাভাবিকে তু ভগবান
প্রীণাভীত্যাহ সৌনকঃ।

অথ পূল্পাঞ্জলিং দত্বা কৃত্বা তৎপাদয়োঃ দিবঃ। প্রার্থরেন দ্রোঘনং ভক্তনা কপিমুদ্রাং প্রদর্শ তিক্তা ক্যান্তর ক্রান্তর বাজনং নিয়াং পাল্যা মুদ্রা বানরসংন ক্রিকা । যদ্যত্ত যা সর্বাগতাহতা তে খ্যানেন চেতঃ পর-ভাহতাতে। স্বত্যানয়া বাক্পরভাহতা তে ক্ষম সর্বাং মম দেবদেব। অজ্ঞানাদ্যাদবাজ্ঞানাৎ অভ্তেং কর্ম যৎকৃতং।

বিশাবদ বাজিবা অক্লেশে সুক্তিলাভ করিয়া থাকে। বিশেষতঃ একাদশী দিবসে বিষ্ণুব সরিধানে নৃতাগীভাদি না করিলে পরিতাপ ও অধঃপঠন লাড় করিতে হয়। ভারতে লিশিত আছে যে, কেবল নৃত্যগীভাদি হারা ও ভগ্নান প্রীত হয়েন।

অনস্তর প্লাঞ্চলি আদান করিয়া রখুনন্দনের পাদপল্লে মন্তক নম্র করিছা, বানব মৃদা প্রদর্শন করাইয়া প্রার্থনা কবিবে। তর্জনী অসুলিছরের অগ্রভাগ বর অল স্বর্থের মূল্লেশে নিহিত করিয়া অল অল অলুলি সমন্তের প্রস্থার শোগেতে কব্যর পুটিত করিলে বানর সূতা হর। প্রার্থনার মন্ত্রস্কল বছর বাইত্যাদি মূলে লাইবাঃ।

ক্ষন্ত্রহার্থন তৎ সর্বাং দাসোনৈর গৃহাণ মাং। এগোবিদ্দা মুকুন্দকেশব শিব এবিলভ এলিধে। এইবকুণ্ঠ হংকণ্ঠ কণ্ঠিত খলস্বামিমকুণ্ঠোদয়ঃ। শুদ্ধধ্যেয় বিধৃতভূতধরণ জীমাধবাধোকজ জ্ঞদ্ধাবদ্ধ বিধেহিনস্তায়ি ধিয়ং থীরাং ধরি-ত্রৌধর। ছযোব ভক্তিং জনয় ছমেব মামুদ্ধরাত্মৎ কুপয়া ভবাকেঃ। ক্লিউৎ কুপালোন দয়ান্তি তে চেৎ তহীণ হা কর্ম্মবশাদ্ধতোহত্মি। ইতি প্রথনা।

দেবদেব জগরাপ শৃষ্চক্রগদাধর। দেহি রাম মামমুজ্ঞাং তবতীর্থনিষেবণে। লক্ষামুজ্ঞাং তত্র তীর্থে পাত্রশ্থে
মন্ত্রমালিখেং। কুশমুলে লিথিত্বা চ পঠেমন্ত্রম্যাপহং।
অকালমত্যহরণং সর্বব্যাধি বিনাশনং। বিষ্ণোঃ পাদোদকং
পুণ্যং শির্দা ধার্যাম্যহং। ওঁ চরণং পবিত্রং বিততং
পুরাণং যেন পুভস্তরতি হল্পতানি। তেন পবিত্রেণ শুদ্ধেন
পুতাত্মা পাপ্মানমরাতিং। ত্বমেব লোকস্য ঘারম্ভিত্
মপবিত্রং। জ্যোতিগ্রন্তাজনং মহতস্তদম্তস্য ধারা বহুধা
দোহ্মানং চরণং লোকে স্থীতাং দদাতু। ইমং মন্ত্রং সমুজার্য্য সর্বহৃত্কীগ্রহাপহং। প্রামীয়াৎ প্রোক্ষয়েদেহং
পুত্রমিত্রপরিগ্রহং। কৃত্বা পাদোকং শন্থে বৈষ্ণবানাং মহাত্বনাং। তুলসীমিপ্রতং দদ্যাৎ পিবেম্মুদ্ধ্যভিক্ষয়েৎ।

অতঃপর দেবদেব অগরাথ ইত্যাদি মত্তে অহ্মতি গ্রহণ করিয়া পাত্রন্থ পাদোদকে কুনমূলবারা ইউমত্ত লিখিয়া বিষ্ণোঃ পাদোদকং পুণাং ইত্যাদি এবং ও চরণং পৰিত্রং ইত্যাদি স্থীতাং দদাতু ইত্যন্ত মন্ত্রন্তর পাঠি ক্রিয়া পাদোদক পান ও পর্ব শ্রীরে ও পরিবংরবর্গে প্রোক্ষণ করিবে এবং বিক্ষুদ্ধক বাধুসকলের পাদোদক সম্পাত্রে লইরা তুলসীমূক করিয়া ভাছ্য- ভগবান্ পবিত্রং ভগবৎপাদোদকং পরিত্রং তৎপানিয়া
চমনীয়ং যথা হি সোমেছিতিত্রুতঃ। শাল্যামশিলাভোয়মপীয়া যস্ত মতকে। প্রক্ষেপণং প্রক্ষ্মীত অক্ষহা স নিগদ্যতে। বিফোঃ পাদোদকং পীতং কোটিজন্মাঘনাশনং।
ভবেদইত্বাং পাপং ভূমো বিশ্বনিপাতনাং। হত্যাং হস্তি
য়দভিব্ সক্তুলনীপেয়ঞ্চ তোয়ং পদালৈবেদাং বহুমদ্যপান
ছুরিতং গুর্বিসনাসক্ষং। যত্রাধীনমতেঃ ক্রিতং জুরপুরেহক্ষেত্র্যা নো কিল্পিং শাল্যামশিলান্সিংহমহিমা কোহপোর শোকোত্রঃ। ইতি তীর্থপারণং।

তুলদা। মাপতিং রামমর্চয়িরা যথাবিধি। দর্বপাপবিনিশাঁকো বিজাঃ দাযুক্তমাপ্রাৎ। যা দৃষ্টা নিথিলাঘদংঘশমনী স্পৃন্টা বপুঃ পাবিনী রোগানামভিবন্দিতা নিরদনী
দিক্তান্তকভাদিনী। প্রত্যাসভিবিধায়িনী ভগবতঃ কৃষ্ণদ্য
সংরোপিতা অস্তা তচ্চরণে বিমৃক্তিকলনা তদ্যৈ তুলদার্চা।
ইতি নত্বাগত্য দেবমপরাধান্ ক্ষমাপয়েং। ইতি তুলদার্চা।

দিগেৰ নমন্বার প্ৰঃসর পান কবিৰে। আচাততে আভতিত আছে, ভগবান্
ভবং পৰিত্র ভাঁহার পাদোদক ও পৰিব, সোমবস পানে বাদৃশ উপকাব ও
পবিত্রতা হর পাদোদকে ও ততু লা। বে বাজি শালগ্রাম চক্র সম্পূক্ত প্রপ পান না করিয়া ভাগে করে সে একহন্তার পাশভাগী হয়। বিকুপাদোদক পান করিলে কোটি স্বনার্জিত পাপ সকল বিনই হর কিন্তু ভাইার বিন্দুনা-ত্রেও যদি ভূমিতে পতিত হয় তবে অইগ্রুণ পাপ স্থানা। বাহাব শ্রীপদে অর্পিন্ত ভূলস্বীওপীত পাদোদক হত্যালনিত পাপ বিনাশ করে, নৈবেদা প্রাণাদ গ্রহণ ক্রিলে মদাপান ও গুরুপত্বী সমন্ত্রনিত পাপ বিনাশ করে, নৈবেদা প্রাণাদ তিক্ অর্পিন্ত করিলে দেবধানে বস্তি হয় এইক্রণ সেই শালগ্রাম শিলাক্ষণী ভক্ষা

यारैनर्का भाष्ट्रेकर्काभि अमनर कश्वष् गृरह। त्मरवाद्यांपात्रवाद्यामध्यनामक्षण्याकः। केव्रिट्के देव हात्मीत्र कश्वविक्रमनानिकः। धकरुख्यनामण्डं एरभूवखार धमिन्तः।
भाष्यमात्रनकार्धा कथा भर्याक्षवक्षनः। भद्रनर क्रक्षणाभि
विश्वाक्षायन्याव । केट्रेक्किंशो निर्धाक्रक्षा द्यापनानि ह
विश्वरुश निश्वरास्थार्था देव खीव् ह क्रृ ब्रज्ञायनः। कथाणाववन्ते भाष्य भत्रक्षणा भत्रखिः। अभौण्डायनरेकव कर्यावाय्
विद्याक्षण्य । भरको । त्योत्याभिकाञ्च क्रिन्दिक्षण्य कर्यावाय्
विद्याक्षणः। भरको । त्योत्याभिकाञ्च क्रिन्दिक्षण्य कर्यावाय्
क्रिक्षणास्यानाक कलागीनामनर्भाः। विनिधुक्रावणिक्रिम् खानार व्यक्षनानिह। भृष्ठीकृष्णामनरेकव भरवयायिकः

आकः भव जुलनी माशका अर्गानं ३ ३ वेर १ छ । जूलमानावा यथाविधि नामी-कारत्व आछना कदिरन जरमण्या द्वाश व्या । जूलमीन मर्गरन निविध भाषा विनाम, म्पर्गरन नेवीरद्वद पविद्या, नमझार्व रवागक्य व्यवः आख्रियस्य यम्बद्ध निवृत्ति हम । आत्र अगवारन्त भाष्णामा आर्थि ३ वेरेटन मुक्ति व्यानन करम आउव्यव माथकव्यम्बद जूलमी व्यक्तात्व नमञ्च कानिर्द । जूलमी वस्पनािष ममा-भिष्ठ हरेटन अगवरमिश्वशास अनुसावाक वािष्ठ नर व्यकात्र अपतार्थव समा

অতংপৰ দানি শং প্ৰকার অপরাধ অভিহিত কইতেছে। দেবভার গুছে
শক্ট বোটক প্রাণ্ড বানে আবোহণ করিয়া এবং পাছকাদি লইরা প্রবেশ
করা, দেবভা দর্শনে ভদ্যে প্রণামীদা করা, উচ্চিষ্ট দ্রাদ্বারা ও আশৌচ
সময়ে দেবভার অর্চনা করা, এক হত্তে প্রণাম করা, ক্রডাঞ্জলি না হইরা
দেবভা প্রদক্ষিণ করা, দেবভাভিমুখে পাদপ্রসারণ, উচ্চ আসনে উপবেখন,
শর্ম, ভোজম, মিথাকিগা বলা, উচ্চবাকা, পরস্পর জন্না, ক্রম্মন, মুদ্ধ
অল্লীল বাকা কলা, অধোবাব্ নিঃসরণ করা কালাকে ভিরহার ও প্রশংসা
করা, জীলোকের প্রতি জ্ব বাকা বলা, মানসিক কটের গোপন করা,
পরের নিশা ও প্রদিংগা ভ্রাণজি থাকিলে আবেছকীয় মুণা উপটার না দেওয়া

वाननर । खर्डी भीनर निकल्खांखर एनवर्णानमनः छ्ला।
भनताशाख्या विकाद क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक

গজাস্যাদিত্যপঞ্চাস্যশক্তিসিংহাস্যরেপবান্। মম কত্যে-ন সর্বাত্মা রামঃ প্রীণাতি চিছপুঃ। সত্যপি ভেদা-বগ্যে নাথ তবাহৎ ন মামকীনস্ত্য। সামৃদ্রো হি তরঙ্গঃ কচন

অনিবেদিত দ্রব্য ভক্ষণ, এবং শেইকালে বেই ফল হয় তাহা অর্পণ না করা,
ব্যঞ্জনাদি উপকরণ দ্রব্যের অগ্রভাগ অল্যেন্স কার্য্যে গ্রহণ করিয়া অবশিষ্ট দেবতাকে নিবেদন করা, আসন সমূথে উপস্থিত না করিয়া অভ্যাগতকে অভিবাদন করা, গুক্ষসন্নিধানে মৌনাবলম্বন, নিজের প্রশংসা এবং দেবতা নিন্দা করা এই রপেছাজিংশৎ প্রকার অপরাধ জানিবোজতঃপর অপ্রাধ সহপ্রাণি ইত্যাদি মন্ত্র পাঠ করিয়া ভ্যিতে দণ্ডবৎ প্রণাম করিবে।
আনস্তর কৃষ্ণ প্রণামী ব্যক্তির প্রশংসা কথিত হইতেছে। দশাম্বমেধকারী
ব্যক্তিও এক্ষন কৃষ্ণ প্রণামী ব্যক্তির ভূন্য হইতে পারে না, বেহেতু দশাম্বিধী ব্যক্তির পুনর্কার জন্ম হয় কিন্ত কৃষ্ণপ্রণামীর আর ভ্রমাতনা ভোগ
করিতে হয় না।

অমন্তর শব্দশাত্তে জল লইয়া দাধুবা সাধু বা কর্ম ইত্যাদি পাঠ করিয়া
- দেহতার দক্ষিণ্ডক্ষে কর্ম সমর্পণ করিবে। অতঃপর, গলাভাদিতা ইত্যাদি

সমুক্রো ন ভারলঃ। সোহহৎ দাসোহমিতি বা বুদ্ধিসান মলা দৃঢা। কণ্মজিন সবধ্যেত হাকর্তৃত্বাচ্চিদেব সং। মনেবাহ-মহঞ্চ সং স্থিনাত্রবপুর্ধর। আব্যোরস্তরং প্রান্তিন শ্যম্বা-জ্ঞাবলাত্তব। ইতি তথিবাত্মার্পবং।

ছয়োপভুক অগ্রন্ধবাদোলঙকার চর্চিতাঃ। উচিছকী ভোজিনো দাসান্তব মায়াৎ জ্যেমহি। প্রপন্ধ পাছ মামীশ ভাতং মৃত্যুগ্রহার্ণবাৎ। ইতি সংপ্রাথিতে দেবে দতামাশিষ্ম্বন্। মহাপ্রসাদইভূয়কা পরমপ্রীতিপূর্বকং। তচ্ছেযগন্ধপুষ্পানিঃ সম্যাগান্তানমহ্যেৎ। ইত্যাশী গ্রহং।

ধ্যাত্বা বানং জপেনান্তং তিঠেদ্যাননানা হাদ। গুছাতিগুহানব্রেণ পূজাং দেবে নিবেদ্যেত। ভিক্তানং ক্রীয়াহীনং
মন্ত্রীনং রমাপতে। মৃৎপুজিতং ম্যা বাম প্রিপূর্ণং তদস্ত্র
মে। ইতি পুজ্পাঞ্জিলং দ্রা সংস্ত্রান্বং হনে। ভক্তা
পাঠ ববিদ্যা পুনরূপ আর্দমর্পণ কবিবে। গজাত ইচাদি মনাই। গলেশ,
দিনেশ, ভূতেশ, শক্তি ও সিংহ শুধ প্রভূতি দেবগণ সমন্তই যাহার প্রতিমূত্তি পেই ভগবান প্রীরাম্চক্র আমাব এই অচ্চনাতে প্রীন্নাভ কবন। হে নাই।
স্থাবৃত্তিতে ভেদজান থাকিলেও ভোমাবই আমি কিন্তু গুমি আমাব নও সম্প্রেরত্বক কিন্তু সমুদ্র কধনত গ্রক্তের বলা মাধনা। তেবাতি আ্যাকে প্রভূত্তিক অ এর কিংবা প্রভূব দাস ব লবা জ্ঞান কবে শাহার কথন ও কর্মবন্ধহন্ধনা স্থাভাবং মুক্তিশাত কবিয়া বাকে। হে চৈত্রুমর জগদীখন। তুমিই
আমি, আমিই ভূমি কিন্তু আনাত্র বে প্রান্তিবণ্ডঃ ভেদজান হন্ধ ভাচা
ভোমাব আদেশে বিন্ত হউক।

অতঃপৰ ঘ্যোপভূক ইত্যানিধারা প্রার্থনা করত দেবভাতে অর্পিত পুলাদিবাবা মহাপ্রদাদ এই বলিণা প্রমানন্দপূর্ক আশীকাদ গ্রহা করিয়া নিবেদিত মাল্যাদিধারা বিভূষিত হইবে।

অনস্তর একাগ্রচিত্ত হইয়া প্রভূকে চিস্তা করিয়া ওদীয় মত্র লগ করিয়া গুড়াতি গুড়া ইড়ায়িশ মত্রে লগ সমর্গণ করিয়া পুশাঞ্জণি লইয়া ভজিতীনং

## वीत्रार्कनहिंद्ध हैं

সংশোধিতং স্বান্তং বিশ বিশ্লামহেতবে। প্রতিষ্ঠিবং পাছকে দ্বা সাক্ষম্পাদরেজনিং। প্রাণায়ামং ষড়ক্ষঞ্চ কুড়া মুদ্রাং বিশক্তনিং। শহংরামোন চাক্ষোহাম মন্ত্রমেত তুলীরয়েং। ইতি বিশক্তনিং। শাল্পানং সভতং রামং সম্ভাব্য বিহ্নরেড যে। ন তেবাং ছক্ষতং কিঞ্চিদ্যুহতোখা ন চাপদঃ। ইতি শ্রীমন্মুক্লবন প্রমহংস পরিব্রাক্ষকাচার্য্য শ্রীচরগপক্ষজাশিয় শ্রীখানন্দবন বিরচিত্যাং

≬চরণপক্ষজশিষ্য শ্রীআনন্দবন বিরচিতয়াং রামার্চন—চন্দ্রিকায়াৎ তৃতীয়ৎ পটশঃ।

ক্রিরাহীনং ইত্যাদি মন্ত্র পভিয়া অর্পণ কবিবে। অতঃপর ভক্তা। সংশোধিতং স্বাস্তং ইত্যাদি পাঠ কবিয়া পাতৃকা প্রদান পূর্বক অঙ্গাদিদেবতার সহিত প্রভূকে উত্থাপিত করিবে। প্রাণায়াম ও অঙ্গভাসাদি কবিয়া বিস্ক্রনী মুলা কবিয়া বিসক্রন কবিবে। যাহাবা অবিবত আত্মাকে রানময় চিস্তা করিয়া কাল্যাপন কবে তাহাদিগকে পাপ ও বিপদের ভাজন হইতে হয়না। তৃতীয় পটল সমাপ্ত। यर्छ निनविज्ञारम जू क्र्यां श्रां क महाम्थान्। रेनरेवा रहारमन यक्षः माद् र्वाञ्च वनिमानजः। रेभर्ता विद्या-म्रणारमन रेभरत्वन वनिमायन।। किकिम्म श्रामामा जर्भनामा ह्यार्वियः। न्यरक्काश्जिथिमरकारमा ज्ञा ज्ञानमञ्ज्ञा। स्वायरका रवमकभार भूमाग्भिरमन वा। हेजि वर्षार-मक्जार।

ইতিহাসপুরাণাভ্যামংশং সপ্তমকং নয়েং। প্রীমন্তাগবতং তত্ত্ব বিশেষেণাদরাৎ পঠেং। যৈন প্রুতঃ ভাগবতং
পুরাণং নারাধিতো থৈঃ পুরুষঃ পুরাণঃ। হুতঃ মুথে যৈ
ন ধরামরাণাং তেষাং গতং জন্ম রখা নরাণাং। চরিতং
রঘুনাথস্য শতকোটিপ্রবিস্তরং। একৈকমক্ষরং পুণাং মহাপাতকনাশনং। অস্তঃ গতোহিপি বেদানাং সর্বাশাস্তার্থবিদ্যদি। পুংসোহক্রতপুরাণস্য ন সম্যুগ্তিদর্শনং।
বেদার্থাদধিকং পুণ্যং পুরাণার্থক ভাবিনি। পুরাণ্মভ্রণ

অতঃপর দিবরৈ ষষ্ঠ হাগ উপস্থিত হইলে পঞ্চ মহায়জ্ঞ কবিতে হয়।
দেবমহায়জ্ঞ হোমসাধ্য, ভৌত মহায়জ্ঞ বলিদানপাধ্য, শৈল মহায়জ্ঞ ব্রাহ্মপজ্যেলন অথবা পিতৃপুক্ষের অর্চনা ও তর্পণ সাধ্য, নৃষ্ক্ত আড্থি সংকার সংধ্য। বেদাধ্যরন কিংবা পুরাণ পাঠের দাম ব্রহ্ময়ক্ষ জানিবে।

অনন্তর সপ্তমভাগ উপস্থিত হটলে ইতিহাস প্রাণাদি পাঠ করত কাল যাপন করিবে, বিশেষ শ্রীমন্তাগবত একান্তই সাদরে পাঠ কবিবে বেহেত্ ভাগবত অবশ, প্রাণপ্কর প্রুযোজনের আরাখনা ও রাদ্ধণ দিগকে ভোলা বস্ত প্রাণ নাহারা না করে ভাহাদের করই নিম্পাকথিত হইয়াছে! শ্রীরাম চরিত পাঠেবভোভ প্রাণ বেদাদি পাঠঅপেকার শতকোটি অধিক মাহাত্ম্য, শ্রীরাম চরিতের একটি একটি অকর পাঠে অনীম পুণ্য অব্যেও মহাপাডক বিনাশ হয়। স্মপ্ত বেদ ও অভোভ নিধিলা পাছের পারহর্মী হইয়াও বদি কৃষা তিৰ্যাগ্যোনিষ্বাপ্নাং। ন বত্ত বৈকৃষ্ঠকথা স্থাপগা ন সাধবো ভাগবতান্তদাশ্রমাঃ। ন বত্ত সংজ্ঞানখান্মহোৎ-স্বাঃ স্থানেশাকোষ্পি ন যাতি সেব্যতাং।

## ইাত সপ্তমভাগকুত্যবিধিঃ।

ভাগেৎকমে উপাদীত সন্ধ্যাং শ্রীরাঘনীং তথা। কুত্যাগিহোত্রং বিধিনা ততো হোমং সমাপয়েৎ। ন্যাসং বড়ঙ্গকং
কুত্বা প্রাণায়ামপুরঃসরং। সকুদভ্যর্জ্যনী রাজ্য প্রার্থমেজ্যানকীপতিং। বলীয়দা পদা স্বামিন্ পদবীমবধারয়। আগচ্ছ
শরনাগারং দীতয়া সহ রাঘব। পর্যান্তে ভিলকপ্রশস্তফলকে
ভোগীক্রচিত্রাঙ্গকে স্বচ্ছপ্রচ্ছদভাবুকে মৃত্দিরং স্থানোপধানাদিকে। উদ্মালৎকুদশীলয়া দয়িতয়া শ্রীসাতয়া সৎ
কৃতে শেতে নিতামগণ্যপুণ্যকলদ শ্রীকোশলেক্রো নৃপঃ।
ইতি শয়নোপাসনা। ইত্যেইমাংশবিধিঃ।

সায়ৎ প্ৰাত বিবাতীনাৎ শ্ৰুত্যক্তমশনৎ ভতঃ। উচ্যতে রামসন্তুটিন্ট্য অগ্নিহোত্তসমৎ প্রিয়ং। আন্ত্রপাদঃ শুচিভূবি

भूतांगांध व्यवगढ ना क्य करव कांगव ममाक ध्येकात खान करणाना वि वासाय। दिनार्थित खान व्यवभाव भ्रेतांगांध खान ममिक क्या, भ्रेतांग्य ध्येकि क्या, भ्रेतांग्य ध्येकि व्यक्ति कांकि क्यांकि क्यांकिक क्यांकि क्यांकि

অন্তর দিবার অউমভাগে প্রীরামচজের সভ্যা কবিরা অগ্নিছোত্র করিয়া কলোম সমর্পিবে। প্রাণাধাম ও অক্সাসাদি কবিয়া একবালু মাত্র প্রভূব একিন্নেত্তর নীবালনা করিয়া বলীবসা ইত্যাদি সুলোক্ত প্রার্থনা মংস্ক প্রার্থনা করিয়া প্রশোধাস্থাসমা সম্পিবে। অনীয়াৎ সন্তত্ শুভং। উপবাসাৎ পরং হ্বাং হ্বাং পরম্বাচিতং। ম্বাচিতাৎ পরং নজেং পি রং দেবসা চজিপঃ। তত্মাৎপরেশসন্তব্টা বিপো নজেংপরো ভবেৎ। বিফুলজো বিশেষেণ দিনপাপাপফুরুয়ে। অন্ধং দৃষ্টা তং পুণমেৎ নিত্য-মত্মাকমন্ত্রিভ। তেলোহসীতি জপেমন্ত্রং গায়ত্রা তীর্থ-বারিণা। সভাৎ ত্রেনেভিমন্ত্রৈঃ পোক্ষমেদরাংল। ধর্ম-রাজায় চিত্রায় চিত্রগুপ্তায় বৈ বালং। অন্নীয়ামন্তরাজেন স্বান্ধং সপ্তাভিমন্ত্রিভং! তেজস্বী স্কৃত্যঃ শ্রীমান রোগায়ুক্চ জায়তে। অনং ব্রন্ধা রুগো বিফুর্ভোক্তা দেবো মহেশবঃ। এবং জ্ঞাত্বাতু যো ভূঙ্জে সোহন্দাবৈন লিপ্যতে। অন্তক্ষরঃ। এবং জ্ঞাত্বাতু যো ভূঙ্জে সোহন্দাবৈন লিপ্যতে। অন্তক্ষরং ব্রট্ কারস্বং স্বাহা ত্বং স্বধেতি চা ত্বোপভূক্তপ্রগ্রন্ধ বাসো-

থিজাতিসকলের শ্রুতি নিকাচিত ভোলন করিতে ছ্রু অতএব প্রভ্রুর প্রিয় অমিহোল সদৃশ ভোলনাম্প্রনি করিবে। পাদপ্রকাণ নাদি করিরা শুদ্ধ চিত্র হইয়া সন্থত সামগ্রা ভোলন করিবে। উপবাদে অনক্ত হইলে স্বৃত্র তদপক্তে অবাচিত ভোলাবন্ত রাজিতে ভোলন করা বিধের টেহাই ভগবানের প্রীভিদায়ক জানিবে। বিফুভক্ত সাধু সকলেব দিনকৃত পাপক্ষরার্থ নক্তরত অর্থাৎ রাজিতে ভোলন করা একান্ত বিধের। ভোলা বন্ত উপস্থিত হইলে নিত্যমন্মাকমন্ত্র এই বলিবা প্রণাম করিয়া ওঁ তেলাহিল শুক্রমন্য মৃত্যসি বামনামানি প্রিয়ন্দেবানামনানৃষ্টং দেব্যক্তনং এইমন্ত্র অনের উপরি অপ করিয়া গায়ত্রী ও সভাং হর্তেন ইত্যাদি মন্ত্র পাঠ করত তীর্থেদকলারা প্রোক্তিত করিয়া ওঁ ধন্মরালায় নমঃ, ওঁ চিত্রগুণ্ডার করিয়া মন্তর্যার নামঃ ওই মন্ত্রে উক্ত করিয়া ওঁ ধন্মরালায় নমঃ, ওঁ চিত্রগুণ্ডার করিয়া সাভ্যার অভিমন্ত্রিত অনাদি ভোলন করিলে বলবান্ ক্রিয়া মন্তর্যার বাভিষার অভিমন্ত্রিত অনাদি ভোলন করিলে বলবান্ ক্রিয়া মন্তর্যার বে বাক্তি ভোলন করে সে অন্তর্যার দেহবার প্রিয়ার বাক্তিয়ে না।

नकात्रविक्तिकाः। উव्स्किटकाव्याना मात्राकुत मात्राः करत्र-ষৰি। জপদ্বেবৎ ভগৰতঃ জীতীর্থৎ তুলদীযুত্ত। অমূতোপস্ত-রণমসীত্যগ্রতঃ প্রাশয়েততঃ। মধ্যেত্র বরুণ কুবের বম্দিগ্ গতানি কুণানি। অস্বাহার্য্যাহ্বনীয় গাহ পত্যসভ্যাবসভ্যাভি-ধানা বহুলঃ।ওঁ গার্হ পজ্যে পুৰানার স্বাহেতি হিরণ্যরা কৃষা প্রা-ণাগ্নিছোত্রং দ্যাৎক্রিকাঙ্গুক্ততঃ ক্রমাৎ। অবাহার্য্যে ত্রপানার স্বাহেতি গগনাশ্রুচা। কনিষ্ঠাঙ্গুষ্ট্যুমেন বিভায়ামাত্তিং स्ति । वानायाहवनी (यह त्यां) त्रक वर्गाक्का स्थी । मधार्मा-ক্ষষ্ঠ বেংগন তৃতীয়ামাহুতিৎ হুনেৎ। সত্যে তৃদানসংজ্ঞায় क्षवर्गका जथा। उड्ड नाक्ष्रियारान हजूबी माङ्डिए इरनए। আবসত্যে সমানায় অপ্ভাবর্ণয়া শ্রুচা। জুত্যাদস্লীভিস্ত সর্বাভিঃ পঞ্চমাত্তি । নৈবেদ্যশেষং তুলদীবিমিশ্রং বিশে-ষতঃ পাদজলেন বিষ্ণোঃ। যোহশাতি নিতাৎ পুরতো মুরারেঃ পার্রোতি যজাযুত কোটিপুণ্যং প্রতিবিদ্ধং ন চামী-য়াৎ পবিত্তমণি নাম্বতং ৷ হন্তাদৃতে হয় নান্যেন নাশন্

ওঁ অক্তর্গনি ভ্তানাং ইত্যাদি এবং উচ্ছিট ছোজিনোদানা ইত্যাদি পাঠকরত: ওঁ অমৃত্যেপজনগদনি এই বলির। তুলনী সম্পূক্ত জল পান কারবে।
ক্ষম মধ্যে পূর্বাদি চতুর্দিনে ও মধ্যস্থানে হিত পক্তুওে অরাহাধ্যাদি
পক্ষাথি মক্তমান করিয়া গার্হ পিত্য অবিতে হিরণ। নামক তদীর জিহ্নাতে
ওঁ প্রাণার স্বাহা এই মরে কনিটা ও অসুঠ অসুলীবারা অর্থাহণ করিয়া
হোম করিবে, অহাহার্য বহ্নির গগনাজিহ্নাতে অনামিকাও বৃদ্ধাসুঠের যোগে
ওঁ আপনার স্বাহা এই মরে বিতীর আহতি প্রদান করিবে, তৃতীর আহতভিতে আহবনীর অধির রক্তবর্ণ। বিহ্নাতে মধ্যমাস্থি ও অস্ত্রির যোগে ওঁ
বাানার স্থাহা এই মরে অরাশন করিবে। চতুর্থে অবি স্কা, কিহ্না ক্ষা
ভূজনীও অস্ত্রির বাবে ওঁ উধানার স্বাহা এইমধ্য অহিতি বিবে। পঞ্চাম

পাত্রস্থিতং পিবেং। দক্ষিণস্ত পরিতাজ্য বামে নীরং বিধা-পরেং। অভোচ্যং তদ্তবেদনং পানীয়ঞ্ স্থরাসনং। তৃঞ্জো দণ্যাদমশেষং ভূমৌ তুর্গতভ্প্রয়ে৷ যত্র কচন সংস্থানাং কু ত্রিফোপহতাত্মনা?। তুর্গতানাং ময়াদ্তমক্ষ্যামুপ্তি-ঠ তাং। অমৃতাপিধানমদীতি পিদধ্যাভীৰ্বারিণা। অর্দ্ধং তদসুভূভাগে দদ্যাদুর্গতত্প্তরে।সম্যাগাচম্য দক্ষাজ্যেরপুঞ্ থারি নিঃ'ক্পেং। অঙ্গুষ্ঠমাত্রঃ পুরুষোংগুষ্ঠঞ ন্যান্ডিতঃ। ঈশঃ সর্কাস্য জগতঃ প্ডু: প্রীণাডু বিশ্বভুক্। ততঃ সংস্মৃত্য সন্তুটঃ পুষ্টিনামিউদেবতাং। সন্নিকৃটৈউব্দৃতঃ শিক্টেজিপে-দলণতেম নৃন্। অলপতেংলদা নোধেকন্দীরদা ভাগিও। পূাপদাতার ভার্যউজ : নো ধেহি বিপদেশক কুষ্পাদ। অপ্রত্যেক বিভ্রানলন্দ ভ্রুং ন্রারং জরয়ত্বনেষং। হ্রথক মে তং পরিণামসম্ভবং দতামরোগঞ্জ স্থায়ুরস্ত । বিফুঃ সমত্তে তিহেষদেহদেহী পুধান ভূতে। ভগবান্যগৈকঃ। সত্তোন তেনার্মশেখনেত দারোজনং মে পরিণামমস্ত্র। ভক্ষেদ্পি

অবসভা ৰহিব অপ্ৰভা ভিহৰাতে পঞ্চাফুলিং বোগে ভূঁমমানাৰ স্বাহা এচ ময়ে ছোম কবিবে। যে ধ্যক্তি বিষ্ণুৰ পালে।দক্ত ভুগ্যীমিলিক নৈবেদ্য ( व्यक्तिक ( क्षेत्रक करत (म अगुक्तका कि यक्त का कनना करत । কোন ও প্রাকার অভাতি জার ভোগন কবিবেনা। ওচি কইবো ও প্রতাজিতি হইলে অগ্রাম্ জানিবে। হস্তপানের উদ্ভ এবং বামভাগাঁহত জল 'অপের। উক্ত নিয়মের অনুথাকৃত জল মদোর তুলা এবং অয় ও অভোজা ভানিবে। ष्यकृत्य (खालनावनिष्ठे प्रमायक्त नहम् एक क्डन मरकानाः देखानि मान ছুৰ্বত বাজিলিগের ভ্পাথ ভূমিতে বলিখদান কবিয়াওঁ অনুভাপিধান্দাস এইমস্ত্রে অভিমন্ত্রিত তীথোদকের অর্থ ভূমিতে কেপণ এবং অদ পান্ कंतिद्व । अन्वत आहमन अ नाम शकालन करिता अनुष्ठमातः भूवव वेखाहि मध निष्यो अञ्चल पात्रन करिया छहे छि १३१ वर्ष नायुनियात न १६७ व्यवसाय

ভাস্বং প্রাদাজ্জানকীপতে:। শিকৈরিটক পেদিব্যং ভগবনামসকলং। ইতি পুংগায়িছোতেং।

মৃতি: শৌচবিধিং বিধায় চরগৌ পুক্ষাল্য চোপম্পৃশেদিঃসংশ্বত্য জগৎপতিং কুলপতিং জ্ঞীকোশলেন্দ্রং নৃপং। প্রের্ম্যা
নিমিষং শিবন্প্রিয়ন্ত্রধাধারায়মাণাং দিবং বস্ত্রেণাজ্য বুগং
পুমৃজ্য শয়নং ত্বামদ্য সদ্যঃ স্বপেৎ। রামৎ ক্ষন্মং হনুমন্তং
পদ্মনাভং বকোদরং। শয়নে যঃ স্মরেমিতাং স হঃস্বপ্রং
ন পশ্যতি। মূলং শ্বত্বা জপমাজরক্ষাং বিদ্বোপশান্তয়ে।
শুর্বর্থেতি পুনঃ পদ্যং স্ত্রিয়া ব্যত্তঃ স্বপেৎহর্ষং। ঋতুকালাভিগামী যঃ স্বদারনিরতশ্ব যঃ। স সদা প্রক্রানারীই বিজ্ঞেয়ঃ
স গৃহাপ্রমী। ঋতুঃ বোড়শ্যামিনাশ্বতস্বস্তাহ্ম গহিতাঃ। পুত্রস্তাহ্ম বুয়ান্ত অযুগ্রাঃ কন্যকাপুদ্রঃ। ত্যক্ত্রণ চন্দ্রমাণ তুইং
ম্বাং মূলং বিহায় চ। শুচিঃ স্নিবিশেৎ পত্রীৎ পুনামক্ষে

হয়ত নোখেহি ইত্যাদি মন্ত্ৰ পাঠ পূর্বক ভোগন করিবে। অন্তর প্রীরামের প্রসাদিত ভাষুলাদি ভক্ষণ করিয়া আমীয় শহলেব সহিত ভগবানের মন্ত্রলমর নামকার্তন কবিবে।অতঃপব মৃত্তিকা ও জলদারা পাদদরের শৌচ ও প্রক্ষালন করিয়া আচননান্তে, জানকীব সহিত বিরাজমান জানকীনাণকে শ্বরণ করিয়া শয়ন কবিবে। যেব্যক্তি শয়ন সমরে রাম, কল, হয়মান, পল্লনান্ত ও বুকোলয়েব শ্বরণ করে গে ছঃম্বপ্রদর্শন করেনা। অতঃপর মৃলমন্ত্র শ্বরণ করে বিরাজ্ঞাবকা করিয়া শুর্করে তাজরাক্য ইত্যাদি পাঠকরিয়া সন্ত্রীক শয়ন করিবে। যে ব্যক্তি বাছুকালে পত্নীকে গমন কবে তাহাকে পুণাবান গৃহস্থাক্ষমী বলাকয়। গুরুকাল যোড়শরাক্রি পর্যান্ত্র, ভল্লাধাে প্রথম ৪ রাত্র গহিত আনিবে, অবলিষ্ট দাদশ রাজির যুগ্যরাক্তিতে অর্থাৎ ৬, ৮, ১০, ইত্যাদি দিনে স্ক্রে প্র সভিত অর্থা রাজিতে সক্ষমে কল্পা সন্তর্ভি কয় জাগনবে। এই বাদ্রণ রাজিতে অপ্রক্রম, মূলা ও ম্যা নক্ষত্রের বর্জন করিবে, বিশেষতঃ পুরুষ বাচক যে দক্ষ নক্ষত্র ভাহাতে গুলি হুইয়া স্ত্রীসংস্কর্ণ করিবে, বিশেষতঃ পুরুষ

বিশেষ 🕏 । তচিং পুত্রং পুসুয়েত পুরুষার্পুবর্তকং । ইত্যাদিমহাদিম্নি এণীতশান্তপ্রশতে পথি বর্তমানঃ। न बाबाटल क्रःथनकर्माशादेगः श्रीतामहत्त्रमा श्रानः न आहि। ইতি শরনবিধিঃ। ইতি রাত্রিপ্রথমবাম কুত্যং।

व्यथ औयज्ञताकमा भूतम्हत्रनमूहारङ । विना (यन न मिकः স্যান্মজ্যো বর্ষশতৈরপি। গুরোম জ্ববরং লব্ধা সর্বাভীউ-প্রদং বুধঃ। পৃথবিৎপূজয়োমতাৎ জপেচ নিয়তবতঃ। ষট্সহত্রং সহত্রংবা শতং চাটোত্তরং শুচিঃ। এবমা-রাধিতো রামো যদা ভক্তং প্রশোধয়েৎ। পুরশ্চরণক্লত্যায় পূর্ববেবা বিধীয়তে। যথাশক্তি নিয়ম্যান্তর্বহিরাত্মান-মাজাবিৎ। পুরশ্চরণবৎ দর্ববং কুর্য্যাদ্ধোমং বিহায় তৎ। **७ इ: मक्ष्यः क्**र्सी इ शूनन्छ त्र ना पतः द । हो छ शून्त क्र छ। र । ডতঃ দক্ষর্য কুববীত পুরশ্চরণমাদর। । নিরন্তরাক্ষ রেণৈব নিয়মাত্মা দৃঢ়ব্রতঃ। শৈলাগ্রে জলমধ্যে বা ভীরে

পুল জাঝিৰে ৷ এই প্ৰকাৰ মাননীৰ মনু আংচুতি মহাঝদিবের পশিতি श्य रम्यांकि व्यवस्थित करत रम क्यालाल वह मा इहेव। बामलम्याश इस् ষ্মতঃপর মন্ত্রবাজের পুরশ্চরণ সম্বন্ধে লিগিত ই. ছে। পুরশ্চংশ বাতিরেকে শতথর্ষেও মন্ত্রামান্। গুড় হটতে মনোংভীটলা মন্ত্রহণ কবিয়া নিয়মামুদাবে পুষক্ষণ অর্চনা ও অস্টোতঃশত অধবা मध्य व्यवता यहेमध्य अन कतिया निष्ठा कार्या मधानन कविट्य, बहे खेकात्र कावायनाएउ (यह मुभन्न श्रीवायहत्त्व श्रीष्ठ वहा छिन्द छेट्ड क बना है (वन, तिहे मम य भूवण्डवान्त शृक्षं कर्खना बागां मदल आवस्य করিবে। শক্ত মুশারে আছরিক ও বাহা নিবম দক্ত অর্থাৎ হোম জির भुत्रक्तत्राण (य मक्त अपूर्वान कविट इय मिहे मक्त अपूर्वान कविट्या, . जनखत महत्र, करिया, भूरक्षत्रन अदिश्व कात्रत्र । नीव लाकित मरमर्ग

বা লণণাপুষে: । নদীতটেহখথসুলে রম্যে বিশ্ববৰ্ষীতবৈ।
প্রত্যেওসুখাঃ শিণস্থানে র্যলাদিবিব জিনিত। অখপবিজ্ঞত্ব লদীবনে পুজ্পান্তরাবৃত্ত। গবাৎ গোঠেবু তীর্থেবু পুণ্যকে-ত্রেযু শদ্যতে। ইতি স্থানানি।

বৈদিকাচারযুক্তানাং শুচীনাং শ্রীম হাংসতাং। সংক্লিস্থানজাতানাং ভিকাশীলাগ্রজন্মনাং। ভূঞ্জানানাং হবিস্যান্ধং শাকং বাবকমেব বা । পয়ো মূলং ফলং বাপি ঘদ্যজোপপদাতে। ইতি গৌতমীযো। চরুমূলফলকীরদ্ধিভক্রামশক্তবঃ। শাকঞাউবিধং চান্ধং সাধকস্যোচ্যতে
বুধিঃ। ইতি ভক্ষানিয়মঃ।

লবণঞ্চ পলকৈব কারং কোন্ত্রং রসান্তরং। মাষমুদ্রণ মুরাদ্যান্ কোন্ত্রাংশ্চণকাদিশি। অসম্ভাষণমন্যোহনাঃ বর্জ্বঃ মেদন্যপূজনং। বিনাশ্রমোচিতং নিত্যমর্থ নৈমিত্তিকঞ্চ বং। জীশ্দপ্তিত্রাভ্যনান্তিকে। চিছ্ফি:ভাজনং। অসতঃভাষণঃ

বর্জিত পর্বাতশৃক্ষে, জলমধ্যে, লবণস্মুদ্রেব তীরে, স্বদীতীরে, অখণ মূলে অথবা মনোত্র বিভবনে, নানাপুপাসমাকীর্ণ গুল্গীকাননে, গোঠে অথবা তীর্ণস্থানে পুরশ্চরণাদি কাষ্য কবিবে। ইতি স্থাননির্বা।

অতঃপৰ বৈদিকচোচাৰৰত মহামাদিপের ভকাৰত সকল অভিহিত হিলভেছে। গোতমীয়ে নিধিত আছে, যে হবিনাল, শাল, যাবক, তল্প এবং দল মূলাদি বেজানে বাগা ঘটে তাগাল ছাবাই নিয়ম কলা করিনে। এবং চক কল, মূল, তৃগ্ধ, দ্ধি শালাল, শক্তু (ছাতু) এবং শাক এই আই প্রাকার ভোজন সাম্ঞী সাধকের বাবহর্তবা।

সংগ্রতি বর্জনীযের নির্দেশ করিতেছেন। লবপ,মাংস, ক্ষাব, মধু, মাব, মুদগ, সম্বৰ, কৌজৰ, এবং বৃষ্টাঞ্জ নমন্ত ভোজন কবিবে না। মাব অভোজ আন্তাৰ, অঞ্জ বভার অন্তনা এবং নিডা ও স্বীয় সাম্রম বিধিত কার্যা, বাতিরি कांना छात्रनर अतिवर्ण्डारार। ठारकम रेव कन रर रेक का-ভাষণং পরিবর্জ্নের। সত্যকালি ন ভাষেত জপহোমাণি- ' কর্মান্ত। বাঙ্মনঃকর্মভিন্নিতিং নিস্পৃত্যে বনিতাদিযু়। বর্দ্ধবেদ্গীতবাদ্যাদিশ্রবণং নৃত্যদর্শনং। তাম্বলং গন্ধলে-পঞ্ পুষ্পারণমের চ। মৈধুনং ভংকথাশাপং তদ্গোষ্ঠীং পরিবজ্জ রেং। কোটিল্যং কৌরসভাঙ্গমনিবেদিভভক্ষণং। चनक्रज्ञिक् काक व्यवस्थानिकः। जादबर्कक्षानः স্থান্ধামলকাদিকং। ইতি বর্জ্যানি।

স্বায়াচ্চ পঞ্গব্যেন কেবল।মলকেন চ। শ্রুতিস্থাতি-**পুরাণোক্তমন্ত্রৈঃ সায়াদনন্তবং। শক্তো তিবারকং স্নান** মন্যথা দকুদাচরেৎ। ইতি স্থান নিয়মঃ।

देनिमिंखिक क्या वर्ष्वनीय चानित्त । ही, शृष्ट प्रिक्त, मण्डाव विशेन स ना हु-কেব স্প্টাল ভোজন কৰা নিষিত্ৰ এবং মিগা। কথা ও সন্য প্ৰান্তাৰ বজানীয়, क्षानित्व, दशोष्टिमा अभिव द्यांश कवित्व । सभ दशमानि कार्या मृह्य श्राह्य कवां अभिविद्या कादमाना वाटका विषय म्याहा मुख इहेरव । मी व वाहा किमानन मुका पर्यम कायां ग (काञ्चन कल्याकृत्त्रभग दशुल्यावण वर्ष्यमात्र काचित्य । क्को मन, जिविद्याद शाष्ट्रात अ तमने विगत्यव मभाष्ट्र शाल कविद्य । ज्यानक ৰাবহাৰ. কোৰ, তৈল বাবহার ও অনিবেদিত ভক্ষণ বজ্জীয় এবং সঙ্গলান্তি-बिक कार्या, शाख्यक्तानि, उक बरत यान अ शक खवानि पारा मान अवश्व ब्रम्भिकारी विविद्य कावित्य ।

यान निषय। अध्यक्त अध्यक्त । अध्यक्त अध्यक्त विषय । क्षिण्यि भगारना स्व अधनार्व कविया यान कविता। लाउन्द्र नाम खे कुन यान कित दाव, अभएक स शत्य बक्वाव कर्छवा।

वर्ष्ट्र मर नवरकार्ष्ठस्य कृषा कृषाकृष्टिः निर्ध्य स्व स्व स्व क्रिये कर्मान वर्णान् निर्वाण स्व निर्म् ह । कामीन वर्णान् निर्माण स्व क्रिये निर्म् ह । कामीन वर्णान् निर्माण कर्माण कर्मा प्रतासिनः । जन्माणि वर्णा कावरणार्थः वर्णा कावरणार्थः वर्णा कावरणार्थः क्रिये निर्माण क्रिये क

অনন্তৰ ক্ৰাইক্ৰ অভিন্তিত হইতেছে। বৰ্ত্ত ল একটা ক্ৰাই অন্ধিত কৰিবা ভাহাকে নৰ কোঠা দ্বাৰা বিভক্ত কৰিবে, এই চক্ৰটা ক্ৰাকাৰে গাৰিণত হইবে। পৰে নৰকোঠাৰ অইকোঠাতে ইক্ৰাটি অই দিক ক্ৰমে অলা হইতে ক্ৰমে ভূটটা দৃণ্টা আৰু লিবিয়া ৰছিভাগে প্ৰামি ক্ৰমে উত্থিদক পৰ্যান্ত সপ্তানিকে কানি হান্ত সপ্তবৰ্গ এবং ঈশান কোনে অবশিক্ষ্ট লক্ষ্য, এই ভূটটা বৰ্ণ লিখিবে। ক্ৰেব্ৰ মগান্ত্ৰল ক্ৰোৰ পৃষ্ঠ হান এবং ক্ৰেব্ৰ আদ্যা অক্ষৰ বেই দিলে থাকিবে, অৰ্থাৎ পূৰ্কাদিলে ক্ৰেব্ৰ মুখ নিৰ্কিন্ত কৰিবে ইহাকেই দীপহান বলে। ঈশান কোণে ও আন্ত কোণে হত্তম নৈশ্বতকোৰে ও আনু কোণে গাদ্যম এবং পশ্চিমদিলে প্ৰায় কোণে হত্তম মুখছ হইবা কাৰ্য্য কৰিলে নিৰ্কিন্তে কাৰ্য্য সিদ্ধি হয়, ক্ৰেব্ৰ হন্তেন্তিতে নিজাম কট, পাৰ্যব্ৰে ও চৰণ্যৰে ভূমে ও ক্ষৃতি এবং প্ৰভাৱে উপৰিট হইবা কাৰ্য্য কৰিবে। বাংলাজিকালী ব্যক্তি মুখ্ছ দিনে উপৰিট হইবা কাৰ্য্য কৰিবে। ইন্তান দিকিলভাগে আভি চাৰিক কাৰ্য্য অনন্ত । জীকামনাতে পশ্চিম কাৰেৰে। ইন্তান দিকিলভাগে আভি চাৰিক কাৰ্য্য অনন্ত । জীকামনাতে পশ্চিম কাৰেৰে। উপৰিট হইবে। উত্তৰে মুখ্ল, উপানে বৈৰিনিনাল এবং বাহ্নেলে প্ৰায়ন ক্ষুত্ৰ আনিবে। আদৃশিক্ষেপ্ প্ৰানে বৈৰিনিনাল এবং বাহ্নেলে প্ৰায়ন ক্ষুত্ৰ আনিবে। আদৃশিক্ষেপ্ প্ৰানে আৰণ্য কি প্ৰত্ৰে মেছানে ইন্তৰ দিপিলান ক্ষুত্ৰ দিনিকে দিলাৰ ক্ষুত্ৰ দিনিকে। আনুলাক্ষিক প্ৰায়েৰ ক্ষুত্ৰ মেছানে ইন্তৰ দিলাৰ ক্ষুত্ৰ নিৰ্বিট ক্ষুত্ৰ দিনিকে। আনুলাক্ষিক বাংনে আনুলাকি স্বান্তৰ মেছানে ইন্তৰ দিনিক দিনিকে।

আমে বা বিপিনে বাপি যত্ত্র কুত্রাবিলোকনে। দীপ. স্থানে ৰপ: কাৰ্যাঃ সৰ্বাকাৰ্যাখভীপ স্থাভঃ। কৃশ্বচক্ৰমবিজ্ঞায় যঃ কুর্ঘাজ্জপষ্প্রকং। তদ্য যজকলং নান্তি দর্কোহনধায় কল্লাভে। ইভি কৃশাচকেং।

कूणांकिनायरत्वाथं कब्रारम्गामन वृधः। यसिकानिः ज्यामनाज विरमञ्ज निताकृतः। खञ्चान भक्षान् मा। সারণে সাহিষং তথা। মেষচর্ম ডথোচ্চাটে খড়গরুৎ বশাকর্মণি। বিধেষে জামুকং প্রোক্তং ভবেদ্গোচর্ম, भाष्टिकः। मर्कामिका वाखिन्यं कानिविद्या मृगाकिन । বস্ত্রাসন্থ রোগহরং বেত্তজে বিপুলাথ প্রিয়থ। কোনেয়ে পোঞ্চিকং কাৰ্য্যৎ কম্বলং ছুঃখমোচনং। বংশাসনে চ দারিদ্রাৎ দেটিগ্যাৎ দারুজাদনে। ধরণ্যাৎ তু:খসস্তৃতিঃ পাষাণে ছঃথসম্ভবঃ। ভূণাসনে যশোহানিরেতৎ সাধারণে ष्ट्राप्ताः।

উপবিষ্ট হটয়া কাৰ্যা করিলে অভীষ্ট কাৰ্যোব সিদ্ধি হয়। কুন্ম চক্ৰ অবগত না हरेया च प (रामाणि कवित्य छारात कन नाज हय ना अवः म्यह दे चनार्थत केश क्या

ष्य डः भन्न मर्छ, हर्ष, व्यथना वञ्च बाता निर्मित व्यागतन व्यक्तिकामि व्यवस्थ ত্বির চিত্তে উপবিষ্ট হটরা কার্য্য করিবে। আস্নের নিরম কথিত ১টতেছে, रखान रखिन्यं,माताण महिर नर्य,हेक्नाहान हाशन्यं, वाश्च शुक्रात नर्य,थिएरव ৰাষ্ক চৰ্ম শাৰি কাৰ্যে। গোচমা সাধাৰণে বাাছচৰ্ম এবং জ্ঞানসিদি কামনাতে মুগচর্ম প্রশন্ত জ্ঞানিবে । বস্ত্রনির্মিত জাসনে রোগবিনাশ এবং বেত্রনি:শ্রতে भवदेववर्गा दय । कोरवह क्षर्थाए दिनम क्षाता निर्मित कामन माक्शन कार्या च थन छ । कश्रवामान कःथिनि दुःखि, दैश्मित आमान प्रतिखंडा अवर मान्यामान

क्रमाक्रमञ्जूषाक्रभूव की वर्षा क्रिकेश कि विदेष कार्य के कि स्मार्ट के कि समार्ट कि स्मार्ट के कि समार्ट कि समार्ट के कि

পৌ ভাগা হয়। মৃদ্ধিকাতেও পাষাণে জংখ, এবং কৃণাসনে যশেব কানি হয়। সাধারণজপেট এই প্রকাব আসন মিয়ম জানিবে।

অনন্তর জলমালাব প্রাণালী কথিত হুটতেছে। কলাক, শৃথ্য, পদ্মবীল, জীবপুলকা, মৃকা, ক্টিক, মনি, বজু, মুবর্ণ প্রবাল ও কুশম্ল ছারা নিশ্মিত নালা জপ কার্যো প্রশন্ত জানিবে। গৃথীদিগের অঙ্গুলী ভাগা সংখ্যা রাখিলে কণিত ফল মাত্র লাভ হয়, তাহার বেখানকল ছাবা অইতঃপ জীবপুত্রিকাতে দল ভণ শৃত্যমালিকাতে দত গুল, প্রবালে সহস্তপ্র, মনি, রুপ্তে কিটিকে অযুতগুল মৌজিকে লক্ষ্ক, পদ্ম বীজে দশ লক্ষ্ক, স্থবর্ণ কোটি, কুশনিশিতে দত কোটি ওণ্ এবং ক্ষাক্ষে অনন্ত ফল জ্বো। ভুলনীর মালা সমস্ত কার্যো প্রশন্ত এবং মনোভাই কল প্রদৃহত্ব। সাধারণ জ্বণে অন্তাভর শত্র, চতুং শৃক্ষাণ্য অথবা সপ্তবিংশতি ক্ষাক্ষাক্ষ মালা প্রশন্ত। মুমুক্লিগের স্থেবিংশতি, বৃন্ধানীর পঞ্চাবংশতি, পৃষ্টি কামনাত্র ও সপ্তবিংশতি অভিচাবে

ज्ञान । श्रुकारो मखिविश्मणा भक्षतमां जिन्न । मरमकरेक मिके वेर्गर्भा नामाम (या गिनाः छ । ता भूकः मन् नी कार्या এ नार्यं य मरमक् ना । मूथः मूर्यं मनः र्याका श्रुक्तः श्रुष्ट्य मरः र्याका श्रुक्तः श्रुष्ट्य निर्याक्ष राष्ट्रः । त्यां ज्ञा मिक त्रकारिमाः मर् ज्ञान्त श्रुक्तः श्रुष्ट्य निर्याक्ष राष्ट्रः । त्यां ज्ञा मिक त्रकारिमाः मिक त्रकारिमाः का नार्यं । मल्याः । का नार्यं । मल्याः । भल्याः । मल्याः । भल्याः । मल्याः । भल्याः । मल्याः । भल्याः । मल्याः । मल्याः । मल्याः । मल्याः । मिक्याः मिक्याः मिक्याः । प्रमानाः । मिक्याः मिक्याः । प्रमानाः । मिक्याः मिक्याः । मिक्या

প্রথাক মালা দ্বা জপ করা প্রশন্ত। সংগ্রিত পারিব নিষ্ম বলিছেছেন। শুলু মথবা বজার্থ হাত দ্বা গোপুছেব ভার মেন্ড সহিদ মালা গাথিবে, মুখে মুন্ এবং পুছে পুছে সংলগ্ন ক্রিব। মালাব পতি ১৯লোজার সংস্কার করিয়া লইবে। প্রথমতঃ পঞ্জারা দ্বা প্রজান চিবা সংগ্রাক ইত্যাদি মন্তে মাজন এবং চক্ষন মন্তক গ্রন্থ জালাব দ্বা দ্বা বামান দেব ইত্যাদি মন্ত দ্বা করিয়া জলোব ইত্যাদি মন্ত দ্বা করিয়া লগেব ইত্যাদি মন্ত দ্বা করিয়া করে করিয়া লগেব করিছে এবং ক্রন্তলামে ও বিধানোজি পঞ্চম মন্ত ও মূলমন্ত দ্বাবা মন্তিত করিয়ে প্রস্কোশ বিধার করিয়া জালাব সকল জব করিয়া প্রস্কোন মালাবে শভ্রাব করিয়া জালীই মন্ত্র লগে করিবে। মেই মন্তে মালা প্রতিকা ব্যাবা করিবে এবং ক্রিবে না

নিষ্ঠাকর্ষণে জেরা জপকর্মণি সিদ্ধিদা। অঙ্গুড়েন বিনা কর্ম কৃতং তদফলং ভবেং। তর্জনান স্পৃশেং সূত্রং চালয়ের বিধুনয়েং। অঙ্গুষ্ঠপর্বমধ্যস্থং পরিবর্তং সমাচরেং। আরভ্যানামিকামূলাং প্রাদিকিণ্যেন বৈ ক্রমাং॥ সধ্যমামূলপর্যান্তং জপেদশন্ত পর্বস্ত। জপমালালক্ষণং।

জপঃ স্যাদক্ষরার্ডিঃ স উচ্চোপাংশুমানসং। ইউচ্চং
নীচসমকৈঃ শক্ষৈঃ স্পাইপদাক্ষরৈঃ। মন্ত্রসূচ্চারয়েরাচা জপ

যজ্ঞঃ স বাচিকঃ। শনৈক্চারয়েশান্ত্র মাযদোষ্ঠং প্রচালয়েৎ।
কিঞ্চিত্রণযোগ্যঃ স্যাত্রপাংশুঃ স জপঃ শ্বুতঃ। ধিয়া যদঃ
ক্ষরশ্রোণিং বর্ণস্বরপদান্ত্রিকাং। উচ্চব্রেদথ সংস্বৃত্য স উক্তো
মানসো জপঃ। উচ্চিক্রপাদ্বিশিকঃ স্যাত্রপাংশুদশিতি

मानारक बाम इञ्चादा अर्थ जवन कवन कि तिर्देश । श्रिक्ष में मुक्ति भागे, उर्ध्वनी देविविनानिनो जवर मधामामूनीट अर्थ मर्थ नांच रम । भाक्षिकार्या स्ना-मिका, आक्ष्री जवर मधामामूनीट अर्थ मित्र । स्मृष्ठ वाजित्यक कार्या हरेल तम् कार्या निक्न रम । उर्ध्वनी सम्बद्ध मित्र । सम्बद्ध अर्थ कि विद्या नांचारक कि विद्या नां । सानारक कि विद्या नां । सानारक कि विद्या नां । सानारक कि विद्या स्वामिका स्मृष्ठ के विद्या साम् कार्यामाम् के विद्या साम् कार्य माम् स्वामाम् नां स्वामाम् स्वामाम स्वामाम

জতঃশর কপলকণ অতিহিত হইতেছে। মন্ত্রাক্ষরের যে আবৃত্তিকবা ভাহার নাম লপ, ইহা উচ্চ, উপাংশুওমানসভেদে ত্রিবিধ। বর্ণ স্কল স্পষ্ট করিয়া উচ্চ, নীচ ওসমবাবের যে মন্ত্রোচ্চারণ করা হয় ভাহার নাম বাচিক জপ বজা। ওঠকে ঈবৎ প্রতাশিত করিয়া কিঞ্চিনাত্র প্রবণ বোগ্য করিয়া যে মন্ত্রোচ্চারণ তাহাকে উপাংশু লপ বশাহয়। মনেতে ময়ন্ত্রণ করিয়া যে মানসিক উচ্চারণ করাহয় ভাহাব নাম মানসিক লগ। উচ্চলপে বিশিপ্ত স্প ত বিঃ। জিহ্বাদ্ধপাচ্ছত গ্রণঃ সহলং মানসঃ সৃতঃ।
পশুভাবে হিতা মন্ত্রাঃ কেবলা বর্ণর পিলঃ। সৌর্মধ্বসূত্রা
ক্ষরিতাঃ প্রভূত্বং প্রাপ্তর তে। (একস্য মন্ত্রনাথস্যাপ্যন্তঃ
বিবিংলাদিতস্য চ। যদেকং তং জপং বিদ্ধি লক্ষ্যংখ্যানি
বিধং মুনে।) মন্ত্রাক্ষরাণি মণিবচ্ছক্তৌ প্রোভানি ভাবয়েং।
তানেব পরমব্যোমি পরমামূভরংহিতাং। দর্শরিভ্যাত্মসং
ভাবং পূজাহোমং বিনাপি সঃ! ন দোষো মানসে জাপ্যে
সংবিদেশহপি সর্বাদা। জপনিষ্ঠো বিজ্ঞেন্ঠঃ সর্ব্যক্তক্ষণং
গভেং। সংবিষামের যজ্ঞানাং জপযজ্ঞঃ প্রশাসতে। অহিং
স্মাপি ভূতানাং জায়তেইসে মহাফলঃ। যজ্ঞানাং জপঃ
যজ্জোহমিত্যাই ভগবান্ হরিঃ। পদ্মনাভীয়ে। মারতঃ
ক্রেম্ভাঃ স্তঃ প্রদীপ্তানি তপাংসি চ। সর্বো তে জপ্যপ্রস্যা
কলাং নাহ্ণিত্ত ষোড়শীং। জপেন দেবতা নিত্যং স্ক্রমানা

প্রান্থি, উপাংশু লগে দশগুণ, কিছা দ্বারা লগে শংগুণ এবং মানসিক লগে গংগুণ কৰা লগে লগে বিশ্ব । গর্গনি নাম সকল পশুণ ভাগ অতৈ হন্ত অবস্থাতে আনু ছিন্ত করিয়া থাকে সুদ্ধা দ্বারা ধ্বনি ংইখা উচ্চারিত হুইলে দেই মন্ত্র দলনা আছে দেই পর্যাম্যত দ্বারা অভিবিক্তা শক্তিব পরমান্ত্রাতে মুক্রযোগ ভাবনা কিরিবে।এই কাণ চিন্তা করত লগে করিলে পূদা হোম বাভিবেকে ও অভীক্তি কণ প্রাপ্তি হয়। মানসিক লগে সাধাবণ স্থানেও সদা কাল করিতে পারা যার ইহান্তে কোন প্রকারেই কোন দোষ ঘটি গার সম্ভাবনা নাই লেপগবায়ণ বাজি দিল শ্রেষ্ঠ বলিয়া কণিছ হন এবং সমন্ত স্ক্রের ফললাভ কবিয়া থাকেন, সমন্তর মুক্রের মধ্যে লেশের হইয়া থাকে স্ক্রেরাং লগে বজা মহা ফলপ্রান। ভগবান হার

গ্ৰান্ত। প্ৰসমা বিপুলান্ ভোগান্ মৃক্তিৎ দদ্যাক্ত শাৰতীং॥

মানসং গিজিকামানাং পৃষ্টিকামৈরপাংশুভিঃ। বাং

চিকো মারণে চৈব প্রশাস্তো জপ ঈরিতঃ। মন্ত্রদেব প্রকাঃ

বিকায়াং।— সূর্যাসায়েও রোরিন্দোদ্দীপস্য চ জলস্য চ।

বিকায়াং ।— সূর্যাসায়েও রোরিন্দোদ্দীপস্য চ জলস্য চ।

বিকায়াং ।— সূর্যাসায়েও রোরিন্দোদ্দীপস্য চ জলস্য চ।

বিকায়াং গণাকৈ ব সার্রো সংমুখো জপেং । মন্ত্রাণিবে ।—

মনঃ সংহরণং পৌচং মৌনং মন্ত্রার্থিনাং । অব্যক্তরমনির্বেদো কপসংপতিহেতবং । উষ্ণাশী কঞ্কা নয়ো মুক্তকেশো
গণারতঃ। অপবিত্রকরোক শুদ্ধা প্রতঃ প্রলপন্ন জপেং ক্রিং।

অপ্রারতো করো ক্রমা শিরসা প্রারতো হপিচ। চিস্তাশা
্লেচিতো বা ক্রেন্ধা ভাতঃ ক্র্ণাবিতঃ। অনাসনঃ বারনো

ব্লিরাডেন (ম. ম.জা মধ্যে জপ রূপ নৈষ্ঠ ভাষা শাসি প্রস্থানীয়ে নিধি চ আডে মে. সমস্ত কর্মায়ত এবং অভিক্রজ্ব সাধ্য তপত। ইতারা কেইই জপ ২০০ব মোড়শ ভাগেক ভাগেব যোগা হয় না দেবতা যদি জপেছে স্থাটি লাভ ২বেন তবে বিগুল ইপ্রা ও মৃতি প্রদান ক্রেন।

সিদ্ধি কামনাতে মানসিক, পৃষ্টিকামনাতে উপাংশু এবং মাধনে বাচিক জপ আশস্ত ।মন্ত্ৰ পেৰ প্ৰধাশিকাতে নিধিত আছে নে, স্থা, বহ্নি, গুক, চন্দ্ৰ, প্ৰদাশ, জগ, প্ৰাহ্মণ ও গো ইগাদিগের সমাপেতে সন্মৃথ হটনা জপ কবিবে ! মন্ত্ৰণিবে বলিয়াছেন।—মনেৰ স্থিতা, পৰিজ্ঞান, মেনি, মন্ত্ৰণিবিজ্ঞান, অকাগতা ও স্থতা এই সমস্ত জগদিনির আহি কারণ এই সমস্ত ব্যতিরেক জপসিদ্ধি হর না । উক্ষাশবানী, বস্তাব্ত, বস্ত্ৰবিধীন, মৃক্তকেশ, বহুজনাত্ত জনপ্রিজ্ঞ হয় না । উক্ষাশবানী ব্যক্তি জপকার্যে অধিকারী নহে। মন্তক সমস্ত করেরা অথবা হত্ত দয় জনাচ্ছাদিত কবিয়া জপ করিবেনা। চিম্বাতে জন্মির করিত, কুন্ত, জাত, জাত, কুণাকুণ এবং আসনবিধীন ব্যক্তি জনেতে

বা গচ্ছন্ ভুঞ্জান এব বা। রখায়ায়শিবে স্থানে ন জপে তিমিরান্তরে। উপানদ্গৃতপালো বা যানশ্যাগভন্তথা। প্রার্থার ন জপেৎ পাদাব্ৎকটাসন এব ৮। পতিতানা মন্ত্রজানাং দর্শনে ভাষণেহপি চ। ক্ষুতেহধোবায়ুগমনে জ্পুনে জপমুস্মজেং। প্রাপ্তাবাচম্য এতেষাং প্রাণান্রামং ষড়ককং। কৃষ্ণ সম্যক্ জপেচ্ছেমং যদ্বা সূধ্যাদিদ্দানং। মার্জারং কৃষ্টং ক্রেঞ্ছং খানং শুদ্রং থরং ক্রিং। দৃন্ধাচম্য চরেং কর্ম প্রান্থী, স্নানং বিধীনতে। অপ্তির্বা শুচিবাপি গচ্ছন্ তিঠন্ স্বপ্রপি। মন্ত্রেক শরণো বিদ্বান্মন্দৈর সদা জপেও। গৃহে জপঃ সম্প্র প্রাক্তিন বাজিন মন্দের সদা জপেও। গৃহে জপঃ সম্প্র প্রাক্তিন গোঠে শত্তবংদ্দ সঃ। আরামে চ তথারণ্যে সহস্তিণ্যুছ্ নদ্যাং দশগুণ্

জনধিকারী। গমন ভোজন মধা। শংন করিয়া লগ কবিবে না।
পথে সমলল স্থানে এবং সন্ধানের জপ করা নিষ্কি। চথাপার্ত্রনা
ধানণ করিয়া এবং শ্যাভেস্থিত হউগা অথবা পার্থ্যাবন করিয়া জন
প্রকা নিবিদ্ধ। উজ্জাননে, পভিত্র ও চথালাদির দশনে ও ইংলদিগের সহিত্র জালাপে জপ করিবে না। হাচ, অধ্যাবাদ নিংসবণ ও
জ্জন হইলে জপ পরিত্যাগ কবিবে। উল্লিক্ষ্য প্রতিবন্ধক উপস্থিত
হলৈ আচমন, প্রাণাধান অঙ্গতাস ও স্থাাদিদশন করিয়া অবশিপ্ত
জপ কবিবে। মাজ্জার, কুকুট, বক কুকুর শৃদ্ধ গারা ও বানর
এই সকলের দশনে আচমন করিয়া এবং প্রশানে লান করিয়া বার্য্যে
প্রক্রি হটবে। শেতি, অশৌচে, গমনে ও শ্যনে স্থাটি এক মন্ত্র
মাত্রে পরায়ণ হইরা মানসিক জগ করিছে গারে।
জপক্র অভিত্রি হইতেছে। গৃহে কুপ করিলে সুস্য ফ্ল, শেটি

জপেচ্চ নিয়তং নিত্যং ত্রিকালং পুরুষোত্তমং।
অর্চয়ন্ত্রেব চাব্যগ্রো যাবং মড়্লক্ষাদিতঃ। তপ্য়েচ্চ
বিধানেন দশাংশং শুদ্ধবারিণা। পুষ্পাক্ষতাদিযুক্তেন জলেসংপূজ্য পুর্ববং। ততাে বিল্লফলৈঃ পুষ্পাঃ পত্রৈরাপ
হতাশনে। পুর্বোক্তেন প্রকারেণ রাম্যাবাহ্য পূজ্যেং।

भारखन, छेन्नरान ९ वरन महस्त्र १ नर्सराठ स्वमूठ खन, नहीं ही रव भन्न छा, माधारन रिवालास रकाँ छन এवः निवननी र्भ स्वसङ्कण लाड इस । ममस्य निरमें नरकार भरक, स्वभारक व र्यक्षण मस्ति उनक्षारहरे स्वभ करित्य । स्वानस्य मिलिम्य वास्ति रकान निरम् छ विवित नन्मा नरह। स्वानस्य निवित्र स्वाह, र्यकान भर्यस्य कहे ना हम खबर मरक्था स्वमस्य स्विनाम ना हम रमहे कान भर्यस्य क्षा कहिर्य। स्वास रमक्ष मस्युक्त हरेला कन स्वमान करिया थारकन रहेका मनामस्य हामहस्य समारक विदालमान हरेलाई कन स्वमान करियन करका विरमय मिन्

আতিদিন ত্রিকাণে কবাপ্রা ইইনা জীবাম চল্লেব অর্চনা করতঃ ছয় লক্ষ জগ সম্পূর্ণ করিনা দশাংশ নিয়মে শুদ্ধ জল দারা তর্ণন এবং পুর্বোক্ত নিয়মে পুশাদি দারা অর্চনা এবং হোম ও ত্রাক্ষণ মধ্রতায়সংষ্ঠিতঃ পদ্মধ্য পায়দেন বা। তিলৈনানার দৈ
বিলি বাঙ্গণান্ভোজয়েততঃ। পূজা তৈকালিকা নিতাং
জপস্তপিনেব চ। হোমো বাঙ্গাণভুক্তিণ্চ পুরশ্চরণস্চাতে। গুরোল বিস্যু মন্ত্রস্য প্রসরাজ মথানিধি। পঞ্চাকোপাসনং সিদ্ধেঃ পুরন্চিতদ্বিধীয়তে। নিজামানা মনেনৈব
সাক্ষাৎকারো ভবেনিতি। অর্থনিদ্ধিঃ সকামানাং ভবেদেবং
ন সংশয়ঃ। পঞ্চাজমেতৎ কুর্ববীত যঃ পুরশ্চরণং বুণঃ।
স বৈ বিজয়তে লোকে বিলৈয়ের্যাজলাদিভিঃ। আদাবত্তে
চ মধ্যে চ বাজ্ঞান্ ভোজয়েরছ্ন্। দিনে দিনে যথাশক্তি রামস্দিশ্য ভক্তিতঃ। সভাজতেপু বিপ্রেয়ু তৎ
সাঙ্গং সফলংভবেৎ। সংসারে জঃখভ্রিতে য ইচ্ছেৎ
স্থেমাল্লনঃ। পঞ্চাঙ্গোপাসনেনৈব রামং ভজ্জু ভক্তিতঃ।
পঞ্চাঙ্গোপাসনং ভক্তা। পুরশ্ভরণ্যুতে। এতিরি

ভোজন নির্কাহ করিবে। নিত্য জ্বণ, কাল্লেযে পূজা, তপণ, হোম ও প্রাক্ষণ ভোজন হল্লেই প্রশ্বন্ধ সাজ হয়। প্রসাল্পকর নিকট হল্ড লক্ষ মাজের যথা বিধি প্রধালোপাসনা হল্লেই সিজি হইয়া থাকে। নিজামী দিপের এই প্রশ্বন্ধেই অভীটে দেবভাৰ সাক্ষাৎ হয়। এবং কামীদিনের ও ইছাতেই কামনাসিদি হয়। য়ে সাধক পঞ্চাল প্রশ্বন্ধ করে সে বিদ্যা ও ঐব্বালালা হট্য়া লোকে শ্রেইতা প্রাপ্ত হয়। প্রশ্বন্ধের আদিতে অভ্রে ও দিনে বত্তর ব্রাহ্মণভোজন করাইবে। ব্রাহ্মণ ভোজনে প্রিভৃত্ত ইইলে অভ্রেতিত কার্যা সম্পূর্ণ ও ফল প্রাণ হয়। বিনে এই হংগের আক্ষণ সংসারে নিজের হবে অভিনাস করেন তিনি প্রশ্বেশাসনাতে প্রীরাম্চল্লকে প্রীর কর্ন।

বিছুষাং শ্রেষ্ঠং সংসারচ্ছেদকারকং নানেন সদৃশো ধর্মো নানেন সদৃশং তপঃ। নানেন দদৃশং কিঞ্চিদিফীর্থস্য চ সম্বশং। ইতি পুরশ্চরণং।

যদি হোমে স্থাক্তঃ স্যাৎ প্লায়াং তপ্ণে হপি বা।
ভাবৎসংখ্যা জপেনৈব ত্রাক্ষণারাধনেন চ। ভবেদস্থয়ে
নৈব পুরশ্চরণমার্য্য বৈ। যদ্যদঙ্গং বিহীয়েত তৎসংখ্যা
ভিতণো জপঃ। কর্তব্যঃ দাঙ্গদিদ্ধার্থং তদশক্তেন ভক্তিওঃ।
ন চেদঙ্গং বিহীয়েত তত ইউমবাপ্লামা। অঙ্গহীনং ভবেদ্
যদ্ধং কর্মা নেইটার্থ সাধকং। সর্বাধা ভোলয়েছিপ্রান্ব্যঙ্গ
সাঙ্গস্থাদিদ্যা। বিপ্রারাধনমাত্রেণ কর্মাণঃ সাঙ্গতা ভবেং।
জপাদ্দশংশতো হোসং তদ্দশংশেন তপ্ণিং। মার্জনং
তদ্দশংশেন তদ্শাংশেন ভোলনং।

## ইতি মূনাতিরিক পূর্ণতা।

ভক্তি পুরংসব যে পঞ্জোপাসনা করা ভালতে পুরুহ্বণ বলে।
পাধক সকলের ইহাই সংসাণ্ডেদনের আমান মূল ইহার সদৃশ ওপতা নাই এবং ইহার সদৃশ অভীট সিদ্ধির
আধান সম্প নাই।

হদি পূলা, হোন এবং তথাল অশক্ত হণ তবে ক্ষপ ও রাজং ভোলন এই অঞ্চয়ে ও পুরশ্চবণ নিদ্ধি হটতে পাবে। অশক্ত হটমা যে বে অঞ্চের পবিচাগে কৰিবে ম্নসংখাফ্রেরাবে ভালার বিগুণ হালে সেই অঞ্চের নিদ্ধি হটবে। সাঞ্চ কর্ম করিলেই অটীষ্ট ফল আজি হল, অঞ্চহীন করিলে অভীষ্টিসিদ্ধি হয় না। বিশেষরণে আজিণভোলন করাইলে অজ্চানি জন্ত দোন হটতে পাবে না। অপের দশাংশ হোম, হোমের দ্শাংশ তপ্ল, তপ্লেব দ্শাংশ মাজন (অভি-বেক) এবং অভিবেক্র দ্শাংশ বাজনভোলন জানিবে।

তত্ত্বোদয়ং পরিজ্ঞায় কশ্ম কুর্যাদ্যণোচিতং। ক্ষান্তত্ত্ব শুস্তাদাগু:ব্রন চ শান্তিকং। বশ্যমাকর্ষণেটের

ভানত্ব বট্কণ বিবৃত্ত হবৈতিছে, মন্ত্র নিজি হইলে এই সমস্ত বিধেন। গ্রাপন, বিদত্ত, সংপূট, বোধন, যোগ ও পানব এই ষড়িব প্রারোগ ভানত্ব বক্তবা কার্যা সকলে প্রশাস্ত জানিবে। থিনিজ্লুসারে নাম-বর্ণ সকলকে যে মন্তবাৰ্থৰ অন্তবিত করা ভাবের নাম এখন ইহা শান্তিকার্য্যে প্রশাস্ত। মন্ত্র বর্ণবিষেধ্য সাধ্যের নামাক্রম লেগাকে বিশ্বত্ত বলে। ইহা ব্যাকিবে কার্য্যে প্রশাস্ত। নামের আদিতে ও অস্তেত্তে মন্ত্র লিখিলা যে প্রতিত কলা হয় ইবার নামাসংপূট অস্তেনকার্যে বিধেন। আরু মন্ত্রেণ আদিতে ও অব্যোত্ত বাধন বলে ইহা বিছের কার্যে। প্রশাস্ত্র। মন্ত্রের অস্তেতে নাম লেগার নাম গোগ উচ্চাটন কার্যে। প্রশাস্ত্র বিশ্বত নাম লেগার নাম গোগ উচ্চাটন কার্যা প্রশাস্ত এবং নামের অস্তেতে নাম বেগার নাম গানব ইলা মারণ কার্যে। প্রশাস্ত বিশ্বত

তেজন্ত ব্যোদত বি । উচ্চাটনং মক্লতত্ত্ব ব্যোদতত্ত্ব চ সারণং। জানীয়াছ্দিতং তত্ত্বং বর্ণৈবিবন্দুগঠৈঃ পৃথক্॥ ইতি তত্ত্তানং।

বেদান্রং যোনিমর্দ্ধেন্দু ত্তাত্রং বৃত্তৎ ষড়ত্রকং। পঙ্গজাকারমক্তাত্রং শান্তিকানে নিযোজয়েং। ইতি কুণ্ডানি।

লোকিকেইমো শান্তিকং স্থাৎ পোষ্টিকঞ্ শুভ-ন্তথা। বটজে স্তম্ভনৎ কুর্যাৎ শাশানম্থে তু মারণং। বিভীতকাগো বিদ্বেশঃ ষট্কর্মণ্যায়ো মতাঃ। ইতায়াঃ।

অঙ্গুঠানাসিকাভাক জপেতৃত্তমকর্মণি। অঙ্গুঠমধ্যমান ভ্যাক জপেদাকৃষ্টাসদ্ধয়। তত্র্রাঙ্গুঠ সংযোগান বিবেয়োচ্চাটনং মতং। কনিষ্ঠাঙ্গুঠকাভ্যাক জপেনারণন কর্মণি। ইতি জপ জানং।

তরে দের অবগচ ংইং। কার্যা কবিবে। পৃথিবী ওবে গুজান, এ লা ভাষে শাক্ষি কার, তেজস্কান্তে ধনী কবে ও আক্ষ্ণ, বাযু ডারে উচ্চটন আবি আকাশ ওরের ইদর হইলে মারণ প্রশস্ত। বিন্ধৃত বর্ণছাবঃ পুর্ব্ধ ক্লে তত্ত্বাদ্র অবগত হউবে।

চতুবল, বেংনি, অর্ডজনু আস, রুত্ত, ষ্টকোন প্রশাস্থাল এই স্ট্রিণ কুণ্ড শাহিপ্রস্থাত কংগো ক্ষরা।

জন ধর অধির নিশ্ধ কবিতেছেন। লৌকিক বহিন্ত শাধিক পৌ-টিক এমাঙ্গলিক কামিপ্রশিও। বউর্কোত্তর বহিন্তে ভানুন, শাশাণানলে মাবশ, বিভীতক বহিন্ত বিভেষ ভউচোটন কাম্য করিবে।

উৎক্টকাৰ্য্যে অসুষ্ঠ অনানিকাদানা আকৰ্ষণে অসুষ্ঠ এমধ্যমালু বি দাবা, বিংখ্যে ও উচ্চ:টনে তৰ্জনীও অসুষ্ঠবার৷ মারণে ধনিষ্ঠাও অসুষ্ঠবারা লগ করিতে হয়। উদয়াদ্যাম পর্যান্তং হেমন্তে পৌষ্টিকং জপেং।

যামলয়ং পূর্বরাত্রেঃ শিশিরে মারণং কপেং। বসন্তে
প্রহরাদুর্নিং যাবন্যাধ্যাহ্নিকং ভবেং। কার্যামাকর্বপন্তর মক্তৈরিন্টায় বস্তুনঃ। ত্রীলো ভূতীয়কো
যামো হিতো বিলেষকর্মনি। তহোহ সময়পর্যান্তমুক্ত,টে ভোয়দাগমে। অর্বরাত্রে নিশীপে চ জপেছেরাদ্
শান্তিকং। তথাচাহ বশিষ্ঠঃ, যাম্মিন্ কাসান্তে কার্যাহ্
যাত্রাণাং মারনং শুভং। পূর্ববিহ্নে বশাপুর্মী চ মধ্যাহ্লে
ব্রীভিনাশনং। উচ্চটে মপরাহ্লে ভূ সন্ত্রায়াং মারণত্তথা।
শান্তিকর্মার্কিনাত্রে চ ভূর্দ্বং মর্বনকর্মারাং মারণত্তথা।
শান্তিকর্মার্কিনাত্রে চ ভূর্দ্বং মর্বনকর্মারাং মারণতথা।
শান্তিকর্মার্কিনাত্রে চ ভূর্দ্বং মর্বনকর্মারাং মারণতথা।
পূর্ববিদ্যান্ত কাস্যক্ষ শান্তিকং। সাকর্মনমথায়েরে
বৈন্যান্ত মারণতথা। উচ্চাটনক্ষ নাম্বের ঐশান্যাং সোক্ষদায়কং। ইতি দিন্তনিয়মঃ।

েণ্টিক কাষা ক্ষেত্ত শভূতে বস্থা ইচাতে বিন্টিন্ধ ইইং চ একপ্রহন্দ পর্যান্ত জগ কাববে। মাবৰ শিশিব প্রশাস্ত এবং রাজিব প্রথম মামন্ত্র পর্যান্ত জপ, সাক্ষ্ম বসঙ্ক কালে বিধের মধ্যক্তে পণ্যন্ত জপ, বিষ্কেশ্ব গ্রীল্ল কাল্ড ছত্তীয় যাম প্রয়ন্ত জপ। উজ্জানিক বর্ষাকাল ও স্থ্যাতেপর্যান্ত জপ করিনে। শান্তিক কার্যা শ্বংকালে বস্ত্রা বাত্তিবেগে আমুদ্ধপ্রান্ত জপ করিনে। শান্তিক কার্যা শ্বংকালে বস্ত্রা বাত্তিবেগে

वनीक्रांत श्रृतिहित, आष्टिकारिक मधिन, उन्छान शिक्यः; भाष्टिक डेळा, आकर्णन बार्धिय, मार्वेश्य देनवार, डेक्टाउँ न वागूर्वात स्थाकक्षमनार स्नेतान दक्षात श्रमास वानित्य। শুরুপকে বিতীয়া চ তৃতীয়া পঞ্মী তথা। বুবদেব:
গুরুপেতা শান্তিকে চাথ সপ্তমী। ষষ্ঠা অয়োদশী চৈব
চুম্পী নবমী তথা। সোমদেবগুরুপেতা পৌষ্টিকে শং:
সিতা বুবৈ:। অইমী নবমী চৈব দশম্যেকাদশী তথা।
শুক্রভাসুহতোপেতা শস্তা বিদ্বেকর্মণি। ততশ্চতুর্দশী
কুষণা শনিবারে তথাইমী। উচ্চটনে তু শস্তোয়ং অপঃ
শক্ষরভাষতঃ। অমাবস্যাইমী কৃষণা তাদৃক্ চৈব চতুর্দশী।
ভাতুনা তৎহতোপেতা ভুহুতেনাপি সংযুতা। মারণে
শুস্তনে চৈব অপে হোমে প্রশংসিতা। ইতি তিথি নির্ণয়ঃ।
লক্ষৎ তদর্জমথবা অপিছা তদ্দশাংশতঃ। তিলৈর্বা
ক্মলৈত্থা যদ্যদিইং তদাপ্যতে। বিল্পপুটনিরেম্বা
স্চিত্তিহ্যো হুতৈর্ভবেং। পালাশকুস্থ্যক্তি। সেধাবী

শান্তিকার্যা শুক্ল পক্ষের তৃতীয়া ও পঞ্চনী এবং বুধবার ও শুক্রন বার প্রশন্ত। পৌষ্টিক কার্যো শুক্ল পক্ষেব সপ্তমী ষষ্ঠী আরোদন্দী, চহুর্দ্দিশী ও নবমী এবং সোমবার ও শুক্রবার প্রশন্ত। বিবেধে জ্ঞানী, নবমী, দশনী ও একাদশী এবং শুক্রবার ও শনিবার প্রশন্ত। উচ্চাটনে ক্ষক্ষ পক্ষীয় জন্তমী চহুর্দ্দশী ও শনিবার প্রশন্ত। মারণে ও স্তম্ভানে জ্মাবসাা, ক্ষক্ষপক্ষীর জন্তমী ও চ্তুর্দ্দী এবং শনি রবি ও ম্বালুকা বার প্রশন্ত জানিবে।

এক লক্ষ্ অথবা তদক পরিমিত ক্ষণ করির। তাহার দশাংশ নির্মে তিল প্রভৃতি ঘারা হোম করিবে। বিশ্বপূপা ঘারা হোম করিলে। বৈশ্বা পলাশ পূপা ঘার। হোমে মেধা, তুর্বা ও গুড়ুচীর সহিত তঙুল যোগ করিরা তাহার দ্বারা হোম করিলে রোগম্ক ও দীর্ঘারু হয়। আরোগ্যাণী ব্যক্তি অয়ের উপরি ৮ বার রাম্যন্ত কাপ করিয়া তোক্ষন বেদবিদ্ধবেৎ। দুর্বাভিশ্চ গুড়ুচীভিঃ প্রত্যেকমণি চালিতেওঃ। নিয়াময়োহলি দীর্ঘায়ুর্ভবত্যের তপোনিধে। আরোগ্যকামো ভূঞ্জীতে অন্ধং মন্ত্রাভিমন্ত্রিতং। অইধামন্ত্র-পৃতায়ঃ পীরা ভক্তঃ কবির্ভবেৎ। রোগোতেলাইনি হোমেন রোগামুচ্যেত তৎক্ষণাং। সম্যক্চক্ষনতোরিশ্চ প্রত্যাম্প সমাক্ষতিঃ। জাতিপ্রস্টনর্ভ্রা তু রাজানং বামানয়েৎ। ধ্যাত্রা তু মন্মপৎ রামং দীতাসলি রতিং স্মনেৎ। মধুরত্রয়য়ুক্তেন পায়সেন হুতেন তু। বাঞ্জিতং ধনমাপ্রোতি ভ্রা রক্তোৎপলৈন বৈঃ। হুরা নীলাহপলৈঃ সম্যক্ বশয়েদবিলং জগং। রামং বিধিবদারাধ্য জ্বলতেয়ো প্রয়োগবিৎ। মধুরত্রয়য়ুক্তেন পায়সেন হুতেন তু। সর্বাধিপত্যং বৈত্রমং ভবত্যের ন সংশয়ঃ। বিল্পপ্রস্টনঃ কুমুদে স্তথাবিজ্ঞাকরিল। ভ্রা তু লভতে লক্ষীমচিরামন্ত্রদাধকঃ। আরাণ্য রামং চতাংশুমণ্ডেন

করিলে কারোগ্য লাভ করিবে। ৮ বার রাম্মন্ত্রে কভিমন্তির কল পরেল কবিলে কবি হইবে। কাল বে রোগে থে উষধ নির্কাচিত হইবে ভাহার হারা হোম কবিলে তংকণাৎ মাত্র বোগ হইতে আরোগ্য হইবে। সচলনজলমিশ্রিত জাতি গুকা হারা হোম করিলে রাজা বুলীভূত হইবেন। রাম মর্মণ, সীভা ও রভিকে ধ্যান করিয়া ম্পুর্ত্তংশ্রুক পারস হারা হোম করিলে বাঞ্ছিত ধন লাভ হয়। নৃত্ন বক্ত পার ও নীল প্রহাবা হোম করিলে নিশিল জগৎ বলীভূত হর। বিধি অনুসাবে রামের আরাধনা করিয়া মধুর তারমুক্ত পারস হারা ভ্রেলিত বহিংতে হোম করিলে সমন্তের প্রতি আধিপত্য ও পাণ্ডিত্য লাভ হয়। বিধা পত্র বিবিশ্বা ও কুমুল হারা হোম করিলে অচিরেই শ্রীলাভ হইবে

বংগরং মৃনি:। উদয়াদস্তমানান্ত জপেয়ন্তমননাধীঃ। ফলং ভবতি তদ্যান্ত দেবানামপি তুল ভং।রাজৈয়খর্যোপভোগাথী জপেল্লক্ষমননাধীঃ। পদ্মৈনিবল্প দুনৈন্চ দশাংশং জুত্যান্ত্র। সমুজতীরে গোঠে বা লক্ষ লাপী পয়েরাব্রতঃ। পায়দেনাদ্য যুক্তেন হুত্বা বিদ্যানিধি ভবেং। পরিকীশানিধাতোয় শাকাহারো জলান্তরে। জপেলক্ষ জুত্যাং বিল্প কুর্দিশাংশতঃ। তদেব পুনরাযাতি স্থাধিপত্যং ন সংশয়ঃ। উপোষ্য গঙ্গাদিজলান্তরকো রামং স্যারাধ্য জপেচ্চ লক্ষ। ভ্রা দশাংশং কমদৈন্তিলৈর্কা। বিল প্রদূনেম ধুরব্রেয়াকৈও। রাজ্যং শ্রিয়ং বিক্ষতি মন্দভাগ্যো হুপাম্বা দাসং বহুবাঞ্জিতং স্যাং। মাধ্যাদে জলে জিতানলে। জ্বীরামনদৃশঃ পুত্রঃ পৌজোহপ্যা প্রজারতে।

धक वरगव नशास छेन्नावंश कछ नर्शस मृतिवृंख कवनचन करणः कान्यिति धवर स्ट्रां स्वनाविम् र हरें। शिरायम व्यविष्मा भूत न्त्र एतीय मेख कल कविता त्वराणित उ इति कन व्यविष्मा भूत न्त्र एतीय मेख कल कविता त्वराणित उ इति कन व्यविष्म था देव। यादिवाचरी कामनाद धवर्णा किए कल कल किया निवृद्ध अस्ता वा निवृद्ध अस्

ৰলিষ্ঠৈঃ শত্ৰুভিৰ্মন্ত্ৰী পরিভূতোহ্বমানিতঃ। তথা হন-हरन्त्राखा नामारेखरेकांत्रगाः सर्परा शास्त्रप्रपृतिष्ठः कुदः कालानन प्रवाभवः। व्याकर्गमधाकृष्टेः Cकाष्ट्यकुन-মণ্ডলং। রণাঙ্গনে রিপুন্ সর্কান্ তীক্ষাকুলর্ষ্ঠিভিঃ। मश्रवास मरागीवम् धरेमछावर्ष खार । लक्षणां मरा-वीरेतः देननत्रकरदवाक्रेडिः। द्वरवाश्वानश्कारेतव्र उ जूका महातरेवः। ननस्तिः পরিধাবন্তি: সমরে রাবণ-ত্রভ। এবং ধ্যাত্বা নিরাহারো মারণায় রিপোঃ পুনঃ 1 जूरु यः भानानी शूरे व्यक्ति भार भार मञ्जनाधकः । चित्र श्रापान यूटकार्राम न मात्र वमारगा छ तव । रेगित १९ तावन शाहा তথাত্মানং রঘূরহং। বিধায় পূর্ববিৎ দর্ববিদনায়াদেন মার-रयः। मोठार्यपाकासि उष्ठीसृडमराठनः। कर्ण-দ্রঘুপতিং ধ্যায়ন্ নিরাহারো জলে বদন্। দশাংশতভিলৈ হৃতি। তত্ত্বোচ্ছক্রসংহতিং। নিধায় বায়ুবীজান্ত তল্লালা-ত্রাসয়েতি চ। জপেন্মন্ত্রং নিরাহারো জুত্যাৎ স্তিলৈরপি।

প্রাথী হটবে। ফল, মূন ও ফল হাবা জীবিদা নির্কাষ্ট করিয়া মাল্ল মানে জল্ভির্গত হট্যা লক্ষ জল ও পায়ন হায়া হোম করিলে প্রীয়মচজেব পূল্য পূত্র পৌর জ্যিবে। বল্বান শক্রণস্থিত পরাজিত বাজি যদি ভোজন রভিত ইট্যা খ্যায়েজ্বুপতিং জ্বাহান্ত পরাজিত রাব্যক্তাতি ইতাল্ভ মূলোজ খানে করত শ্বিতীয়ান্ত শক্রনামের পরে হন হন ইতাল্ভ মন্ত্র জলা কবিয়া দশাংশ নিয়মে শাল্মনী পূল্পের হেম করে ভবে কলাচ ও শক্রর বশতাপর হট্বে না। আব শক্রকে বাবণক্ষণী এবং আত্মাকে শ্রীয়মক্ষণী চিল্লা করিয়া পূর্ব্ব নিয়মে জল হোমানি করিলে নিশ্চয়ই সাধক জনায়াসে শক্র বিনাশে সম্প্রিব্রে। জলাত্মপতি ও ভোজন বিহান ইইয়া শ্রীয়ম চল্লা সীচা রাগং ধ্যাতা বিষয়ক দীতাত্বেবণকারকং! ভাময়ভ্যচিরং

সাক্ষাভ্রেমাতিমপি বৈরিণং! অন্যেহপি বছবঃ দন্তি
প্রয়োগা মন্ত্ররাজকে। প্রয়োগদিদ্ধিরতেযাং কলং
নান্যন্তবভ্যপি। নিকামাণাক ভক্তানাং জপহোমাদিকর্মান্ত।
মুক্তিরেব ফলন্তেষামিছ কিঞ্চির বিদ্যুতে। বিদ্যান ভ্রনান্ত্রমাদার শশকাণো ন সোচয়েং। নারং মুক্তিপ্রদো মন্ত্রো
মারণাদৌ প্রযুদ্ধতাং। ইতি প্রয়োগগাধনং।

অথাতঃ সংপ্রবক্ষাম নানাযন্ত্রাণি মন্ত্রিশং। নানার্থদানি রাম্স্য নানাকল্লাগমাৎ পৃথক্। পঞ্চরাত্রে অক্ষসংহিতারামুক্তং প্রতন্যতে। তথাহি — ষট্কোণং
চক্রমালিথ্য স্বরকেশরদংযুতং। কোণের মন্ত্রবণাংশ্চ বহিরাষ্টনলা, যুজং। দলের বিলিখেমাল্রং ততঃ প্রথবসম্পুটং।
পুনঃ পূর্বং পুনঃ পদ্মং দাদশার্থ দলের্থ। তৈলোক্যমোহনং বীজং নামদংযুক্তমালিথেং। কর্ণিকারাং
লিথেয়াম তারমধ্যবিদ্ভিতং। মহান্থদর্শনেনেদং বেন্তিতং

বিঃধ্যনিত শোক্সাগ্যে শুকুও চৈত্ত রহিত হইয়াছিলেন এইক্স চিয়া ক্রিয়া জ্প ও তিল্ছোন ক্রিলে অবিকুল মোহিত হয়।

শ্রীনাম চক্র বিষয় হইবা সীতাদেবীকে অবেষণ করিয়াছিলেন এইকপ ধান করত আহাব তালী ইইবা যং রাম ত্রাসর এই মল্ল কপ এবং তিল হোম করিলে স্থানক ও বলি শক্ত হল তাহাকে ও শ্রমণ করা-ইতে পারে। এই মল্ল রাজের ও অল্প অল্প বছবিধ প্রারোগ থাছে, কিন্তু কামী লিগের প্রায়োগসিদ্ধি ছিল্ল অল্পকোন ফল হল না। কামনারহিত সাধক বৃন্দের জপধোমানি কার্যা দারা মুক্তি মাজ্র কনই হল ঐ হিক কণ কিছুই হল না। পণ্ডিত ব্যক্তিরা কখন শশ-কের প্রতি ব্রহ্মাল্প করেন না অভ্যান এই মুক্তি প্রাদ্ধ মন্ত্রকে মাবণাদি কার্য্য প্রায়োপ করিবে না।

চক্রমুগুনং। পৃথিব্যা সংপুটংবাছ্যে বস্তানীকার্ছ্রিতং।
চতুক্রোণং অনমথাঙ্কুণপাশাবনীরুতং। ভূর্জ্বপত্তে লিখেদেতৎ রোচনাল্য: শুভেহ্ছনি। বিলিখ্য ধারয়েমান্ত্রী মুর্জ্বি
বা দক্ষিণে ভূজে। ন তদ্য বিদ্যুতে পাপং যাবতত্ত্ব প্রভে
ছিতে। ব্যাধিভিনাভিভূয়েত নামিভিন্চ তক্ষরৈঃ।
নারিভিন্নগাঁজবর্গাত্রৈ নচানৈয়ঃ ক্ষুদ্রজন্তভিঃ। ব্রিয়ো বশ্যা
ভবস্তোব দর্শনাভদ্যে মন্ত্রিশঃ। রাজানো মণ্ডশীকাশ্চ
সমস্তা রাজমন্ত্রিশঃ। ধনধান্যসমৃদ্ধিঃ স্থাৎ সর্বান কামাংশ্চ
বিন্দ্তি। ত্রা পুত্র ন বক্তব্যং যন্ত্ররাজং মহোদয়ং। ন
শিব্যায় ন পাপায় ন চাশাস্তায় চ কচিৎ। শিদ্যায় মন্ত্রনিষ্ঠায় শ্রেভিন্তুবায় চ। বক্তপ্রদায় দাতব্যমন্যথা
নরকে গতিঃ। অদ্যার্থঃ, ষ্ট কোণং চক্রমালিথেৎ পরস্পারবৈমুখ্যন ত্রিকোণযুগ্রং পিথেং। তত্তিকস্তায়েয়

অতঃপর সাধক বুলের নানার্থপ্রদ বছবিধ পঞ্চাত্র ও ব্রহ্ম
সংহিতা সম্মত বছবিধ যক্র বিবৃত হুইতেছে। এই বন্ধটা
শুক্তনিলে গোরোচনাদি দারা ভূর্জ্জপরে লিখিলা দক্ষিণভূজে
অথবা মস্তকে ধারণ কবিবে, ধে কাল পর্যান্ত যক্র শবীবস্থ থাকিবে ভত কাল
আর যত্র ধারকের কোন পাপ ও কোন বোগ জ্বিবে না এবং অধি,
চৌর, শক্র, হৃত্তি, ব্যাঘ্র অথবা অন্ত কোন অন্ত কর্তৃক পরাভূত হুইবে
না, সাধককে দর্শন করা মাত্র ত্রীসকল এবং বিরুদ্ধ বালা ও স্বাজবে বশীকৃত হুইবে এবং ধন্ধান্যাদি এখব্য প্রভৃতি সম্মত অভীই
বিষ্ক্রের অভিনে লাভ ছুইবে। হে পুত্র। ভূমি কদাত ও এই মহাপ্রভাবশালী বন্ধ রাজ ব্যক্ত করিওনা এবং পাপিঠ ও অশান্ত নিহাকে দিবে না,
বে নিহা সম্ম ও ভক্তি পরারণ হুইবে ভাহাকে মাত্র যান্ত্রবাক্রের ভালন করিবে,
ইহার অন্তণা করিলে নারক গামী হুইবে। ব্রহণেশন প্রণালী বিষ্কৃত্ব

নৈখ তবারুণবারুণোশানাস্তাঃ ষট্ড্যরুকা ভবস্তি। তত্ত্ব তायाम बहे द्वांगठा खेंगानीर विभागतना चार्यवासर मभानित्यः। जात्मनात्रभारकीत्वत्रीभर्यासः विनित्यः দিমান্। রাৎ রামায় স্বাহেতি বামত আরভ্য প্রণবেল্ডিরং মতং। সেমং ষট্কোণভোদিতা। প্রকেশর সংযুত-মিত্যেত্বহির্ফদশাস্থাসভানেন সংবধ্যতে। কোণেরু মন্ত্রাদিষট্কোণের। (ওঁ রামায় হুঁ ফট্ স্বাহেতি মন্ত্র:। এরামায় হুঁফট্ স্বাহা ইতি বা । রাং त्रामात्र हुँ करें वाहा है ि वा ) यह मल्य गर्गान यथा का मर লিখিত্বা ততো বর্ত্ত নেখাবয়ং লিখেএ। বহির্ট मनाध्युक्तर ভद्दित्रकेननर शब्दर खत्रतमत्रमश्युद्धर । स्वाकृणकात्कणतम्बद्धिः। प्रत्नेतृ विनिर्धिमानः ८७ वर्षेः দলেষু চ ওঁ নমে। নারায়ণেতি মূলমন্ত্রং লিখেৎ। ততঃ প্রাবসংপুটমেকৈকমক্ষরৎ প্রাবদ্ধয়মধ্যগতৎ যথা ভবে-खर्थानिर्थं भूनः भूर्ववं यह रहानः भूर्ववयाञ्चाकत महिखर

हरेटिहा। भत्रभव विमूध कित्री हरेंगी जित्नी वारी धकी वर्ष-त्कान अहिंठ क'त्राद भूर्स, अति, देनब'ड, दक्षण वासू छ जेनान धरे हत्रमिश्त छन्नक आकात সম्ভाश हत्रग्नी त्नाम अहिंठ हरेत्। भर्त भूक्षिण वर्षेत्वाता वार जामात्र चारा धरे वर्षक्षत यथाकाम निर्मया हरेंगी वर्जुण द्वापा अहिंठ कित्रा छारात वर्षिण्डाण अहेनल भूस कित्रश्नी भर्षात त्कमत्रहात्म आ आ हेज्ञामि व्योद्धन अहेमल खँ नत्मा नात्रात्रगात्र धरे मूनमर्ख्य अहेग्यत्व धर्मात्रात्र धर्मात्र भर्ता भ्रद्धात्र धन्मे विमान भरत मून मर्ख्य धन्मे अक्त्र धन्म म्ह्यात्र भरत भूक्ष्यात्र धन्मे खँगात्र जिथित। भरत भूक्षित्रण महाक्ष्यत्व प्रमान

লিখেছ। ভতঃ কোণাগ্রস্পায়র্ক লং রেধান্ত্রং কুর্যাহ। श्रनः श्रम् वाष्मात्रः वाष्मात्तम् दिवालाकारमाद्यः योज्ञः ক্লামিতি নামসংযুক্তথা লিখেং। ততঃ কণি গায়াং লিখেং। यहे एकानमर्या वर्जु लरत्र बाबस् लिख्य कर्निकासार खनारः সাধ্যস্য বস্তনো নাম লিখেং। কথং ভূতং তারমন্ত্রবিদ-र्जिङ् । जात्रामि नवमःथाकमञ्जाकदेविकार्छ उर । भारती मखाकत्रदार जनस्तर माधानामाकत्रत्मकमिकि भूनमें खाः ক্ষরত্বরং অনন্তরং নামাক্ষরমেকমিতি এবং নাম্লেছকর: मगाथिए यानवानित्रिए। अखिनिर्कितः। छथात मजाए-শকে ।--- দ্বে দ্বে মস্তাক্ষরে যত্র একৈকং সাধ্যনামকং । বিদক্তি ভন্ত তথ প্রোক্তং সর্বরক্ষাকরং পরং। ইতি। শান্তিকে चारि बखर मम ध लिथिया क्रम खुतर माधानां म मम गर বিলিখ্য পুনমন্ত্রং সমগ্রং লিখেছ। এতৎসংপুটমুল্যতে। শ্চান্তে ভবেমন্ত্র: সংপুটঃ শান্তিকর্মাণীতি। বশ্য মাণে

বর অভিত করিয়া বাদশদল পদ্ম লিখিবে এই পদ্মের বাদশদলেই क्री वीम लिविया कर्तिशटा अर्थार वर्षे रकारन्व मधा'युक वर्त्तन कर्विकारक खँकाशामिनवाक्यत्रमध्य विवर्षित ৰম্ভর নাম লিখিবে অর্থাৎ আলিতে ভূটটা মন্তাপৰ পরে সাধোৰ धक्षित शुनर्वाव महाक्ष्यवत धक्रेत्राण भाभाकत्व त्मव ववता नवाक আৰিতে ও অবৈতে ংটী ংটী মন্ত্রাকর লিখিবে। মন্ত্রাগ প্রকরণে বিধিত আছে বেছবে আদিতে এইরাণ ন্থাক্রম্বর, পরে একাক্ষৰ পৰে আৰার মন্ত্রাক্ষর হর বিক্রম্ভ হতবে ভাহাকে বিদভিত विविधा कांचे ६ इत । माश्विकारी/बर्ग आंगिर ठ ममध्यम गिथित। भरत मन्यन्ति नामाण्य धनः व.च व्यवदि मन्छ मजायन निविद्ध

মজ্র প্রথমাকরং। তত্তে। নালঃ প্রথমাকরং পুনমজ্রিছি-छौद्राक्रद्रः अवर यावर ममाश्रिक्षाविद्वार्थर । विविधक्ष्यम প্রথিতমালাবৎ সংপুটীক্লতং ভচ্চ প্রথিতং তথাচ একৈকং সাধ্যবৰ্ণি মালাবৎ সংপুটীকৃতং।মন্ত্ৰাৰ্ণৈত্ৰ বিভং চেত্ৰৎ বশ্যা-কৃষ্টবিধৌ স্মৃতমিতি। পরমন্ত্রভেদনে তু আদৌ মন্ত্রৎ সমগ্রৎ লিখিত্বা পুনর্বান্সোহবশিকীন্যক্ষরাণি বিলিখ্য পুনর্মস্তেৎ সমগ্রং লিখেৎ। এতদ্গ্রন্থ তথা চ আদৌ মধ্যে তথান্তে চ মন্ত্রং কুর্ব্যাৎ বিচক্ষণঃ। মধ্যে মধ্যে ভবেৎ সংজ্ঞা গ্রন্ত-মিত্যভিধীয়তে। অয়মেব বোধ ইতি কেচিদাছ:। যোগ-ত্তেবং আদৌ মন্ত্ৰৎ সমগ্ৰং লিখিছা পশ্চালামাক্ষরাণি সমগ্রং শিখেদিতি ৷ তথাচ তত্তাদৌ যোগউদ্দিউ-চান্তে চেৎ পল্লবঃ খ্বত ইতি। তয়োশ্চ বিনিয়োগ স্তাথৈবাক্তঃ! ভথাহি শান্তিকে দিব্যে প্রায়শ্চিতবিশোধনে ৷ মোহনে मीलटन ट्यांगः श्रयुक्षस्ति मनीशियः। मात्रटन विश्वनारम ह ভুতগ্রহ বিনিগ্রহে। উচ্চাটনে চ বিষেষে পল্লবং সংপ্রচ-ক্ষতে। স্বদাণ্যযুক্তং বিশিশ্য ততঃ স্বনাম চতুর্য্যন্তং মহাৎ পদোত্তরৎ ততঃ ফলবাচকং দিতীয়ান্তৎ ততো দেছি कृर्विति वा वित्रजारम् । अय विषिः माञ्चनाम्निकः । अवर

ইহার নাম সংগৃত শান্তিকার্য্য প্রশস্ত । বনীকরণাদিতে আদিতে
মন্ত্রের প্রথমক্ষের তৎপর নামের প্রথম অক্ষর পুনর্কার মন্তের বিভীয়াক্ষর
এই প্রাণানিতে নামসমাপন পর্যান্ত নিবিলে নানা পুশ্বারা প্রবিভ মাণার দ্বার মন্ত্রাক্ষরে পুটিত হইবে ইহাকেই প্রবিভ বলিয়া নির্দিক্ষ হইরাছে। বনীকরণ, উচ্চাটন ও মার্বপ্রভৃতি ক্লে যন্ত্রের কর্বিলাতে সাধ্যের নাম লেখার স্বভন্ত স্বত্রে বিধান আহে ভাষা মূলে ভৃষ্টি করিয়া লইবেন। আবশ্বক্ষক প্রহোগাল্যারে বিধিয়া স্কর্শন মহা-

কৃশিকারাং প্রয়োগাসুরূপের লিখিছা বেন্টয়েরিলডার্গার্থ বেন্টিতং মহাহ্রণশনেনেতি। ইনং যারং মহাহ্রণশনিমন্ত্রের বেন্টরেরিলিভি। মহাহ্রণশনিমাহ। হ্রণশন মহাচক্ররাল ধন্য-ধগান্তক হুইভয়য়য় ছিল্ল ছিল্ল ভিল্ল ভিল্ল বিদারয় বিদারয় পারমন্ত্রান্ প্রান্ প্রান্ম ভক্ষয় আগয় আগয় ছাঁ ফট্ স্থাহেত্যনেন বেন্টিভং যথা ভবভি তথা লিখেছ। চক্রমুভয়য়য় পেতহুহকুইং যারং। পৃথিবীসংপুটা বাহ্যে পৃণিবীমগুলং চত্রেলানাপুটাং যুয়াং ব্যন্তালিঞ্তমন্তকোণমিভি যাবছ। মন্ত্রান্তকহিত্যিতং ভদেব যারাং প্রতিকোণমিভি যাবছ। মন্ত্রান্তকহিত্যিতং ভদেব যারাং প্রতিকোণমিভিতলাকানান্ত্রের সংবন্ধং লিখেছ। ভত্তো বহীরেখায়য়ং লিখিছা আনস্তরং চতুর্কোণং কুর্যাহ ভহকোণের ক্রোহ লাখিছা অন্তরং চতুর্কোণং কুর্যাহ ভহকোণের ক্রোহ লাখিছা অন্তরং চতুর্কোণং ক্রাহান লিখেছ। ভ্রত্তপত্রে লিখেদেত-স্রোচনাল্যঃ ভাভে হহনি। এভচ্চক্রং ভূর্ত্বপত্রে ভহকামনার্থী বিহিতাধিকারী রোচনাল্যঃ বেন্টনাকুর্মচন্দনকপূর্ণ

চক্ররাল ইত্যাদি মূলোক মংগ্রেদশন ময়ে যন্ত্রকে বেটিত কারবে।
তৎপর যন্ত্রের বহির্তানে ভূপুর অর্থাৎ চতুকোণ হর লিখিয়া চতুকোণের
আতিকোণে বল্লুফাতি অন্তিত করিবে অনন্তর বিভিন্তাে চতুকোণ রেখা
দিয়া প্রাত্ত কোণে কোঁ আঁ লাঁ এই বীল্লের হারা ভূষিত করিবে।
বল্লেকে প্রয়োগালুলারে গোরোচনাদি হারা ভূজিপত্রে লিখিয়া শুলিবংশ
বল্লের চতুদ্দিকে প্রাণগ্রহার্য মন্ত্র লিখিয়া হারণ করিবে। মূলে এই
সহজে বহুবিধ মত ও বছবিধ প্রয়োগ লিখিত আছে দৃষ্টি করিবেই
বোধগমা হটবে। কামনাবিশেষে শেখনী কাল ও জ্বাাাদর বিশেহ
লিখিত আছে প্রবিভ্রন্তরে সমস্ত অনুদিত হইলমা গ্রহণার যন্ত্র প্রানাবিশ উদ্তাকরিয়াছেন কার্যা বিশেবে শংলার ও বিশেব মূলেই স্ব্লাই
লিখিত ব্রাল্লা অপরাণর বন্ধ সকল অক্সবাবে প্রিভ্যক্ত ইইল।

वानिखरेगाः अध्यक्ति अक्ष्रभूगानि विरम निर्देश है । এতেনৈ তছুক্তং ভবতি। আদৌ বট কোণং চক্রং পিখেৎ ততো বর্জ রেথাবয়ং ততেঃহ্তদলং পদ্মৎ ভদ্যৈকৈকৎ দলং কেশরৰগয়ুক্তং ভভোদলাঞাস্পৃক্ বর্ভুলরেখাৰগং ততঃ यहेटकांगर हटा बामगमनः श्रम्यरे श्रूनखरेवन द्रावा-ষয়ৎ ততঃ ষট্কোণং চক্ৰং ভতন্তথৈৰ বেথাৰয়ৎ তত णानायवे त्कानमधायम वर्ज्य मधात कर्निकारथा मरबा माधाः नामगरिङ र यद्वः निर्थर्। यहे त्कार्ययु मञ्जर्गान् निर्थर्। ততোহ্উপত্তের অউাক্ষরে নারায়নমন্ত্রৎ লিখেছ। পতা-ফকেশরদ্বেষ্ ব্থাসংখ্য বোড়শশ্বান্ লিখে। তদন-खनः दत्रशास्त्रमदश्य कानिनकात्वान् श्वनः वहे दकार्षस् ৰক্সৰণ.ন্। ভভোহনন্তরবর্ত্তুলরেখাব্যমধ্যে অমুষ্পোণা हेर वाना जम्बा कीन हेर विषठ अमूबा मर्व्यक्तियानि অমুষ্য বাৰ্ডমনশ্চকুকুকুকেশোত্ৰভাণপ্ৰাণা ইহাগভ্য হ্ৰৎ চিরৎ তিষ্ঠস্ত স্বাহা ইতি প্রাণপ্রতিষ্ঠামন্ত্রং নিখেৎ। অদ্য তু विर्मार्थ। शुक्रमुथात्मव ब्छाडवाः । कृष्णवहानां सार्काक्टर **ততো बानगनरलयू देवरलाकारमाद्यवीवर मांगामामिह्छ**९ ততে। বর্ত্রবাষয়মধ্যে হৃদর্শনমন্ত্রং অউকোণেযু প্রতি-कांनर वज्जाकातर निर्दर। ७ ७ वर्ष विभव्यक्तारवर्ष शांनाकूनावनी वीकानि लिएवट । देखि विलिधा शांतरत-দিত্যাদি স্পষ্টার্থং। অত সর্বা যন্ত্রসাধারণমুহুর্ত।দি বিশেষো মন্ত্রাৎশকোক্ত উচ্যতে। তথাচ ছদিনে শুভনকত্তে ছদেশে শল্যবন্ধিতে। সুশিষ্যস্তকে আচাৰ্য্য: শিষ্যো वा जनवावज्ञः जिम्छमूर्या वा भून्वामा छेन्विमा ध्वमा हा

कुक्र वित्यपंतर (१वर ७८७) यक्षर मर्गाल(४९) कांत्र-नाष्ड्रात कृ कानविराणवश्च कथारा । वन्नाक्राको निर्वर श्रुरवार्शनरको विरवयन श्रुक्त । जार्जाबार बाबनर त्याकः त्रचा ट्राकाहित करवर । जथाकामनाधीता ट्राबनीविटण-বোহপি। তথাচ লেখন্যা চ লিখেদ্যন্ত্রং বশ্যে দুর্বাঙ্কুরো-খ্যা। আকৃটে তু করঞোখা মারণে চ নরাছিলা। গুড-কর্মণি বিজেরা রাজবৃক্ষেত্র মতা। শান্তিকে পৌষ্টিকে देवच वामुकाम विश्वीख्या। मर्न्याभन्यात्रंग देवच कन्नत्न **खडातर्णि वा।** विख्यार्शाम्य देव मिन्ना जू क्षन-मार्छ। धत्रवर्षां विषया भर्ष्कावेन श्रास । कीरबारन **ष्ट्र व्याग्या अन्य वा माष्ट्राम् धुनर! ख्रमस्राभागकक** শত্রুণাং মারণং তথা। লিখিয়া সাধ্যেৎ সর্বাৎ পীত-वर्ख्यु नानाथा। ज्याखवारज्याक्षि। सरेवारेक्टवर विदेश-खबछन्मना ७ ऋ दाहिनः। छेवी बच्ची बयूरे खन्ह नाज कार्या निहातना। नारमस्यमम्बना देव ख्या वर्गा ह स्त्राहना। ভবৈৰ কুৰ্ব্যাদ্শত্বেন চিতাঙ্গারেণ সোজাণা। তাড়নোচ্চা-টনাদীনি কুদ্রকর্মণি সাধয়েৎ। থিষাক কীর্যুক্তায়াঃ मर्गार्थ मात्रवर ष्यूष्ठः। मञ्जाकर यञ्जतास्क अवर मर्ग्वका यक्र छः। शृक्षस्म ग्रम्भोतिम श्रीका ८ वरः वर्गा छ इतः। जिल्लाहरवर्ष्टिकः कृषा छठः পृकास्त कावदर्श (पवर इस्त्राठः कृषा माध्याद माध्याकालमः। क्या कर्ष भि খায়াৎ বা যথ। সমিহিতং ভবেদিতি। অদেশে শলা-ৰৰ্জিতে হুদেশে সমে শুদ্ধে বা শল্যবন্ধিতে অহাদি-त्रहिट्ड हेडार्थः।

व्यथ विकीशः राज्यः। नाम मधाननः मत्या वर्षे क्वांनर বাংগতো নিখেৎ। মন্ত্রাক্রাণি কোণেযু কোণয়োর্শিয়ে।-इनर। मारहन्त्रवितर वारहा कलात विनिधितिषर। ब्राह्म नाना नित्वाद्यन ठालदार थापिताधिन। मधा निर्मि रोमधानः प्रष्ठामिन वर्णरनत्त्रयः। अन्यार्थः। नामम्थनवर मध्य हेडि মালে লিখিত বর্ত্ব রেখাবয়মধ্যে সাধ্যস্য বস্তবো নাম व्यन विषय मधान कर निर्देश विष्ट विषय । **এতচ্চ প্রাপ্ত ক্রারেণ কার্কি। খ্যবর্তুল রেখাম্মাদ্বিছি-**निर्देश मञ्जाकवानि कारणम् अँतामाम् क् किं चाहा, রাৎ রামায় ভূঁফট স্থাহা ইত্যক্রান্যানি বা। चारहिक यक्न नागि यहे एकार्यम् यथाक्न मर निरंथर। द्यागरतार्विष्याम्बर घरतार्घात्राः द्याविष्यः दिवा মোহনং ও জী ক্লী জী দাশরথায় দীতাবলভায় ত্রৈলোক্য द्रमाहनाय नमः देवि मञ्जर यथामञ्जर निर्थर। मारहेक्टर-मधनः वाट्य वर्षे दकान विद्धारण श्रेष्टकान्य ठळः निर्थं मर्द्भव दिवार वृवकात विलियं । कथारन विलियं पाउर । देवर यखः नत्राभन्न क्लात्म नित्थर। रेकज्र रेवानिकाह অনামিকোখেন কনিস্তাদল্লিছ তাঙ্গুণীনিগতেন त्रत्कन निर्धित **डार्थ** । जानराष्ट्र थानित्राधिना । माधा-मञुजाबन् मञ्जर महज्जर कर्लर। मछिमिनमः थामिबमिसिस्डः थानिवाधिना जानस्य । (भवः ख्वाकः।

অথ তৃতীয়ং যন্ত্রং। ইদমেব পারং যন্ত্রং সায়াবীরেন বেষ্টি ঃং। ভূর্তের বিশিষ্য বিধিবৎ সাধ্যমৃত্যন্তমালিখেৎ। কৃত্যা শাশানে থননং সন্ধ্যায়াৎ বিজয়েশলং। তিত্তি দি-

ज्य हर्ष्य यद्ध । विशेषाक तमः युक्तः नाम मर्या निर्यमू न । दर्भार पृष्ठ द्वा न विष्य क्षित कि विश्व कि विषय कि

( 25 )

क्रिक्र मधनर महे दकानां विष् भं यूत्राकारर मधनर निरंथर। বারুণং পরিতো লেখ্যং বংইতি বরুণবীরং স্পাতো নিরম্ভরং লিখেৎ। তত চতুকো ব্যওলং সর্কাশারণং তৃপুরাখ্যুৎ পাশাকুশাবনাবীজযুক্তং লিখিয়া লাক্ষার-**८मनाटवर्केटग्र॰ भन्नाटेला** कलरमामटेकर्गन्नानिमात्र ब्हेटनः কুল্ভৎ পুরয়িত্বা তিম্মিন্ কলদোদকে ভদ্যস্ত্রৎ নিঃক্লিপেৎ ভন্ম থে কল্লিডং দীপং কপিলাজ্যেন পুরিতং। তদ্য কৃষ্ণ-য मूर्थ किन्ना मी पर कुर्या कि किना मुख्य भूर्य শরাবং ক্রহা ইতার্থঃ। সন্তেণাবাহ্য দেবেশং 🕮 রামং দীপাথাস্থাঙ্লি আবাহ্য বিধানত ইত্যস্যায়ন্থঃ। জীৱান-মন্ত্রস্যাগস্ত্য ঋষিঃ পঙ্জেশ্চন্দঃ পরমাজা দেবতা রং ই ত বীক্রং স্বাহেতি শক্তিঃ। কক্ষরাণান্ত একা ভৃগু-र्भ तक्षा विश्वाभाष्य (शोडमः। श्रुलएसा वामाप्य मह ঋষাঃ পরিকার্ত্তিতাঃ। তথা ছন্দাং দ্যাপ জমেণ যথা গা। ক্রেন্ফ্র নূর্হ গী প্ডক্তিরেবচ। জিফুপ্চ জগতী চৈণ ছন্দাংস্থ্যক্তানি সূ'রভিঃ। দেবভাণ্যকর-ক্রমেণ। পরমাত্মা ২৫.1 চুগা সূর্য্য: ক্ষমণ্ড পিতামহঃ। এতাস্ত দেবতাঃ প্রোক্তা বীভিহোত্তস্ত দপ্তম:। বর্ণাস্ত প্রথম: খেতো দিতীয়োহ্মিণমপ্রভঃ। তৃতীয়ঃ পিঞ্লবর্ণত: ভূর্থে হরিভ প্রভঃ। পঞ্চমঃ কৃষ্ণবর্ণ: গ্যাৎ ষষ্ঠঃ পীত। সমপ্রভঃ। সপ্তমো নীলবর্ণঃ স্যাৎ এতে বর্ণাঃ প্রকীর্ত্তি চাঃ। চতুর্ণামাল্যবর্ণানাং উলাত্তঃ কথিতঃ খর ৪। খারতঃ পঞ্মো বর্ণঃ যষ্ঠবর্ণোভকুদাত্রকঃ। উদাক্তঃ সপ্তমো বর্ণঃ স্বরাঃ (थाका महानच। ইত্যেতৎ প্রাণায়ায়াদ বিনিয়োগং

শংখার্ত্য ব্যাপকন্যাদং রুছ। স্বার্হেত্যনেন কর-শুদ্ধিং কৃষা রাম্য়ে ছু ফড়িডি শির:শিখা ক্রচ নেত্রেষ পঞ্জিরাণি ন্যুদেৎ স্বাহা অস্তায় ফড়িতি জন্ত্রং দিকু বিন্যাসেও। এবং ষড়ক্সবিন্যাসঃ। তত্তো (यानिमंत्रहात्रमुमाः अनमा अगरवार्याक्रम्भर कृता ना-श्व कार्रिक निष्ठः कृष्ट। श्रीतामः स्वारतः । नीत्नाध्यनः मनभाग्यः कोग्कृष्यिञ्डरा मियाञ्बस्यर (मयर দিব্যক্তলভূষিতং। দাসণে লক্ষণং ধ্যায়েৎ কণকাভং কির।টিনং। বামভাগে জগদ্যোনিৎ প্রকৃতিং পর্মেখনাং। भी डा९ कनकरमात्राक्षो९ (च ड । खु नष्ट्र स डा९। भर्तना-ভরণসংযুক্তাং বিভুজাং রজ্বকুওলাং। ধ্যাত্বা লক্ষরেয়ং জ্ঞা অশোক কুর্মৈর্নে ২। অনেন বিধিনা সিদ্ধান্তঃ मन क्षम्यस्भवार्व किन्न अभीत्म स्वत्कानसः त्वर जाताइनबूज्यानाम ज्ञालनीमित्रधोकत्रगापियूजाः अन्धा षष्ट्रनगांभर कृषा त्यानिश्तराभगृताः अनुभा छेन्द्रजः সী গ্রাৎ লক্ষাঞ্চ গদ্ধনীদ্য উচ্ছ ততে। গুরুং গণপাত্ क्तिवानान, जाता नाकभानान, वृत्रीर उरभूताजा বিখক্দেন গরুড়নারদাণি ভক্তান তেতো হলুমং প্রথীবাদি-পরিবারান্ আবাহয়েৎ। তত এতৎপরিবারস্ভিতৎ দেবৎ যোড়শোপচারৈরভ্যর্ত্য পুরতঃ কুমারং কুমারীং ৰা অভ্যৰ্ক দীপমধ্যে কিং ভিষ্ঠতি পশ্যেত্যুক্ত্ৰ প্রদর্শরে । তত্র সংলক্ষরেমন্ত্রী রূপৎ ভগবতঃ কচুটং। हेळा हि स्रामः।

লখ পঞ্চাং যন্ত্রং। ক্রিকান্তর্গতং ন্মে ভূতীয়াক্ষর

गिर्कि छ । सिके। छ द्विष् प्रश्निश छ छ। होनाः भिन्नदिः केरप्रदा भार्विवर मधनर छख विनिध्यम्बळवालिभा अङ् কেনাজবৃক্ষস্য কোটারে তবিনিঃ কিপেএ। মুখতভো পরি: স্তম্ভে জিহান্তম্ভে ভবত্যতঃ। ইত্যস্যাৰ্থ:। কণিকান্ত-র্গতিমিতি ষ্টকোণান্তর্গতবর্জুলরেখাদ্য মধ্যগতৎ সাধ্যস্য নাম তৃতীয়াক্ষরগর্ত্তি হং সাধ্যদ্য বস্তুনো নামমন্ত্রদ্য বা ইত্যানেন তৃতীয়াক্ষরেণ সংপুটিতৎ লিখেদিভার্থ:। শ্লিষ্টাস্ত caষু সংলিখ**েওঁ রামায় হুঁফট**ুইতি খ্লিফীন ্ষড়্ বর্ণান ্ ষট্কোণেয়, লিখেৎ। ততে ছেনাঃ পরিবেইটারেৎ অনস্তরং স্বাহেতি বর্ণবয়াভ্যাৎ পরিবেটয়েৎ পার্থিবমণ্ডলৎ वाट्य পाणाञ्चणावनोवोजमहिज हजूटकानमहिजः वहि-লিখেং যত্বান্ন্যাদাদিকং কৃত্ব। আসনে ভাতানো রকাং বিধায় লিখেছ। কাম্যকর্মবন্তম্য দৈবাদ্যৈরভিভবশত্তবাং। ভথা চ কাম্যকর্মপ্রস্কার শুভস্যাপ্রশুভস্য চ! অরিষং ভলতে মন্ত্রঃ সিদ্ধরং তদ্বিপর্যায়াৎ। তদ্য পাপা-खद्रां शतिहार्या महर्षे थाएँ मार्याता पृत्रा कामाकर्य কুৰ্য্যাৎ। কান্মন্কালে নিশি রাজৌ দার্মার্পরি **हर्ष्** योगानर्काक् यञ्जः मण्याना शानश्रक्तिं। इप পূজাং বিধার জভুকেন লাক্ষাবেষ্ট্য সংঅবারমভিমন্ত্র্য অমহক্ষা কোটরে পলাশরক্ষা উদরে ভদ্যস্তানিঃ किर्लि ॥ रमवः एगमः। जगराज्ञारि एवं बरक्ष करबारक देकेरन। मर्त्यवार नाममञ्जानार खरनाः भूका - প্রশ্বাতে।

चथ वर्ष्ट्रर यञ्जर। चार्ता वहे द्वांभगुक्त ए उ

ভটো হতং লিখেলুনে। দলানি বিলিখেদতে। ভারত माक्ष्यकार। मर्यनकन मन्नात्रः यकर मर्यमत्नाहतर **७०७(त्रश्**भि ছব্যক्ত९ माधार्यनाकत्रगर्डिट९। **७**दीवर বিনিখেন্সুরস্তৎ ক্রোড়ীকুতনম্বথং ৷ ততন্তং পঞ্বীন कानि भूमवावर्खदम्यादन। भूनक्वाकदत्रदेव उद्यव शक्तिः टबक्टरार । सङ्जाना शिरकांशामि (कारकुर वन कमा सर्थर। ख्या (कानक्थालियु होँ कें. एव विलिख्य छ्यी: I ह्ँ वोज्ञः প্রতিকোণাগ্রং কেশরাগ্রেষ্ চ यतान्। यानाः मखना वर्गाः स्राम्हवातिरमह्य मक्ष छ। दर्गाः मखमरनस्व ष्ठे यहे अकाकरम मरन। भृकार विकरिय कारेमा छ ब मर्त्वक जिल्लामन । निधिनिक् निर्यंतीकः नविनश्चता-হয়ো:। কৈূাঁ হূঁ চৈবেতি প্র্বাাদ্ভৃগ্ছে চতুরত্রকে। যজেং শিন্স সম্পারাধ্য ভতিং মুক্তিক বিন্দতি। এতদ্ यख्य ममानिशा त्मीनार्ग ताजर अरहे। प्राच्च वा ममा-গাদিখ্য গুড়িকীকৃত্য ধারয়েৎ। অপুতো লভতে পুতান चरता धनमाश्री, यां । किमल वक्तारकन मर्किमान्न थानर নৃণাং। যন্ত্রমেতৎ সমার্থাভেৎ ধারণাৎ পাতকাপহং। অস্যার্থঃ। ষট্কোণাদি ধরণ্যস্তং মনোহরং যন্ত্রং লিখিহা ভদ্য যন্ত্রদ্য মধ্যে স্থযক্তং যথা ভবতি তথা সাধ্যাখ্যা-कर्माक जर जमा जीवासमा मोकः निर्देश जयम्बर मनारथन (का कि कुछा। विभिर्धिम जारिर्गर्भ नावर (वक्षेत्रर । अन-र्भनाकरत्र ह भूनखन्नवर द्विरायः। अकेननार्वहर्म-শাক্ষর বেউনমিতি বশিষ্ঠকল্লভেদঃ। শেষঃ হুগম ইতি। इंकि देखि वर्ष्ट्र यह ।

M.

जन मखन यखः। यह कानानि ध्वनाखर भूनिवन विनिध्य দ্ধ। তদ্য মধ্যে লিখেতারং ষট্ত কোণেছপিক্ষাৎ। মৃশ-মন্ত্রাক্ষরাণ্যের সন্ধিদ্ধান্তক্ষামাধং। মায়াৎ গণ্ডেষ্ কি-ঞ্জে তরাশং লেখা । মতং । পত্তেষ্ পূর্ববন্ধানামন্ত্রে। লেখাঃ क्षर्यन दि। प्रभाक्षरतन मर्द्यके कापीन व्यक्षनानि है। षिश् विश्विष् विश्विष् नाति। १६वताहरहाः। **५**७ प्राप्तः চিরং চাত্রে সাঙ্গাবরণমর্চ্চয়েও। সৌণর্ণে রাজতে ভূর্তৈত্ব লিখিহার্চনমাচরেও। ফলন্ত পূর্বা-জ্তেবং মন্ত্রনাস্য বিচক্ষার। অন্যার্থ: চতুরত্রে নেফিত্ন্যাফদলন্য ক:র্ণ-कांगनमा मर्गा यहे (कांगः। जन्मर्गा व्यव यह यह उकाः ণেষ্ ষড়কবৰ্মজ্বৰণান্ রাৎ রী জং বৈ লৈ রঃ ইভাকা-ন্যায়ো দকেশিসক্ষি হাঁ কোণগতে অফলকঞ্জ-ক্ষেযু স্বরান্ তৎপত্তেষ্ট স্প্রাদিক্তমেণ সপ্তচন্থারিৎশৎ মাল।মন্তাব্বট্ সংখ্কান্ অফীমে পঞ্সং: খ্যকান্লিখেং। হুঁজানকীগলভায় স্থেতি দশাক Cत्र विश्विष्ठोग्नद्वां छटेल्वन काणिकाटेखन्ड निग्निपक्रू কোঁ হঁই ত নৃদিৎ হবরাহনীকে লিখেৎ। শেষঃ স্বস্প টঃ। चवाकेमर यञ्जर। चित्रताङ्ग्यभरत्यान यञ्जर देव बर প্রতন্তে ৷ অগন্তাঃ ৷---বক্যামি রামমন্ত্র্য যন্ত্রৎ ক্রচ-সঙ্গিতং। ধারণাত্তদ্য মর্ত্ত্যানাৎ জাগ্নত্তে সর্ব্যদিষয়ঃ। নশ্য সর্বপাপান বিপদো ষান্তি সংক্ষাং। ভূতপ্রেত-পিশারাদ্যাঃ পলায়তে চ দর্শনাং। মিত্রাণি ছিরতাং যাস্তি भवत्वा याखि मिळ्डार। श्रदाः ध्यमानमामाखि नामार यासि गरीकृष्ठः। कियञ्ज वल्दनार्द्धन नास्त्रापन स्प-

व कि:। यः खन तांगि छत्ना व खन अति तां। (कार्रिक क সংৈক্বিৎশত্যা পংক্রিবয়বিভূষিতং। বিনাদেছুত্বমং চক্রেতামান কবচৎ শিথে ৷ দ্বাদশাক্ষরবর্ণাল্চ সুথান मारख्य विनारम्य। अञ्चरमामविद्यामानार आम्बिगा-क्तामा है। त्राचनामीनि नामानि नमकात्त्रण त्याकत्त्रक्। त्य শিরঃ পাদিতীব স্যাৎ স্কতি বাক্যযোজনা ৷ সাণ্যা-थ्यानरयुक्त यक्षा यारहरकाकानरण गृह्य । यकामणांख्य-বাগ্-পান নারসিংহমতঃ পরং। লক্ষীপাশাসুশা-প্শভ বার হং ফট ্ম্র বকং ৷ স্বাহেতি রামভদ্দ্র দ্বাদশাক্র-মীরিতং ৷ সৌণর্শে রাজতে পাত্রে ভূর্ক্তে বা সমাগা-লিখেৎ। অথবা ভাত্রপাত্তে চ গুড়কীকৃত্য ধারয়েৎ। यावच्चावस टगीवर्ग कोरभा विश्वास्ति। पूर्व षामणवर्षांग छम्बर छाञ्चभांबरक। धवर त्मशुर विद्रमः ষেণ যথে শক্তিঃ প্রতিষ্ঠিত।। এতাং রামবলোপেতাং ইত্যাদি শ্লোকষট,কৰং। য<sup>মা</sup>ছতিঃ প্রদেশেষু হতাকারং यथानित्थः। नर्ववृत्छोत्रभगनः नर्व्वातम्बनः। আগুবারোগ্রেখহা পুরপৌরবিবর্জনং ৷ সর্কান্ কামান নবাপ্লেতি বিফুলোকং সগচছতি ৷ ভস্যার্থ: ॥ বক্ষ্যামা-ত্যারভা বক্ত প্রর সংক্রিতারতারং স্পার্টং। দাকণোত্র-त्त्रभाजश्रामाति थाक् शन्दिमत्त्रभं द्वापणात् श्रिटंड ष्गा-९ गरिएका के का भिष्ठ निष्ठ । विश्व विश्व कार्य । दिथान भक्तरान धकविरभांछ दकार्छनि छवस्य। टेड गार्कर शढ् कदशव्यावष् वज्य छलमर ठकर विनारमर। **एवं कीताम करहर लिएसर। छम् यथा बाममाकतमञ्ज वर्गानार** 

याथा धोकरकन प्रांचवीय नगः इस निदः लाक्रिकि स्था-जिष्ठः गरशूरिष्ठ (मरेक्क्श्यान् दकार्षे थानिकरणाम धवमू-পরিপংক্তাবাসুলোম্যেন দশপদানাৎ সমাবেশঃ। অধ্যন भरको बाजिलास्मन भूनिक्निकोर्छिन् मञ्चवर्गिनिकः কেন সংসুটিভানাং উপরিভনানাং দশপদানাৎ সমাবেশঃ। मध्या भाषीयाः क्त छत्तव वर्षमार विभागे ७१ नित्यं । **ध्वरमक्विश्निक्तिकार्श्वानार विनिद्यानः । छत्तव द्वामम** বর্ণাক্সকৎ মন্ত্রৎ প্রদর্শনিত স্বেড্যাদিনা। সৌবর্ণ ইত্যাদি মুশক্তিঃ প্রতিষ্ঠিতেতান্তং স্পৃষ্টং। তত্ত্ব যাবজ্জীবৃষ্টিঃ ক্যাদি তাত্রপাত্তে ইত্যন্তং সর্ববিদ্যাণারণং। এতামি-क्तानि क्षांक्वर्षे कः यञ्जावृद्धिः चान् बुखः यथा ध्विष्ठि ভণা লিখেং। শেষঃ স্পাটঃ। ন দান্ত গুৰবো বদ্য टेनव नीकाविधिक्रमधा जामतकार यनदत्रव कुलभीनलमः र्शायः। भोकास्त्रभट जनाणि देनज्य कलमवाणारज । ইত্যাগস্থ্যেনোকছান্তামরকাসমধিতং প্রাদক্ষিণ্যক্রথেণ চেডি চকার সূ'চতার্থৎ একান্তরোক্তৎ ক্রফবাং। হেসা মহস্য वीजर महार मत्यह वीजानत्या नित्यर। हर मः त्माइमिछि वागर खेगानाामिकमालि. थर। देर केर निर्व नारम्य भार्च छेर छेर ' (आद्य छर्चन हा विस्मरमार्थे कमार्यो ह পায়ত্রী লিখনে শ্বতঃ। যমরালায় বিঅং বর্থানায় थीनहि। छात्रा यमः आहातमार। देखार्थन यमगाम्यारः श्विभवर विद्या नित्यर। यदा या यथवाकारम खा विकार व्यानमार नित्यर । व्यासानमात्त्र ।—पूमि न्याकेर

শবস্পৃষ্ঠং যক নির্দ্ধাল্যসঙ্গ । দশ্ধনাল জ্বতং শীণং যন্ত্রং জাতুন ধারয়েছ। ইতি দর্ববিষক্ত সাধারণ ক্রেমঃ। ইত্যক্তমং যন্ত্রং। ইতি শ্রীরামার্কন চ্ত্রিকায়াং চতুর্থঃ পটলঃ।

চৈত্রাদিমাসক্ত্যৎ যদধুনা তৎ প্রকাশ্যতে। রামচন্দ্রদর্গ বহুক্তৎ নারদাদিভিঃ। মধ্যে শুক্তৃতীরারাং জানকীরমণং প্রভুং। রাজোপচারৈঃ দংপৃদ্য মাসমান্দোলারেৎ কলোঁ। দক্ষিণাভিমুধৎ দেবৎ দোলমানং হরেশরং! স্বপৃত্তিতং সকৃদ্ কী সর্বাপাপৈও প্রমূচ্যতে। চৈত্রে মাসি দিতে পক্ষে ভৃতীয়ায়াৎ রমাপভিং। দোলার্কৃৎ সমভ্যক্তি মাসমান্দোলয়েত্রদা। দোলার্কৃৎ প্রপশ্যন্তি বেছপি কৃষ্ণ মাধ্বে। অপরাধসহকৈন্ত স্কুতি জাগরং। দেশার্কৃ। দোলার্কৃদ্য দেবস্য বেহতে ক্রুতি জাগরং। স্ক্রপুণ্যক্লাবাপ্তিনি।মধেনিমিষে ভবেৎ। ইতি গারুড়ে দোলোৎসবং।

সংগ্রতি নারদপ্রভৃতি খুনিগণ করুক অভিহিত চৈত্রাদিনাস সমস্তেব করিব্য কার্যা সকল বিবৃত হইতেছে। চৈত্রমাসের করু পক্ষীর তৃতীর্য তিথিতে রাজ্কীর উপচার দ্বারা অর্জনা কবিরা কলিকালে একমাস পর্যান্ত শীরাম চল্লকে দোলার্র্য করিবে, দোলমঞ্চে দক্ষিণ মুখ হইরা দোহলামান ভগবানকে একবার দর্শন করিলেই সকলপাপ হইতে মোচন হর। নাহারা বৈশাথ মাসেও ভগবানকে দোলন্তিত দর্শন করে তাহাবাও ভগবৎসরিধানে সহল প্রকার অপ্রাধের ক্ষমার পাত্র হয়।বাহার্য লাগ্রণ পূর্মক ভগবানের দোলোৎসব করিবে ভাহাবিগের প্রতি নিসিবে সমস্ত পুণ্য কল লাভ হয়।

চৈত্ৰশুক্ষনবম্যাপ্ত কর্ত্তন্যং ত্রতমূত্রমং ! অগস্তাসং হিতায়াৎ যশাহাত্মং স্থুদীরিতং। 🖹 রামনবমী প্রোক্তা কোটিস্গ্যগ্রহাধিকা। তিম্মন্ দিনে মহাপুণ্যে রামমুদ্দিশ্য ভক্তিতঃ। যৎ কিঞ্চিৎ কুরুতে কর্মা তন্তবত্যক্ষাং নৃণাং। উপোষণং জাগরণং পিতৃকুদ্দিশ্য তর্পণং। তব্মিন্ দিনে তু কর্ত্তব্যং ত্রন্ধ্রাপ্রিভীপ্তভিঃ। রাম এব পরংত্রন্ধ ভদ্দিনে রামভোষণং। ইত্যাদি মহিমা। নিতাং নৈমি-ত্তিকং কামাং ত্রতক্ষেতি বিচার্য তে: নিকামাণাং বিধা-নাত্তৎ কাম্যতা নোপদিশ্যতে। মুমুক্ষবোষ্পি হি সদা 🗬 রামনবমী এতং। ন তাজ তি স্থর শ্রেষ্ঠ। মুনী দ্রোইপি বিশেষতঃ। সদাপদস্য গ্রহণাদেতৎ স্তুতিপর্থ ন ছি। নৈসিত্তিকঞ্চ ন তথা সদেতি আরতে যতঃ। যাৰজ্জীৰ-विভাবাহৎ ममामग्रार्था च চानाथा। टेहरळ गामि नवगगास्त ভক্লপকে রঘভনঃ। প্রাছরাদীৎ পুরা ত্রহান্পরং ত্রিকাব কেবলং। তিমান দিনে তু কর্ত্রণং উপথাণ্ডভং সদা। নিতামেৰ ভবেতসাৎ জীরামনবমীব্রতং। নৈৰ তুল্গা-

অন্তর রামনবমীএত বিবৃত হইডেছে। অগন্তা সং ১৬।ে ১২ ব বছতর মাহাত্মা কীর্ত্তিত হইরছে। টেক্র মাসেব গুরু করিও নামা তিথিতে এই এত করিতে হর, রামনবমী তিথি কোটি পুল: গঙালের দিবসাপেকার ও অধিক প্ণাদারিনী, এই দিনে যে কাল্য ক'ববে ভাষা অক্ষয় কল্লাদ হইবে। এই দিনে উপবাস আগরণ এবং শিতৃত তর্পণ করিবে। রামই সেই পরস এক ভাতএব ঐ দিনে রাম সংস্থাবিত হইলে অক্ষাযুক্ষ প্রাপ্তিহর। এইএড নিভা, নৈমিভিক ও কাম্য ভোগে অবিধই অথমত বলা যাইতে পারে কিন্তু কামনারহিত মুস্কুদিগের সর্কাণ কর্ত্তব্য বলিয়া ইহার নৈমিভিকত্ব ওকামান্ত নির্মাচন কর্ম না। তির যাগের গুরু পক্ষীর নব্মী দিবসে সেই পরম এক

দনিত্যহং প্রত্যকং দ্যাদিতি শ্রুতিঃ। সূর্যাগ্রহে কুরু-क्टाब महानारेनः कृटेलम् हः। यद कनः जनवाद्याछि জ্ঞীরাসনবসী ব্রতাৎ। ইত্যাদি। নৈবং ফলশ্রুতে নিত্যং লক্ষণাভাবতে: ২থবা। ন নিত্যতা তত্ত্ব নাদ্যো হগ্লিছো-खारनो निर्वाव ३३। नारक्षां २० उक्तरण जमा महारमाय-অংশে ফ্<sup>টা</sup>় প্রাপ্তে শীরামনব্যাদিনে মর্ত্যা বিমৃত্ধী: 1 উপোষ: ৎ ন কু + তে কুন্তীপাকেষু পচ্যতে ৷ যস্ত রাম-ন ব্যান্ত ভুঙ ্ক্ত মোহাদিমৃত্ধীঃ। কুন্তীপাকেরু বোরেরু পচ্যতে নাত্র সংশয়ঃ। ইত্যাদি। অতো ২ম্য করণে লোষ এবণামি ভাঙা স্থিত।। ক্র্যান্তাম নব্ম্যান্ত উপো• ষণমতক্ত্রিত:। ন মাহুর্গর্ভ্যাপ্রোভি স বৈ রামো ভবেৎ স্বয়ং। তন্মাৎ সর্বাত্মনা সর্বের ক্রছৈব নবমীব্রতং। মুচ্যন্তে সর্বাপাপেছ্যো যান্তি একা সনাতনং। ইতি সাপে-ক্ষতাঘারা মোকার্থর্ক গনতে। ন সংযোগপৃথক্-(इन विक्राप्त कलनिङ) छ। 'ने छानांमिश पर्भा पर्याः গাদি ফল চাঞ্তে: ৷ নত্বৰ্থাদরূপং স্যাৎ ফলং পাপ-ক্ষয়াদিকং। ফলং স্যাদর্থবাদায় দ্রব্যসংক্ষারকর্মান্ত। हेि नामा के रेनवर मान्विधियां धाकत मार्क । मर স্কারহাঙ্গকর্মাহে ন স্যাতামিহ কর্মাণ। ভূতভাব্যুপ যোগং হি দ্ৰব্যং দক্ষাৰ্যানিবাতে। নোপযুক্তঃ পু-মানত্ত শাস্ত্রাদ্বা নো প্রযোক্ষ্যতে। নাপ্যক্ষণ প্রধানৎ मा। धारणां कि का कि । जा अधार का मार्च का या । যোগ্যাঙ্গমিতি ছিতিঃ। জুহ্বাদিবচ্চ কর্মহাদ্রেব্যহৎ নাৰ-কল্পতে। পরার্থত্বে নিদানঞ্ তলৈয়বাত্রাবকল্পতে।

ত্ববাদহীনানাং বিধীনাং বিধিতা কথং। অর্থন্ন পরত্বে চ বাক্যভেদঃ প্রদানতে। নৈবনর্থদন্ধং মুক্তং রাজিসক্রোদিযাগবং। তত্মাং পাপক্ষমদারা নোকার্থদান্ত নিত্যতা। ন্যামোপর্ংহিতা ছো স্ত্রাস্তব্যা ন্যামুবেদিভিঃ। ইতি জ্রীরামনবনী কৃত্যতা।

শুদ্ধা বিদ্ধেতি ভেদেন নবমী সা দ্বিধা মতা। সমা সুনাধিকা চেতি শুদ্ধাপ নবমী তিথা। পুনর্কতা সং-যোগবিয়োগা ভাত্ত বছ বিধা। সমাদিগাক্ষ ভেদাদি ভেদৈ-বিদ্ধাপি ষভিধা। এবং দাদশধা ভিন্না নবমী ততা নি-র্গঃ। মহাকলপ্রদা শুদ্ধা পুনর্ববস্ক্ষসংযুতা। চৈত্তে মাদি নবম্যান্ত রামো জাতঃ স্বয়ং হরিঃ। পুনর্ববস্ক্ষসংযুক্তা সা তিথিঃ স্ব্রকামদা পুন্ববিস্ক্ষসংযোগঃ স্বল্লোহপি

রবুনাথ জন্ম গ্রহণ কবিয়াছিলেন যাবজ্ঞীয়ন এই তিথিতে উপবাস ও ব্রত কর্ত্তবা এই সকল শাল্ল দ্বারা ইহার নিজ্যতাই প্রভি পাদিত হয়। কুক্সেলে স্থাগ্রহণ সময়ে মহাদান সকল করিলে যে কল হইরা থাকে একমাত্র এই রামনবনী ব্রত কবিলেট ভাদৃণ কল প্রাপ্ত হইবে ইত্যাদি এই ব্রভের বছবিধ কল প্রভিত নিবন্ধন নিভাগ্রের ন্যাঘাত হইতে পারে না। যে হেছু অকরণে দোহাল্য আছে, গ্রহণ কার ত্রই সম্বন্ধে নানাশাল্ল ও নানা বিচাব দর্শাইয়াছেন ? স্বেতঃ পাণ-ক্লার, মৃত্তি সাধন ও অকরণে দোহ এই সকল দারা এই এলের নিভাগ্রাই নির্মাটিত হইরাছে।

এই নৰমী প্ৰথমত: ৩ছা ও বিদ্ধা প্ৰটেশ ছুই প্ৰকাৰ পৰে সমা-নুনা ও অধিকা প্ৰাক্তেদে গুৰু৷ এবং বিদ্ধা উভৱেই তিন তিন ডিন প্ৰকাৰ হয় পৰে কাষ্যৰ নক্ষৱেৰ সংবোগ ও বিয়োগ বাৰঃ যদি দৃশ্যতে। চৈত্রশুরনবমান্ত সা তিথিঃ সর্বকারদা।
শ্রীরামনবমী প্রেক্তা কোটসূর্ব্ এহাধিকা। চৈত্রশুরা জু
নবমী পুনর্ব্ব হুত্রা যদ। সৈব মধ্যাক্ত যোগেন মহাপুণ্যতমা ভবেৎ। মেষং পৃষণি সংপ্রাপ্তে লয়ে চ কক টাক্সরে।
আবিরাসীৎ সকলয়া কোশল্যায়াৎ পরঃ পুমান্। ইতি।
কেবলাপি সদোপাস্যা নবমী সর্বসংগ্রহাৎ। তল্মাৎ
সর্বাজ্মনা সর্বৈষ্ঠঃ কৃত্রবং নবমীত্রত্মিতি। সর্ব্বেরিতি
সর্ব্বেয়মধিকারঃ প্রকাশ্যতে। বিদ্ধেব চেদৃক্ষমুক্তা ত্রতং
তত্র কথং ভবেৎ। বিদ্ধানিষেধ্ শ্রবণার্বমীচেতি বাক্যতঃ।
নবমী চাইটমী বিদ্ধা ত্যাক্যা বিষ্ণু প্রায়ণৈঃ। উপোযণং নবম্যান্ত দশ্যামের পারবং। বৈশ্ববানাৎ বিশো-

উত্বেবই বড়বিণ্ডেল, সমন্তিতে ছালেশ প্রকাব প্রজেল করল। ইকার
মধ্যে প্রকাপ লক্ষর্তা শুদ্ধা নবনীই মহাফল প্রদারিনী, বেংক্
প্রকাপ নক্ষর্তা শুদ্ধা করা নবনীতেই জীলাম চক্র আবিভ্রত
ছলরাছিলেন বলিয়া প্রকাশ ভিবি সর্বাজীই ফল প্রদান নবনীতেথিতে
জলপ ও বলি প্রকাশনক্ষলে বোল হর তাহা হইলে ও নিনের জনেক
মাছাল্মা। মধ্যক্ষে সমন্ত্র পর্যান্ত যাল প্রকাশর বোগ থাকে ভবে ঐ
তিবিকে প্রাচমা জানিবে। সেই প্রধান গর্ম প্রীয়মচক্র মেম রাশি
প্রত স্ব্যা এবং কর্মট লগ্নে কৌলল্যার গর্ম হইতে আবের্জ্ ত হইন্নাছিলেন
এইশাল্লঘানা সৌর বৈশাশইপ্রভ্র জন্মমাস প্রতি গানিত হর্মাতে প্রকাশত
কৈন্ত্র মাস চাক্র নির্মাচিত হইনাছে। কেবল নবনীতাহাতে প্রকাশত
কৈন্ত্র মাস চাক্র নির্মাচিত হইনাছে। কেবল নবনীতাহাতে বৈক্ষবাভিরিক্রের প্রত কর্মত প্রক্রির বোগ ছইলে বিশেষ প্রশন্ত। বেহেন্ত্র জন্মী বিদ্ধা নবনী ক্রেল বৈক্ষবর্গনের পরিস্থান্তা। বৈক্যবশাক্ত
স্থান্ত্রের স্বাধীতে প্রবি ক্রিক্রের হয়। বৈক্ষব্যতিরিক্রের জন্মী

যাতু তত্ত্ব বিষ্ণুপরায়ণৈঃ। দশম্যাদিয়ু র্জনেচ্ছ বিছা ভ্যাবৈদ্যব বৈষ্ণবৈঃ। ভদনোষাস্ত সম্পোশাণ প্রভং তত্ত্বিব নিশ্চিত্র দশম্যানের শব্দেন দশমীন নৈঃ বজ্বনেছ। নিশ্চিক্ত্রেং বিচারেণ নব্মী প্রত্মাচনের। ইতি রাম নব্মী প্রত্নিবিধিঃ।

বৈষ্ণবৈত্যি বাক্যাদ্ধি ভেষাং লক্ষণ্যচাতে। সাঙ্গং সমুদ্রং সন্যাসং স্থাষিচ্ছল লৈবতং। সদীক্ষাণিধ সধ্যানং স্থন্তং দাদশাকরং। অন্তাক্ষরমথান্যং বা যে যন্ত্রং সমু-পানতে। জ্যোত্তে বৈষ্ণবা লোকে বিষ্ণুণর্মারতাঃ সদা। সদীক্ষাবিধি স্থানং স্থন্ত দাদশাকরং। অন্তাক্ষরসমান্ত্রং মন্ত্রাদ্ধং স্থলকং। সহস্রাক্ষর সংযুক্তং মূলব্যুহাদিভেদতঃ। পঞ্চায়তনরূপঞ্চ যে বিপ্রাঃ সমুপাসতে।
মহাবৈষ্ণবদংজ্ঞান্তে মহাবিষ্ণোর্জিপ্রায়ঃ। ন চলতি
নিক্ষবর্ণধর্মতো সম্মতি রাজ্য স্ক্ষিপক্ষে। ন হর্নিত

যুক্তা নৰমীতে উপৰাস এবং নৰমীর অস্তে দশনীতে পারণ ব্যবস্থা সক্ষত। বৈক্ষবদিগেৰ দশনী যুক্তা নৰমীতে উপৰাদ, প্রদিন দশ্মী কিছু কাল থাকিংশ দেই দশমীর অস্তেতে পাৰণ করিবে।

সংপ্রতি বৈক্ষবেও লক্ষণ কথিত হটতেছে। বঁটোবা মুদ্রা, তাস ঋবিক্ষকালি, দীক্ষে:জ্বানান, মন্ত্র ও বজাদি হারা প্রভূব উপাসনা করিয়া বৈক্ষবধন্মে বত আছেন তাঁহারা বৈক্ষব লক্ষণে লক্ষিত হন। আর বাহারা পূর্কোজে লক্ষণে লক্ষিত হটরা পঞ্চাজোপাসনাতে এতী থাকেন তাঁহারা মহাবৈক্ষব বলিয়া কীঠিত হন। বিশেষ বুলা হট-তেছে বঁহারা অ্লাতি নিক্ষপিত ধর্ম হটতে চলিত না হম এবং ইতি পালো। ত্রিভ্বনবিতরহেহতবে হপ্যক্ঠশ্বতিরজিত। স্বাদিভিক্সিয়গাং । ন চনতি ভগবংপদারবিন্দা স চলতি নিমেবং ধর্মাদিশি স বৈষ্ণবাগ্যঃ ইতি জীভাগবতে। ইত্যাদি বৈষ্ণবিক্ষণকৰং।

অসামর্থ্য শরীরস্য ত্রতে চ সম্পাগতে। কাররেদ্ধর্ম পত্নীং বা পুত্রং বা বিনয়াশ্বিতং। পত্যো জীবতি
নৈব স্থা উপোষ্য ত্রতমাচরেং। আবশ্যকভাদ্ভুঞ্জীত যদ্য
দত্রোপ্যুল্যতে। অসকারং পুপ্যুভ্রাং গদ্ধপুপানুং
লেপনং। উপবাসেন ছুষ্যেত পুণ্যন্ত্রীণাং তথাঞ্জনং।
সভাস্থল মতাস্থলং সভোজনমভোজনং। মন্বাদি মুনিভিঃ
প্রোক্তং চতুর্বিধন্দোবিং। ত্রির্ত্তাদি সভাস্থল মেকাদশ্যামভোজনং। অভাস্থলং পক্ষান্তে সভোজনমুদা-

শ্ক ও মিথে সনজ্ঞান করিয়া থাকেন আব কাহরেও কোন দ্রব্য আপ-হরণ কি বিনাপ না করেন তাহাগেই নির্মাণচিত্ত বৈক্ষবশ্রেষ্ঠ বলিয়া পরিগণত হন। ভাগবতে লিখিত আছে যিনি নিমেষ সমরের জ্ঞ ও ভগবানেব পাদ শ্ম হউতে এবং ধ্যম হউতে চলিত না হন তিনি প্রম বৈক্ষব গিব্যা কীর্ত্তি হন।

শানী বক পীড়া নিবন্ধন অশস্ত সময়ে ঐ এত উপস্থিত হইলে ধর্মনিটা পত্নী দ্বানা অথবা বিনীতপুন্ধারা এত করাইবে। পতি জীবিত স্বে জার উপনাদ করিবা এতাওকান করা নিবিদ্ধ অতএব, সধ্বা জীগণ আবিত্যক মত ভোজন করিয়া এত করিবে। কিন্তু উপনাদ সময়ে অলভার, পূলা, চন্দন ও অঞ্চন এই সকল ধারণ করিবে না। ভাত্ম ভোজনের সভিত, ভাত্ম ব র্জাত, ভোজনের সভিত এবং ভোজন বিজ্ঞিত এই চতুর্বিধ উপনাদ মহু প্রভৃতি মুনিগণ কর্ত্ত ক্ষিত্ত ভাত্মাছে। জিয়াত্র উপনাদ স্বলে ভাত্মণ কোনালী হলে এবং আমাবস্তাদি

ছতং। এক ভকেন নকেন তথৈবা য়াচিতেন চ।
পরোমূল ফলৈর্কাপি বালর্দ্ধাত্রঃ ক্ষিপেং। হবিষ্যভোজনমানং সভাসাহার লাখবং। অমিকার্য্যমধঃ শ্যানজনমানং সভাসাহার লাখবং। অমিকার্য্যমধঃ শ্যানজভোজী ষ্টাচরেং। এক দিক্তি চতুর্ভোজ্যা দানাদে কাসনাদিকং। অমুকল্পেনাপি কার্যাং নিভাছারবমী-ক্রং। পরমাপদমাপরে হর্ষে বা সমুপস্থিতে। বিবাহ-ক্রবদ্ধানী মুদ্ধে বাভাদয়ে তথা। সূত্রকে মৃতকে বাপি ন ত্যাজাং নবমীক্রতং। অফৌ তাল্যক্রতমানি আপো সূলং ফলং পয়ঃ। হবিক্রাম্যাকাম্যান্ত গুরোর্ব্রচন-মৌষধং। ইতি প্রতিনিধিঃ।

স্তীক্ষ মাত্ চাগন্ত্যঃ প্রকারঃ সোত্তিধীয়তে। ক্রমেণ যোজয়ে সম্ক্রিরমায় ব্রতাত্মনাং। ষড়ক্ষরাদিকৈ ম'লৈঃ স্থানামপুজনং যথা। সর্বেষাং রামমন্ত্রাণাং

উপবাদেতে তামুল বর্জিত উপবাদ করিবে। শিশু বৃদ্ধ ও রোগী ব্যক্তি
এক্সার মাত্র রাত্রিবোগে ভোজন করিলে উপবাদের ফল প্রাপ্তইবে। আর
ইহাদিগের পক্ষে অয় চিত ফল মূল জলাদি দেবন উপবাদ
দিদ্ধি ছইতে পারে। রাজিযোগে ভোজন করিয়া এত কারকেব হবিহাাশন, সান, সভাবচন, ভোজন লাঘব, অগ্নিকার্য্য এবং অংখাদেশে
শ্রন এই ছয়্টী নিয়ম প্রতিপাশন করিতে হয়। রামনবনী এতের
নিভাতা নিবন্ধন বিধির অমুক্র করিয়াও কার্য্য করিবে। নিভাস্ত
আপদ কিংবা অভাস্ত আনন্দের বিষয় অথবা বিবাহ, অভোক্ত এহাদি
মুদ্ধ এবং কোন মান্সলিক কার্য্য উপস্থিত হইলে এবং জনদাশোচে
ও মরণাশোচে রামনবনী এত ত্যাগ করিবে না। অশ্যক্তর পক্ষে
জল, কল মূল, ভুয়, বৃত্ত, ঔবধ এবং ওক্ষ ও প্রাদ্ধণের অভিমত অব্য
ভোক্তনে এত ভক্ষ হয় না।

সন্ত্রাকিঃ বছকাঃ। ভারকং এদা চেত্যুক্তং তৈন পুরা প্রণক্তত। মহাপুরুণসূজেটকে দীকাবিধি মলানতঃ। বৈশিকস্তাপ্যভাবে ভু রামমক্রৈ র্ডবে দ্রুবং। অন্টম্যাৎ **টৈরমাদক্ষ শুরুপক্ষে জিভেন্ডিয়ঃ।** দন্তধাবনপূর্বস্ত প্ৰাতঃ স্নাধান্ধথাবিধি। নদ্যাং তড়াগে কুপে বা হুদে প্রস্রাণ হপি বা। ভতঃ সন্ধ্যাদিকৎ কুর্গ্যাৎ সংস্মরনাবৰৎ হৃদি। গৃহ্যাগত্য বিপ্রেন্ড্র, কুর্যাাহুপা-मनामिकर। माखर कूर्वेचिनर विधार द्वमभाञ्जभन्नर मना र জীরামপুজামিরতং অশীলং দম্ভবর্চ্ছিতং। বিধিত্তং রাম-মন্ত্রাণাং রামমক্রৈকসাধিনং৷ আছুয় ভক্তা সংপ্জ্য র্ণুয়াৎ প্রার্থানিতি। জীরামপ্রতিমাদানং করিষােহ্ছং বিজোক্তম। তত্রাটার্যোভন প্রীতঃ শ্রীরামোহপি ছমেব মে। ইত্যক্তাজ্যেন তংবিপ্রং স্নাপায় হা তভঃ স্বয়ং। তৈলেনাভাজা চ স্বায়ালিভয়ন্ রাঘাং হণি। খেতা-ষরং শেতগমং শেতখাল্যানি ধারটেছে। অর্চিতো ভূ-विजरेन्त्रव कुजमानाहरूकिकाः। बाहार्गाए एकानराय পশ্চাৎ দাধিতারে: স্থবিস্তরৈও। ভুঞ্জীত স্বয়মপ্যেবৎ

সংগ্রহ অগন্তাকর্ত্ক অভিন্তে ত্রতাদেশের নিয়ম সকল প্রদর্শিত হইন্ডেছে। শ্রীরামচন্ত্রের সকল মন্ত্র হইতে ষড়ক্ষর মন্ত্রকেই মন্ত্রবাজ্ঞ ও তারকত্রক্ষ বলিয়া নির্মাচিত হইয়াছে অতএব এই মন্ত্র হারাই পূলা করা প্রশন্ত। পূর্বদিশদেব কর্ত্তবা কার্যা প্রদর্শিত হইতেছে। তৈজ্ঞ মাসের শুক্র পক্ষীয় অষ্ট্রমীতে জিতেক্সির হইয়া দল্প ধাবন পূর্বক নদী প্রস্তৃতিকে স্থান সন্ধা। প্রস্তৃতি করিয়া শ্রীরামকে মানসিক স্থরণ করিয়া গ্রহণ উপনীত হইয়া ভলীয় উপাসনাবক্ত কনিবে। রামভক্ত বেদ পার্বক ব্যক্তকে আহ্বান পূর্বক ব্যব ক্রিবে। এতীর নিকটে শ্রীরাম প্রস্তি

হুদি রামমপুদারন। অউম্যা মেকডকেন অক্সভ্তেন রাঘব। ইক্ষাকুবং শতিনক প্রীভোভব ভবপ্রিয়। ইত্যেকভক্ত নিবেদন মন্ত্রঃ। এক ভক্তব্রতী তত্র মহাচার্য্যে জিতেক্সিয়ঃ। শৃণুনামকথাং দিব্যামহঃ শেষৎ নয়ে শ্লুনে। সায়ৎ সন্ধ্যাদিকৎ কুর্যাৎ ক্রিয়াৎ রামমপুদারন্। আচার্য্য সহিতো রাত্রৌ অধংশায়ী জিতেক্সিয়ঃ। স্থপেৎ স্বন্নং তথৈকান্তে জ্রীরামার্পিত্যানসঃ। আচার্য্যকরণে হণ্ডতঃ স্বয়ৎ ভুক্তা স্বপেৎ স্থাৎ। ইত্যক্ষমী কৃত্যং।

ততঃ প্রাতঃ সমুখার স্নান্থা সন্ধাৎ বিধার চ।প্রাতঃ
সর্বাণি কর্মাণি শীব্রমেব সমাপয়েও। উপোষ্য নবমীৎ
ত্বদ্য যামেষ্টিস্থ রাখব। তেন প্রীতো ভব ছৎ ভোঃ সংসারাত্রাহি মাৎ হরে। ইত্যুপবাস নিবেদন মন্তঃ।

ততঃ স্থমনা ভূষা বিশ্বস্তিঃ সহিতো ২নঘ। স্থাহে চোত্রে ভাগে যাগমওপমাচরেৎ। চতুদ্ধরিং পভাকাচ্যৎ স্থবিতানং স্থাভিনং। মনোরমং মহোৎসবং পুশানিয়ঃ

ষাধানের সহর করিয়া উভয়েই ঘৃত ও তৈলাগি দারা সান করিয়া খেত বস্ত্র পরিধান পূর্ব্বক গদ্ধ পূশাদি দারা ভূষিত হইবে। অভ:পব মধ্যাহ্ছ বিধের কার্য্য করত অট্টম্যামেক ভক্তেন ইত্যাদি সূলোক্ত মন্ত্র পাঠ করিয়া উভবেই একাহাবে জীরামের নাম কীর্ত্তন করতঃ দিন শাপন করিবে।

পর বিশ্ব প্রতে: সন্ধা ও স্থানাদি স্থাণিয়া উপোষ্য নৰ্মীং ছদ্য ইত্যাদি উপশাস মত্র পাঠ করিয়া উপশাসের সঙ্গল করিবে। জ্ঞপর যথা বিধি মঞ্পাদি করিয়া প্রাহাদি বাচন পূর্বক সঙ্গল করিয়া বিধি অস্সাবে শ্রীরাষের পূজা ও ড্লীয় অর্থময়ী প্রতিষাদান করিবে।

সমলয়তং। শথ চক্র হন্মন্তিঃ প্রাণ্ হারে সমলয়তং।
গরুত্বাস্থানিশ্চ দক্ষিণে সমলয়তং। গদা খট্টারুলৈ
কৈব পশ্চিমে সমলয়তং। পদ্মস্তিক নীলৈশ্চ কোবেরে
সমলয়তং। মধ্যে হস্ত চত্কাচাং বেদিকাযুক্তমায়তং।
বিচিত্র নৃত্যগীতৈশ্চ বালৈগ্রুচাপি স্থানযুক্তং। পুণাছং
বাচয়েত্র বিছন্তিঃ প্রীতিমানসৈঃ। ততঃ দয়য়য়েদেবং
রামমেবসমুম্মরন্। অস্যাং রামনবম্যান্ত, রামারাধনতংপরঃ। উপোষ্যাক্তর্যামের প্রমিলা যথাবিধি। ইমাং
স্থান্ত্রাং রামপ্রতিমাং স্থায়ত্রতঃ। জীরামপ্রীতয়ে
দাস্যে রামভক্তায় ধীমতে। প্রীতো রামো হয়য়াশ্রু
পাপানি স্বাহৃনি মে। অনেক জন্মসংশিদ্ধান্যভাস্তানি
মহান্তি চ। ইতি ত্রিভিঃ সক্ষরঃ।

শক্তাশক্তাতিশক্তন্য মূর্ত্তিনির্মাণমূচতে। ততঃ স্বর্ণ ময়ীং রামপ্রতিমাং পলমানতঃ। নির্মিতাং দিভ্লাং রম্যাং বামাক্সন্থিভজানকীং। বিভাতীং দক্ষিণকরে জ্ঞান-মৃদ্রাং মহামতে। বামেনাত্মকরেণারাদ্বেণীমালিক্য সং-স্থিতাং। সিংহাদনে রাজতে ২ত্র পলস্বণ বিনির্মিতে। অ-

সমর্থ, অসমর্থ ও সাভিশর সমর্থ প্রভেদে প্রতিমা নিমাণ তিবিধই ইইডে পারে। শক্তব্যক্তি পলগারিষত মর্থ ধারণ বাম প্রতিমা করিবেন ই হার বামভাগে বিভূজা সীতা দেবীর প্রতিমা থাকিবে, সীতাদেবী দক্ষিণ হতে জান মুদ্রা গারণ করিয়াছেন এবং বাম হতে ধারা জীরামচন্তকে আলিখন করতঃ পল্মমণরিমিত রজত সিংহাসনে বিরাজ করিডেছেন, এইরণ প্রতিমা করিছে ইইবে। অন্তিম বিভাগুসাবে এক পল, শলার্ম কথবা পলের চতুন্তাগৈকভাগ মর্থ ধারা প্রতিমা নিমাণ করিবে,

শক্তো যো মহাভাগ তদ্য বিভানুদারতঃ। গদেশবা তদর্বের
তদর্বার্তেন বা মুনে। ততাহপ্যশক্তো রোপ্যেণ কারয়েদ্রম্নন্দনং! শৌহেন নির্মিতাং বাপি দারুলা শিলয়াপিবা। যন্ত্রা লেখ্যং বিলেখ্যং বা মাতুরস্কগতং হরিং।
কোমলাঙ্গং বিশালাক্ষ মিস্ত্রনীলমণিপ্রভং! দক্ষিণাংশে
দশরথং পুত্রায়েষণ তৎপরং। পৃষ্ঠতো লক্ষ্মণং দেবং সক্তরেং
কণক প্রভং! পার্থে ভনতশত্রুত্বো তালর্স্তকরাবুভো।
ভারো ব্যগ্রং হন্মস্তং রামানুগ্রহকাজ্ফিণ। বিস্তর্শাঠ্য
মর্কত্বের মূর্ত্তিং কুর্ঘাৎ প্রযুক্ততঃ। তথাচ ভবিষ্যে।
বিভবে সভি যো মোহাৎ নো কুর্ঘানিধিনিস্তরং। ন
ভৎফলমবাপ্রোতি দেবদ্রোহী স উচ্যত্তে। ইতি মূর্ত্তিলক্ষণং।
আসনোপরি সংবিশ্য ন্যাস্কালং বিধায় চ। শৃষ্যং
প্রপুদ্ধেদ্বের গন্ধপুষ্পাক্ষতাদিভিঃ। কলসং বাসভাগন্থং

ইহাতেও অশক্ত হইলে রৌপা ধাবা অথবা লৌহ, কাঠ এবং পাষাণ ধাবা অতিমা করিবে। নিতান্ত অশক্ত হইলে চিত্রণটে আন্তে করিবে। চিত্র করার নিরম, বিশাল নেত্র ইক্রনীলমণির সমবর্ণ প্রীরাম্চক্ত কৌশলারে ক্রোড়ে বিরাজ করিতেছেন, ইহার দক্ষিণ ভাগে দশ্বথ, পৃষ্ঠভাগে ছত্রধাবী-স্থান কাজি লক্ষণ, পার্মদেশে তালবৃত্তধারা ভরত ও শক্রম এবং সমুধে ভজ্জিনম্র হন্মান দভাষমান রহিয়াছেন এই প্রকার চিত্র করিতে হইবে। মুর্ভি নির্মাণ বিষয়ে বিজ্ঞের শঠতা করিবে না। ভবিষা প্রাণে লিখিত আহে, বিত্ত সব্বে মোহ বশতঃ বিধিবিহিত কার্য্য না করিলে কর্ত্তব্য কার্য্যের, ফ্ল লাভ হয় না এবং এভাদৃশ বাজি দেববিষ্টের কথিত হন।

'कानक्षर कामरम डिमिविड क्रेबा नाम प्रकण कतिया 'अन भूर्व मध्य

পূषा खंगानि होषिरन्। भावक त्थाकरमञ्जा हाषान्। सञ्जनकरत्रः। देखि मच थिकिहा।

विनित्थं गर्वाखां छा । दिनित्वां भित्र समात्र । जिर्धाः शृक्षंगं (त्रथाः कृशारमरकानविष्मंजीः। थर७न्तु विश्रमा टकारन मुक्ता शकरकाष्टिका। धकानमशना बल्ली छल्छ नवांचः भटेषः। हजूर्व्विरमभवा वांभो भविधिर्विर्माछ পলৈ:। মধ্যে বোড়শভিঃ কোঠেঃ পদায়ফদশং স্মৃত:। मिर्डन्यू मुधना कृषा राज्ञान नीतन श्रिकाः। छ्वा-রুণা দিতা বাপ,ঃ পরিধিঃ পীতবর্ণ হ। বাহ্যেন্তরদলে খেতা কৰিকা পীতবৰ্ণিকা। খণ্ডেন্দু শৃঘলাবলী বাপী-ভদ্র পঞ্চাং। পরিধ্যাবেটিতং পদ্মং বাহ্যে সহং तक्षरा नर्वाज्ञ ममूक्षिष्ठे नर्वाज्ञ अस्था ব্ৰহ্মান্টাহ্ন দিকু সোমাণ্য। দেবতাঃ স্তাঃ। বায়ু-শেষভাষা বিশ্ব বসুনভৌ চ কারয়েৎ। সোয় ঈশান-ट्यांगरिश क्रखांत्नकामणाश्ख्या। क्रणांन हेळ्द्यांगरिश चां पिछान् घाषभान् लि८४२। हेस्साग्रिमर्था ह छथा-थित्तरत्री शृक्षरत्रक्टः। व्यारश्रत्रयम्याम्याभागिकानः कुक्। विविको त्मामद्याम (४) इन्हांतन ममक्र देश । क्रम्पर मन्त्रीश्वतर भूमर मशादिकक कांत्रद्युवः। वितिकी णानत्यार्भार्यः पकानिः मछद्मात्रः। बद्यास्याख्याः ं মধ্যে ছুৰ্গাৎ বিষ্ণুৎ ভথৈবচ। ব্ৰহ্মাগ্ৰিমধ্যে চ ভথা. धवाः (पवीर धकांब्रायः । वितिक्षियमद्याम् (धा मक्रछः मध रि क्ता विकाशः शामभूतिक (मिनी एक कांत्राव । कारवती नर्जनाटिन यम्ना ह मतत्व हो। शक्रा क्या छथा

গোলা: পূজাঃ সপ্ত চ সাগরা: । কারকীর সদ্যস্পি নীরেকুলবি সাগরাঃ। ত্রক্ষক্ষান্মিত্যালৈ ম দ্বৈস্তান্তান্ত লেবতাঃ। গন্ধপুশাদিভিঃ পূজ্যা: সপ্তমীপাশ্চ সর্বতঃ। স্বিভোভদ্রং যুখানু স্বিতো ভদ্রন্চাতে। ইতি স্বিতো ভদ্রং।

মধ্যে তীর্থাদকৈঃ পূর্ণং কৃন্তং রহোদরং শুভং।
চূতপল্লব পুল্পাশ্চ যুতং সংস্থাপ্য চাপিতিং। সৌবর্ণে
রাজতে তাত্রে পাত্রে ষট্কোণমালিখেন। অলাভে
বিঅপাঠেবা কলসোপরি সংস্থিতে। স্থাপনীরং।
যুগ্যবন্ত্রমন্তিরং স্থাপং শুভং। দিব্যসিংহাসনে তত্র স্থাপরিহাচ্চারেৎ শুভিঃ। ও নমো ভগবতে বিকাবে
সার্কিভূতাত্মনে বাস্ত্রেদবার সর্কাত্মসংযোগপদ্মপীঠাত্মনে
নমঃ। ইতি মন্ত্রেণ তন্মধ্যে দত্যঃ পুল্পাঞ্জলিং পুনঃ।
ইতি পীঠাচ্চা।

লেপ্যাদৈররভিষেকঃ স্যাদদদ্যাদ ্যজ্ঞোপবীতকং। ইতিস্থানং।
গদ্ধ পুলাদে বারা ক্ষনা করিবে এবং বাম ভাগে কলপূর্ণ কুন্ত ও সমস্ত
পূজান্তব্যর আসাদন করিরা প্রোক্ষণ করিবে। ক্ষন্তর সর্বভোভন্তমণ্ডল
ক্রিছা মূলোক্ত দেবতা সকলের পুলা করিয়া মণ্ডল মধ্যে তীর্থোদক পূর্ণ
কুন্তে হতু নিক্ষেপ করিয়া স্থর্গাদি পাত্রে লিখিত ষট্কোণ যন্ত্র এবং অচ্ছিল্ল
দশার সহিত্য বন্ধ ও প্রথ পূজাদি বিন্যুক্ত করিবে। ক্ষতঃপর সিংহাস্লোপরি স্থাপিত প্রতিমাতে ওঁ নমো ভগবতে বিক্ষবে ইত্যাদি ম্য়ে
পূজাঞ্জিতিত্ব প্রদান করিবে।

অঘ্য পাণ্যাদিকং দদ্যাৎ স্নানং পঞ্চায়তে ন চা

অন্তর অর্থাদি প্রদান করিয়া প্রগন্ধি জব্য বারা দেশন ক্রভ পঞ্চামৃ-ভাদি ধারা প্রতিযার অভিযেক করিয়া বজোপনীত দিবে। ভতঃ সংস্থাপ্য পীঠে তৎপূজাং কুর্যাদ্যথাবিধি। জাবাহনং স্থাপনক্ষ সন্নিরাপন মেবচ। সনিবাধন মেবসাৎ অবপ্তঠন মেবচ। তত্তমুল্রাভিরেব স্যাদ্দেবং সংপ্রার্থ্য ভত্তি তঃ।
নানারত্ববিচিত্রাণি দদ্যাদাভরণানি চ। হেমাপ্স স্থাক্তির বনসার সমন্বিতং। গন্ধং দদ্যাৎ প্রয়ত্ত্বন সাগুরুক্ষ সক্স্ম। কন্তু রিকারা বৌ ভাগো তথৈব ক্রুমস্য চ।
চন্দনস্য ত্রেরাভাগাঃ শশিনন্ত্রেক এবচ।
যক্ষ কর্দম ইত্যেষ সমস্ত প্রভাজনঃ। নানাবিধৈঃ পুল্পাক্ষেত্র হেল্ডাক্রঃ। কহলার কেতকীজাতি পুরাগাদ্যৈঃ প্রপ্তারেং। চন্দ্র্যাভিস্তল্যীদলৈঃ। কোমলৈবিজ্ঞান্ত প্রাভিস্তল্যীদলৈঃ। কোমলৈবিজ্ঞান্ত প্রাভিস্তল্যীদলৈঃ। কোমলৈবিজ্ঞান্ত প্রভাগ্যাভিস্থানি ক্রান্ত্রাণ্ডাক্র ক্রিভিস্তল্যীদলৈঃ। কোমলৈবিজ্ঞান্ত্রিক্রান্ত্রাণ্ডাক্র স্থাভিস্তল্যীদলৈঃ। কোমলৈবিজ্ঞান্ত্রাপ্রভাগ্রাভিস্তল্যান্ত্রানি লোক্যাত্রনিক্রাভ্রতে। ইতি কৌশ্ল্যার্ছ্যানি লোক্যাত্রনিক্রাভ্রতে। ইতি কৌশ্ল্যার্ছ্যানি

নমো দশরপায়েতি পুরুষে পিতরং ততঃ। ইতি
পিতৃপ্জনং। ততোহসুজ্ঞাপ্য দেবেশং পরিবারান্ সমচ্চিরেং। পূর্বিষট্কোণকোণেযু হৃদয়াদীনি ষট্
ক্রমাং। প্রধাবরণং।

অতঃপর নানাবিধ পূপা ও নানাবিধ উপচার দারা আবাহনারি সুদ্রা করত জীরামচন্দ্রের পূরা করিরা রামসা অননী চাসি ইত্যারি মত্রে কৌশ-ল্যার পূরা এবং নমো রশরধার এইমদ্রে দশরধের পূলা স্মাপিরা মূলাছ-সারে আবরণ ধেবতা সকলের প্রশা করিবে। ২ন্মন্তং সম্প্রীবং ভরতং স্বিভীষ্বং। লক্ষ্যাস্ক শতুদ্ধং কাষ্বন্তং দলাদিয়া দিতীয়াবরণং।

স্তিং জয়ন্তং বিজয়ং সৌরাক্ত্রং রাক্ত্রেরনং। অ-কোপং ধর্মপালাখ্যং অ্যন্তং দলমধ্যতঃ। ভূতীয়াবরণং।

দলাত্রে লোকপ:লাংশ্চ। চতুর্থং। তদ্রাণি ভদগ্রতঃ।
চতুর্থ্যাসাধিটভিশ্চেবনামমল্রৈর্থজেদ্ধি ভান্। পঞ্চমাবরণং।

ঘণ্টাঞ্চ বাদয়ন্ ধূপং দীপঞ্চান্ম সমর্পরেও। ভক্ষ্য ভেজ্যা দিনা ভক্ত্যা নৈবেদ্যং বিধিনাপ্রেও। আচমনং হতাফুলং মহানারাজনং ততঃ। নমস্কুর্গাত্তঃ স্ত্রোত্তঃ মত্তঃ প্রতেও প্রতেও প্রতেও প্রতেও প্রতেও মাহাজ্যং দিব্যাং রামকথাং তথা। রাম ভট্তেও সমং যাবং নয়েদ্রামমস্কুল্রন্। ইতি প্রথম্যাম্কুত্যং।

শষ্পাত্রাদনার্চ থি কুর্যাদ্ বামেষ ত জ্রিতঃ। যাসে বিতীয়ে সম্পুদ্ধ মধ্যাহ্নে জন্ম ভাবয়েৎ। উচ্চত্থে গ্রহ্ণ পঞ্চকে হ্রর গুরোদেশো নবম্যান্তিখো লয়ে কর্ক টকে পুনর্ববিত্ত্বতে মেষং গতে পুষণি। নির্দিশ্বং নিধিলাঃ পলাশঃ সনিধা মধ্যাদ্যোধ্যারণে রাভিত্ত্ তমতুদপুর্ববিত্তবং যৎ

আবরণ পুলাতে তাখুণ নিবেদন করিয়া মহানীরালনা করিয়া নানা বিধ স্তবে নমস্কার করিয়া বধাশক্তি মূলমন্ত্রণ কবিবে, জপ সমর্পাত্তে জয়ন্তীয়াছাত্রা ও রাম বিষয়ক প্রস্তাব শ্রবণ করত ভক্তবৃদ্দের সহিত প্রথম প্রহর অভিবাহিত করিবে।

বিভীয়বানে শ্রীরামের পূজা করিয়া তদীয় জন্ম চিত্তা করিবে। জবোধার ক্লপ অরণি কাঠ হইতে সমস্ত রাক্ষস ক্লপ পলাস সমিব দথ্য করার জন্য অতৃতপুর্বা অণৌধিক শক্তি সম্পন্ন একডেল আবিভূতি হইবাছিলেন ই হার কিঞিংদকং মৃহঃ। মধ্যে বানুয়েশ বান্যানন্তি সন্তি আনার জ্লাৎপতেঃ। কলপুন্পান্ত সন্ত্রি গুৰাছা শ্রাস্ত্রাং। জনোক চুকু ক্রেনঃ সংমূক্তং জুলনীন কৈঃ। স্পান্তবান পায় ব্যানাং বিনাপায় বৈভ্যানাং নিধনায়ক। পরিজ্ঞানার সাধুনাং জাতো রামঃ প্রহংছিরঃ। গৃহাণার্গ্যং নয়া দত্তং জাত্ভিঃ সহিত্তেহিন্দ। ইত্যর্গ্য মন্ত্রঃ।

পুনঃ পুষ্পাঞ্জলিং দত্তা ধামে যামে হত জৈত: । পৃষ্করে। দিধিবস্তক্তা দিব রাজিং নয়েদ বুধঃ। ইভি নবনী কৃত্যং ৮

ততঃ প্রাতঃ দম্পায় স্নানদয়্যাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। দমাপ্য বিধিবদ্রামৎ প্রুরেৎ পূর্ববিদ্যুনে। ততো ধ্রেমৎ
প্রক্রীত ফ্লমস্ত্রেণ মস্ত্রবিৎ। পূর্ববাক্তপদ্মকৃত্তে বা
ক্তিলে বা যথাবিদি। লোকিকাগ্রো বিধানেন শভমক্টোতরৎ প্রতা। সাজ্যেন পায়দেনিব স্মরনামন্যধীঃ। ততে।
ভক্ত্যা স্বসন্তোষ্য আচার্যাৎ পূরুয়েন্ন। ক্রলাভ্যাং
দরদ্বাভ্যা মস্রীয়ৈরনেকধা। গদ্ধপূত্যাক্ষতির্বস্তিবিভিত্রৈঃ

আবিভাৰ স্মায়ে পাঁচটী গ্ৰহ উদ্ধোনে স্থিত ছিল, বুচন্দতি ও চামের যোগ ছিল নব্দী তিথি, কৰ্কুটগা ও পুনৰ্মান্ত নক্ষা ছিল! এইরূপ চিস্তা কবিয়া বিবিধ বাদ্য বাদনায়ে ফল, পুনাও জল সংকৃত্ত শব্দ পাত্রন্থিত অর্ধ্য লইবা দশানন ব্যার্থায়ে ইত্যাদি ময়ে অর্পণ করিবে!

জতঃ পর প্রহরে প্রহার পূশাঞ্জণ ক্ষান বরিষা দিরামাত্রি যাপন করিয়া প্রাতঃ সমরে ঘণাবিধি প্রাতঃ ক্ততা সমাপিরা প্রনিষ্ধে পূলা কবিয়া পদ্ম-কুন্তে অথবা স্থিলে লৌকিকায়ি স্থাপিত করিয়া,অটোবের শত সম্বত পাহস হাবা হোম কবিয়া কুণ্ডলায়ি অলম্বার ওপুশাধি হারা আচার্বোর অর্জনা কবিয়া

इंत्ररनाहरेतः। ততো রামৎ সারন্ पन्तारपदमञ्जूषेते. রয়েৎ। ইমাৎ স্বর্ণয়গ্নীং রামপ্রতিষাং সমলকৃতাং। চিত্র বস্ত্রযুগাচ্ছমাৎ রামে। ইহং রাঘবায় তে। এরাম প্রীত্যে দাস্যে তুষ্টো ভবতু রাঘবঃ। ইতি দানমন্ত্রঃ। ইতি দহা বিধানেন দদ্যাবৈ দক্ষিণাৎ ভুবং। অন্যেভাটিচ যথা-यোগ্যৎ গোহিরণ্যাদি শক্তিতঃ। দদ্যাদ্বাসোযুগৎ ধান্যৎ ঘথাবিভবসাত্মনঃ। ত্রাক্ষালৈ: সহ ভূঞ্জীত তেভ্যো দদ্যাক দক্ষিণাং। তব প্রদাদস্বীকারঃ কৃতৎ যৎ পারণৎ ময়। 1 ব্ৰতেন তেন প্ৰীতন্তং স্বামিন্ত ক্তিং প্ৰয়ছমে। ইতি পারণসঙ্কল্প। , কুত্রৈব একাৎত্যাদি পাপেভ্যে। মূচ্যতে क्षवर। जूनाशुक्रवनानानि कन्नर প্রাপ্তোতি মানবঃ। चारनककनामः निक्ष भार्थरङा। गृह्या **अवर । वहना कि**यि-হোত্তেন মুক্তিন্তন্য করে স্থিতা। কুরুক্ষেত্রে মহাপুণ্যে সূর্যা हस्त थार उथा। जूनाशूक्ष वनारी मारेनाः कृरेक वृत्त चारक कनर। তৎফলং লভতে মর্ত্ত্যো দানেনানেন স্ত্রত। দশ্মী কুতাং।

সজোৰ জন্মাইবে। পরে ইনাং পর্ণমন্নীং ইত্যাদি নজে দক্ষিণাব সহিত প্রতিমাদান করিবা তব প্রসাদ স্থাকার ইত্যাদি পারণ মজে প্রসাদ নিরা পারণ করিবে। প্রতিমাদানে বহুফল তুলা পুক্ষদানে যে ফল অভিহিত হুইরাছে ইহাতেও তাদৃশ ফল লাভ হর এবং ব্রহ্মহত্যাদি পাপ হুইতে এবং বহু জন্মার্ক্তিত পাপ হুইতে মুক্ত হুইবে। অধিক আর কি প্রতিমাদাতার হুক্তেতে মুক্তি অবস্থিতি করে। কুক্তেজে চক্ত স্থাপ্রহণ সমরে তুলা পুরুষ দানাদিতে যাদৃশ ফল তাদৃশ ফল প্রাপ্তি হর। দাগরণং ভক্তা প্রবেদিশের দানী দিনে। কর্ত্বা দাগরণং ভক্তা প্রবেদিশের নে। আবন রামং ধিয়া-দত্যা প্রবেদিশের নে। জপনামনত্থ নায়ারমানক্ষম শ্বতং। একাক্ষরং বা বিধিবৎ দর্বন্যাস কুডোনতিঃ। প্রাতঃ সন্ধ্যাঞ্চ বিধিবদ দিবা সন্ধ্যাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। গো ভূতিলহিরণ্যাদি দদ্যাদ্ বিভাতুসারতঃ। শ্রীরামচন্দ্র ভ ভেড্যো বিষ্ট্যঃ শুদ্ধবিতঃ। পারণঞ্ প্রক্রবিত বাক্ষাণঃ সহ ভক্তিতঃ। এবং যঃ ক্রতে ভক্তা সর্বা-পাপেঃ প্রমূচ্যতে। গন্ধায়াং প্রক্রিপেল্পেয়াং লেখাৎ দেবগৃহে ন্যদেং। ইত্যাকিঞ্চন ব্রতং।

শক্তন্য যদুতং প্রোক্তমণকোদ্যাপনকরেং। তদিপি ন্যাদ যুথাশক্ত্যা সাক্ষ্ণ সম্পত্ত হঃ। একামপি নরোভক্ত্যা শ্রীরামনবমীং মুনে। উপোষ্য কৃতক্ত্যঃ ন্যাৎ সর্কাপাপৈঃ

দরিজ ব্যক্তিব পক্ষে নবমীতে উপবাস ও জাগংপ করিয়া শ্রাপ্রসাবে পূজা কবিষা মারা,লক্ষী ও কামবীজসংক্ত লগবা একাক্ষর মজসারা শ্রীবামকে প্রবাকরত অপ বিবিধা । প্র দিন প্রাতে সন্ধ্যাদি সম্পিয়া রাম ভক্ত সাব্দিগকে বিভান্সাবে গোপ্রভৃতি দান করিষা কার্য্য সমাপন কবিবে। এই ব্রভে সকল পাপক্ষ হয়। মুগ্রী প্রভিমা হইলে গ্লাদি অবে বিস্ক্রিন করিবে চিল্লিডা চইলে দেবালয়ে রাথিবে।

শক্তব্যক্তির পক্ষে যেরপ ব্রত অভিহিত হইয়াছে অশক্তের পক্ষে ব্যক্তির সময়ে তারুপ কর্ত্তবা ইহাও সামর্থ্যানুসাবে জানিবে, কার্য্য সাম্প্রহিণেই সম্পূর্ণ ফলব্যদ হয়। একবারও যদি ভক্তি প্রন্যর উপবাস কবিয়া ন্বমীব্রতের অপুষ্ঠান কবে তাহা হইদেও ব্রণী সকল পাপ ইইতে সুক্ত ইটবে।

প্রায়চ্যতে। অণি শব্দাদশক্তম্য মৃর্তিদানস্ত সূচিতং। ইত্যকিঞ্চন ব্রভোদ্যাপনং।

বর্ষে বর্ষে সমর্থস্য ত্রতেনৈর প্রপৃণ্ডা। ন ত্রেয়ান্দ্রাপনং কিঞ্ছিতাদন্যছিধীয়তে। সর্বত্রতস্য পৃত্তির্থনিদ্রাপনং রামত্রতঞ্জের নান্যেনাস্যান্তি সংপৃত্তিরনেনাস্যৈর পূর্ণতা। ইতি সমর্থোদ্যাপনং। ইত্যাগস্ত্য সংহিতায়াং

বাদশ্যাৎ চৈত্রমাসদ্য শুরাযাং মদনোৎসকঃ। বোধাষনাদিভিঃ প্রোক্তঃ কর্ত্তব্যঃ প্রতি বৎদরং। তত্র দ্যাৎ
স্বীয়তিথিয়ু বহুয়াদের্দ্মনার্পনং। অগ্রিকিরিঞ্চিপিবিছা
গণেশঃ ফন্ট বিশাখো দিনক্মহেশঃ। তুর্গান্তকো বিশ্বহরি
স্বরাশ্চ সর্বাঃ শদী চেতি তিণীয়ু পূজ্যাঃ। ত্রিযালোপবিঘাতার্থং যত্ত্বয়া বিহিতং প্রভা। ন মে বিদ্যোভণেদত্র
কুরু নাথ দ্যাৎ মিষ। সর্বাথা সর্বাদা বিষ্ণো মম স্বং পর্মা
গতিঃ। উপবাদেন দেব স্থাং তোষ্যামি ক্লগৎপতে।
কামক্রোধাদ্যো যে মে ন তে হ্যব্রতিঘাতকাঃ। অদ্য
প্রস্থা কার্য্যা সর্বাধ্যায় নমোহস্ততে। এবং বিজ্ঞাপ্য

যে ব্যক্তি প্রতিবংশরে এই প্রতাপ্তর্গানে সমর্থ, তাহাকে প্রতিষ্ঠ, কবিতে হয় মা, তাহার প্রত ছালাই সম্পূর্ব হা জানিবে। ব্রত্তির অন্ত কিছু করিব্য নাই, রামনব্যীপ্রত করিলেই সক্ষ প্রত সাক্ষ করা হয়।

কাতি বংসর তৈত্রমালের শুক্লপকীব বাদশীতে মদলোৎসবও গমনা লোপণ করিবে । বিধান সুংগ মঠবা ৷ পার্থাদিবলে দাদ দাদশী ঘটিকা না

**C**नट्रबंद खक्षनांदनी खनमा ह। थाछः सांचा नमस्त्रकी ८एटवर्णः विधिवज्ञ । शब्दक्षमन्। त्रामध्यकाकणाः श्रुटमांडन् । क्रायामांत्र छटेक् भूषरक्रम्मभाषिना। নেষ্যামি কামপূজার্থ মিতি সংপ্রার্থ্য তৎ নমেং। উৎ-পাট্য পঞ্চাব্যেন প্রোক্ষ্য প্রফাল্যবারিণা। অশেক্ষ্লে গদ্ধাল্যঃ স্থান্তিলে পুন্দয়েৎ ক্ৰমাৎ। অশোকঞ তথা কালং বসন্তৎ কামমেৰ চ। ওঁ সংশাকায় নমস্তভ্যৎ কামস্ত্রীশোকনাশন ৷ শোকার্ত্তি হর মে নিত্যমানন্দং कनमञ्ज (म। व्यटनन भूकरम् भूटेन्यूनरमाकः त्नाकना-नामन । उ क्रिकानिकान भरी छः कान करिया महावनः। কালতেহ্বয়বঃ সর্বাৎ তথ্যৈ কালায়নে নমঃ। অনেন পূজয়েৎ কালমক্ষ্য কলনাত্মকং। ও বসন্তায় নম-স্তভ্যৎ বৃক্তবালতাপ্রিয়। সহজ্যবস্থাই কালরপ নমো-হস্ত তে। বসন্তপুলৈরমুনা মতুনা কামরূপিণং। ওঁ কাম ভন্ম সমৃদ্ধুত রতিবাস্পপরিপ্লুত ৷ ঋষগন্ধর্কদেবাদি বিমোহক নমোহস্ত তে। সংগৃহ্য দমনং পুষ্পৎ পুদ্ধেম-सूनागृना । ७ नरमाश्च शुक्रावागाय क्रामाञ्चामकातिरा । মন্মণায় জগরেত্রে রভিপ্রীতিপ্রিয়ায তে। দমনং চোপ-जिएकेठ मद्भुगातन मन्यथर। ममनर उर পुथक् कृषा ভাগেনৈকেন মনাথং। পূজ্যেত্বকুমার্গেণ পরিবার্দম-ষিতং। কামায় নম ইত্যেষ মন্ত্রস্ত প্রধানিকঃ! মন্ত্রে-ণানেন মণনং পুক্ষেদ্গদ্ধপুষ্পকৈঃ। ধোতেন বাসসাক্ষাদ্য निश्रांत्र अंदेरनन देव। चन्द्रांश्वक्य मुक्कां क्रियां अध्य मानहत्र् । देखि गृश्नियम् ।

বক্ষা দাণ প্রতিষ্ঠিত বিষয় প্রতিষ্ঠিত বিষয় বি

রুষী কামদেবায় নমঃ, হী আ রত্যৈ নমোহন্তিতি।

কিন্দু আরাণরীরায়ানঙ্গায় চ নমো নমঃ। ও মন্দ্রথায়
রামায় রুষী বসন্তস্থায় চ। আরায় চেক্ল্চাপায় পুস্পাআয়েতি প্জয়েং। ও তৎসর্রপায় বিদ্যাহে কামদেবায়
ধীমহি। তয়েহনঙ্গ প্রচোদয়াং। ইতি মন্মধ্যায়তয়া
সংমল্রাফোতরং শতং। ধুপদীপৈশ্চ নৈবেদ্যৈরুপচারেঃ
প্রপ্রয়েং। হার্দেন মন্তুনা পুস্পাঞ্জলিং দহাভিবঃ
ক্রেরং। হার্দেন মন্তুনা পুসাঞ্জলিং দহাভিবঃ
ক্রেরং। হার্দেন মন্তুনা পুসাঞ্জলিং দহাভিবঃ
ক্রেরং। বার্দের পুস্পবাণায় জগদাহলাদ কারিনে।
মন্মধায় জগমেত্রে রভিপ্রিয় নমোহস্ততে। ও আমজি
তোহিদ দেবেশ পুরাণপুরুষোভ্রম। অতস্তাং পুজয়িয়
ক্রিমি সালিদ্যং ক্রে কেশব। ক্রিরোদধিমহানাপশ্রাবিদ্যতিবিগ্রহ। অতস্তাং পুজয়িয়্যামি সায়িধে
ভবতে নমঃ। নিবেদয়ায়য়হং ভুডাং প্রাভর্দমনকং শুভং।

नर्ववा नर्वविव् विका नमर्छश्य श्रामित तम । हैथ्मामद्धा त्वर १ मद्या श्रूणाश्रामित छड्ठ। श्रृक्रिष्ठः छन्नमनक्ष क्रस्टमार्शित मरिष्ठिए। अर्ज्युन मर्वर्ता तत्क्ष्यः
क्रवर्टमार्थित मरिष्ठिए। अर्ज्युन म्हरत्नम् श्रूमाथवा।
बाक्रार्गिका नमक्ष्ठा छन्नभाषो श्रुमा छ। गीष्ठमक्तनिर्दिशः क्र्राच्चानत्वर छड्ठः। हेष्ठि प्रमाधिवानन्।

প্রাতন দ্বাধ দেবেশং কুর্যাৎ সান্ৎ যথাবিধি। নি ত্যপূজাৎ পৃথক্ কৃষা কুর্যাদৈমি ভিকং ততঃ। সমনং मृक्तिया युक्ट शकाकाजमयविक्। **क्षयमन**निर्दारित-ट्रिनंबर ममर्थर्य । ट्रिन्ट्रिन क्रिश्चार्थ निक्रिंडार्थ-প্রদায়ক। হৃদি প্রান্থ সমাজিত্য নম কামেশরীপ্রিয়। हेमर मचनकर ८मत शृहांग ममञ्जाहार। हेमार नार तर-সরীং পূজা: ভগবন্ পরিপূরর। মূলসংপুটিতো হোষ ममनारताभार मन्द्र। जन्द मखर्ग तमनात्र धार्यरमम् বিক্ষম ব্যধং। মণিবিজ্ঞ মুমাণাভিম ন্দার কুশুমাণিভিঃ ৷ ইয়ৎ - সাৎ বৎসরী পূজা তবাস্ত গরুড়ধ্বজ। বনমালাৎ যথা (त्व दकीखंडर मञ्जर खिन। खंडकामनकीः मानार পৃজাঞ্ জদয়ে বহ। জানতা জানতা বাপি কৃতং যাবতঃ বার্চনং। তৎ দর্কং পূর্ণতা বাতু ছৎপ্রসাণাৎ রমাপতে। নমন্তে পুণ্ডরীকাক্ষ নমন্তে বিশ্বভাবন। নমন্তেইস্ত क्वी क्या मश्राभू क्य शूर्वक। मञ्जरीनः जिल्हारीनः जिल्हा दीनर जनार्फन। यद পृक्षिष्ठर मन्ना एम्न পन्निपूर्गर छमञ्च মে। এবং সংপ্রার্থ্য দেবেশং নিপতেদ্দপ্তবস্তুৰি। অর্থ गर्श्वरत्रम् एका। ७ तर वजामिकां भरेन ह। अत्रर धुक्

ভার্চবন্ধুন্বিপ্রান্ সংভোজা পারমেৎ ' সাদিশনেইছং পুণ্যিত্যাই ভগবান্ শিব:। ইতি দমনারোপণং। পারণাহে ন লভ্যেত দাদশীঘটিকাপি চেহ। তদা ত্রমোন্দশী গ্রাহ্যা পবিত্রা দমনাপণে। মাধ্বেদ্যনারোপঃ স্যান্দ্রাধী বিস্থৃতো যদি। বৈশাধ্যাং প্রাবণে ভাত্রে কর্তব্যং বা তদপ্রিং। ইতি চৈত্র কুত্যং।

বৈশাথে পো গ্রাসান্ত জলন্থং জগদীখারং। শুরা-মেকাদশীং যাবং প্জয়েত্ প্রযুক্তঃ। তথাচ গাড়ুরে। নিঃ ।ক্ষপ্য জলপাত্তে ভু মাসে মাধ্বসক্তে। মাধ্বং যে হচ্চ গ্রিষ্যন্তি দেশান্তে ন নরা ভূবি। স্বা-পাত্তে তথা রোপ্যে ভাত্রে বা মুগ্রেইসি বা। ভোয়ন্তং যে হচ্চ গ্রেদেবং শালগ্রামসমূক্তবং। প্রতিমাং বা মহা-ভাগ তগ্য পুণ্যমনন্তকং। তত্মাক্তিয়াঠে সদা ভূপ তো-যুদ্ধং প্রয়েছ্রিং। বী ভপাপো নরস্তি ভৌদ্যাবদাহ ভ

धारक डाहा इटेटन खर्माममारङ प्रश्नारतान्य कति । खरू अभवभण्डः यपि टेड्यमारम प्रश्नारतान्य कता ना ६म छाहा इटेटन देवमाच आवन अधना छाजमारम प्रश्नारतान्य कति ।

বৈশাধ মানের তক্ত পক্ষীয় একাদনী অবৃধি পুণিমা পর্যন্ত ভগৰস্থ জিল মধ্যে রাখিয়া অর্জনা করিবে। গবড় প্রাণে দিখিত আছে যে, বাঁচারা বৈশাধ মানে সকল পাতে বিফুকে রাখিয়া অর্জনা করিয়া থাকেন তাঁহায়া পৃথিৱীতে দেবতুলা। অর্থরীপা, ভাত্র অথবা মৃগ্রপাতে কলপ্রিয়া তর্মধা শালগ্রাম চক্র কিংবা অন্যোন্য দেব অভিমা স্থাপিত করিয়া পৃথা করিবে অন্ত প্রা করেব। বৈষ্টাগ্রামে ও এইরূপ করন্ত ভগবানের অর্জনা করিবে।

मः भ्रेयर। त्छात्रः कालिकिरझार् र्युष्टमा छावेषमा पूर गत्कापकपूर्ण शिर्धा निजाश्कार ममाशा ह। अखिवाना नियानात्को त्वर नौषा निजामनर। शत्काशहादिः मर् शृक्षा छीर्थर श्राशा विमर्कत्यर। आष्मानर गृहमाना-नीन ट्रान छीर्थन शावरार। चामभाग्र कत्न ताळा-वर्ष्टराम् शाकर्षाण्डिणः। चामभार श्रुष्टरामार्थो समस्य कलनायिनर। देखि देवनाथ देखार्थराः कुछार।

আযাত শুকু বাদশ্যং ক্ষীরাজিশয়নোৎ সনঃ। কার্যো-হন্যথাবেহনার্প্তিঃ দ্যাৎ পৌরাণদ্য বাক্যতঃ। ভবিষ্যে। মিথুনম্বে দহস্রাৎশো স্বাপয়েম্যসুদ্দনং। তুলারাশিৎ গতে ভিম্মিন্ পুনরুখাপয়েৎ প্রভূমিতি। গারুড়ে। মিথুন নক্ষে দহস্রাৎশো ন স্বাপয়তি যোহরিং। বৈক্ষরৈঃ সহ সংভূয়ন্ত্রনার্ফিস্ততো ভবেদিতি। মৈত্রাদ্যপাদে স্বপিতীহ বিষ্ণু কৈঞ্চিয়মধ্যে পরিবর্ত্তে চা পৌঞাবদানে চ

নিভাপুলা সমাপন কৰিয়া সচক্ষন ভীর্থেদিকপূর্ব পাত্রে শালগাম চক্রাদি বাধিয়া পঞ্চোপচারে পুলা করিবে তৎপত্র ঐ জল দ্বারা গৃহ ও পরিবার বর্গকে পবিত্র কবিবে। গ্রুড়পুরাণে লিখিত আছে, দ্বাদণী দিন রাজিতে ভগবানের অর্চনা কবিয়া ভদীয় প্রতিমূর্তি ললময় ব্রিবে।

আষাত মাসের শুক্লা দাদনীতে ভগৰানের শমনোৎসৰ করিবে, ইছা না কবিলে সেই বর্ষে আনার্টি হইবে। ভবিষ্য পুরাণে লিখিত আছে ত্যাল দেব মিথুন রাশিতে গমন করিলে ভগবানের শরনোৎসব কবিয়া ত্যাদেব তুলা রাশিস্থ হইলে পর উত্থাপনোৎসৰ করিবে, ইছা না কবিলে সেই বর্ষে আনার্টি হইবে। নাবায়ণ দেব অকুরাধা নক্ষরের প্রথম পাদে শয়ন ক্ষেন; শ্র্যা নক্ষ্যের মধ্যম্ পাদে পার্ষপ্রিক্টন ক্ষেন এবং বেবংটা নক্ষ্যের

**भ्**तातिहस्रा अदूशास्त्र गांगठपृष्ठेरात । ভবিষ্যোক্ত প্রকা-ঘণ্টাণীনু বাদয়ন মুহঃ। বিধায় মহতীৎ পূজাৎ বিষ্থা-चार्क रेवकवान्। त्नीनत्वाक व्यवादन उल्लेखकः शांत्र । कर्छ गर रेवक रेवः मर्द्यः मच्छामात्राज्यस्य । অভপ্তত্ত্ব তদা যোহশুতে শ্ৰুছাইন্তৎ সমাসতঃ। ভোরং পবিত্রং বিভতৎ দিবস্পতের্দিশো বস্তোদ্য তম্ভবে ব্যক্তি त्रन् हेि शार्यापा। मरहावाह याख्यकाः তৎ भूमानाञ्च হিভাগ থেনা হরিং ভজে। স্বশোকমোলের্বর্মণোহমিনা সংধয় ইতি শাভাতপী শ্ৰুতি:। এত্ৰিফো অজচজেৰু তণ্ডে কথাজোগীন্ তর্ত্বে চর্ণীক্রাঃ। গুলে বাহ্বোর্দ-শভিঃ পুরাণান্যসান্যকে তপ্তায়ুধান্যপরিস্থিতি। সামবেদে। উরুক্রমন্য চিক্রৈবিষ্কত। লোকে তু শ্বনা ভবেম ইত্যথর্ব-टबम । अधिरहाकः यथानिकार ८वममाधायनर यथा । ব্রাহ্মণদ্য তথৈবেদং তপ্তচক্রাদিধারণ মিতি। পাছে। শ্রুতিশতৈরুক্ত ত্তৎপ্রকারঃ প্রভন্যতে। পরিশিক্টে চ থোকোহরৎ শৌনকাদিভিঃ। বোড়শোপ-চারৈ র্ভগবন্তং সমত্যর্ক্য অক্ষরে পর্যে ব্যোমেশং নো-মিত্র শংবরুণ ইত্যেতাভ্যাৎ চক্রং শহুং চাভ্যক্ত যাদ শাক্ষরৎ নহিত জ্জীবায়েজ ক্রি প্রথমন্য প্রচেতসমিত্যেতাভ্যাৎ শ্ল্যাবাদধ্যাৎ বৈখানরস্য স্যামেত্যগ্রিমুপচারাৎ। পুরুষ স্থাকন যোড়শাত্তীত্তা ভগবস্তং পুরুষস্থাকন উপ-স্তুত্য পুরতো দদওবন্নিপতেৎ ৷ অথ হুদর্শন মহাস্থানঃ नूर्वादकाष्टिनमञ्चलः। ज्यकानाद्यमा त्य निकार विक्रुमार्गर

নিদর্শর। ইত্যাদয়:। তুদর্শনায় বিষয়ে মহাস্থালায় ধীমহি ভন্নদরেশ প্রচোদয়াদিতি ৷ চক্রধারণং ৷ মহাধান ধ্বস্তপাতক সংচয়। পাহি মাং পাপিনং খোঁৱং সংসারাণ্বিপাতিতং। ইত্যাদয়:। পাঞ্চন্যায় বিশ্বটে প্ৰমানায় ধীমহি। ভন্নঃ শথা প্ৰচোদয়াৎ ইতি শথধারণং। য এবং কুক্তে বিহান ভালাণঃ খোত্তিয়ঃ শুচি:। সর্বা পাণৈঃ প্রবৃচ্যতে বিষ্ণুলোকঞ্চ গছতি। শগ্ননাৎ চৈব বোধন্যাং চক্রতীর্থে তথৈব চ। শব্দ চক্র বিধানেন খব্লি-পুতো ভবেন্নর:। ইতি মুদ্রা ধারণ বিধিঃ। নীরাজ্য নবধা (मथा द्वांभा द्वांभर म देवखवः । शीखवानिख द्वांदव दनवः नीषा जनामहर । भूष्पंक्षिन अम्हार यानाकुखाहरहरू প্রভুং। তীরেহজ্মিন্যাস মাসাদ্য হস্তৎ দল্বোপবেশ্যে । ধোতাজিপাণি রাচান্তঃ কুর্য্যাৎ সকল মাদৃতঃ। ন্যাসৎ ক্ষহাথ দেবে চ স্বর্গধর্মাত্রবাক্যতঃ। তথা পুরুষ সৃষ্টে-নোত্রনারাগণেনচ। পঞ্চায়তেন সংস্পাপ্য সমভাচ্চী त्रच्छैतर। তদেবেতি চ মদ্রেণ জলে সংস্থাপয়েৎ প্রভুং। শেষে পর্যান্ধরের কণামণিগণান্তি ! খেত-ঘীপান্তরে দেব কুরু নিদ্রাৎ নমোহস্ত তে ৷ অথ কৃষা মহাপূজাৎ গদ্ধস্থাপুপদীপকৈঃ। অন্ন ভাস্ব নৃত্যাদ্যৈ রীশস্যামুগ্রহং হরে:৷ হুপ্তে ছয়ি জগরাধ জগৎ হুপ্তং **खटामिक्ः। विद्वास ह विद्वार्थाङ क्ष्माद्या (म ख**रावाम। ইতি সংপ্রার্থ্য গৃহ্লীয়ায়িবমানিমান-। খেতছাপে ভোগিনাথে বোগিনাথে ছিতে ছায়। চাতুর্গান্ততেহসুজ্ঞাৎ দেছি লক্ষীপতে নমঃ। লকু।কুজাং শন্ত্ৰেণে যথাপোষিত

ভর্কা। চতুরো বার্ষিকান্ মাসান্ রাহবোপাপনাবাধ।

ইমং করিষ্যে নিয়মং নির্বিদ্ধং কুরু নেইচ্তে। ইদং
ত্রতং ময়া দেব গৃহীতং পুরতন্তব। নির্বিদ্ধাং সিদ্ধিমায়াতু
প্রসাদাতে রমাপতে। গৃহীতেইশ্মন্ প্রতে দেব পঞ্চরং
বিদ্নে ভবে ৭। তদা ভবতু সংপূর্ণ প্রসাদাতে রম্বহ।
ইত্যভার্থাথ দেবায় শব্দোনার্যাং নিবেদয়ে৭। প্রাবিশে বর্জয়ে
শাকং দধি ভাত্রপদে তথা। তুয়্মায়্যুক্তে মাসি কার্তিকে
চামিষং ত্যক্তে৭। প্রাক্তর্নি চর্মায়্যুক্ত মাসি কার্তিকে
চামিষং ত্যক্তে৭। প্রাক্তির্বাদ্ধং। রুচ্যুৎ তত্তদ্দেশলন্ত্যং ফলম্লাদি বর্জ্রাক্ষ কল্মীক ত্রপ্তে দেবে ন

শেষ পাদে গাজো থান করেন। ভবিষ্য প্রাণ হইতে এই শ্রনোৎস্বের বিধিবিধান সকল উদ্ভূত হইয়াছে মূলে দৃষ্টি করিবেন।

মৃণামুগারে নান। বিধ উপচারে পুজাদি সমন্ত নির্মাহ করিয়া ভগবানের শরনোংসব সমাপনীতে খেতবীলে ভোগীনাথে ইত্যাদি মত্রে চাতুর্মান্ত
ব্রত্তের অম্ক্রা গ্রহণ করিয়া বিফ্র শরন হইতে উথান পর্যন্ত চাতুর্মান্য ব্রত
করিবে। ইমং করিয়ো নিয়মং ইত্যাদি প্রার্থনা ময়পাঠ করিয়া শঙ্ম পাজে
অর্জ্যপ্রদান করিয়া শাস্ত্রোক্ত নিয়ম পালন করিবে। প্রারণ মাসে শাক,
ভাত্রমাসে দৃধি, আম্মিন মাসে হগ্ধ এবং কার্ত্তিক মাসে সামিব ভোজন
প্রত্তাগ করিবে। শামুক চুব, চর্ম পাজত্ব কল,জন্মীর (বাতাপীলেরু) বীকপ্রক (ভালিম, ভাড়িছ) যজাশে ভির অয়াদি, বিফ্রজেশে অনিবেদিত অয়াদি, দগ্ধ অয়, মস্ব এবং মান এই সকল জব্য আমিব আনিবে।
ব্র প্রথেগ্রের কৃতি জনক ফলম্লাদি পরিত্যাক্ষ্য। নিপাব ক্ষেণ দেশ

ভক্ষেত্র। ইতি স্মৃতে:। চতুর্যণি হি মাসের হবিষ্যাশী

ম পাপভাক্। হৈমন্তিকং সিভাম্বিনাং ধান্যং মুদ্যাতিকা

যাঃ। কলায় কর্নীবারা বান্ত্কং হিলমোচিক।। যতিকা

কালশাকঞ্চ মূলকং কেমুকেতরং। লবণে সৈন্ধবনামু
হেম গব্যে চ দধিদর্শিয়ী। পয়োহমুদ্ব্যারক পনসামু
হরীত্রকী। পিপপলী জীরককৈব নাগরাজঞ্চ তিত্তিরী।

ক্ললী লবণী ধাত্রী ফলান্যগুড় হৈক্ষবং। অতৈলপকং

মুনরে হিবিয়ামং প্রচক্ষতে। অন্যান্যপি পুবাণেয় দ্রেই
ব্যাণি প্রতানি তু। ততন্ত্রা চক্রপাণিং রাজন্যাশাদ্য

মঙ্গলং। শভাতীর্থক সংপ্রাপ্য গীতন্ত্যাদিনা হরিং।

পরিতোষ্যাথ সংপুদ্ধ বৈষ্ণবাম্বব্যানকং। ভগবন্তং

সমারোপ্য গীতবাদিত্রঘোষতঃ। আগত্য মন্দিরে কৃষ্ণা

প্রাসিদ্ধ শিম (ছিম) ফগবিশেব, রাজধাব, (বড়বটী প্রাসিদ্ধ, বোড়া)
মহন, সন্ধিন (মার্যাদি) বৃত্তাক বেশুন এবং কমনী, (শাকবিশেব) এই
স্কল জব্য হরিশরন সময়ে ভক্ষণ করিবে না। হবিশ্যন সময়ে ৪ মাস পর্যাজ
হরিষ্য ভোজন কবিলে নিজাগী হয়। হবিষ্যার বা। হইতেছে, ছেমন্ত
শাকুত্তব আতপ ধালা, মুদ্দা, ভিলা, যব, কলার (মটর প্রভৃতি) করু (কার্যেমা)
নীবার (ধালা বিশেষ উট্টার ধানা,) বাজক (বাণুরা শাক) হিলমোচিকা,
(হিলা) বৃত্তিরা, (বাটারা ধানা) কালশাকে, (কালকাসন্দা) মূল, বেম্ক
(বৃক্তবিশেষ) ইহাব মুলভিল্ল সাধারণ মূল, সৈক্তব, কডকচ, দিনি, রুত্ত্র রন্তা, লবনী, (ফলবিশেষ) আমলকী, ইক্স্মন্ত্রীর গুড়ভিল (চিনা প্রাচ্তি)
এবং ক্টেল পদ্ধ এই স্কল হবিষ্যানীর ব্যবহর্ত্তব্যপ্রাণাদিতে এইভিল পারও
নালা বিধ সিশ্বন লাছে, অনুসন্ধান ক্রিমা লইবেন। অনত্ত্ব সোর্য महानीतोखनः श्राप्ताः । विश्वा देशकान् तक्ष्म् १८०४ मा देशकात् । विश्वासारः भग्रानारमण्डा

আবণস্য সিতে পক্ষে ছাদশ্যাৎ শৌনকাদিভিঃ। উত্তঃ
সদা প্রকর্ত্তব্যঃ পবিত্ররোপণে। দেবঃ। ভথাচ বহন্চ-পরিশিক্টে। স্থপাতঃ সর্বতীর্থের সর্বযজ্ঞের দীক্ষিতঃ।
হরিঃ প্রীতিমবাপ্নোভি যঃ পবিত্রৎ স্মাচরেৎ। বিধিনা শাস্ত্রদৃষ্টেন যো ন ক্র্যাৎ পবিত্রকং। হরন্তি রাক্ষ্যান্তস্য
বর্ষপূজাদিকং ফল মিতি। পাছো। উর্জ্জে ব্রতং মধ্যে
দোলং প্রাবণে ভল্তরোপাং। চৈত্রে চ দমনারোপ মক্রব্যাণো বঙ্গত্যধঃ। পবিত্রারোপাণং বিশ্বাৎ প্রাবণে ন
ভবেদ্ যদি। কার্ত্তিক্যবধি শুক্লাকে কর্ত্ব্যমিতি নারদঃ।
ইতি পবিত্র নিত্যতা।

পূর্বক গীতবাদ্যাদি বারা ভগবানের ভৃত্তিবর্দ্ধন করিয়া বিধানোক্ত কার্য্য করিবে।

শাবণ নাসের গুরুষাদশীতে শৌনকাদি মুনিগণ কর্জুক অভিহিত পৰিত্রারোপণোৎসব করিবে। বহুবৃচপরিশিষ্টে লিখিত আছে যে, যে ব্যক্তি পৰিত্রারোপণোৎসব করিবে ভাষার সমত তীর্থসান জন্ত ফল এবং সমত বজাহার ফল লাভ হইবে এবং ভগবান প্রীতি লাভ করিবেন।যে ব্যক্তি বিধানামুসারে পৰিত্রারোপণোৎসব না করিবে, রাক্ষ্যপণ ভাষার বংশর কৃত পুণ্য সমত অপহরণ করিবে। পলপুরাণে লিখিত আছে, কার্তিক মাসে হবিয়াশন প্রভৃতি প্রত, হৈরেমানে গোলোৎসব ও দমনারোপণ এবং শ্রাবশমাসে ভত্তরোপন না করিবে ভাষার অধংপতন হইবে। নারদ বলিয়াছেন যদি বিশ্বশতঃ শ্রাবণ মাসে পবিত্রায়োপন না হন ভাষা হইবে।

थायात्र मात्राष्ट्र भिक्तः भवित्वमा थाउनारक । कनीयान् वा-হুকিন'ামা পৰিজো নাম নাগরাট্। নিরাহারজতে। ভুখা रिम्विकः भत्रपार भठः। छशस्यरा ममाखिला स्वराप्तर মহেশরং। প্রদান তপদা তদ্য পুরস্তাৎ পুরুষোভ্রমঃ। প্রণতার্ভিরঃ শস্তুরাবিরাসীছুমাপ্তিঃ। প্রদাদাভিমুধৎ मृके। प्रवर मखूर करनभत्रर । क्ष्रीचत्रगठा शाखिर बाख বরমসুত্রমং ৷ তথেত্যাভাষা তৎ তদ্বরমং দ্রিপুরাস্তকঃ ৷ প্রাণাত্তিদ্য বরং চান্যৎ পবিত্রায়াত্মযোগিনে। যে ছাৎ ন বছসন্যত্তে যথাসম্ভাবিতে। ময়। অপহোমাদিকং তেষাং ফলং ত্বামেতু নিশ্চয়াং। তত্ত্বৈব প্রাবণে মাদি নকতে বাপি বৈষ্ণবে। তে তদা রাধয়ন্ত তাৎ নিত্যনৈমিছিকো-দ্যতা: ৷ বৈদিকাঃ শব্দু হোমেন পূঞাং কুর্বস্ত তেও 🌬 নখ। ছৎ সাদৃশ্যাসুকারেণ বিনীতেনৈব ভান্তিকাঃ। আরাধ্যারোপ্য পুজ্যারৈ দেবতায়ৈ পবিত্রকং। নানাগ-গোক্তমার্গের তদ্য কর্ত্তব্যতোচ্যতে। হৈমরৌপ্যতাক্ত

वास्कित कि निव नामक ज्यमत्रास एपवर्णतमार्गत भावतर् न्यास निवाद्यत महाएएवर उन्या कि विश्व उन्यादन स्थानमा मर्गत उन्यास कि अन्तर्गत थार देवन विश्व अर्थन कि तिष्ठ महाएम महि होगा उपास विश्व थार्थि वर धार्मन कि तिष्ठ महाएम महि होगा उपास एका महि दिस्त कर्ष्ण वाद्य कि विश्व महि क्रिक मिल्ल स्थापत कि निवाद भूका भूवः मत्र थार्मन निवाद, जाहां मिल्ल क्रिक मिल्ल मिल्ल मिल्ल क्रिक स्थापत कि निवाद क्ष कि विश्व मिल्ल मिल्ल क्ष मिल्ल मिल्ल क्ष मिल्ल मिल्ल क्ष कि स्थापत कि कि स्थापत कि कि स्थापत कि कि स्थापत कि मिल्ल क्ष मिल्ल मिल्ल

कोरेमः मृद्धिः देशासमाधिकः। कृरेमेः करिमेक কার্পাটনঃ ভ্রাহ্মণ্যা কর্ন্তিভৈত্তথা। কন্যন্না বা পৰিত্রং সার পুংশ্চলাদিভিঃ কুতিঃ। স্নাছা ত্রিগুণিভং সূত্রং ত্রিগুণীকৃত্য শোধয়েৎ। অভিষিক্ষেৎ পঞ্চাবৈয়রন্তিঃ প্রকালয়েততঃ। মূলেনাটোতরশভৎ গায়ত্র্যা রামসংজ্ঞা। भाष्योगरक नांक्षित्रक्षा शविकानि वितिर्णित्र । प्रसानशा-कारिम्टिकः भक्षभवार क्रमर विद्वः। व्याभागात च परिकारिन्। Cocsteिम स्थेकममा है। शीयकारस शक्षांत्रीः मखाः স্থাঃ পঞ্গব্যকে। মধুবাতেতি গায়ত্রী ক্রমঃ পঞ্চায়ুতে তথা। ইতি সূত্রং। তত্তোত্মং পবিত্রঞ্ ষট্যা সহ শ-. তৈন্ত্ৰিভিঃ। শতৎ বা সহিতৎ দ্বাভ্যাৎ পবিত্ৰং মধ্যমং শ্বতৎ। गांगीजिमा मार्छानव कनिर्छए छए मगांहातर। पार्छ। हतर ভদর্কেন নবসূত্রীক্রমেণ বা। জানুক্রনাভিপর্যস্তমান্ত্রি ত্তরং ভবেৎ। অক্টোতরসহত্রেণ বনসালাৎ সমাচরেৎ। উত্তৰস্য পৰিত্ৰস্য হৈত্তণ্যেনাপি বা ভবেৎ! আরম্ভ্য মুকুটৎ যাবৎ স্থলৈবিরচিতা শুভা। আপাদলঘিনী মালা বনমালা প্রকীর্তিতা। যজমানপবিত্তৎ বা ধিবাসন-পবিত্রকং। কনিষ্ঠেন সমং কার্যাৎ মধ্যমেন সমং শুরো:। আগ্রে পবিত্রৎ কুর্বীত মধ্যমেন সমৎ শুভৎ। সাধারণ-পৰিত্ৰাণি ত্ৰিভিঃ সূত্ৰৈঃ সমাচরেৎ। উত্তমন্ত শতগ্ৰন্থি পঞ্চাশদ্প্রন্থি মধ্যমং ৷ কনিষ্ঠস্ত পবিত্রং স্যাৎ ষট্তিং-শদ্থান্থিশাভনং। ষট্ত্তিংশক চতুৰ্বিংশ দ্বাদশেতি চ কে **हर्ज्यक्रिश्में मार्ग्याचित्रिक्र म्नाद्या विष्टः ।** व्यक्रुष्ठेशक् माज्य क्रान्यश्विष्ट्या । उन्दर्भन उन् র্ক্নে, নগামে চ কনিষ্ঠকে। গ্রন্থীন কুর্মণীত সর্বত্তি প্রকান অধান আধীন কুর্মণিত কুর্মিন । নিধা বিষমসংখ্যাকান অধীন কুর্মণিত কুর্মিন । বিশোভস্ত্রদানেন কর্ত্তিং আদশুভং ফলং। পবিত্রং পরয়া ভজ্যা তত্মাৎ কুর্মণিত শোভনং। কুর্মং রোচনকৈব কপূরেণ বিমিল্লিভং। তেন সংরশ্ধরেৎ ক্রেমন্টাক্র নিমন্তিভং। ততোভিমন্ত্রণং কুর্যাৎ ইদং বিস্কৃষ্ণ মন্ত্রভং। ঘাদশাক্ষরমন্ত্রো বা সর্বিসাধারণং আভং। বির্ভিক্তমসূত্রে স্যা ভত্তদেবাধিবাসিকে। বির্ধিয়েশিভিন্মন্ত্র স্যাৎ কনিষ্ঠে ভূসকৃৎ আভং। ইতি পবিত্র শক্ষণং।

ত হস্তানি পৰিত্রাণি বৈণবে পটলে শুভে। সংস্থাপ্য শুচিবস্ত্রেণ পিধায় । পুরত্তো ন্যদেৎ। অর্ত্রিসন্মিতাং বেণীং কুর্য্যাৎ ষ্ট তিহেশত। কুলৈঃ। মন্ত্রেমালমস্ত্রেণ পঞ্চাব্যের শোধ্যের। তান্ত কক্ষান্তরে রুত্ব। মানসং স্নানমাচরেৎ। ততন্ত সর্কাতো রক্ষাং কুত্বাগ্রে ছোমমা-রভেং। স্বয়স্ত ভগবংপুজাৎ মহতীঞ্ সমাচরেছ। সহস্র কুহুমৈঃ পুদ। মহাপুদোত কীৰ্তিতা। মহাসানং প্ৰকৃৰ্বীত छेभठातार खरेबर ह। ८९नमा भूतछः खाभार पखनाईर জলং কুশাঃ। মৃত্তিকাঞ্ছরিদ্রাঞ্কু তুঠ গোরোচনানি চ। পাছকোপানহো ছত্তৎ চামন্নং ব্যজন স্তথা। ব্ৰীহ্যাণীনি চ ধান্যানি পুরতঃ স্থাপয়েওতঃ। দণ্ডবৎ প্রণিপাতেশ্চ স্তো-रेखर्नानाविरेषत्रि रिविनिकेम्डब्रेशर्पन्य यथावद श्राह्म (वाधरायः । क्रियां माणिविषां कार्थः यहा विविक्षः श्रास्त्राः । भरेत्रज्द जिन्ना एक एक पूर्वे अविज्ञ निर्मा क्टरनेष्य कूत्र नाथ प्रशं नशी। नर्तिया नर्तिमा तिरक।

মম ছৎ পরমা গভি: ৷ উপবাদেন দেব ছাং তোষ্ক্রামি জগৎপতে। কামক্রোধাদয়োহপ্যে তে ন মে হার্ত্র তথাতকাঃ। व्यमा थञ्जि (मरवभ यावम्रेव (भविकर निनः। जावखका प्रप्रा कार्या मर्वमाभा नत्याश्य एक । धवर विकाशा (मरवर्गर श्वक्रभार्मो अनमा ह । कूर्वी छ देवस्र देवः भार्षः भविखा-রোপণং হয়ে। কুন্তং পুণাাখুনাপুর্যা সর্বভোভদ্রকে শুভে। 'স্থাপয়েৎ পুরতো বিফোস্তত্ত ভূতানি পুলয়েৎ। ওঁসংবং সরস্য যাগস্য পবিত্রীকরণায় ভোঃ। 🥕 বিফুলোকৎ পরিত,জ্য আগচ্ছেহ নমোহস্ত তে। অনেনাবাহয়েৎ সূত্রং মূলমন্ত্রযুতন চ। উত্তমাদিত্রং বিদ্বান স্থারেৎ শ্লোকতারং তথা। গুণান বেদতারং চৈবধ্যা-য়ন লোকত্রয়ং তথা। প্রকৃতিং বর্ণপূর্বায়াং মালায়াং নিখিলাগ্মিকাং। ছ্যুলোকং মুক্টে সূত্রে ধ্যুয়েতদ্গাত্ত-শালিনি। ওঁ সর্বাভরণচিত্রাঙ্গ সর্বদেব নমস্কৃত। লাবণ্যরূপ বিখাত্মন্ জ্যেষ্ঠ সূত্রৎ সমাশ্রয়। ওঁ সর্বর্ণক্ষী কর জীশ সর্বজ্ঞানস্মাত্মত। নির্ভরূপ বিশাত্মন্ মধ্য-मृद्धर ममाध्यम । অভিবেশ জগদ্যোনি পুরুষাত্মন্ দিব-স্পাতে। কনীয়ো ছে প্রভো দেব তেজদা সূত্রমাঞ্চয়। **७** मर्त्वाधात धत्राज्ञल मर्त्वकर्ण श्रद्धालाखा मर्त्वधारणः শ সুত্রে হস্মিন্ সামিধ্যৎ কুরু তে নমঃ। সর্বরত্বোদ্দা-কার ব্রহ্মাণ্ডব্রহ্মরোচিষা। মুক্টোত্তম সর্বাঙ্গ শিরঃ সূত্র ইহেতি ভোঃ । প্রকতে জগতঃ কত্রি সর্বলাবণ্য দায়িন। প্রীসূত্রে বিভাকল্যাণি সামিখ্ৎ কুরুতে নমঃ। উত্তমানীনি न जानि क्रमानान्छ शानिना । मूनिकि व्हाराणिकः

প্রমেশুনমন্ততঃ। একা বিফুর্ম হাদেবল্লিভিল্লি দেবতাঃ স্মৃতাঃ। ওঁকারঃ সোমবহুলী চ জ্রন্মা নাগঃ শশী রবিঃ। निवम्ह विदय (एवाम्ह नवमृत्वाबिरमवजा। किया हार्ट्या-क्रयो वीता विकासमाश्रताकिक। मनावनी कता फट्टा ৰুক্তিছ। গ্ৰন্থিদৰতাঃ। ধাছা বাংগামূভীক্তঃ গল্পুঞাক **छाद्र्रेतः । ध्नमीनाम अस्**रेतः निर्वाण वृत्या यास्य । वाश रमनकरत विचान शहेमुखमम्हतः। विङक्षिमानकूर ८७। तर वशीयामनाञ्चकर। ७ मरवंदमतक्र काफ विश मर्शृर्कनपाति यः। পবিত্রারোপণারৈতৎ কুরু বহি মতে নমঃ। ও বিফুতেজোদ্ভনং রম্যং সর্বপাতকনাশনং। সর্বাকামপ্রদৎ দেবৎ তবাঙ্গে ধার্যাম্যহৎ। মূলসংপৃটিতা मन्त्रां पनामात्म পविजवः। नौवां ब्राइटाडा (पदः। मजनधान श्रीकः। देनद्वमार विधिवक्रमार छात्रुमः মুমুলেপনং। উপতিঠেততো দেবং জিত্যিতা।দিভিঃ अदेवः। माञ्चर्याथ इत्त्रणांनः त्मवत्तवर निमञ्जासर। ७ আমন্ত্রিচোহ'ন দেবেৰ পুরাৰপুরুষোত্তম। প্রাতন্ত্রাং পুরু-রিষ্যামি দানিধ্যৎ কৃক কেশব্। ও ক্লীরোদ্ধিমহানাগ-শষ্যাবন্ধিত বিগ্ৰহ। প্ৰাতন্ত্ৰাং পূজয়িষ্যামি সন্নিধৌভবত্তে নম:। নিবেদয়াব্যহৎ তুভাৎ প্রতিরেতৎ প্রিকং। नर्द्यशा नर्द्यमा विरक्षा नमस्य २ खु अना नरम । निপত्जन छव-জুমৌ কিন্তা পুলাঞ্জালং পুনঃ। পুজিতান্যথ সূতানি क्रुंक भूते छः विष्ठः। व्याख्य मर्वराजा तरकः कवरहेनाव-क्षश्रेष्त्रः । त्राक्तम् वा ठक्रमस्त्राग नृशत्रम् स्नाधवा । खा-বাণেভা। নমস্তা গুরুপাণে। প্রণমা চ। গীতমঙ্গলনি

ঘেরিঃ কুর্যাজ্জাগরণৎ ততঃ। অধিবাসবিদিঃ প্রোক্তর্

कडः थाडः मम्थात्र शाका (नरं याशानिकः। নিত্য পূজাৎ ভতঃ কুহা পৰিত্ৰাণাৎ ভথৈৰ চ। মী-রালয়েচ্ছুভৈদ্বীপৈন কলধ্বনিপূর্বকং। স্তত্ত্বা চ বিবিধৈঃ জোতৈ ন'ছা দেবং হ্নরাচিত্ত। ততো মঙ্গলনি-**ब्युटियः मध्यपू**र्वापि नियटेनश। शक्तपूर्वाकटेखर् खर मधारक्तवां मृखकः। त्राम ताम नमञ्जार गृहार्तिनर পৰিত্ৰ: হং ৷ পৰিত্ৰীকরণাৰ্থায় বৰ্ষপূজাফলপ্ৰদং ৷ পৰি-অকং কুরুষাণ্য বন্মা গ্রন্ধতং কৃতং। ভাদে। ভবামাহং দেব ত্বপ্রাদাৎ স্থরেখর। মূলদংপুটিতো হোষ পবি-জারোপণে মহঃ। অঙ্গাদ্যার্ভিদেবেভ্য স্ততো দদ্যাৎ 'শ্বনামভিঃ। নৈবেদ্যন্ত মহাপুর্বাৎ ততো দদ্যাক্ত শক্তিতঃ। নীরাঙ্গয়েততো দেবং রমাকান্তং প্রমঙ্গল: 1 সংবীজ্য চামরৈঃ পুলার্দপণং দশয়েত্ততঃ। বিবিধানি চ পুজ্পাণি দদ্যাৎ পুষ্পাঞ্জনিং তথা। প্রার্থয়েদেবদেবেশং মন্ত্রৈ-রেভির্থাবিধি ৷ মণিবিদ্রেম্মালাভিম লারকুস্থমাদিভি: ৷ ইয়ৎ সাংবৎসরী পূজা তবাস্ত গরুড়ধ্বজ। বনমালাং যথাদেৰ কৌন্তভং বহদে হৃদি। তৰৎ পৰিত্ৰসূত্ৰস্ত পূজাঞ হাণয়ে বহ। জানুতা জানতা বাপি ন কুতং যত-योक नः। द्यारिक्यामास्य शतिशृर्व छम् अ त्या मखरीनर कियारीनर जिल्होनर बनार्मन। यर श्रिकंडर ময়া দেব পরিপূর্ণ তদস্ত মে। অপরাধ সহস্রাণি ক্রিয়স্তে হহনি শং ময়া। নাসো হহমিতি মাৎ মতা কমৰ মধু-

সূদন। নিপত্য দশুবস্তুমো ভক্তিযুক্তেন চেতসা। প্রণমে-टफवरणटरमर त्रांगिमकार्थणर वृषधः छङः পरिखर ७ तर्द मन्त्राम् ग्रक्षामि पूर्विकः। व्यटियनः शृक्षत्यम् ভक्ताः वर्षवद्याः सूरमर्थनः। बाकागान् देवकवारदेन्हव शक्तश्रूलापिमाः क्र (त्र । ज्या थाजायत्रकार क वज्राज्ञाकम काक्षेत्रः। মাসং পক্ষমহোরাত্রং তিরাএৎ বাথ ধার্যেৎ। তদেব সূত্রৎ मन्तर्छ १ दिनकानविवक्या। প্রভাহং স্থানকার্ব্যাদৌ সূত্রাস্থাতার্ব্য ধারহেছ। অভিষিচ্যাথ তোরেন পুনদে বৈ निर्वाकरत्रः। व्यथारच दत्तवम्बार्का विरमधाः श्रुष्टान्मरेनः। নৈবেদ্যং বিবিধৎ দত্ত্বা ততঃ সূত্ৰং বিসম্ভূয়েৎ। ওঁ गाःतरमत्रोर अञाः शृकार मरशामा विभिन्नम। खरम मानीर भविज्ञ ९ इर विक्रुत्मांकर विमर्ण्किकः। यावस्मरव পবিত্রাণি তাবভিষ্ঠেৎ সমাহিতঃ। অকাচারী হবিষ্যাশী দেবপুকা পরায়ণঃ। পবিত্তারোপণং কর্ম ন করেছি কৰঞ্চন। ভদাযুতং জপেমন্ত্রং স্তোত্রং বাণি সমাচরেৎ। ইভি প্রাবণ কভাৎ।

শথ ভাত্রপদে শুক্রদাদশ্যাং কর্ণিকোৎসবঃ। কর্ত্তব্যো বৈষ্ণবৈঃ সার্দ্ধং শয়নোৎসববদ্ধরেঃ। তথাচ ভবিষ্যো-তবে। প্রাপ্তে ভাত্রপদে মাসি একাদশ্যাৎ সিতেইহনি। কটদানং ভবেদিফো মহাপাত কনাশনং। শয়নোৎসব্মী-

ভাজমাসের গুক্লপক্ষীয় ধাদশীতে বৈক্ষবগণের সহিত বিক্ষুব শয়নোৎ-সবের ন্যায় কবিকোৎসব করিবে ৷ ভবিষ্যান্তবে কিথিত আছে, জাজ্র-মাসের শুক্লাএকাদশীতে কটদান ক্রিলে মহাপাতক বিনাশ কর ৷ শয়-নোৎসবোক্ত বিধানাত্তসাবে দেকভাকে জ্লাশর স্মীপে নিয়া ক্টদানের ত্যাতু দেবং নীয়া জলাশায়ং। কটদানোৎসবং কুর্মেইতি সকল্য পূজ্মেছ। দেবদেব জগনাথ যোগিগন্য নিরধ্রন। কটদানং করোম্যদ্য প্রাপ্তে ভাত্রপদে শুভে।
অনেন কর্ণিনার্ভিং দক্ষিণাদি প্রকল্পরেং। মহাপূজাং
ভতঃ কৃষ্ণ পূর্নবং স্বগৃহং ব্রজেং। ইতি কটদানাংসবঃ।

আখিনস্য সিতেপক্ষে দশম্যাং বিজ্ঞাৎ দবঃ। কর্ত্ব্যঃ
বজনৈঃ দার্দ্ধং দর্বত্ত বিজয়ার্থিভিঃ। হুকুমন্ত্রাক্য মাকণ্য
দৃষ্টেতি জনকাল্মজা। আনন্দপুর্ণঃ কপিভির্বিজ্ঞাপিত
মুপন্থিতং। রথমারোপ্য দেবেশং দর্ববালক্ষার ভূষিতং।
সাদিত্র ধুকুর্বাণপর্যাণ নক্তঞ্চরান্তকং। স্থলীলয়া জ্বঃ
ভাতু মাভিভূতিমজং বিভূং। রথেরখৈগজৈঃ পত্তিঃ
স্থানিক্সনাদিভিঃ। যুতং রাজোপচারৈত্তং শমীং প্রতি
সমানয়েং। শমীবিষ্ণু চর্নং কুর্বেইতি সক্ষর্য পুরুষেং।
বিষ্ণুণর্ঘোক্তমার্গেন যাত্রানির্বিল্পদ্বিষ্ণে। শমীযুক্তং

সঙ্গল করিয়া দক্ষিণার সহিত কটদান কবিঃ। নানাবিধ উপচারে মহাপ্তা স্মাপিয়া পুর্কনিয়মে গৃছে যাতা করিবে।

আবিন মাসের গুরুণকার দশমী তিথিতে বছুগণের সহিত বিষয়োৎসব করিলে সর্বত্তিই জরণাভ হয়। স্থানি, লক্ষণ ও হতুমান্ প্রভৃতির
সহিত ধমুর্বাণধানী রঘুমাণকে শমীবৃক্ষ সমাপে নিরা শমীবৃক্ষ ও ভগবানের
পূজাব সকলকরিয়া নানাবিধ রাজোপচার্যারা শমীবৃক্ষের সহিত রামভজ্ঞের
পূজা এবং শমী শমহতেপাপং ইত্যাদি সুলোক্ত প্রার্থনা মন্ত্রপঠ ক্ষিয়া আতপত গুণের সহিত সকল শমীমূলত মৃক্তিকা লইরা সীতবাদা পুরংসর সেবতাকে

त्रेगोकास्यः ककानामव्यक्तः । व्यक्ताया भगावृत्रः मका-য়েচ্চ ভতঃ পুনঃ। শমা শময়তে পাপং শমী লোহিত কণ্টকী। ধরিত্রাপত্ন বাণানাং রাম্ন্য প্রিয়বাদিনী। করিষ্যমাণ্যাত্রায়। বধাকালং হুখং মরা। ভত্ত নিবিস্থ-কলী ৰং ভব জীৱান পুলিতে। গৃহীয়া সাক্ষতাং নাদ্ৰণিং ममीयुनगंडार मृत्र । गाजवानिखनिर्दारिय छाजा (पर्वर शृंदः नरम् । देविभ्हमृतेक खशाखवार देविभ्हम् खवा ख वानरेतः। रेकिन्डिक्क्यूरेथर्डन्डर रकाणालसमा पूर्वेरव নির্জিভা রাক্ষ্যা দৈত্যা বৈরিণো ভগতীতলে। রামরাজ্যৎ রামরাজ্যৎ রামরাজ্যমিতি ত্রবন। আনয়েৎ স্থাপয়েৎ স্তুং দিব্যসিৎহাসনে বিভূথ। ততো নীরাজ্য দেবেশং প্রণমে फ्ला पूर्व। (परवाशकुक बळापि धात्रहरू यक्तेनः नैंह। ইভি বিষ্ণুধৰ্মোক্তাখিন কৃত্যং।

चार्रेक्टाकामगीर खन्नार कार्तिकमा ह जागतर । श्रायार দেবং কুৰ্বীত ক্ষমবাক্যাদ ছিজোত্ম। জাগরং কা-र्खिटक मानि यः कटवाजाङ्गर्लानंद्य । नारमाननाट्य विदश्रस

ৰাৰ্ত্তিক মাদেৰ গুক্লাএকাৰণী হুইতে জাগরণোৎসৰ কমিয়া ভগৰান্কে ·धाराधिक कविरव । कार्विकमारम बागत्रग अन्त कविरण महत्व श्रीमानित्र क्न नाष्ट्र । दार्थिकम्हिन नद्गानमस्य छन् निर्दात्न नानाविन

शृद्ध निम्ना शांतिज क्रिया। श्रीयामग्रस्यत मस्टोर्थ क्रियानम्, क्रिया ভলুক, কেহবা রক্তমুপ ইভ্যাদি নানাবিধ বেশ ধারণ করিয়া জগতের শকু দানব ও রাক্ষসকুল পরাজিত হুইল সংগ্রতি রাম রাজ্য রাম রাজ্য রাম बाका हे जाति विवश बीदनाम कदित्व । अधः भद आदि अ श्राम कदिना সিংছাসনোপরি দেবতাকে স্থাপিত করিয়া বন্ধবনের সহিত দেবোপভুক্ত षञ्जामि भावन कविद्व ।

গোদংঅফ্লং লভেও ৷ কার্তিকে পশ্চিমে বামে শুরং গীতং করে।তি যঃ। বদেতু স চ বৈকৃঠে পিড়ভিঃ সহ ৰাবদ। ন করোভি চ যোৰুচঃ কার্তিকে রাজিকাপরং 1 स यां जि नुबक्र (यादः इंकि शास्त्र मशीविकः। नीता-জ্যেশং ততঃ লামাৎ বিধিবজুউল্লে হরেঃ। ত্রতকরেৎ उथा किकिए व्यार्क्स्मिक्सिनकः। अवत्त्रन कर्णम् यस মাসং দামোদরপ্রিয়ৎ। তির্বাগ্যোনিমবাথোভীত্যাদি बाक्तरियान्छ। व्यथ कार्तिक छङ्गास्क कृषामधाक्रभावनः। শয়নোক প্রকারেণ রথমারোপ্য মাধবং। বিধায় মহতীং পুলাং বিফোরভাচ্চ বিকাবান্। বাদ্যঘোষণ সহতা দেবং নীত্ব। জলাশয়ং। ধৌতাজ্মিপাণিঃ কুৰ্ববীত সকল্য देवकरेवः मह। अवर श्वन विभिक्तेशार द्याधिनामिनिता-পভেঃ। কুর্কে প্রবেশ্যথবা বরাহোক্ত।ন্ মন্ন্ন্যসেৎ ত্রক্ষেক্রক্রামি কুবের সূর্য্য সোমাদিভিক্রিক্তি পাঠ পীঠঃ। व्याख (मर्विभ अर्गावर्गम मुख क्षेत्रांत्र स्थिन (मर्व)

তব ও গান করিলে পিত্রোকের সহিত বৈকুঠগানে বসতি হয়। প্রপুরারে লিখিত আছে বে ব্যক্তি কার্ত্তিক মাসে, রাজিলাগরণ না করিবে
ভাহাতে অবেগানী হইতে হইবে। আরতির পর বিধানাটসারে মান
করিতে হর। কার্ত্তিক মাসের মাহাত্মা অবগত হইরা ত্রতান্ত্রীন করিবে।
কোনত বাত না করিয়া ভগবানের প্রিম কার্ত্তিক মাস, অভিনাহিত করিবে।
তিবাগবোনিকপ্রাত্তি হয়। কার্ত্তিকের উল্লেপনে প্রনোক্ত নির্মে স্থা
ভিস্ক ধরিশ করিয়া ভগবানকে রঙ্গে ছাণিত করিয়া নৈক্ষৰ বৃদ্ধের, সহিত্ত
বিক্র প্রধান পূলা সমাপিরা হাছ্যক্ষনি প্রঃস্বর শেবতাকে জলাপর সমীবেণ

हेत्रस योगनी दमवथदगर्भात निर्मिता। प्रदेश गर्दन লোকানাং হিতার্থং শেষণাযিনা। ছব্নি হুপ্তে জগল্প। জগৎহঁপ্তৎ ভবেদিদং। উখিতে চেউত্তে সর্ব্ব মৃতিষ্ঠো-**তিষ্ঠ মা**ধ্ৰব। हेनः विक्वत्तनाम्बुब्झान्नथानरम् अङ्गर । हित्रणा गर्छ देखि ह প্রাঞ্চাপতাং পঠেওখা। গায়ত্রীৎ বৈষ্ণবং সূক্তৎ যতো দেবা অবস্থিত। উভিষ্ঠোতিষ্ঠ দেবেশ যোগনিতাৎ বিহায চ। অনেন সকুনোখাপঃ घष्टीवानिखनिष्ठितः । छीत् ममूभरवरमा गर्मसूर्धर् মর্থরেং। যোহদাবমূত্র করুণো ভণবান্ প্রবৃদ্ধ প্রেমশ্ম-তেন ন্যনাত্মকহং বিজ্ঞন্। উপায় বিশ্বিজয়ায় চ নো বিষাদং সাধ্ব্যা শিবাপন্যতাং পুক্ষঃ পুৰাণঃ ! ইতি शूक्षाञ्चनिर मनाष म्ङगाधर्नाः स्था स्थापाः सानाः ঘবং পঞ্চামুতৈঃ পুক্ৰস্কুতঃ। নীরাজ্য মন্ত্রং বিনাস্য वखालकावम्यदेन । व्योध्भनीन निवामकाश्रोत त्यामः यर প্রভূং। এবং কৃষা মহাপ্রাং গৃহীয়া সাক্ষতং জলং। প্রতিমাদব্রভান্মক্তা রাঘবায় নিবেদ্ধেও। অনুষ্ঠিতৈ-র্মা নানা চাতুর্সাদ্যরতৈঃ প্রভুঃ। প্রসূতপাতক্দ্যাল্ডো র'প্র প্রায়তাং সম। এবং ব্রতান্যর্পায়ত্বা স্তবীত প্রমা।

বাধিকা সহায় কৰিবা বৰাকোকৈ মাস্ত ভাগানকৈ প্ৰ বাধিক কৰিবে এবং অংক্ষাণ্ডানি ইতাদি প্ৰাৰ্থনামন্ত্ৰ পাঠ কৰিবে। অভংগর প্ৰপাস্থিতি প্ৰদান পূৰ্বক অপন্ধবোদাক সক্ত স্কুপ ক্রিয়া প্রাণ্ড প্রভূতি দাবা প্ৰাৰ্থক্ত পাঠ পূৰ্বক দান কৰাইরা বস্তাগন্ধানাদি না- বিব উপচাবে মহা প্রান্থ স্থানিধা অক্তমিজিত ক্যা স্ট্রা অন্ত্রিণ মন্ত্রা নানা ইত্যাদি

मृडः । व्यांज्यका (वनविना (जावामांनः प्रमान्जिः। ক্ষমজ্যেত্যাদি বেদস্ততিঃ। স্বস্তাস্ত বিশ্বস্য থলু প্রসীদতাং ধ্যায়ন্তি ভূতানি শিবং মিথে। ধিয়া। মনশ্চ ভত্তং ভন্নতা মধোক্ষকে আবেশ্যতাং নো মাতরপ্যহেতৃকী। ইত্যাশিষঃ সমভ্যর্থ্য গীতবাদ্য জয়স্বনৈঃ। রথমারোপ-८म् विकू९ कर्नानानमम् मूदः। तथात्राष्ट्र महावित्को মে কৃৰ্বন্তি জয়স্বনং। পূজাং বাখিলপাপেভ্যো মৃতা যান্তি হরে: পদং। যুক্তঃ শিষ্যাদিবগৈন রকভশয়নাৎ কিঙ্কিনী জালমালা রড্নোঘৈ মেডিক কানা মবিরতমণিভিঃ সংহতৈশ্চৈব হারে:। হৈনৈঃ কুজৈঃ পতাকাসিভতরক্ল-চিভিস্থিতঃ কেতুমুথ্যৈ শ্চুত্রৈ রক্ষেশবন্দা স্ত্রিতহরি हरेमः পाजू रेक्ररेज बरेथर्वाः। भनायस्वर भनामस्वर ८ तदन দিতিজ দানবাঃ। সৎরক্ষণায় লোকানাৎ রথারতা নৃ-কেশরী। ইত্যাদি বিফু ধর্মোক্ত মধ্য়ৈ সম্ভোষ্য সাদরং। প্রবাদমালাৎ নৃহরেগৃহ্লাযাদ্ভকিভাবিত:। জয় জয় महाराव (प्रवर्तवार्थित्वयंत्रा धत (प्रणाथित्र विश्वर त्रक

मास ठाल्मीमा खल ममर्गन कि हा। नानाविष छन गार्थ भृत्तक व्यामिकांक खान कि हा मार्ग खर्म कि विद्या गील्यामा खम्मिन भृत्यम छ ज्ञानात्क वर्णका कि विद्या मार्ग मान कि विद्या कि विद्या मार्ग कि कि विद्या कि विद्या मार्ग कि विद्या कि विद्या मार्ग कि विद्या कि विद्य कि विद्या कि विद्

वक वमांभरक । नृदेकास्त्रीताक्षांभवरिक वन्तावानाः कत्रचंदिः। চালয়েৎ স্যন্দনৎ বিফো: পুরমধ্যে সুমুক্ত জা व्यथमाकर्षनः পृक्षः পूत्रत्वा देवका नाग्नकः। उकः स्त्राः निक मःचा मृतिभक्षर्य मानवाड । यावर भवानि कृष्णमा द्वर्ग স্যাকর্ষণং নরঃ। করোতু ক্রতুভিস্তানি ত্র্যানি মর-নায়কঃ। রথেন সহ গছন্তি পুরতঃ পৃষ্ঠতো ঘতঃ। भश्विकृतमा (६१८७ ७ वस्राज्यि ७ व) व्याला । 🖲 कृक्षत्रण. শোভাৎ যে প্রকৃষ্বস্তি বদস্তি চ। জয়েতি চ পুনর্বে বৈ তেবাৎ লোকাঃ দনাতনাঃ। রথস্থিতো নরৈ র্যস্ত পূজিতো মধুদূদনঃ। দদাতি বাঞ্জিতং তেষাৎ অস্তেচ পরমাং গভিং। (नानाव्यमानः (গাবिन्नः मकन्दः यथुन्तनः। রথস্থং বাসনৎ দৃষ্ট্। পুনর্জ্জন্ম ন বিদ্যতে। রথস্থৎ যে न शब्द खनमागर बनार्फनः। विश्रा दक्तविमरस्टरि বিজেয়াঃ শ্বপচাধমাঃ। মেষাৎ গৃহাগতো যাতি রথন্তঃ শ্রীনৃকেশরী। পূজা তৈত্তৈঃ প্রকর্তব্যা বিভ্রশাচ্য বিব-ৰ্জ্জিতিঃ। অনচিতি তো যদা যাতি প্ৰমাদাৎ স্বগৃহান্ধরিঃ।

শোভা সম্পাদন কবিলে লোকে প্রাধান্ত পদ শাভ হয়। রগন্তিত নারারণের
অর্চনা করিলে অভাইফল ও অন্তেতে সদ্গতি লাভ হয়। দোলাতে
বিরাজমান এবং রথন্থ মধুস্বনকে দর্শন করিলে পুনর্জনা হর না। বাহারা
রথারত হইরা প্রমণকানী মুরারির অন্থ্যমন না করেন ভাহারা বেদক্ত প্রাহ্মণ
ইলৈ ও চণ্ডাল ইল্ভ অধ্যা। রথারত ভগবান বাহার বাটাতে উপন্তিত
ইল্বেন ভাহাতেই বিভাস্পারে ভদীর অর্চনা করিতে হইবে। যদি প্রম
বন্ধত কাহারও গৃহে রব্চারী হবি প্রিত না হয়েন ভবে ভাহার প্রক্তি
ভবীয়- শিভ্লোক বিমুধ হন। স্তীলোকেরা রথোৎস্ব করিয়া মুর্জি

পিতরস্ত্র বিষ্ণা যাবৎ সংবৎসরং নৃপ। স্তিরেছিপি মৃক্তিমারান্তি রথযাত্রাপরারণাং। নীরাজনেন গীতেন জায়তে মণ্ডলেখরঃ। রথোৎসবস্য মাহায়াং কলোবিতত- স্তে হি যঃ। সশৈলানশন্যাত্যা তেন দতা বহুদ্ধরা। ইতি পদ্পরাণোক্ত্যা ভাময়িষা রথং গৃহং। গড়া নী-রাদ্যা দেবেশং শয়তি রাঘ্যং স্মরন্। ইতি রথোৎসবঃ।

পৌর্ণমাদ্যান্ত সন্ধ্যায়াং কর্ত্তব্য ক্রৈপুরোৎদবঃ।
দদ্যাদনেন মন্ত্রেণ স্থলীপাংশ্চ স্থরালয়ে। কীটা: পভঙ্গা
মধকাশ্চ্রকো জলস্থলে যে বিচরন্তি জীবাঃ। দৃন্টা প্রদাপং ন চ জন্ম ভাগিনো ভবন্তি নিত্যং শ্বসচাশ্চ বিপ্রাঃ।
ইতি ত্রৈপুরোৎ দবঃ। ইতি কার্ত্তি চ কুত্যং।

মার্গণীর্বে একভক্তৎ কৃষা যোহভাঠারে দ্ধরিং। ভোজ-মিষা ুদ্ধিলামুক্তঃ স্যাদিত্যাহ কলিপ্রিয়ং। নক্তৎ ত্রতেন যো মাসংমার্গণীর্ষং হরিপ্রিয়ং। নয়েদসৌ নরো যাতি বিষ্ণু-লোকং স্নাতনং। ইতি বিষ্ণু ধর্ণ্যোত্তরে মার্গণীর্ষকত্যং।

পদ লাভ করিবে। সংগাত ও নীরাজনা দ পুনংসব রথোৎসব করিলৈ সমস্ত পৃথিবীর অধিপতিত্ব লাভ হয়। যে বাজি কলিকালে রথোৎসব মাহাত্ম্য প্রকাশ ববিবে, সে শহুপূর্ণা অরণাপর্কত সহিত পৃথিবীদানেব ফল লাভ করিবে । অনস্তর রথার ভ তণবানকে অমণ করাইখা আনিয়া নীরাজনা স্মাপিয়া রামকে অরণ করতঃ শয়ন করিবে। সংগাৎসব ।

কার্তিক মাসের পূর্ণিমতে সন্ধার সময়ে ত্রৈপুরেৎশ্ব করিতে হয়। উক্ত দিবসে কীটা পতলা ইঙ্যাদি মধ্রে দেবালয়ে প্রদাপদান্ করিবে।

রারদ বলিয়াছেন বে, অতাধারণ মাসে একাছার করিয়া বিষ্ণুপ্র।
পুরামর আদ্বাগতক ভোলন করাইলে মুক্তিলাভ হয়। যে বাজি

পোষত্রকাদশীং শুক্রামার্ক্তা ছতিলেশয়:। নাস মাত্রং রঘুপ্রীত্যৈ বিবারং স্নানমাচরেং। ত্রিকাল-মর্চয়েদ্রামং ত্যক্তভোগে। কিতেন্দ্রিয়: । মাধ্যা দাদী खका यावर भूगकन था। माममर्कर छार्कः वा मणाहर বা তদৰ্কক্ৰা কৃষা যাতি হুৱে: স্নানং পূজাং দধ্যো--দনোৎসবং। বিষ্ণোনিবিদিতানেন থফীব্যং দেবতান্তরং 1 পিতৃত্যশ্চাপি তদ্বেং তদানস্তায় কল্লাতে। পিতৃশেষঞ্ যো দদ্যান্তরয়ে পরমাত্মনে। বেতোধাঃ পিতরস্তস্য ভব্ন্তি ক্লেশভাগিনঃ। নৃত্যাদিগীতৈভ ক্তেন্চ मग९ नराष्ट्रा **प**र्शिश स्तोष्ठिं। धनानमानस्य बर्वे । যঃ প্রদাদৎ হরেউক্ত্যা গৃহাতি প্রদদাতি চ ! বৈষ্টবঃ দাৰিং দোহনন্ত ফলমশুতে। মহাপ্রদাদ ইত্যুক্ত। धारामक्षाना वृतेषः। शारमामकक निर्मानार रेनरमाक বিশেষতঃ। ইতি দধ্যোৎনবঃ। সাঘ পৌষ্যোঃ কুত্তাং। উপোষ্য পৌর্ণমান্যান্ত কৃষা চ গোলিকোৎসবং।

রাঝিতেমার ভোকন করত ভগবৎ প্রিয় অগ্রহারণ মাস অভিবাহিত করিবে সে বিফুলোকে গমশ করিবে।

বসন্তার্চ্যাৎ প্রকৃষ্ণী র পরমানন্দর পিণঃ। প্রভাবে বি-

পৌষমাসের গুকুপক্ষীয় একদ্মী হইতে মাঘের গুকুল দাদনী পর্যশ্ব কুশশবাতে শ্রন ও তৃইবার সান করতঃ ত্রিকালে রামচন্তের পূজা করিবে। মাস, মাসার্দ্ধ, তদর্দ্ধ, দশদিন অথবা তদর্দ্ধ বিষ ও বদি সানঃ করত দ্বি ও তুল দারা বিকুপুলা করে ভাগ হইলে অনন্ত পুণা কয়ে। বিকুটদেশে নিবেদিত অলাদি দারা অভ দেবতার ও পিত্লেক্সির অন্তনা করিলে অনত ফল লাভ হয়। পিত্লোকের ভোজাবিশ্রী বৃদ্ধ দারা বিকুর অর্চনা করিলে পিতৃ দেবতা সকল সাভিশ্র ক্লেশা মনে জাতে প্রতিপদ্ধান্ধরান্তর। ক্বরা চাবশ্যকং কর্ম সংপ্রা পিত্দেবতাঃ। বন্দরো দোলিকাং ভূমিং দর্ব- তুক্টোপশান্তরে। বন্দিতাদি হুরেন্দ্রেণ ত্রহ্মণা শক্ষরেণ চ। অভস্বং পাহি ভূতেভাো ভূয়োভূতিপ্রদো ভব। প্রাভর্তিকসময়ে রমণং রমারা অভ্যন্ত চন্দনরদান মৃত্নপ্রাণীয়ে। প্রাশ্যানি চূতকুল্পানি নিবেদ্য দেবং সম্যোয় যাধ্বিষণীতবিনানন্তৈয়ে। মণ্ডিতে চন্দিতে ভদ্ধ উপ-লিপ্তে গৃহাজিরে। মণ্ডলং কার্যেং শ্রেষ্ঠং বর্ণ কৈঃ দাক্তিঃ ভিল্প। তত্মধ্যে হাপরেং প্রিঠং ক্রনাদার্গং শুভং। অপ্রভঃ পূর্ণক্লমং হাপরেং প্রতিষ্ঠ্ প্রাদ্ধে ভাগা ব্রহ্মণার বিদ্বান্ত প্রতিষ্ঠ্ প্রতিষ্ঠি হার্মণার বিদ্বান্ত প্রতিষ্ঠ্ প্রত্বিশ্ন ভাগার বিদ্বান্ত প্রতিষ্ঠ্ প্রতিষ্ঠ প্রতিষ্ঠ সম্বিশ্ন ভাগানি হুল্মং চূত্রক্ষায় বসন্তর্ভব পল্বাং। সংপ্রাণ্যামি হুল্ম মাযুবারোগ্যান্ধনণ। যে পির্বন্তি বসং

ফুডৰ কৰেন। নৃত্যগীডাদি পুৰংসর দধি ও অন্ন বিকুশ্ক নিশাদন কবিষা বৈক্ষৰগণেৰ সভিড প্ৰেনাদ গ্ৰহণ কৰিবে। বিকুৰ প্ৰদান গুলণ অনস্ত ফল ক্ষেম্য। মহাপ্ৰসাদ এই বলিয়া অঞ্চল দ্বায়া নি বদ্য, নিম্মাল্য ও পাদোদক গুছণ কৰিবে।

ক'ত্বণ মাসে পূর্ণিমাতে দোলোৎসর করিবে। প্রতিপদিবনে
স্থোগরে নিতাকল ও শিতৃ দেবতা পূলা সমাপিলা বলিভাসি করে
কেবে ইত্যাদি মত্তে দোলমংকর নমস্ত'র পূর্বক লল্পীনাবারণেব পূলা
করিরা সচন্দন আন্তগরব ও আন্তমুকুল নিবেদন করত বিধিধ নৃত । দ দারা ভগবানেব সভোব ক্লাইবে। অনকর গোমহোপণিগু পবিত্র গৃহাহির্ভাগে নানাবিধ বকি দারা মত্তল করিয়া ভত্পরি আন্ত্রপরব ও বজুসুগ্র ভ্ৰিত বলস স্থাপিত করিয়া আসনাক্ষত হুইয়া ব্রদ্যন্তে চুত- ভাগে চ্তপুষ্পং স্চলনং। স্মাক্ ছদিছকাৰ্স্য পুজাত্তে ক্ৰিতে জনাঃ। অনন্তরং বিজেলোণাং দ্তমাগর্ধ
বিশিনাং। দদ্যাদানং যথাশক্ত্যা কামাত্মা প্রীয়তামিতি বি
ততো ভোলনবেশায়াং শৃতং প্রাণেব তদিনে। প্রাণায়ে
প্রথমং চানং তভো ভূঞীত বাগ্যতঃ। র্জ্ব
ক্সান্তনা চৈব পল্লবৈরভিষেচ্যেৎ। এবং যঃ ক্লেভেঃ
পার্থ শাস্ত্রোক্তং ফাল্ভগেৎ সবং। মং প্রসাদাক সিম্যান্তি
ভাগা সর্বের মনোর্থাঃ। ব্রত্তে ত্যারসময়ে সিতপঞ্চদশ্যাং
প্রতিক্রিনন্তসময়ে সম্পশ্হতে চ। সংপ্রাণা চ্তক্ত্মং
সহ চল্লনেন সত্যং হি পার্থ পুরুষোহক্ষতং হথী আং।
ইতি ভবিষ্যোত্রের বসভোৎসবঃ। ফ ক্তনে কৃত্যং।

অধিমাসে তু সংপ্রাপ্তে শ্বরা সীতাপতিং ইরিং। ত্বর্ণং চাজ্যসংযুক্তং ভক্তাা ত্রিংশদপূপকং। দদ্যার্চ্চ বেদ-বিছুষে প্রোতিয়ায় কুট্সিনে। নশ্যত্যকরণে শীস্তং পুণ্যং ভাদশবর্ষজং। ইতি ভবিষ্যোক্তরে অধিমাস কৃত্যং।

পর্য ও দ্র্যাদি দারা অভিবেক করিবে। এইদিনে সচলন চূত্রুত্ম ভক্ষণ ও দবিদ্র দিগকে যথাশক্তি দান করিতে হরা অনস্তর আহা-বের সময় উপস্থিত হইলে বিষ্ণুটদেশে নিবেদিত পক্ষারাদি ভোজন করিয়া বুজ্ঞ্জল দারা অভিবিক্ত হইবে। ভগবান অৰ্জুনের প্রতি বলিয়াছেন যে, হেগার্থ! যে ব্যক্তি শাস্তাহুদারে ফ:স্থাংগংসব করিবে ভাগার সকল মনোরথ পূর্ণ হইবে। আর বসস্ত সময়ে পূর্ণিমা দিবস্থাতাঃকালে চল্ফনমিন্তিত আত্র মুকুল ভোজন করিলে শতবর্ষ পর্যান্ত ক্ষ্মী হইবে!

অধিমাদ (মলমাদ) উপস্থিত হুইলে বিষ্ণুত্বাপুৰ্দ্দ বিংশত পরি-

ভাগশহপি নাসের পক্ষয়েক ভবোরপি। নিভ্যোৎসবঃ
প্রকর্ত্তবার পরা প্রকর্তির । দশম্যাৎ প্রাভক্ষার
কৃতসন্ধ্যাদিকো বাতা। দেবার্চ্চনিক্রেয়াৎ কৃষা ক্র্যাৎ
সম্প্রমাদৃতঃ। দশমীদিনমারভ্য করিয়ে ছহং ব্রভত্তব ।
ব্রেদিনং দেবদেবেশ নির্বিশ্বং কৃক্স কেশব। ইত্যক্তার্যাপর্বেৎ পূজাঞ্জলিৎ জ্বীবামপাদ্যাঃ। শন্ধোদকেন সক্ষ্য
প্রাদেশ্বন বিজুৎ। ইতি দশমী কৃত্যং।

একাদশ্যাঞ্চ পর্ণাদৈয়নি বিত্যি দস্তধাবনং। স্নাহা দেবাচলিং কৃষা প্রভাসকল্পমাচরেং। একাদশ্যাং নিরাহাবঃ
দিয়া হ্মপরে হহনি। ভোক্ষ্যেহং পুত্রীকাক্ষ শবণং
মে ভবাব্যয়। ইতি চাঞ্জলিপাত্তেণাপ্যেদ্দেবলবাক্যভঃ।
গৃহীছোভূম্বরং পাত্তং বারিপূর্ণমূদভ্রমুখঃ। উপবাদং গৃহীছাথ সন্তপ্তং চলং পিবেং। ইত্যেকাদশী সক্ষয়ঃ।

্মিত পিষ্টক বেদজ বাক্ষণকে ও আগ্মীর ব্যক্তিকে দান কবিবে। এই কার্য্য না করিলে হাদশবৎসরের উপার্জ্জিত পুণ্য অচিবে বিনট হয়।

প্রতিমাসের উভয়পক্ষীর একাদশীতে আগরণ করিয়া নিত্যোৎসব ক্বিৰে। দশমী দিন প্রতিঃকালে নিত্যক্তব্য দেবার্চনাদি সমাপন পূক্ষক সম্মাপ কবিয়া দশমী দিনমাব্দ্য ইত্যাদি মন্ত্রে রাম পাদপল্লে পূক্ষাঞ্জলি প্রাদান করিয়া দশুব্দ প্রথম করিবে।

একাদশী দিন পঞাৰি দাবা দক্তধাবন পৰ্ক্ষক লানও ও নিতাৰণ্য লমাপিয়া, একাদশী দিবসে নিবাহাবে থাকিয়া প্ৰাদিশ্য ভোলন কবিবে ইত্যাকার সহল করিয়া মন্ত্ৰপুত তলপান ববিবে। উত্তৰ মুধ হহা ললপুণ ত নপাত্ৰ অঞ্জনিতে লইবা সহল ক্রিতে চর। কৃষা ছাবশ্যকৎ সর্বাৎ ভাদশ্যাৎ ব্রতমর্গরেৎ। অজ্ঞান-তিমিরান্ধস্য ব্রতেনানেন কেশব। প্রদীদ স্ব্যুথো নাথ জ্ঞানদৃষ্টিপ্রদো ভব। ছাদশী সঙ্করঃ।

ভবিষ্যোক্ত প্রকারেণ কুর্যাদ্ বৈ কৈলিনং ব্রছং ।
প্রদিদ্ধরার দক্ষাভির্দিধানং ন প্রপঞ্চিং। কৃষ্ণ জন্মাউনী
মুখা ধর্মাণামাগমোদিতা। তত্তভাস্তাত্ বিজ্ঞো বৈক্ষরা
বৈক্ষবোত্তৈঃ। প্রদিদ্ধর স্বভাগেতে গৃহ্বিস্তরভীতিতঃ।
প্রশিক্ষয় স্নাক্ষোচোহ্যপ্রসিদ্ধর বিস্তরঃ। চৈত্রাদিকে
ক্রেছিল্যাভির্নিধনায়েশভুটিয়ে।

## অথ শীরাম কবচং।

ধ্যাদ্য নীলে: এপলণান: রামং রাজীবলোচনং। জানকী বিদ্যানে প্রেড জটানুকুটমণ্ডি হং। সানিতৃণধকুর্ববাণপাণিং নক্তকরান্তকং। স্বলীন্য়া জগভ্রাতু মানিতৃ ওসজং বিদুং। লামরক্ষাং পঠেং প্রান্তঃ পাপদ্বীং সর্বাক্ষাং। অস্ত বিদ্যান্ত বিশ্বান্ত করাই করাই বিশ্বান্ত ব

ভাদশী শিবদে অজ্ঞানতিমিরাক্ষ্য ইত্যাদি মৃংলাক মৃণ্ড এত স্মৃণ্ ক্রিল। পাবেশা কবিবে।

শ্রীক্ষের জরাউনী প্রভৃতি অনেক ২ বিষয় অন্তোল পুরে বিজ্রুকপে লিখিত দেখিলা এই গুমু ফন্য গাঙের মালিবিত বিষধ সকল কাপ্রিক হবলঃ

সৌমিতিবংসলঃ। জিহ্বাৎ বিদ্যানিধিঃ পাতু কণ্ঠৎ ভরত: বন্দিতঃ। ক্ষমৌ দিব্যায়ুধঃ পাতৃ ভূজো ভয়েশকাৰ্দ্মুকঃ। করৌ দীতাপতিঃ পাতু ছদয়ং জামদয়াজিৎ। বকঃ পাতু কবন্ধারি স্তনৌ গীর্কাণবন্দিতঃ। পাখৌ কুলপতিঃ পাতু কুক নিজ্যকুনক্নঃ। মধ্যৎ পাতু ধরধ্বংদী নাভিং জাঘু বদাঞ্জঃ। ভাহাৎ ক্লিভেন্ডিয়ঃ পাতু পৃষ্ঠৎ পাতু রঘূত্রমঃ। হুত্রীবেশঃ কটীৎ পাতু সক্থিনী হনুমৎপ্রভুঃ। উর রঘূত্তমঃ পাতু রক্ষঃকুল বিনাশ কৃৎ। জালুনী দেতুকুৎ পাতু জড়ে দশমুখান্তকঃ। পাদে বিভীনণ শ্রীদঃ পাতু त्रारमार्थिमर वर्षः। এउतः त्रागवरमारभणार तकार यः সুক্তী পঠেং। স চিরাগুঃ স্থী পুত্রী বিজয়ী বিনয়ী ভবেং। পাতালভূধরবেরামচারিণশ্ছমচারিণঃ। न দ্রেট্মিপি শক্তান্তে রক্ষিত্ৎ রামনামহিঃ। রামেতি রামভদ্রেতি রামচন্দ্রেতি বা শারন্। নরো ন লিপ্যতে পাপৈভুতিং মুদ্ধিক বিন্দতি। জগড়ৈজাতৈকমন্ত্রেণ রামনাম্রাভির্দিকতং। যঃ করে ধারয়েত্সা করস্থাঃ সর্কাসদ্ধয়ঃ। ভূর্জনতে ত্রিমাং विष्ठार मञ्चठम्पन विकिताः। क्रया देव श्रांतरमम् यस दमार्थी छै: ফলমাপ্রমাৎ। কাকবন্ধ্যা চ যা নারী মৃতবৎসা চ যা ভবেৎ। বহ্বপত্যা জীববৎদা সাভবেরাত্রসংশয়ং। বজ্রপঞ্জর না মেদ্ৎ যো রামকবচং পঠেৎ। অব্যাহতাজ্ঞঃ সর্বত্ত লভতে জয়মঙ্গলং। আদিউবান্ যথা স্বপ্নে রামরকা মিমাং হরিঃ। তথা লিখিতবান্ প্রাতঃ প্রবুদ্ধো বৃদ্ধ কৌ-শিকঃ। ধন্মিনৌ বন্ধনিস্তিংশো কাকপক্ষারো শুভৌ। বীরৌ মাং পৃথি রক্ষেতাং তাবুভৌ রামলক্ষণো। তরুণো

क्रभ मन्नादमी अक्षादती महावतनी। शृक्षतीक विभागातकी চীর ক্রফাজিনাম্বরৌ। ফল্য্লাশিনো দাস্তো তাপদো এক্স-চারিণো। পুত্রৌ দশরথদ্যৈতো ভাতরো নামলক্ষণো। শ্রণ্যে দক্ষনাৎ ভেত্তো দক্ষতুমতাং। রক্ষঃকুল নিহন্তারো তায়েতাং বো রঘূত্তমো। আতদক্রধমুষাবিষু অপুণা বক্ষা শুগনিষক দকিনো . রক্ষণায় মন রামলক্ষণা। বগ্ৰতঃ পৰি দৰৈৰ গচ্ছতাং। সমদ্ধঃ কৰচী খড়গী চাপৰাৰ. ধরো যুবা। যচহন্মনোরথঞাস্থান্রামঃ পাতুদলক্ষণঃ। অ্থভস্ত নৃশিংহোমে পৃষ্ঠতো গরুড্ধকঃ। পার্যমাস্ত ধকুলুক্তের কুনারের রামলক্ষাণোঁ। রামো দাশর্থিঃ শুরো লক্ষণাসুচরে। বলী। কাকুৎস্থ: পুরুষ, পূর্ণ: কৌশলেয়ে। রঘু खगः। त्वनाखरवरना। यरळवा श्रुतान श्रूकरवा स्मर। जानकी-বল্ভঃ শ্রীমান্ অপ্রেয়পরাক্ম:। দক্লিণে লক্ষণো ধরী বামে চ জানকী শুভা। পুরতো মারুতির্বস্য তং ন্মামি রঘূত্র । আপদামপহন্তারং দাতারং সর্বা সম্পাদাং। গুণাভিরামং জুয়ো ভুয়ো নমাম্যহং। এতানি মম নামানি মন্তকোষঃ সদা পঠেৎ। অখনেধাযুত্ত পুণ্যৎ স প্রাংগাতি ন সংশয়ঃ। ইতি পদাপুরাণে বজ্রপঞ্জরং নাম জ্ঞীরাস ক্রচং স্মাপ্ত । ও তৎস্থ। ও যদক্র মিভ্যাদি চ शर्हि ।

ন কামতাপো ন তমোহস্তি মে যতঃ প্রকাশিতা তে-হতনি চন্দ্রিকেরং। তৃষ্টো ভব রং স্কৃতেন কর্মণা তম্মা-সমাস্যাং প্রভুরামচন্দ্র। > । রামোহস্মীত্যবিপন্নধীর্বিরতং রাম্থ ভজে প্রদেশে যুদ্রামণ বিমুক্তমেতদ্থিলং রামায় প্রপ্রের। রামদেতদভিন্ননের চরিতং রামদা কো বিদ্যান্ত রামে দ্রিলিং বিলায়ত ইতো হে বান নামুং দ্বা কার্মণিং দশককরো রত্পতেঃ সংমার্কাং গৈথিলা দাভূত্বক বিভাস্থো বহুবিধা স্নেহাং পুন্র্যান্তান্ত। সানিত্রং হলুমানুপৈতৃ।পক্তং দেবা বিশ্বোগং পিতা কোপাতু গ্রহ-স্বাধ্ববিদ্যালি প্রেয়াজ্মিক মাপ্রেতং। সংমাবদাবানল কপেশান্তা শারামচন্দ্রান্ত চিন্তিকেরং। স্থান সংভিত্য ভক্তানেহথিলেহান্তান চিন্তিকেরং। স্থান সংভিত্য পঞ্চিঃ প্রোক্তে। জ্ঞারামান্ত্রিকা। সান্দ্রন্যানা হি

ইতি ইন্সং পরমহংস পরিরাজকাচধ্য ইন্মেন্দ্রান উন্চৰণ শিধ্যাৰকাৰৰ বিলচিতাধাং ইন্রামা-ফ্রিচজি বাচা পঞ্জঃ পটলং স্যাপ্তঃ স্মাধ্যহেহে জন্ধঃ !

Mar Silva Mark

## বিজ্ঞাপন।

नित्र निवित्र भूतक मकन ६ चकास मानावित्र गर्स भूसक, माइक, म्राह्म केमसाम ६ क्रान्त गाँछ गूर्क मकन विकास अस्ट चार्क, मूना मह गर्स निवित्न वाल हरेरवन। चर्डात मह कि, गि, (गार्ट्ड गार्डाम क्रम १

পুস্তস		মূল)	1	elarida f
শ্ৰীত ও বাৰ)শিক্ষার সহজ উপায়	***	3	***	<i>]</i> •
ঐ ২য়, দেন্তাৰ শিক্ষা	***	~	l.	10
थे ७४, दिहास ६ हाइमिन	म निका	3,	***	_ <b>/</b> *
हामगानात चर्च कथा	• • •	ho ho	***	14
ভূবন্ধ উপস্থাস	••	> •	4>4	# #
স্চিত্র আরব্য উপস্থাস		<b>ک</b> ر	••	J
ঐ পাবস্ত উপত্তাস		34	••	<i>)</i> •
ले धनाधिक मध्य हिंदम	***	3	•••	40
সাঞ্চবাদ বৃহৎ ভব্নকোৰ	•	Ji•	• •	.j.
त्व २४, ५७		58*		de
ঐ কামৰূপ তপু	***	ų.	***	63.
ঐ স্ক্সিদ্ধি মণ শস্ত্র		}•	***	وذع
🗗 भवन विकासत्वासम्	***	۵۹	3 10	1.
সাম্বাদ বৃহৎ ভণুসরি		81	• •	[A
প্রাব্যক্তাবিণী জন্ম	***	8	***	14
<b>শান্ত্ৰাদ ঘে</b> ৱ <b>ও স</b> ংহিত <b>া</b>	•••	31*		J.
ঐ শিষ্দ হিডা	***	510		.j.
ঐ ষ্ট চলে (সচিত্ৰ)	***	3/	***	4.
ঐ ভীৰ্থ ভৱাঙ্গণী	4.6	280	***	14
পৰীক্ষিত মৃষ্টিযোগ	***	54.	•	<i>]</i> =
রদেশ পার্স্তাহ	•	\$4>	•	4
সাহ্ৰাদ সচীক নিশ্বি	• •	3	•	1.
সহজ পণ্না	• •	8	••	<b>(3•</b> 1
महिता (मी जाना नगना	***	# D	•	ه د د
সামুবাদ স্থাতিসর্মন্থ সংগ্রহ	**	**	• •	to i
সাম্বাধ শিবণীত।	•	210		/e
छवकव्हमाना ( ) स रत्र ध्वक्राव्य )	***	•اد	•••	40
শাম্মাশা	***	lq.	•	/a
गाभूगांग बामार्कन हिंदिका	•••	3/	•••	4º
क[क्यूबान				J+
> मः भवाषम्। ब्रिष्ठे, क्लिकाछ।।	}	_		
नामामनी श्वकानम्।	j	শ্রীগ	वमहस्द Ç	याव।